

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानराज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतर्हसिंह, एम. ए., डी. लिट्
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

ग्रन्थाङ्क ३६

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

१९६७ ई०

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

सम्पादक

पं० श्रीबेचरदास जीवराज दोशी

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थानराज्यसंस्थापित

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२४

प्रथमावृत्ति ७५०

भारतराष्ट्रीयशकाब्द १८८६

ख्रिस्ताब्द १९६७

मूल्य ७.००

मुद्रक - नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद तथा साधना प्रेस, जोधपुर

विषयानुक्रमः

पृष्ठ

१. सञ्चालकीय वक्तव्य	१-१६
२. प्रस्तावना	१-१५
३. प्रास्ताविक	१-६
४. मूलग्रन्थ	१-७५
५. गणसूत्रसूची	७६-८०
६. वर्णसूत्रम्	८१
७. उणादिप्रकरणम्	८२-१०४
८. धातुपाठः	१०५-१२६
९. चान्द्रसूत्राणामकारादिक्रमेण सङ्कलनम्	१२७-१८८
१०. उणादिसाधितशब्दानामकारादिक्रमेण सङ्कलनम्	१८९-२०५
११. चान्द्रव्याकरणस्थितधातुपाठागतधातूनामकारादिक्रमेण सङ्कलनम्	२०६-२२६
१२. शुद्धिसूची	२३०

—

संचालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत चान्द्र-व्याकरण आचार्य चन्द्रगोमि की कृति माना जाता है। प्रो० क्षितीशचन्द्र चटर्जी के शब्दों में, चान्द्र-व्याकरण वस्तुतः पाणिनीय व्याकरण का ही एक संशोधित संस्करण है जिसमें कात्यायन और पतञ्जलि के समस्त सुभाषों तथा सुधारों का समावेश किया गया है। यों तो इस व्याकरण का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में पाया जाता रहा है, परन्तु स्वयं यह ग्रंथ अप्राप्य ही था। तारा-नाथ से अवश्य इस ग्रंथ के तिब्बती संस्करण का पता चला था, परन्तु सर्वप्रथम इसको प्रकाशित करने का श्रेय प्रोफेसर लिविश को है जिन्होंने इसे रोमन-लिपि में मुद्रित करवा कर दो संस्करणों में निकाला था। ये दोनों संस्करण भी बहुत दिनों से अप्राप्य थे; इसीलिए इस प्रतिष्ठान के भूतपूर्व संचालक, आचार्य जिन-विजयजी ने, सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० बेचरदासजी द्वारा संपादित करवा कर, इस ग्रंथ को देवनागरी-लिपि में पुनः प्रकाशित करने का संकल्प किया, और तदनुसार १९५२ ई० में यह कार्य प्रारम्भ भी कर दिया गया, परन्तु खेद है कि कुछ कारणों से इसका प्रकाशन पिछले पंद्रह वर्षों से अटका पड़ा हुआ है। अत्यधिक विलंब के लिए क्षमा चाहते हुये, अब यह पुस्तक विद्वानों की सेवा में प्रस्तुत की जा रही है।

यद्यपि इस पुस्तक का मूद्रण-कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात् डेकन कालेज, पूना से प्रोफेसर क्षितीशचन्द्र चटर्जी के संपादन में इस ग्रंथ का एक देवनागरी-संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित भी हो गया है, परन्तु फिर भी इस ग्रंथ की अपनी निजी विशेषता है। प्रस्तुत संस्करण अपनी लघुता में ही महत्ता छिपाये हुये है; लगभग सवा सौ पृष्ठों में न केवल चान्द्र-व्याकरण के सभी सूत्र हैं, अपितु उनमें उणादि सूत्रों तथा धातुपाठ का भी समावेश कर दिया गया है और साथ में, तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा के लिए, चान्द्रसूत्रों के साथ ही पाणिनि-सूत्रों का भी संदर्भ-निर्देश दे दिया है। परिशिष्ट में, अकारादिक्रम से सूत्रों, शब्दों और धातुओं की सूचियां देकर, ग्रंथ को शोधकर्त्ताओं के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाया गया है। अन्त में उस विचार-सामग्री को भी इस संस्करण की ही विशेषता के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जो सम्पादक तथा प्रधान सम्पादक की ओर से प्रस्तावना में उपस्थित की गई है।

प्रस्तावना

चान्द्र-व्याकरण के प्रणेता चन्द्रगोमि ने अपने व्याकरण-सूत्रों पर स्वयं ही वृत्ति भी लिखी है जिसको लीविश ने चान्द्र-व्याकरण के दूसरे संस्करण में सर्व-प्रथम मुद्रित कराया था। वृत्ति को 'नमो वागोश्वराय' के साथ प्रारम्भ करते हुये, लेखक ने अपने व्याकरण को 'शब्दलक्षण' की संज्ञा दी है और उसकी विशेषता तीन शब्दों में बतलाई है; ये शब्द हैं—लघु, विस्पष्ट तथा सम्पूर्ण^१। श्रीयुधिष्ठिर^२ मीमांसक ने इन तीनों विशेषणों पर विचार करते हुये लिखा है कि "कातन्त्र-व्याकरण लघु और विस्पष्ट है, परन्तु सम्पूर्ण नहीं है। इस के मूलग्रंथ में कृत्प्रकरण का समावेश नहीं है, अन्यत्र भी कई आवश्यक बातें छोड़ दी हैं। पाणिनीय व्याकरण सम्पूर्ण तो है, परन्तु महान् है, लघु नहीं।" अतः उनके अनुसार संभवतः इन्हीं दोनों प्रचलित व्याकरणों के गुणों को ग्रहण करके, यह व्याकरण रचा गया प्रतीत होता है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि देश के जिस भाग (बंगाल) में चान्द्र-व्याकरण दो-तीन सौ वर्ष पहले तक लोकप्रिय^३ रहा, उसमें भी इसकी कोई हस्तलिखित प्रति न मिली, अपितु उसको नष्ट होने से बचाने का श्रेय तिब्बत^४ को प्राप्त हुआ। इस आश्चर्य की वृद्धि तब और भी हो जाती है, जब तिब्बत में कलापसूत्र, कलाप-सूत्रवृत्ति तथा कलापसूत्रलघुवृत्ति के तिब्बती अनुवादों के रूप में कातन्त्र-व्याकरण^५ का ही प्रचार अधिक हुआ बताया जाता^६ है।

उक्त दोनों व्याकरणों के तिब्बती सहास्तिरत्व में एक अन्य विस्मयकारी बात यह है कि चान्द्र-व्याकरण के सूत्र पाणिनि के सूत्रों से इतने अधिक मिलते हैं कि प्रथम को द्वितीय का ही संशोधित तथा वर्धित संस्करण^७ कहा जाता है, जब कि

१. सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं जगतो गुरुम् ।

लघुविस्पष्टसंपूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम् ॥

२. संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृ० ५०६ ।

३. प्रो० क्षि. चं. चटर्जी, चान्द्रव्याकरण आव चन्द्रगोमिन की भूमिका ।

४. देखिये शीफनेर का लेख, वुलेंटिन आव हिस्टारिकल साइंसेज आव द इंपीरियल अकेडमी आव साइंसिज़ एट सेंट-पीटर्सबर्ग ४, २६४ संख्या २६०४ ।

५. देखिये युधिष्ठिर मीमांसक, सं० या० इति०, पृ० ३०२ ।

६. ए. सी. बर्नेल—दि ऐन्ड्रस्कूल आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ५६ ।

७. क्षि० चं० चटर्जी, भूमिका चान्द्र-व्याकरण आव चन्द्रगोमिन ।

कातंत्र को ऐन्द्र-व्याकरण का ग्रंथ^१ कहा जाता है जिसको विनाश करने का भागी पाणिनि बताया जाता है। कथासरित्सागर^२ के अनुसार ऐन्द्र-व्याकरण कात्यायन का था और इसको नष्ट करने वाला पाणिनि था। कुछ हेर-फेर के साथ यही बात बृहत्कथामंजरी में भी मिलती है; कथा संक्षेप में यह है—
 आचार्य वर्ष के अनेक शिष्यों में दो शिष्य थे कात्यायन और पाणिनि। पाणिनि जडबुद्धि था और गुरुजनों की सेवा-शुश्रूषा में भी कमी करता था। गुरुपत्नी से निकाले जाने पर वह खिन्न होकर हिमालय चला गया जहाँ उसके घोर तप से प्रसन्न होकर शिव ने उसे 'नवव्याकरण' दिया जिसको प्राप्त करके उसने कात्यायन को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। जब कात्यायन ने पाणिनि को शास्त्रार्थ में परास्त कर दिया, तो नभ में स्थित शंभु ने घोर हुंकार किया जिसके फलस्वरूप कात्यायन का सारा ऐन्द्र-व्याकरण भूतल से नष्ट हो गया। लगभग इसी से मिलती-जुलती कथा हुयेन-सांग ने भी स्यातवीं शताब्दी में आकर भारतवर्ष में सुनी^३। कात्यायन-सूत्रम् अथवा पूर्वपाणिनीयम् नाम से एक २४ सूत्रों वाली पुस्तक बड़ौदा में पं० जीवाराम कालिदास के संपादन में प्रकाशित हुई; इसमें और कातंत्र में एक समानता यह है कि यह भी 'ओम् नमः सिद्धम्' से प्रारंभ होता है। परन्तु दोनों के आकार में आकाश-पाताल का अन्तर है। फिर भी 'ओम् नमः सिद्धम्' की समानता दोनों ग्रंथों की एक ही परंपरा सिद्ध करती है। क्या बर्नेल के अनुसार कातंत्र की भाँति इसे भी 'ऐन्द्र' परंपरा में माना जा

१. बर्नेल, दि ऐन्द्र स्कूल आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ४५-५३।

२. अथ कालेन वर्षस्य शिष्यवर्गो महानभूत् ।
 तत्रकः पाणिनिर्नामा जडबुद्धितरोऽभवत् ॥
 स शुश्रूषापारिविलष्टः प्रेषितो वर्षभार्ययोः ।
 अगच्छत् तपसे खिन्नो विद्याकामो हिमालयम् ॥
 तत्र तीव्रेण तपसा तोषितात् इन्दुशेखरात् ।
 सर्वविद्यामुखं तेन प्राप्तं व्याकरणं नवम् ॥
 ततश्चाऽगत्य मामेव वादायाह्वयते स्म सः ।
 प्रवृत्तो चावयोर्वादि प्रयाताः सप्त वासराः ॥
 अष्टमेऽहनि मया तस्मिन् तत्समनन्तरम् ।
 नभस्थेन महाघोरो हुंकारः शंभुना कृतः ॥
 तेन प्रनष्टमैन्द्रं तदस्मद्व्याकरणं भुवि ।

जिताः पाणिनिना सर्वे मूर्खीभूता वयम् पुनः ॥ (त० ४, २० - २५)

३. बर्नेल, पृ० ४.

सकता है ? इसके उत्तर के लिए उक्त २४ सूत्रों पर विचार करना आवश्यक है ।

पूर्वपाणिनोयम् या कात्यायनसूत्रम् के सूत्रों को इस प्रकार दिया गया है:—

ओम् नमः सिद्धम् ।

- | | |
|----------------------------|---------------------------|
| (१) अथ शब्दानुशासनम् । | (१३) सर्वः शब्दः । |
| (२) शब्दो धर्मः । | (१४) सर्वार्थः । |
| (३) धर्मादर्थकामापवर्गाः । | (१५) नित्यः । |
| (४) शब्दार्थयोः । | (१६) तंत्रः । |
| (५) सिद्धः । | (१७) भाषास्वेकादशी । |
| (६) सम्बन्धः । | (१८) अनित्यः । |
| (७) ज्ञानं छन्दसि । | (१९) लौकिकोऽत्र विशेषेण । |
| (८) ततो न्यत्र । | (२०) व्याकरणात् । |
| (९) सर्वमार्षम् । | (२१) तज्ज्ञाने धर्मः । |
| (१०) छन्दोविरुद्धमन्यत् । | (२२) अक्षराणि वर्णाः । |
| (११) अदृष्टं वा । | (२३) पदानि वर्णभ्यः । |
| (१२) ज्ञानाधारः । | (२४) ते प्राक् । |

उक्त २४ सूत्रों का विषय निस्संदेह 'शब्दानुशासन' है और इस प्रसंग में शब्द से अभिप्राय पद से नहीं धर्म से है । धर्म को अर्थ, काम एवं अपवर्ग का स्रोत^१ बताया गया है; इनमें से अर्थ क्रियाशक्तिमूलक, काम इच्छाशक्तिमूलक, तथा अपवर्ग ज्ञानशक्तिमूलक माना जा सकता है । आगमों में क्रिया, इच्छा तथा ज्ञान-शक्तियों को पराशक्ति द्वारा 'मयूराण्डरसवत्' बीजरूप में धारण किया जाना माना जाता है; अतः इसी पराशक्ति को धर्म की संज्ञा दी जा सकती है और फलतः इसी धर्म से उत्पन्न होने के कारण क्रिया, ज्ञान तथा इच्छा-शक्तियों के पूर्वरूप को पुरुषसूक्त^३ में 'तानि धर्माणि प्रथमानि' कहा गया है । पराशक्तिरूप धर्म का धर्मी आत्मा या पुरुष है जिसे कई बार इन्द्र की भी संज्ञा^४ दी जाती है । यह इन्द्र या पुरुषरूप धर्मी अपने धर्म द्वारा ही अपने को व्यक्त करता है; इसीलिए इस धर्म को ऊपर 'शब्द' कहा गया है और अन्यत्र इसे वाक्-नाम भी दिया जाता है, क्योंकि शब्द या वाक् द्वारा ही मनुष्य अपने को व्यक्त करता

१. शब्दो धर्मः ।

२. धर्मात् अर्थकामापवर्गाः ।

३. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, पृ- ५६-६५ ।

४. देखिये—वैदिकदर्शन, पृ० १४-१५ ।

है। यह वाक् उक्त 'परा'^१ रूप में अव्यक्ता है और पराची भी कहलाती है; यही उक्त अद्वैतधर्मस्वरूप शब्द है जो व्याकृत होकर क्रमशः अर्थमूलक क्रिया, काममूलक इच्छा तथा अपवर्गमूलक ज्ञान-शक्ति के रूप में एक से अनेक होता है; यही अव्याकृता पराची वाक् का इन्द्र^२ के द्वारा व्याकृता किया जाना कहलाता है। इन्द्र की यह व्याकृता वाक् केवल उक्त तीन रूपों में ही नहीं, अपितु अनेक रूपों में व्याकृत होकर विविध इंद्रिय-शक्तियों के रूप में प्रकट होती है।

अव्याकृता पराची वाक् (शब्द) जब व्याकृता-रूप ग्रहण करना प्रारम्भ करती है तब अर्थबीजा क्रिया (विविधीकरण को क्रिया) चल पड़ती है; अतः इसके प्रथम रूप में शब्द (परा) और अर्थ (क्रिया) का सम्बन्ध 'सिद्ध'^३ होता है, परन्तु दूसरे रूप में अर्थ (क्रिया) के साथ काम (इच्छाशक्ति) का संयोग विशेष होने से दोनों का सम्बन्ध 'साध्य' हो जाता है। शब्दार्थ के सिद्ध सम्बन्ध का ज्ञान हमें बाह्यतः प्रकट नहीं, अपितु आभ्यन्तरिक छादन में अप्रकट रूप से होता है; 'ज्ञानं छन्दसि' कहने का यही अभिप्राय है और 'छन्द' शब्द की विचित्र व्युत्पत्ति^४ इसी तथ्य का समर्थन करने के लिए बनी है। शब्दार्थ के साध्य सम्बन्ध का ज्ञान हमें बाह्यतः प्रकट रूप में होता है और इस ज्ञान का आधार सारी बाह्य शब्द-समष्टि (सर्वः शब्दः) तथा उसकी सारी अर्थ-समष्टि (सर्वः शब्दार्थः) है। शब्दार्थ का सिद्ध संबन्ध 'नित्य' है और 'तंत्र' रूप है, परन्तु साध्य सम्बन्ध मनसहित दशेन्द्रियों की भाषाओं में 'एकादशी अनित्य' बन कर नानारूप में प्रकट होता है। प्रथम अवस्था में 'छान्दस' सम्बन्ध है, दूसरी में 'लौकिक' जिसमें^५ विविधीकरण विशेष रूप से होता है। छान्दस सम्बन्ध का ज्ञान 'आर्ष' (सर्व-मार्षम्) साक्षात् दर्शन से प्राप्त होता^६ है, और इस अवस्था में आत्मा को 'पश्य' तथा उसकी वाक् को 'पश्यन्ती' कहा^७ जाता है। छान्दस के विपरीत एक ओर तो 'लौकिक' शब्दार्थ-सम्बन्ध है जो अनेक वर्णों तथा उनसे विरचित अनेक पदों

१. वैदिकदर्शन पृ० २२-३०।

२. वाग्वै पराची अव्याकृतावदत् । ते देवा इन्द्रमनुवन्, इमां नो वाचं व्याकुर्विति.....
तमिन्द्रो मव्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत् ।

(तै० सं० ६, ४, ७; मै० सं० ४, ५८; का० सं० २७, ३; कपि० सं० ४२, ३)

३. सू० ५-६।

४. देखिये—'वैदिक एटिमॉलॉजी' में 'छन्दस्'।

५. लौकिकोऽत्र विशेषेण व्याकरणात्, १६-२०।

६. साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयो बभूव, या० नि० १. १।

७. वै० द० (२००६ वि०) पृ० ३७।

के संबंधों में 'वैखरी' वाक् बन कर प्रकट होता है और दूसरी और वह अदृष्ट ज्ञान (अदृष्ट वा) वाला शब्दार्थ है जिसे ऊपर पराची या परा अव्याकृता वाक् कहा गया है। एक में स्वयं शब्द ही धर्मस्वरूप (शब्दो धर्मः) है जब कि दूसरे (लौकिक) के ज्ञान में धर्म (तज्ज्ञाने धर्मः) रहता है, क्योंकि पहले में शब्द नित्य तथा सूक्ष्म होने से वह शक्तिमान् आत्मा का 'धर्म' हो सकता है, परन्तु दूसरे में शब्द अनित्य एवं स्थूल (भाषण-ध्वनियों के रूप में) होने से वह स्वयं 'धर्म' नहीं हो सकता ; अतः वहाँ उसके ज्ञान में वह सूक्ष्मरूपेण निहित माना जा सकता है।

ऐन्द्र-व्याकरण का पूर्वपाणिनीयत्व

उपर्युक्त विवेचन से प्रतीत होता है कि पूर्वपाणिनीयम् में जिस व्याकरण का उल्लेख है वह इंद्र द्वारा अव्याकृता पराची वाक् को व्याकृता किए जाने की आध्यात्मिक कथा है; यह शब्दानुशासन उस शब्द की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है जो वाक्यपदीय^१ के अनुसार 'अनादिनिधनं ब्रह्म' के रूप में नित्य होकर भी अनेक अनित्य वर्ण-ध्वनियों में व्यक्त होता है और जिसे अन्यत्र^२ 'वाक् ब्रह्म' भी कहा जाता है। इसी शब्द या वाक्^३ के कभी कभी सुब्रह्म और ब्रह्म दो रूप स्मृत किये जाते हैं ; इनमें से पहला आत्मा है तथा दूसरा उसकी वह शक्ति जिसके द्वारा वह स्वयं अवर्ण होता हुआ भी अनेक वर्णों के रूप में अभिव्यक्त होता^४ है। पहला धर्मी है, दूसरा^५ उसका धर्म; पहला शक्तिमान् है, दूसरा शक्तिरूप। विष्णुसंहिता के शब्दों में ये दोनों ही पुरुष (आत्मा) ज्योति के दो रूप हैं, एक परदेवता और दूसरा अपरदेवता। एक मायी और दूसरी माया, और पहला दूसरे के सहारे ही लोक में 'बहुधा' भिन्न^६ होता है। अहिर्बुध्न्य-संहिता^७ में यही माया पारमात्मिका अहंता तद्धर्म-

१. १, १।

२. गो० ब्रा० १, २, १०; वाग्नि ब्रह्म, ऐ० ब्रा० २, १५; ४, २१, वाग्वै ब्रह्म ऐ० ब्रा०-६, ३; श० ब्रा० २, १, ४, १०; १४, ४, १, २३; १४, ६, १०, ५; वागिति तद् ब्रह्म-जै० ३०, २, ६, ६; २, १३, २, तै० ब्रा० ३, ६, ५, ५; ऐ० ब्रा०-६, ३ इत्यादि।

३. वाग्वै ब्रह्म च सुब्रह्म चेति ऐ० ब्रा० ६, ३।

४. एकोऽवर्णः बहुधा शक्तियोगात्, स्वे० उ०, ३०।

५. शब्दो धर्मः, पू० पा० १।

६. देवतेऽपरं ज्योतिरेक एव परः पुमान् ।
स एव बहुधा लोके मायया भिद्यते स्वया ॥

७. सर्वभावात्मिका लक्ष्मीरहंता पारमात्मिका ।
तद्धर्मं धर्मिणी देवी भूत्वा सर्वमिदं जगत् ॥

धर्मिणी देवी होकर 'सर्वजगत्' के नानात्व में प्रकट होती हुई बतलाई गई है। यही वह पराशक्ति है जो इच्छा, ज्ञान, क्रिया-शक्तियों के रूप में प्रकट होती है और इसी को महार्थमञ्जरीकार ने 'सूक्ष्मा' तथा इसके भेदों को पशयन्ती, मध्यमा तथा वैखरी कहा है।

स्फोटवाद^२ के अनुसार प्रणव या शब्दब्रह्म के दो रूप हैं, एक पर और दूसरा अपर। स्फोट या आत्मारूप में यह परब्रह्मशब्द 'वाच्य' है और उसकी 'वाचक' शक्ति को नाद या प्राकृता^३ ध्वनि कहते हैं जो अनेक 'वैकृत' ध्वनियों में व्यक्त होकर व्याकृता बनती है, परन्तु यह केवल 'वृत्तिभेद' है, स्फोटात्मा स्वयं फिर भी 'अभिन्न'^४ रहता है। आत्मा पहले नाद या प्राकृता ध्वनि के रूप में व्यक्त होता है (वा० प० १, २, ३०-३१; १, ७६), फिर वही शक्ति बुद्धि तथा प्राण आदि के सहारे नानारूप धारण कर लेती है (वा० प० १, ७७) ये। विकार वस्तुतः नाद या ध्वनि में ही होते हैं, जो 'वाच्य' रूप आत्मा का 'वाचक' है, परन्तु फिर भी 'वाच्य' ओंकार या आत्मा (पर शब्द ब्रह्म प्रणव) में इनकी प्रतीति समझी (वा० प० १, ४८-४९) जाती है। कोई कोई आगमग्रंथ सच्चिदानन्द निर्विकार ओंकार से शक्ति, शक्ति से नाद और नाद से बिन्दु की उत्पत्ति बतलाते हैं (आसीच्छक्तिस्ततो नादो नादाद्विन्दुसमुद्भवः); शक्ति से सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला यह नाद महानाद कहलाता है। अष्टप्रकरणकार के अनुसार उक्त बिन्दु का नाम अनाहत नाद भी है (बिन्दुरेव समाख्यातो व्योमानाहतमित्यपि); इसी अनाहत नाद या परबिन्दु से नाद उत्पन्न होता है (भिद्यमानात् परात् बिन्दोर्व्यक्तात्मा रवोऽभवत्); यह अव्याकृत नाद व्याकृत

१. वा० प०, ७१-७३।

२. परः परतरं ब्रह्म ज्ञानानन्दादिलक्षणम्।

प्रकर्षेण प्रणवः यस्मात् परं ब्रह्म स्वभावतः ॥

अपरः प्रणवः साक्षाच्छब्दस्य सुनिर्मलः।

प्रकर्षेण नवत्वस्य हेतुत्वात् प्रणवः स्मृतः ॥ (सूतसंहिता-१, २)

३. स्फोटस्याभिन्नकालस्य ध्वनिकालानुपातिनः

ग्रहणोपाधिभेदेन वृत्तिभेदं प्रकाशते।

स्वभावभेदो नित्यत्वे ह्रस्वदीर्घप्लुतादिषु

प्राकृतस्य ध्वनेः कालः शब्दस्येत्युपचर्यतः (वा० प०, १, ३०-३१)

४. शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्तं वृत्तिभेदे तु वैकृताः।

ध्वनयः सप्रोहन्ते स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते। (वा० प०, १, ७७)

होकर नानावर्णों को जन्म देता है जो 'कार्य-नाद' कहलाते हैं (वर्णात्मना-विर्भवति गद्यपद्यादिभेदशः) ।

कुछ शैवागमों में आत्मा से उत्पन्न होने वाली वर्णादि की इस बहुमुखी सृष्टि को एक दूसरे ढंग से भी बतलाया गया है । आत्मा शिव है, उसकी शक्ति का नाम ज्ञान-शक्ति है जो सारी सृष्टि का निमित्त कारण है । शिव और शक्ति मिलकर एक संयुक्त शिव-शक्ति-तत्त्व बनता है जिससे परमेश्वर की परिग्रह-शक्ति या क्रिया-शक्ति का जन्म होता है । परिग्रह-शक्ति बिन्दु कहलाती है और सृष्टि का उपादान कारण है । यह बिन्दु शुद्ध तथा अशुद्ध दो प्रकार का है । शुद्ध बिन्दु के अपर नाम महाबिन्दु तथा महामाया और अशुद्धबिन्दु के बिन्दु एवं माया भी हैं । शक्ति तथा बिन्दु के सम्बन्ध को 'भेदज्ञान' या विकल्प कहते हैं । इसी विकल्प का आश्रय लेकर शिव (आत्मा) शुद्धबिन्दु में क्षोभ उत्पन्न करता है जिसके फलस्वरूप उससे शब्द और अर्थ की दो धारारें चलती हैं । इन दोनों की पृथक्-पृथक् चार अवस्थायें परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी होती हैं । शुद्ध-बिन्दु से होने वाली यह सृष्टि 'शुद्ध सृष्टि' कहलाती है । अशुद्ध बिन्दु भी, इसी प्रकार शिव (आत्मा) द्वारा क्षुब्ध किये जाने पर, अशुद्ध सृष्टि को जन्म देता है और उससे उद्भूत शब्द एवं अर्थ की धारारें भी परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी, इन चार अवस्थाओं में व्यक्त होती हैं । ये दोनों प्रकार की सृष्टियाँ जिसे बिन्दु से उत्पन्न हुई वह 'अचित्' है । अतः इन दोनों को पार करके ही 'चित्' स्वरूप शिव (आत्मा) का साक्षात्कार होता है; ओंकार प्रत्यक्ष हो जाता है ।

वेद का व्याकरण

यह आत्मा अथवा प्रणव (ओंकार) की शक्ति वाक् के अव्याकृता से व्याकृता होने की कथा कही गई है । इसी को एक दूसरे रूप में भी कहा जाता है । आत्मा या ओंकार देव है जो अपने को वेद द्वारा व्यक्त करता है; इसीलिए 'वेदेन देवोऽसि' का मंत्र प्रचलित हुआ । अतः वेद भी वाक् का पर्यायवाची हुआ और जिस प्रकार वाक् के नानारूप ओंकार (अपरप्रणव) से प्रसूत होते हैं (ओंकार एव सर्वा वाक्.....सैषा पूज्यमाना बह्वी भवति), उसी प्रकार 'सभी वाक्' वेद में अनुप्रविष्ट बताई जाती हैं (सर्वाः वाचः वेदमनुप्रविष्टाः) वेद के द्वारा जब आत्मा (पुरुष) व्यक्त होता है, तो सबसे पहले वह 'छन्दस्य' पुरुष होता है; फिर ऋङ्मय, यजुर्मय तथा साममय-नाम से 'त्रिवृत' होता (एष वै छन्दस्यः प्रथमो पुरुषः.....स उ एव एष ऋङ्मयः यजुर्मयः साममयः

वैराजः (पुरुषः) जब प्रसिद्ध पुरुषसूक्त^१ में पुरुष से छन्दस, ऋक्, यजु और साम की सृष्टि हुई बताई जाती है अथवा जब बृहदारण्यक^२ उपनिषद् में आत्मा को 'वाक्' द्वारा छन्द, ऋक्, यजु और साम की सृष्टि (स तथा वाचा तेनात्म-नेदं सर्वमसृजत् यदिदं किं चर्चो यजूषि सामानि छन्दांसि) हुई कही जाती है, तो यही बात अभिप्रेत समझी जानी चाहिए। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उक्त उद्धरणों में 'छन्द' शब्द 'अथर्ववेद' के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि सृष्टि-प्रसंग^३ में ऋक् आदि के साथ अथर्ववेद का ही प्रयोग मिलता है, और इसीलिए हरिवंशपुराण में अथर्ववेद को निश्चित रूप से छन्द कहा गया है:—

ऋचो यजूषि सामानि छन्दस्याथर्वणानि च ।

चत्वारस्तवखिला वेदाः सरहस्यास्सविस्तराः ॥

इस प्रकार वेद की यह चतुर्धा व्याकृति होती है। स्फोटवाद की एक दृष्टि से स्फोटात्मा (पर शब्दब्रह्म) अपनी वाक् (शक्ति) का स्फुरण करके अपर शब्दब्रह्म अथवा वेदबीज, ओंकार को ब्रह्म परमात्मन् के साक्षात् वाचक के रूप में प्रकट करता है जिसके अ, उ, म् तीन वर्ण (जो क्रमशः ऋक्, यजु, साम के प्रतीक हैं) सत्व, रजस्, तमस् नामक गुणों की अर्थवृत्तियों (ज्ञान, क्रिया, इच्छा) तथा अन्तस्थ, ऊष्ण, स्पर्श, दीर्घ, ह्रस्व आदि लक्षण से युक्त समस्त वर्ण-समूह में परिणत हो जाते हैं:—

शृणोति य इमं स्फोटं सुप्ते श्रोत्रे च शून्यदृक् ।

येन वाग् व्यज्यते यस्य व्यक्त्रिराकाश आत्मनः ॥

स्वधाम्ना ब्रह्मणः साक्षाद्वाचकः परमात्मनः ।

स सर्वमन्त्रोपनिषद्वेदबीजं सनातनम् ॥

तस्य ह्यासन् त्रयो वर्णा अकाराद्या भृगूद्वहाः ।

घायन्ते यैस्त्रयो गुणानामर्थवृत्तयः ॥

ततोऽक्षरसामानायमसृजद् भगवान् स्वयम् ।

अन्तस्थोऽमस्वरस्पर्शदीर्घह्रस्वादिलक्षणम् ॥

वेद की इस व्याकृति की तुलना उपर उल्लिखित पूर्वपाणिनीयम् के शब्दार्थसम्बन्ध से वर्ण-पदादिरूप में होने वाले नानारूपात्मक व्याकरण से भली-भांति की जा सकती है। सनत्सुजातीय में 'यज्ञसंतति' के लिये एक वेद की

१. ऋ० १०, ६०, ६

२. १, २, २

३. तु० क०

यस्माद्चो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् ।

सामानि यस्य लोमानि अथर्वीङ्गिरसो मुखम् ॥ (अ० वे० १०, ७, २०)

चतुर्विध व्याकृति (व्यदधात् यज्ञसंतत्यै वेदमेकं चतुर्विधम्) तथा वायुपुराण में एक वेद का चतुर्धा विभाजन (वेदमेकं चतुष्पादं चतुर्धा व्यभजत् प्रभुः) इसी वेद-व्याकरण के अन्य संस्करण हैं जिसका रूपांतर वाक् के चतुर्धा व्याकृत होकर परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी अथवा पराशक्ति, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति और इच्छाशक्ति के रूप में ऊपर प्रस्तुत किया जा चुका है। जिस प्रकार क्रिया, ज्ञान और इच्छा का संयुक्तसूक्ष्मत्रयी रूप परा में है उसी प्रकार ऋक्, यजु और साम की त्रयी का संयुक्त रूप अथर्ववेद में माना जा सकता है; संभवतः इसीलिए अथर्ववेद का प्रतिनिधि ब्रह्मा अन्य तीनों वेदों के ऋत्विजों की अपेक्षा यज्ञ में अधिक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। उक्त त्रयी के संयुक्त सूक्ष्मरूप का प्रतीक होने से, उसमें क्रिया (ऋक्) यजु (ज्ञान) तथा साम (इच्छा)-रूप से हमारे अंगों की सारी सारभूत शक्तियाँ आ जाती हैं ; इसीलिये उसे 'आंगिरस' अर्थात् 'अंगों का रस' कहा जाता है और उसी संयुक्त सूक्ष्मरूप से समस्त निम्नगामिनी (अर्वाक्) नानात्वमयी सृष्टि का प्रारंभ (अथ) होता है, इसलिए उसे 'अथर्वा' (अथ+अर्वाक्) की संज्ञा भी दी जा सकती है। अतः त्रयी के संयुक्त रूप को अथर्वागिरस^२ भी कहा जाता है और चारों वेदों में त्रयी की ही स्थिति स्वीकार की जाती^३ है, परन्तु यह स्थूलत्रयी तो 'अपरा विद्या' है जो ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाली सूक्ष्म 'परा विद्या' से निष्कृष्ट मानी^४ गई है। प्रश्नोपनिषद्^५ का कथन है कि 'शांत, अजर, अमृत, अभय, पर' लोक की प्राप्ति तो ओंकार से होती है, ऋक्, यजु, तथा साम से नहीं। छान्दोग्य^६ उपनिषद् में कहा गया है कि जैसे कोई जल में देख ले, वैसे ही मृत्यु ने देवताओं को ऋक्, यजु तथा साम में देख लिया; देवतालोक यह जानकर ऋक्, यजु तथा साम से ऊपर उठकर 'स्वर' (ओंकार) में चले गये, तो वे मृत्यु की पहुँच के परे पहुँच गये। जो ऋक्, यजु साम अथवा क्रिया, ज्ञान, इच्छा को ही साध्य मान लेता है वह केवल क्षणिक सुख का ही भागी होता है; अतः श्रीमद्भगवद्-

१. देखिये—वैदिक एटिमॉलॉजी में 'अथर्वा'

२. तु० क० यस्मादृचः अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्,
सामानि यस्य लोमानि अथर्वागिरसो मुखम् ॥ १०, ७, २० ॥

३. मु० उ० १, १, ४ ।

४. त्रयीं विद्यामवेक्षेत वेदे सूक्तमथाङ्गतः ।
ऋक्सामवर्णाक्षरता यजुषोऽथर्वणस्तथा । (म० आ० शा० प० २३५)

५. प्र० उ० ५, ५ ।

६. छां० उ० १, ४, २ ।

गीता में केवल इन्हीं को सर्वसाध्य समझनेवाले 'वेदवादरत' लोगों की कड़े शब्दों में आलोचना की गई है और ब्रह्म-ज्ञानी के लिए इन वेदों (क्रिया आदि के प्रतीक ऋक् आदि) को निरर्थक कहा गया है:—

यावानर्थं उदपाने सवंतः संजुतोदके ।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥

पूर्वपाणिनीयम् का रहस्य

अतः स्पष्ट है कि जिस शब्दानुशासन को पूर्वपाणिनीयम् की संज्ञा दी गई है उसी का रूपांतर इन्द्र द्वारा वाक् की व्याकृति किये जाने की कथा में है और उसी को वेद-विभाजन अथवा व्याकरण भी कहा जा सकता है। इसका सारांश है—अव्यक्त आत्मा की प्राकृता वाक् का व्याकृता होना, नित्य और एक शब्द का अनित्य वर्णों और पदों की एकादशी-अनेकता में विभक्त होना। ऐतरेय उपनिषद्^१ में इसी बात को प्रकारान्तर से इस प्रकार व्यक्त किया गया है:—

कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे, कतरः स आत्मा ? येन वा पश्यति, येन वा शृणोति, येन वा गंधानाजिघ्रति, येन वा वाच्यं व्याकरोति, येन वा स्वादु चाऽस्वादु च विजानाति, यदेतद् हृदयं मनश्चैतत् संज्ञानम्, आज्ञानं, विज्ञानं, प्रज्ञानं, मेधा, दृष्टिः, धृतिः, मतिः, मनीषा, जूतिः, स्मृतिः, संकल्पः, ऋतुः, असुः, कामः, वशः इति सर्वाणि एतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति ।

एष ब्रह्म एष इन्द्र एष प्रजापतिः

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि प्रज्ञानस्वरूप आत्मा ही पांचों ज्ञानेन्द्रियों, हृदय, मन तथा वाक् द्वारा अपने 'वाच्य' को 'व्याकृत' करने वाला ब्रह्म, इन्द्र अथवा प्रजापति कहलाता है और संभवतः ऋक्तंत्रोक्त^२ ब्राह्म, ऐन्द्र तथा प्राजापत्य व्याकरण इसी वाक् या प्रज्ञान व्याकृति की ओर संकेत करते हैं। ब्राह्मणों और उपनिषदों में बृहस्पति^३ की व्युत्पत्ति करते हुये भी उसे वाक् का पति तथा

१. ऐ० उ० २, २ ।

२. ब्राह्मिशासनमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम् ।
त्वाण्ड्रमापिषालं चेति पाणिनीयमथाष्टमम् ॥

३. वाग्वं त्वष्टा वाग्धीदं सर्वं त्वाण्डीव (ऐ ब्रा० २, ४); त० क० इन्द्रो वै त्वष्टा (ऐ० ब्रा० ६, १०; ऋ. १, १२, ९)

ब्रह्म^१ वताया जाता है और त्वष्टा^२ को तो स्वयं वाक् या इंद्र ही कहा जाता है; ऐसी स्थिति में ऋक्तंत्रोक्त आठ व्याकरणों में से बार्हस्पत्य एवं त्वाष्ट्र व्याकरण का तात्पर्य भी उक्त 'वाक्-व्याकृति' ही प्रतीत होता है। जैसा कि उक्त उद्धरण से प्रकट है, यह सारी वाक्-व्याकृति अक्षरों या वर्णों की उत्पत्ति से आगे नहीं बढ़ती, क्योंकि यही 'प्रज्ञान' की अभिव्यक्ति है; इसके आगे वर्णों से पदों (पदानि वर्णभ्यः) की सृष्टि हो जाती है, जो प्रज्ञान की परिधि से बाहर स्थूल ध्वनि के क्षेत्र की घटना है। अपिशलि का 'अक्षरतंत्र' और ईशान या महेश्वर के प्रसिद्ध माहेश्वरसूत्र भी अक्षरों या वर्णों की व्याकृति की ओर ही संकेत करते प्रतीत होते हैं; अतः ऋक्तन्त्र के अपिशलि एवं ऐशान व्याकरण भी उक्त उसी प्रज्ञान अथवा वाक् की व्याकृति के क्षेत्र में आते हैं, जिसका संबन्ध ब्रह्म, इंद्र, बृहस्पति तथा प्रजापति से बतलाया गया है; इस प्रकार ऋक्तंत्रोक्त आठ व्याकरणों में से सात केवल उक्त उसी वाक्-व्याकृति के आध्यात्मिक तथ्यों को सूचित करते हैं, जिसे 'पूर्वपाणिनीयम्' में शब्दानुशासन कहा गया है। अब केवल आठवाँ व्याकरण जिसे ऋक्तंत्र में 'पाणिनीय' कहा गया अवशिष्ट रहता है:—

ब्राह्मं ज्ञानमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम् ।

त्वाष्ट्रमापिशलिं चेति पाणिनीयमथाष्टमम् ॥

पाणिनीयम् का पाणिनीयत्व

इस अष्टम व्याकरण को पूर्वपाणिनीयम् से बाहर मानने का कारण संभवतः यह है कि पूर्वपाणिनीयम् के अन्तर्गत केवल वर्ण-पर्यन्त वाक्-व्याकृति-मानी जाती थी और वर्णों से उद्भूत पदों और वाक्यों की मीमांसा को पाणिनीय व्याकरण माना जाता था। इसका संकेत पूर्वपाणिनीयम् के अन्तिम दो सूत्रों में स्पष्ट है, जब कि 'पदानि^३ वर्णभ्यः' कहते ही तुरंत 'ते प्राक्^४' कह कर वर्णों को पूर्वपाणिनीय नित्यक्षेत्र का स्वीकार कर 'पदानि' को उस क्षेत्र से बाहर

१. वाग्वै बृहती बृहत्यै पतिस्तस्माद् बृहस्पतिः (शं ब्रा० १४, ४, १, २३, जै० उ०-२, २।

२. ब्रह्म वै बृहस्पतिः ऐ० ब्रा० १, १३, १, १६; २, ३८; ४, ११; कौ० ब्रा० ७, १०; १२, ८; १८, २; शं ब्रा० ३, १, ४, १५; ३, ६, १, ११ इत्यादि।

३. पू० पा० २३।

४. वही २४।

अनित्य^१ एवं लौकिक^२ 'व्याकरण'^३ का विषय माना गया है ।

यहाँ पाणिनि-शब्द की व्युत्पत्ति की ओर एक स्वाभाविक संकेत दिखाई पड़ता है । श्रीयुधिष्ठिर^४ मीमांसक ने पाणिनि-शब्द पर विचार करते हुये, पाणिनीय-शिक्षा के याजुषं पाठ में उपलब्ध 'पाणिनेय' नाम का उल्लेख किया है । पूर्वपाणिनीयम् के क्षेत्र की उपर्युक्त आभ्यंतरिकता के विपरीत, पदादि की मीमांसा में स्वतः प्राप्त बाह्यता को देखते हुये पाणिनेय शब्द सार्थक प्रतीत होता है । संस्कृत में पाणि का अर्थ प्रायः हाथ होता है, और दूसरा अर्थ (जो प्रयोग में प्रायः नहीं मिलता) 'बाजार' है । जो हाथ से किया जाता है वह मनुष्यकृत है, कृत्रिम है; अतः पदों आदि की मीमांसा मनुष्यकृत या कृत्रिम होने से पाणिनेय (हस्तकार्य) कहला ही सकती है, जबकि परा, पश्यन्ती तथा मध्यमा के रूप में व्याकृत होती हुई प्राण से संयुक्त होकर स्थानप्रयत्न के संयोग से वर्णोत्पत्ति तक की व्याकृति को स्वभाव-नेय कहा जा सकता है । यदि पाणि को बाजार के अर्थ में ग्रहण करें, तो पाणि को एक 'व्यवहारभूमि' मानना पड़ेगा जहाँ विविध लोगों के बीच सम्पर्क होने से भाषा के व्याकरण की आवश्यकता पड़ती है ; अतः व्याकरण को पाणि (बाजार) द्वारा जन्य माना जा सकता है । पाणिनेय (पाणिनीय) व्याकरण वह व्याकरण है जो स्वभावजन्य के विपरीत मनुष्यजन्य अथवा जन-सम्पर्कजन्य है । इसका अभिप्राय यह नहीं कि पाणिनि नाम का कोई वैयाकरण नहीं, परन्तु यह सम्भव है कि उसका अपना नाम कुछ और ही हो, परन्तु 'पाणिनेय' व्याकरण का सफल आचार्य होने के कारण उसको 'पाणिनेय' उपाधि मिली हो, जो कालान्तर में पाणिनि-रूप में बदल गई हो ।

पूर्वपाणिनीयता

अस्तु, इसमें कोई संदेह नहीं कि पाणिनीय-व्याकरण के आठ अध्यायों में सुबन्त और तिङन्त पदों की जो विस्तृत रचनाविधि दी गई है वह मनुष्य के कृतित्व का महान् चमत्कार है, लेकिन वर्ण-ध्वनियों द्वारा पदों के अस्तित्व में आने से पूर्व मन, प्राण तथा उच्चारण के स्थान और प्रयत्न के माध्यम से आत्मा की शक्ति (वाक्^५), जिन वर्णों के रूप में व्याकृत होती है, वह मनुष्य के आभ्यं-

१. पू०पा०—१७-१८ ।

२. वही १६ ।

३. वही २० ।

४. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृ० १७५-१७६ ।

५. जिसे पूर्व-पाणिनीयम् में 'शब्दो घर्मः' कहा है (पू० पा० २) ।

तरिक व्यक्तित्व का महत्तर चमत्कार है। इस आभ्यन्तरिक वाक्-व्याकृति से बाह्य व्याकृति तक की सीमांसा हमें सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होती है, जहाँ व्याकृति विविध अवस्थाओं की दृष्टि से वाक् को कद्रीची, पराची, सधीची एवं विपूची संज्ञा^१ दी गई है और एक सुन्दर रूप द्वारा उसे एकपदी से नवपदी तथा एकाक्षरा से सहस्राक्षरा-रूप में व्याकृत होता हुआ दिखाया गया^२ है। उपनिषदों और ब्राह्मणों में इसी के संयोग से अवर्ण आत्मा बहुवर्ण^३ अथवा 'सर्व' रूप में वाङ्-मय^४ होने वाला है।

सर्व और सर्वज्ञ

आत्मा का उक्त बहुवर्ण अथवा सर्वरूप वाङ्मय और व्याकृत होते हुए भी 'अनिरुक्त'^५ और अक्षय्य^६ होता है। इस वाङ्मय-रूप का वाचक 'सर्वम्' नपुंसकलिङ्गी है, जबकि इसमें व्याप्त आत्मा का अवाङ्मय-रूप 'सर्वः'^७ पुलिङ्गी है और सर्वज्योति^८ परमयज्ञ^९ कहलाता है। इसी सर्वः सर्वज्योति को अन्यत्र सर्वजित^{१०} की संज्ञा दी गई है और इसी को संभवतः चन्द्रगोमि ने सर्वज्ञ सिद्ध तथा उक्त सर्व को सर्वीयं गुरुं कह कर नमस्कार किया है—

सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं जगतो गुरुम् ।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्वोक्त पूर्वपाणिनीयम् में भी 'सिद्ध'^{११} और 'सर्व'^{१२} नाम से शब्द को पृथक्-पृथक् दो रूपों में देखा है। जब चन्द्रगोमि ने

१. ऋ० वे० १, १६४, १७ इत्यादि तु० क० वै० द०, पृष्ठ ५१-६८ ।

२. ऋ० वे० १, १६४, ३६-४१ ।

३. एकोऽवर्णः बहुधा शक्तियोगात् (इवे० उ० ४, १) ।

४. तत्सर्वं आत्मा वाचमप्येति वाङ्मयो भवति कौ० ब्रा० २, ७ तु० क० श० ब्रा० ८, ७, २, ११ ।

५. सर्वं वा अनिरुक्तम् (श० ब्रा० १, ३, ५, १०; १, ४, १, २१; २, २, १, ३,; ७, २, २, १४; १०, १, ३, ११; १२, ४, २, १) ।

६. सर्वं वाऽअक्षय्यम् (श० ब्रा० १, ६, १, १६; ११, १, २, १२) ।

७. श० ब्रा० (६, १, ३, १८; ६, १, ३, ११) ।

८. तां ब्रा० (१६, ६, १) ।

९. वही (१६, ६, २) ।

१०. वही (१६, ७, २; २२, ८, ४) ।

११. सर्वो धर्मः...-सिद्धः ।

१२. सर्वः शब्दः नित्यः ।

सिद्ध और सर्वोच्च को नमस्कार करने से पूर्व नमः वागीश्वराय लिखा, तो संभवतः शब्द-ब्रह्म का कोई तृतीय रूप भी अभिप्रेत था जिसमें उक्त दोनों रूपों का समावेश होता हो। इसकी तुलना श्वे० उ० के उस अग्र्य पुरुष से कर सकते हैं जो सब का वेत्ता है परन्तु उसका वेत्ता कोई नहीं है (स वेत्ति वेद्यं न च तस्या-स्ति वेत्ता); वही सर्वात्मा तथा सर्वगत होकर भी नित्य है—

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात् ।

जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम् ॥

कात्यायनसूत्र

आत्मा अपने चरम सत् रूप में अनिर्वचनीय होने से वेद में कः (पुंलिंग) अथवा कत् (नपुंसकलिंग) कहलाता है ; इस अवस्था में उसकी शक्ति अथवा वाक् उसी में लीन होने से कद्रीची कही जाती है, क्योंकि इस रूप में यह कह सकना कठिन है कि वाक् कहाँ गई (सा कद्रीची कस्विदर्थं परागात्, ऋ० वे० १, १६४, १७); उक्त कत् के प्रथम (कारण) व्यक्त रूप को कात्य तथा द्वितीय (सूक्ष्म) व्यक्त रूप को कात्यायन कहा जा सकता है। कारणशरीर एवं सूक्ष्म-शरीर में व्यक्त होने वाले वाक्-संयुक्त आत्मा की अभिव्यक्ति को ही अवर्ण से नानावर्ण में रूपांतरित होने वाला कहा गया है और यही उक्त पूर्वपाणिनीयम् का विषय है। अतः इसी विषय को कात्यायन तथा पूर्वपाणिनीयम् के सूत्रों को कात्यायनसूत्र कहना सर्वथा युक्तियुक्त है।

कात्यायन और पाणिनेय

इस दृष्टि से पूर्वोक्त कात्यायन एवं पाणिनि का संघर्ष एक प्रतीक आख्यान के रूप में ही लिया जा सकता है। मनुष्य के अभिव्यक्तिशील व्यक्तित्व को वेद में प्रायः वृषभ या वृषन् इन्द्र के रूप में देखा गया है और इस अभिव्यक्ति को आधारभूता वाक् के व्यापार को वर्षा के रूपक^१ द्वारा चित्रित किया गया है। अतएव इस रूप में मानव को वर्ष ऋषि तथा उसकी सूक्ष्म एवं स्थूल अभिव्यक्तियों को क्रमशः कात्यायन एवं पाणिनेय कहा जा सकता है। स्थूल अभिव्यक्ति में जब सुबन्तों और तिडन्तों की सृष्टि होने लगती है, तो स्वतः सूक्ष्म अभिव्यक्ति का पर्यवसान ही तो स्थूल पदादि की अभिव्यक्ति में होता है। अतएव कात्यायन एवं पूर्वपाणिनेय शब्दों द्वारा एक ही मानवशक्ति की क्रमशः सूक्ष्म एवं स्थूल

अभिव्यक्तियों का विवेचन उसी प्रकार अभिप्रेत है जिस प्रकार दूसरी दृष्टि से क्रमशः पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा में। अतः काशिका ६, २, १०४ में उल्लिखित पूर्वपाणिनीयं शास्त्रम् तथा हरदत्त द्वारा उसे "पाणिनीयशास्त्रं पूर्व-चिरन्तनम्" कहा जाना इसी सूक्ष्म अभिव्यक्ति की ओर संकेत करता प्रतीत होता है।

पूर्वसूत्र - परम्परा

उक्त पूर्वपाणिनेय अथवा कात्यायन की सूक्ष्म व्याकृति की एक निश्चित परम्परा रही प्रतीत होती है, जिसके पारिभाषिक शब्द पाणिनेय-परम्परा से कुछ भिन्न माने जाते थे। पतंजलि के महाभाष्य में भी जहाँ-जहाँ पूर्वसूत्र का उल्लेख है वहाँ-वहाँ इसी प्रकार की भिन्नता के दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिये उसके अनुसार पूर्वसूत्र-परम्परा में वर्ण की अक्षर^१, तथा गोत्र^२ की वृद्ध-संज्ञा होती है। पतंजलि द्वारा प्रयुक्त 'पूर्वसूत्र' शब्द के निम्नलिखित प्रयोग भी सम्भवतः इसी दृष्टि से समझे जा सकते हैं—

पूर्वसूत्रनिर्देशो वापिशलमधीत इति । पूर्वसूत्रनिर्देशो पुनरयं द्रष्टव्यः । सूत्रे-
प्रधानस्योपसर्जनमिति संज्ञा क्रियते (४, ४, १४)

पूर्वसूत्रनिर्देशश्च । चित्त्वान् चित इति (६, १, १६३)

अथवा पूर्वसूत्रनिर्देशोऽयं पूर्वसूत्रेषु च येऽनुबन्धा न तैरिहेतुकार्याणि क्रियन्ते
(७, १, १८)

पूर्वसूत्रनिर्देशश्च (८, ४, ७)

निर्देशोऽयं पूर्वसूत्रेण वा स्यात् (७, १, १८)

शिक्षा, प्रातिशाख्य तथा निरुक्त

प्रारंभ में उक्त पूर्वपाणिनीयसूत्र-परंपरा का क्षेत्र सूक्ष्मवाक् की वर्णों या अक्षरों में व्याकृति तथा उनकी घनियों तक ही सीमित रहा प्रतीत होता है। अतः शिक्षा एवं प्रातिशाख्यों की छन्दोबद्ध रचनाएँ इसी परंपरा में मानी जा सकती हैं। जैसा कि पूर्वपाणिनीयम् के "वर्णभ्यः पदानि" तथा 'ते प्राक्' सूत्रों से पता चलता है, वर्णों की व्याकृतिमात्र ही इस परंपरा का क्षेत्र होते हुये भी, किसी सीमा तक पदों को भी इसके क्षेत्र में घसीटने का प्रयत्न किया जाता था।

१. म० मा० १, १, २।

२. म० मा० १, २, ६८।

संभवतः यह अतिक्रमण प्रारंभ में पदों के संकलन तथा वर्गीकरण तक ही सीमित रहा हो और निघंटु, पुष्पसूत्र, फिट्सूत्र आदि की रचना इसी परंपरा में हुई हो। जैसा कि पहले निर्देश हो चुका है, सूक्ष्मवाक् की व्याकृति ही इंद्र का व्याकरण है, अतः कोई आश्चर्य नहीं कि परंपरा में ऐन्द्रव्याकरण वर्णसमूह^१ और अधिक से अधिक पदसमष्टि^२ से संबद्ध माना जाय। परन्तु पदसमूह के संकलन तथा वर्गीकरण के साथ ही उनके निर्वचन के प्रति जिज्ञासा होना स्वाभाविक है; अतः निरुक्त का आविर्भाव हुआ और उसके परिणामस्वरूप हुई शब्द की धातु-जिज्ञासा।

काशकृत्स्न - व्याकरण

अतः अब प्राचीन सूक्ष्मवाक् की वर्णों में व्याकृतिमात्र को अथवा कुछ आगे बढ़ कर वर्णसमूह से बने पदों के संकलनमात्र को व्याकरण मानना पर्याप्त नहीं था। वर्ण और पदों की अभिव्यक्ति तो वाक् की आंशिक अभिव्यक्ति (काश, प्रकाश) है; उसके आगे पदों के मूल में स्थित धातु और प्रत्यय की व्याकृति को व्याकरण के क्षेत्र में लिए बिना वाक् की अभिव्यक्ति (काश) में कृत्स्नता सम्भव नहीं थी। अतः वर्ण, पद एवं धातु-प्रत्यय के समावेश से ही व्याकरण को संभवतः त्रिकं काशकृत्स्नम्^३ या काशकृत्स्नीयम्^४ की संज्ञा प्राप्त हुई। पं० युधिष्ठिर मीमांसक^५ का मत है कि काशकृत्स्न-व्याकरण को पहले काशकृत्स्न-तंत्र कहते थे और उसी का संक्षिप्त नाम 'कातंत्र' है जो मूलतः^६ तीन अध्यायों वाला ही था।

काशकृत्स्नं गुरुलाघवम्

अस्तु व्याकरण के काशकृत्स्न होने पर उसके विकास का क्षेत्र खुल गया। अब उसमें व्याकरण की लघुता और गुरुता, सूक्ष्मता और स्थूलता दोनों का

१. पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा उद्धृत चरकव्याख्या—

शास्त्रेष्वपि अथ वर्णसमूह इति ऐन्द्रव्याकरणस्य। (सं० व्या० इ० पू० ८६)

२. तु० क०—नैकं पदजातम् यथा अर्थः पदम् इत्यन्द्राणाम्।

(दुर्गः-निरुक्तवृत्ति, पू० १०; सं० व्या० ३०, पू० ८६)

३. काशिका ५, १, ५८।

४. शाकटायन, अमोघावृत्ति ३, २, १६१।

५. सं० व्या० इ० (द्वि० सं०) पू० ५०४-५०५।

६. वही, पू० ११७।

समावेश हो सकता था। इंद्र द्वारा सूक्ष्मवाक् की व्याकृति का उल्लेख हो चुका है; इसी के एक लघुरूप का उल्लेख वा० सं० १६, ७७ में है जहाँ प्रजापति^१ को सत्य एवं अनृत का व्याकरण करने वाला कहा गया है और इसी के अन्य रूप का निरूपण वाक् के एकपदी से नवपदी अथवा एकाक्षरा से सहस्राक्षरा होने में देखा^२ जा सकता है। शिक्षा, प्रातिशाख्य और निरुक्त में इसी लघुरूप की स्थूलतम अवस्था मानी जा सकती है, परन्तु जब धातु, प्रातिपदिक, नामाख्यात के साथ-साथ लिङ्ग, वचन, विभक्ति, प्रत्यय, उपसर्ग, निपात, विकार आदि पारिभाषिक^३ शब्दों का उल्लेख होने लगा तो निस्संदेह व्याकरण की उक्त लघुता पूर्णतया गुरुता में बदल गई और उसका विषय वर्णों की उत्पत्ति अथवा पदों की साधारण व्युत्पत्ति तक सीमित न रहकर वाक्य में विभिन्न शब्दों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित अनेक नियमों की सृष्टि होने लगी। अतः कोई भी ग्रंथकार यदि सम्पूर्ण (कृत्स्न) व्याकरण को लिखने का दावा करे, तो उसे विषय के लघु और गुरु, सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों पहलुओं को लेना पड़ेगा। अतः काशकृत्स्न-व्याकरण के गुरुलाघवम् का यही रहस्य प्रतीत होता है।

चान्द्र-व्याकरण की लघुता और सम्पूर्णता

चान्द्र-व्याकरण के रचयिता ने भी अपने 'शब्दलक्षण' को लघु एवं संपूर्ण कह कर सम्भवतः इसी अभिप्राय को व्यक्त किया है। यद्यपि पूर्वोल्लिखित मीमांसकजी का अनुमान भी पूर्णतया युक्तियुक्त है, परन्तु शिवसूत्र, वर्णसूत्र, धातुपाठ तथा उणादि के द्वारा यदि चन्द्रगोमि ने व्याकरण के लाघव को साधा है, तो शुद्ध व्याकरण के छः अध्यायों में उसके गौरव का भी निर्वाह हुआ है। इस दृष्टि से पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी किसी सीमा तक 'गुरुलाघवम्' का समावेश है, परन्तु उसमें जिन नई संज्ञाओं और पारिभाषिक शब्दों का प्रवेश हुआ है और जिस नई वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया गया है उसके व्याख्यास्वरूप निमित्त विशाल व्याकरण-साहित्य ने उक्त 'लघु' पक्ष को गौण ही नहीं, विस्मृत ही कर दिया। अष्टाध्यायी के 'गुरु' पक्ष में प्रविष्ट उक्त वैज्ञानिकता ने जहाँ उसे यथार्थतः पाणिनेय (पाणिशाध्य अथवा कृत्त्रिम) बना दिया, वहाँ अपने 'लघु' पक्ष को पाणिनेय से विपरीत 'अनुमेय' बनाकर व्याकरण दर्शन की गोद

१. दृष्ट्वा रूपे सत्यावृत्ते व्याकरोत् प्रजापतिः ।

२. ऋ० वे०—१, १६४ ।

३. गो० ब्रा०—१, २४ ।

में जा बिठाया । यह होना विकास की दृष्टि से स्वाभाविक ही नहीं, आवश्यक था ।

पाणिनि की ऐतिहासिकता

उक्त विवेचन से यह कदापि अभिप्रेत नहीं कि पाणिनि-नाम का कोई व्यक्ति ही नहीं हुआ । यद्यपि अष्टाध्यायी के कर्त्ता को पाणिन, पाणिनि, दाक्षी-पुत्र, शालङ्कि, शालातुरीय, आहिक तथा पणिपुत्र कहा गया है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका लोक-प्रचलित नाम 'पाणिनि' ही था और संभवतः जब पाणिनीय-साहित्य की विशालता और गुरुता में व्याकरण के 'लघु' पक्ष को तिरोहित-सा होता हुआ पाया गया, तो उसे 'पूर्वपाणिनीय' नाम दे कर पृथक् विषय बनाने का प्रयत्न किया गया और पाणिनीय-साहित्य की नवीनता, वैज्ञानिकता एवं कृत्रिमता को ध्यान में रख कर उक्त 'पूर्वपाणिनीय' के विपरीत उसे विनोद के लिये पाणिनीय के स्थान पर पाणिनेय कहा गया हो ।

चन्द्रगोमि और बौद्धधर्म

चन्द्रगोमि को विद्वानों ने प्रायः बौद्धमतावलम्बी माना है । इसका प्रथम आधार चान्द्रव्याकरण के प्रारम्भ में उपलब्ध श्लोक है जिसमें सिद्ध और सर्वीय गुरु को नमस्कार किया गया है । जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, सिद्ध और सर्व-शब्दों का प्रयोग वैदिक परंपरा में भी प्राप्त है और उनको 'नमः वागीश्वराय' के संदर्भ में वैदिक ही समझना चाहिए । दूसरा आधार यह है कि चान्द्रव्याकरण में स्वर और वैदिक व्याकरण का अभाव है । इस प्रसंग में पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने प्रमाण दे कर बताया है कि चान्द्रव्याकरण में उक्त दोनों विषयों का भी समावेश अवश्य था, क्योंकि चान्द्रवृत्ति १, १, १०८ में 'स्वरं वक्ष्यामः' तथा सूत्र ३, ४, ६८ में 'स्वरं तु वक्ष्यामः' आदि कई स्थानों पर वैदिक स्वरविधान करने की प्रतिज्ञा प्राप्त होती है और इसकी आवश्यकता तभी पड़ती जब वैदिक शब्दों की रचना का भी समावेश होता । इससे स्पष्ट है कि चान्द्रव्याकरण में किसी समय वैदिक व्याकरण का भी समावेश अवश्य था ।

चन्द्रगोमि के बौद्ध होने का एक अन्य प्रमाण चान्द्रव्याकरण के अन्त में उपलब्ध 'शुभमस्तु सर्वजगताम्' आशीर्वाद वाक्य भी है, परन्तु इस प्रकार की

१. डॉ० वेल्वेल्कर—सिस्टम आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ५६; ए० के० दे० इंडि० हि० क्वा० जून १९३८, पृ० २५८ ।

मंगल कामना पर एकमात्र बौद्ध-धर्म का ही आधिपत्य मानने के लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं है। किसी ग्रंथ के अंत में 'शुभमस्तु' लिखने की परिपाटी तो अब तक चली आती है और प्रायः धर्मनिरपेक्ष ही मानी जा सकती है। उदाहरण के लिए आत्रेय-संहिता आदि अनेक ग्रंथों का उल्लेख किया जा सकता है।

—फतहसिंह
एम०ए०, बी०लिट०

प्रास्ताविक

इस छोटे से प्रास्ताविक में दो-तीन मुद्दों पर लिखने का विचार है ।

- (१) मुख्य व्याकरणों का संक्षिप्त परिचय और चान्द्रव्याकरण के सम्पादन का वृत्तान्त ।
- (२) प्रकाशित चान्द्रव्याकरण की सम्पादन-शैली का परिचय ।
- (३) चान्द्रव्याकरण के कर्त्ता का परिचय ।

महाभाष्यकार श्रीपतंजलिमुनि ने जिस भाषा को 'लौकिक-भाषा' का नाम दिया है, ऐसी संस्कृत-भाषा के अनेकानेक छोटे-मोटे व्याकरण हमारे देश में और विदेशों में भी पूर्व में बने हैं और आज भी बनते जा रहे हैं । इन सब में निम्न आठ व्याकरण प्रधान गिने जाते हैं ।

"इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः ॥

पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्ट दिशाब्दिकाः ॥"

अर्थात् इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, अपिशलि, शाकटायन, पाणिनि, अमर और जैनेन्द्र ये आठ आदिशाब्दिक माने जाते हैं ।

इस श्लोक में बताए हुए आदिशाब्दिकों के निर्देश में किसी प्रकार का कालक्रम या छोटे बड़े की कल्पना नहीं रखी गई है, परन्तु मात्र गणना करने का ही आशय रहा है ।

आदिशाब्दिक—सर्वप्रथम व्याकरण की रचना करने वाले आद्यवैयाकरणों में प्रथम स्थान 'इन्द्र' का आता है । इन्द्र-नाम के उस महापण्डित द्वारा बनाया गया व्याकरण 'ऐन्द्र' नाम से प्रसिद्ध हुआ । आज यह व्याकरण उपलब्ध नहीं है, पर प्राचीनतम पाणिनीय व्याकरण के महाभाष्य में इसका नाम-निर्देशमात्र पाया जाता है । 'ऐन्द्र' व्याकरण इतना प्राचीन है कि इसके सम्बन्ध में अनेक किवदन्तियाँ चल पड़ी हैं । जैन-सम्प्रदाय के अनुयायी प्राचीन पण्डित कहते हैं कि जब भगवान् महावीर लेखशाला (पाठशाला) में प्रथम पढ़ने बैठे तब स्वर्ग में से 'इन्द्र' भगवान् के पास आया और उनके साथ शब्दशास्त्र के सम्बन्ध में जो चर्चा भगवान् ने की उसका नाम ऐन्द्र व्याकरण हुआ । ऐसी दंतकथा श्वेताम्बर-जैनपरम्परा में बहुत समय से चली आती है ।

वास्तव में 'इन्द्र' नाम का कोई विद्वान् इस व्याकरण का कर्त्ता था । स्वर्ग

में बसने वाले वज्रपाणि पुरन्दर शक्र का भी एक नाम 'इन्द्र' है, नामसाम्य पर उपर्युक्त किंवदन्ती प्रचलित होगई हो, यह स्वाभाविक है ।

'चन्द्रगोमी' नाम के बौद्ध महापण्डित ने जो व्याकरण लिखा वह 'चान्द्र-व्याकरण' कहलाता है । प्रस्तुत प्रकाश्यमान यही व्याकरण है ।

'काशकृत्स्न' और 'अपिशलि' इन दो नामों का निर्देशमात्र पाणिनीय-व्याकरण के मूलसूत्रों में कहीं-कहीं मिलता है तथा अन्य व्याकरणकारों ने भी नामस्मरण करके इनके मत का उल्लेख किया है । इससे मालूम होता है कि ये महानुभाव अवश्य ही कोई विशिष्ट वैयाकरण हो गये हैं, बाकी वर्तमान में इनके व्याकरणों की उपलब्धि आज तक तो नहीं हुई है ।

शाकटायन-नाम का निर्देश भी पाणिनि के सूत्रों में मिलता है । ये कोई वेदानुयायी प्राचीन वैयाकरण हैं । एक जैन शाकटायन भी हुए हैं, परन्तु वे तो अर्वाचीन हैं । नामसाम्य से जैन-धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने के लिये 'शाकटायन' का नाम लिया जाता है, पर यह भ्रम है और इतिहास ने इस भ्रम का परिमार्जन भी कर दिया है ।

पाणिनिकृत अष्टाध्यायी-सूत्रपाठ प्रसिद्ध व्याकरण है । इसके ऊपर पातञ्जलमहाभाष्य, वाक्यपदीय, काशिका, शब्देन्दुशेखर, सिद्धांतकौमुदी, मंजूषा तथा वैयाकरणभूषण इत्यादि अनेकानेक विवेचनात्मक ग्रंथ बने हुए हैं ।

अमरसिंह-नामक बौद्धपण्डित का बनाया हुआ कोशों में सबसे प्राचीन 'अमरकोश' तो आज भी प्राप्त है । इस पर भी अनेकानेक संस्कृत-टीकायें बनी हुई हैं तथा देश-भाषा में भी इसकी टीकायें प्राप्त हैं । सारे भारत में इस कोश का अच्छा प्रचार है । कोश भी व्याकरण का एक अंग ही है । बाकी, इनका बनाया हुआ कोई व्याकरण उपलब्ध नहीं है ।

जैनेन्द्र-आचार्य देवनन्दिमुनि अथवा पूज्यपादस्वामी के बनाये हुये व्याकरण का नाम जैनेन्द्र-व्याकरण है । जैन-परम्परा में इससे पूर्व का कोई संस्कृत-व्याकरण उपलब्ध नहीं है । जैन-परम्परा की अपेक्षा ये आदिशाब्दिक ही हैं । इनकी रचना पाणिनीय व्याकरण की पद्धति पर की गई है और इसकी संज्ञायें बड़ी अटपटी हैं ।

इन आठों व्याकरणों का निर्देश कालक्रम से इस प्रकार हो सकता है—

ऐन्द्र, काशकृत्स्न, अपिशलि, शाकटायन, पाणिनीय, चान्द्र, जैनेन्द्र, अमर ।

प्रस्तुत चान्द्रव्याकरण भारत देश में ही बना है पर कहाँ बना, इसका पता नहीं । भारतीय होने पर भी चान्द्रव्याकरण का प्रथम प्रकाशन भारत में न

होकर जर्मनी में हुआ, यह हमारी विद्योपासना या विद्याप्रियता कितनी है, इसके मापदण्ड का सूचक है। जर्मनी में महापण्डित ब्राउनो लाइबिच (Bruno Liebich) ने लिपजिग शहर से चान्द्रव्याकरण को सर्वप्रथम प्रकाशित किया। सूत्र और वृत्तिसहित संपूर्णरूप से रोमनलिपि में यह व्याकरण उपलब्ध कराने का श्रेय महापण्डित ब्राउनो को ही मिला है। मेरे इस सम्पादन का मुख्य आधार वही रोमनलिपि में मुद्रित जर्मन-आवृत्ति है। अतः इस कार्य के लिये महापण्डित ब्राउनो का मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ।

हमारे स्नेहास्पद एवं श्रद्धेय आचार्य श्रीजिनविजयजी पुरातत्व के तो प्रकाण्ड पण्डित हैं ही, तदुपरांत उसके अनुसन्धान में पुरातत्वविद्या की अनेकानेक उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशन के भी उत्कट प्रेमी हैं और दुर्लभ, अलभ्य प्राचीन ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का भी उनका अत्युत्कट प्रयत्न रहता है। उनका सम्पूर्ण जीवन ही इसी प्रवृत्ति में व्यतीत हुआ है। उमर लगभग अस्सी के आसपास है, आँखें भी बहुत कमजोर हैं, शरीर भी काम देने से इन्कार कर रहा है तो भी दृढसंकल्पी आचार्यश्री अपने प्रियकार्य से रुकते नहीं हैं। मेरा और उनका परिचय १९२० ई. से पहले का है। तबसे मैं आज तक देख रहा हूँ कि लगातार अविरत भाव से उनकी प्रवृत्ति में पूर्णविराम तो नहीं ही है, पर अर्द्धविराम और अल्पविराम तक मैंने नहीं देखा। उनकी यह प्रवृत्ति भारत ही नहीं भारत से बाहर भी सुविश्रुत है। उन्होंने आज तक 'सिधी-जैन-ग्रन्थमाला' में और 'राजस्थान-पुरातन-ग्रन्थमाला' में सैंकड़ों ग्रन्थ प्रकाशित कर दिये हैं। और आज भी यह कार्य चल ही रहा है। वे खुद ग्रन्थों का संशोधन-संपादन करते हैं तथा तत्तद्विषय के साक्षरों द्वारा भी यह कार्य कराते हैं। उनके मन में खयाल हुआ कि चान्द्रव्याकरण भारतीय ग्रन्थ है, उसके विधाता भी भारतीय ही हैं, फिर भी यह ग्रन्थ रोमनलिपि में सर्वप्रथम जर्मनी में प्रकाशित हो गया। भारत में इसका नाम केवल "इन्द्रश्चन्द्रः" वाले श्लोक में ही देखा जाता है, पर इस ग्रन्थ का न किसी ने संशोधन-सम्पादन किया और न प्रकाशन ही किया। यह भारी लज्जा की बात है। इस शर्म को दूर करने के लिये उन्होंने निश्चय किया कि 'राजस्थान-पुरातन-ग्रन्थमाला' में इसको स्थान दिया जाय और प्रारंभ में इसके मूल सूत्रपाठ को ही प्रकाशित किया जाय।

मेरी रुचि व्युत्पत्तिविद्या में होने से वे जानते थे कि व्याकरणशास्त्र के सम्पादन और संशोधन में भी मेरी विशेष प्रीति है, अतः यह कार्य उन्होंने मुझे सौंपा। मैंने बड़े रस के साथ इसका संशोधन और सम्पादन कर दिया और अब यह पाठकों के सामने आ रहा है।

हमारे देश में इस प्रवृत्ति का सर्वप्रथम प्रारम्भ करने वाले तो आचार्यश्री ही हैं, परन्तु कई एक कारणों से इसका प्रकाशन विलम्ब से हुआ अतः । इस बीच में डेक्कन कॉलेज, पूना से भी इसका प्रकाशन हो गया ।

इस प्रकाशन 'चान्द्रमूलसूत्रपाठ' के संशोधन— सम्पादन की शैली का परिचय इस प्रकार है:—

यह सारा व्याकरण छह अध्यायों में विभक्त है, जब कि पाणिनीय व्याकरण आठ अध्यायों में है । ग्रन्थकार चन्द्रगोमी महामुनि ने अपनी इस कृति के प्रारम्भ में ही सूचित किया है कि 'लघु-विस्पष्ट-सम्पूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम्' अर्थात् "पाणिनीय की अपेक्षा लघु, विशेषरूप से स्पष्ट और सम्पूर्ण ऐसा शब्द-लक्षण कहता हूँ" । ग्रन्थकार अपनी इस सूचना को बराबर सार्थक करता हुआ "एकमात्रालाघवमपि पुत्रोत्सवम्मन्यन्ते वैयाकरणाः" इस न्याय को अक्षरशः सफल कर दिखाया है ।

प्रस्तुत प्रकाशन में सर्वप्रथम चान्द्र का मूलसूत्रपाठ दिया गया है तथा साथ में पाणिनीय-अष्टाध्यायी के समान सूत्रों के साथ तुलना बताने के लिये उसके अध्याय, पाद और सूत्रांक दिये हैं तथा कई स्थानों पर वार्तिक के अंक तथा महाभाष्य, काशिकावृत्ति, और सिद्धान्तकीमुदी का भी उपयोग किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण में मूलसूत्रपाठ ७५ पृष्ठों में पूरा होता है ।

इसके पश्चात् ८०वें पृष्ठ तक चान्द्र में आये हुए गणों के केवल नामों की ही अकारादिक्रम से सूची दी गई है और साथ में जिस सूत्र में जिस गण का उपयोग हुआ है उस सूत्र के अध्याय, पाद, और अंक का निर्देश कर दिया गया है ।

८१ वें पृष्ठ में चन्द्रगोमिकृत वर्णसूत्र दिया गया है, जिसमें स्वरों तथा व्यञ्जनों के स्थान-प्रयत्न और भेद दिखाये गये हैं ।

१०४ वें पृष्ठ तक आचार्यचन्द्रगोमिकृत तीन पादों में सम्पूर्ण उणादिसूत्र दिया गया है । इसके अन्त में आचार्य ने 'शुभमस्तु सर्वजगताम्' का शुभाशीर्वाद देते हुए भगवान् बुद्ध की परमकारुणिकता की प्रतिध्वनि कर दी है ।

१२६ वें पृष्ठ तक चन्द्रगोमिकृत सम्पूर्ण धातुपाठ दिया है, साथ में पाणिनीय-धातुओं के तत्तद्गण के अंक देकर तुलना भी बताई है । धातुपाठ के अन्त में आचार्य ने लिखा है कि यद्यपि प्रत्येक धातु का एक ही अर्थ दिखाया है, परन्तु वास्तव में "अनेकार्था हि धातवः" अर्थात् प्रयोगानुसार एक-एक धातु के अनेक अर्थ हैं ।

१८८ वें पृष्ठ तक चान्द्र के सब सूत्रों का अकारादिक्रम से तथा इसी प्रकार उणादिसूत्रों का भी अनुक्रम निर्देश किया है।

२०५ वें पृष्ठ तक उणादि द्वारा साधित शब्दों की अकारादिक क्रम से पूरी सूची दी है। उणादिसाधितशब्दों से उनकी ठीक व्युत्पत्ति का पता नहीं चल सकता, क्योंकि धातुओं से शब्दों की साधना विशेषतः कल्पना पर ही निर्भर है। वैयाकरणों ने 'कूप' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए भिन्न-भिन्न शैली का आश्रय लिया; किसी ने कूपशब्द की साधना 'कु' धातु से बताई है, तब निरुक्तकार यास्कने 'कूप' शब्द का सम्बन्ध 'कूप' धातु से भी लगाया है, अथवा 'कु+आप' से 'कूप' शब्द की साधना की है। अमरकोश के प्राचीन वृत्तिकार क्षीरस्वामी ने भी 'कु+आप' से 'कूप' शब्द को साधित किया है। इस प्रकार उणादिशब्दों की व्युत्पत्ति कल्पना पर निर्भर होने से पूरी तरह विश्वस्त नहीं मानी जा सकती। उक्त व्युत्पत्तियों के आधार पर 'कूप' शब्द के ये अर्थ होते हैं—

'कु' धातु से कूप—प्रतिध्वनि द्वारा शब्द करने वाला।

'कु+आप' से कूप—जिसमें पानी अल्प है वा कुत्सित—अच्छा नहीं है।

'कूप' धातु से कूप—जहाँ कोप होता है अर्थात् पानी भरने वालीयाँ अनेक होने से जहाँ स्त्रियाँ परस्पर कुपित होती रहती हैं।

'सिह' शब्द की साधना उणादि में एक प्रकार की नहीं है—

चान्द्र 'सिच्' धातु से 'सिह' की व्युत्पत्ति दिखाता है;

दूसरे वैयाकरण 'हिस्' धातु का विपर्यय करने से 'सिह' शब्द की साधना दिखाते हैं।

इस प्रकार उणादिसूत्रदर्शित साधना ठीक व्युत्पत्ति के लिये प्रामाणिक आधार नहीं बन सकती। इतना प्रासंगिक सूचन बीच में कर दिया है इससे किसी पाठक को अरुचि हो तो क्षमा करने की कृपा करें।

करीब २३२ वें पृष्ठ तक धातुपाठ के सब धातुओं की अकारादि-अनुक्रमणिका का निर्देश किया है और साथ में गण तथा धातु के अंक भी दे दिये हैं।

इस प्रकार करीब २३२ पृष्ठों में यह संस्करण समाप्त होता है।

सर्वत्र जहाँ उपयुक्तता मालूम हुई वहाँ आवश्यक टिप्पण भी दिये गये हैं। टिप्पणों में चान्द्रसूत्रों की तुलना तथा मतान्तर-सम्बन्धी सूचन किया गया है।

ला. द. आर्ट्स कॉलेज तथा विद्यासभा, अहमदाबाद के पुस्तकालयों से

पुस्तकें ला-ला कर यह काम कर सका हूँ, अतः इन सब संस्थाओं का ऋण मैं अवश्य स्वीकारता हूँ ।

चान्द्र-व्याकरण के कर्ता का समय—

इस व्याकरण के कर्ता का नाम आचार्य चन्द्र है, उनका दूसरा नाम चन्द्र-गोमी भी है । 'गोमी' शब्द पूज्यता-सूचक है । महान् वैयाकरण भर्तृहरि ने अपने वाक्यपदीय में द्वितीय काण्ड, श्लोक ४८५ से ४९० तक के उल्लेख में व्याकरण-महाभाष्य के विच्छेद का वृत्तान्त और विच्छेद पाए हुए महाभाष्य को चन्द्र आचार्य ने सुरक्षित रखा और उसके पठन-पाठन का फिर प्रचार किया, ऐसा भी निर्देश किया है । उससे मालूम होता है कि भर्तृहरिनिर्दिष्ट चन्द्र आचार्य यही हैं, जिन्होंने प्रस्तुत चान्द्रव्याकरण का निर्माण किया । अतः जब तक अन्य कोई बाधक प्रमाण न हो तब तक यह मानना अबाधित है कि वाक्यपदीय-निर्दिष्ट चन्द्र आचार्य यही चन्द्रगोमी हैं और भर्तृहरि के ये पूर्ववर्ती रहे हैं ।

अन्त में इस कार्य के प्रेरक आचार्य श्रीजिनविजयजी का बारम्बार अभि-नन्दन करता हुआ इस छोटे से प्रास्ताविक को यहीं पूरा कर रहा हूँ और सुज्ञ पाठकों से नम्र सूचना भी करता हूँ कि इस संस्करण में जहां कहीं अशुद्धि रह गई हो तो शुद्ध कर लेने की कृपा करें और हो सके तो मुझे भी सूचना करने की मेहरबानी करें ।

१२/व भारती निवास सोसायटी
अहमदाबाद ६

}

बेचरदास दोशी

चान्द्र - व्याकरणम्



चन्द्रगोमि-नाम-आचार्यविरचितं चा न्द्र व्या क र ण म्

नमो वागीश्वराय

सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं^१ जगतो गुरुम् ।
लघुविस्पष्टसंपूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम् ॥

[प्रथमः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- | | |
|---|---------------------------------------|
| १ अइउण् ॥ शिवसूत्र ^२ १॥ | ७ सप्तम्यां पूर्वस्य । पा० १।१।६६। |
| २ ऋलृक् ॥२॥ | ८ पञ्चम्यां परस्य । पा० १।१।६७। |
| ३ एओङ् ॥३॥ | ९ आदेः । पा० १।१।५४। |
| ४ ऐऔच् ॥४॥ | १० षष्ठ्याऽन्त्यस्य । पा० १।१।५२। |
| ५ ह्यवरलण् ॥५॥ | ११ डित् । पा० १।१।५३। |
| ६ वमङ्गणतम् ॥६॥ | १२ शिदनेकाल् सर्वस्य । पा० १।१।५५। |
| ७ क्षभञ् ॥७॥ | १३ टकितावाद्यन्तौ । पा० १।१।४६। |
| ८ घढधष् ॥८॥ | १४ मिदचोऽन्त्यात् परः । पा० १।१।४७। |
| ९ जवगडदश् ॥९॥ | १५ ऋकोऽणो रलो । पा० १।१।५१। |
| १० खफछठथचटतव् ॥१०॥ | १६ विप्रतिषेधे । पा० १।४।२। |
| ११ कपय् ॥११॥ | १७ तिजः क्षान्तौ सन् । पा० ३।१।५। |
| १२ शपसर् ॥१२॥ | १८ कितः संशय-चिकित्सयोः । पा० ३।१।५। |
| १३ हल् ॥१३॥ | १९ गुपो निन्दायाम् । पा० ३।१।५। |
| १ आदिरिता समध्यः । ^३ पा० १।१।७१। | २० वध एः ई च । पा० ३।१।६। |
| २ उता सर्वर्गः । पा० १।१।६६। | २१ शान्-दान्-मानः । पा० ३।१।६। |
| ३ ता तत्कालः । पा० १।१।७०। | २२ तुमो लुक् च इच्छायाम् । पा० ३।१।७। |
| ४ दोऽपः । पा० १।१।२०। | २३ व्याप्यात् काम्यच् । पा० ३।१।६,७। |
| ५ अनंशचिह्नमित् । पा० १।३।२-६। | २४ ससंख्यादमः क्यच् वा । |
| ६ विधिर्विशेषणान्तस्य । पा० १।१।७२। | पा० ३।१।८+ ^४ वा० १। |

१ सर्वेभ्यः प्राणिभ्यो हितः सर्वीयः “सर्वाणो वा” । ४-१-१३ इति चान्द्रं सूत्रम् ।

२ “नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नव-पञ्चवारम् ।

उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद् विमर्शो शिवसूत्रजालम्” ॥ इति शिवसूत्रविषये किंवदन्ती ।

३ ‘पा०’ इत्यनेन पाणिनीयं व्याकरणम् । ४ वा० इति वार्तिकम् ।

- २५ उपमानादाचारे । पा०३।१।१०। ४५ चुरादिभ्यो णिच् । पा०३।१।२५।
 २६ आधारात् । पा०३।१।१०+वा०१। ४६ प्रयोजकव्यापारे ।
 २७ कर्तुर्विप् । पा०३।१।११, भा०१। पा०३।१।२६। पा०१।४।५।५।
 २८ गल्भ-क्लीव-होडेभ्यो डित् । ४७ गुप्-धूप-विछ-पण-पनः
 आयो वा । पा०३।१।२८, ३१।
 २९ क्यङ् । पा०३।१।११। ४८ ऋत ईयङ् । पा०३।१।२९।
 ३० ध्वयर्थे भृशादिभ्यः स्तलोपश्च । ४९ कमो णिङ् । पा०३।१।३०।
 पा०३।१।१२। ५० शिति आयादयः । पा०३।१।३१।
 ३१ डाच् लोहितादिभ्यः क्यप् । ५१ अनेकाचो लिटः आम्
 पा०३।१।१३। कृ-भू-अस्तिलिट् चानु ।
 ३२ कण्ट-कक्ष-सत्र-नाहनाय पापे क्रमणे । पा०३।१।३५+भा०। पा०३।१।
 पा०३।१।१४+वा०१। ४०+वा०३, ८, ९।
 ३३ रोमन्थं वर्तयति हनुचाले । ५२ इजादेर्गुल्मतोऽनृच्छ-ऊर्णोः ।
 पा०३।१।१५+भा०। पा०३।१।३६+वा०६।
 ३४ वाष्प-उष्म-फेनमुद्गमति । ५३ कास्-अय-दय-आसः ।
 पा०३।१।१६+भा०। पा०३।१।३५, ३७।
 ३५ सुखादीनि वेदयते । पा०३।१।१८। ५४ जागृ-उषो वा । पा०३।१।३८।
 ३६ शब्दादीन् करोति । पा०३।१।१७। ५५ भी-ह्री-हूनां द्वे च । पा०३।१।३९।
 ३७ नमस्-तपस्-वरिवसः क्यच् । ५६ विभराम् । पा०३।१।३९।
 पा०३।१।१९, १५+वा०१। ५७ विदाम् । पा०३।१।३८+वा०१।
 ३८ चित्रङ्ः आश्चर्ये । ५८ लोटः कृलोट् । पा०३।१।४१।
 पा०३।१।१९+वा०३+भा०। ५९ स्य-त्तासौ लृ-लुटोः । पा०३।१।३३।
 ३९ कण्ड्वादिभ्यो यक् । पा०३।१।२७। ६० लुङि सिच् । पा०३।२।४३, ४४।
 ४० एकाचो ह्लादेः क्रियार्थाद् । ६१ स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपो वा ।
 भृशाभीष्टण्ये यङ् । पा०३।१।२२। पा०३।१।४४। वा०७।
 ४१ ऋ-सूत्रि-मूत्रि-सूचि-अट-अश- ६२ दा-धा-गाति-स्था-भू-पोऽतडि लुक् ।
 ऊर्णुभ्यः । पा०३।१।२२, भा०। पा०२।४।७७।
 ४२ गत्यर्थात् कौटिल्य एव । पा०३।१।२३। ६३ घ्रा-धे-शा-च्छा-सो वा । पा०२।४।७८।
 ४३ लुप-सद-चर-नृ-जप-जभ- ६४ तनादिभ्यः त-थासोः । पा०२।४।७९।
 दह-दशो गृह्यात् । पा०३।१।२४। ६५ शलः इगुपान्तात् अदृशोऽनिटः क्सः ।
 पा०३।१।४५, ४७।
 ४४ न शुभ-रुचः । पा०३।१।२२, भा०। ६६ श्लिषः । पा०३।१।४६।

६७ सत्त्वाश्लेषे । पा०३।१।४६+वा०४।

६८ णि-श्रि-द्-त्तु-कमः कर्तरि चड ।

पा०३।१।४८+वा०१।

६९ धे-श्वेर्वा । पा०३।१।४९।

७० ऋ-सृ-शास्-असु-ख्या-वचः अड ।

पा०३।१।५२,५६।

७१ ह्वा-लिप्-सिचः । पा०३।१।५३।

७२ तडि वा । पा०३।१।५४।

७३ लृदिद्-द्युतादि-पुष्यत्यादिभ्योऽतडि ।

पा०३।१।५५। तथा काशिका ।

७४ इरितो वा । पा०३।१।५७।

७५ जृ-श्वि-स्तम्भु-ञ्चु-म्लुचु-ग्लुचः ।

पा०३।१।५८।

७६ चिण् ते पदः । पा०३।१।६०।

७७ दीप-जन-बुध-पूरि-तायि-प्यायो वा ।

पा०३।१।६१।

७८ भाव-आप्ययोः । पा०३।१।६६।

७९ न अनोस्तपः । पा०३।१।६५।

८० तिङ्शिति यक् अलिङाशीलिङि ।

पा०३।१।६७। पा०३।४।

११३,११५,११६।

८१ तपः तपआप्यात् । पा०३।१।८८।

८२ कर्तरि शप् । पा०३।१।६८।

८३ अदादिभ्यो लुक् । पा०२।४।७२।

पा०२।४।५८।

८४ हूनां द्वे च । पा०२।४।७५।

पा०६।१।१०।

८५ चिणः । पा०६।४।१०४।

८६ यङो बहुलम् । पा०२।४।७४।

८७ दिवादिभ्यः श्यन् । पा०३।१।६९।

८८ भ्राश-भ्लाश-भ्रमु-क्रमु-क्लमु-त्रसि-

त्रुटि-लषो वा । पा०३।१।७०।

८९ यसः । पा०३।१।७१।

९० समः । पा०३।१।७२।

९१ कुवि-रजः आप्ये । पा०३।१।९०।

९२ तुदादिभ्यः शः । पा०३।१।७७।

९३ रुधादीनां श्नुम् । पा०३।१।७८।

९४ तनादिभ्यः उः । पा०३।१।७९।

९५ स्वादिभ्यः श्नुः । पा०३।१।७३।

९६ श्रु-कृद्-धिवां शृ-कृ-धि च ।

पा०३।१।७४,८०।

९७ अक्षो वा । पा०३।१।७५।

९८ तनूकृतौ तक्षः । पा०३।१।७६।

९९ स्तम्भु-स्तुम्भु-स्कम्भु-स्कुम्भु-स्कुम्भ्यः ।

पा०३।१।८२।

१०० श्नाः । पा०३।१।८२।

१०१ ऋयादिभ्यः । पा०३।१।८१।

१०२ हलो हौ शानच् । पा०३।१।८३।

१०३ बहुलम् । पा०३।३।११३।

१०४ भाव-आप्ययोः । पा०३।४।७०।

१०५ तव्य-अनीयर्-केलिमरः ।

पा०३।१।९६।+वा०१।

१०६ वास्तव्यः । पा०३।१।९६वा०२।

१०७ यत् । पा०३।१।९७।

१०८ पु-शकि-तकि-चति-यति-शसि-

सहि-यजः । पा०३।१।९८,९९,९७भा०।

१०९ गद-मद-यमोऽप्रादेः । पा०३।१।१००।

११० चरः । पा०३।१।१००।

१११ अगुरौ आडः ।

पा०३।१।१००वा०१।

११२ अवद्य-पण्य-वर्याः गर्ह्य-विक्रय-

अनिरोधेषु । पा०३।१।१०१।

११३ वह्यं करणम् । पा०३।१।१०२।

११४ अर्यः स्वामि-वैश्ययोः ।

पा०३।१।१०३।

११५ ऋतुमती उपसर्या । पा०३।१।१०४।

११६ अजर्यं संगतम् । पा०३।१।१०५।

- ११७ वदः सुपः क्यप् च । पा०३।१।१०६। १३६ धाय्या-पाय्य-आनाय्य-सानाय्य-
निकाय्या नाम्नि ।
पा०३।१।१२६,१२७।
- ११८ भुवः । पा०३।१।१०७। १३७ ऋतौ कुण्डपाय्य-संचाय्यौ ।
पा०३।१।१३०।
- ११९ भावे हनस्त च ।
पा०३।१।१०८,१०७।
- १२० इण्-स्तु-शासु-वृञ्-दृ-जुषः ।
पा०३।१।१०९+वा०१।
- १२१ ऋदुपान्ताद् अकल्पि-चृतः ।
पा०३।१।११०।
- १२२ खेयम् । पा०३।१।१११। १३८ अग्नौ चित्या-उपचाय्य-
परिचाय्याः । पा०३।१।१३१,१३२।
- १२३ भृञः असंज्ञायाम् । पा०३।१।११२। १३९ कर्तरि ण्वुल्-तृच्-अचः ।
पा०३।१।१३३,१३४वा०१।
पा०३।४।६७।
- १२४ समो वा । पा०३।१।११२वा०४। १४० नन्दि-ग्रहादिभ्यो ल्यु-णिनी ।
पा०३।१।१३४।
- १२५ कृ-वृषि-मृजि-शंसि-दुहि-गुहः ।
पा०३।१।१२०,११३।
तथा काशिका ३।१।१०९।
- १२६ राजसूय-रुच्य-कृष्टपच्य-अव्यथ्याः
पा०३।१।११४। १४१ ज्ञा-कृ-प्री-इगुपान्तात् कः ।
पा०३।१।१३५।
- १२७ कुप्य-आज्य-भिद्य-उद्धच-सिध्य-
युग्यानि नाम्नि । पा०३।१।११४,१०९।
वा०२ । पा०३।१।११५,११६,१२१। १४२ आतः प्रादिभ्यः । पा०३।१।१३६।
- १२८ जित्या-विपूय-विनीया हलि-
मुञ्ज-कल्केषु । पा०३।१।११७। १४३ पा-घ्रा-ध्मा-धेद्-दृशः शः ।
पा०३।१।१३७।
- १२९ पद-अस्वैरि-पक्ष्य-बाह्यासु
ग्रहः । पा०३।१।११९। १४४ धारि-पारि-वेदि-उदेजि-चेति-
साति-साहि-विन्दः अप्रादेः ।
पा०३।१।१३८+वा०२+भा०।
- १३० ऋ-हलो ण्यत् । पा०३।१।१२४। १४५ लिपो नेश्च । पा०३।१।१३८+वा०१।
- १३१ पाणि-समवाभ्यां सृजः ।
पा०३।१।१२४वा०१,२। १४६ ज्वलादिभ्यो णो वा ।
पा०३।१।१४०,१३९।
- १३२ ओः आवश्यके । पा०३।१।१२५। १४७ श्या-आत्-इण्-व्यध-ध्वस-तनः ।
पा०३।१।१४१,१४०वा०१।
- १३३ आसु-यु-वपि-रपि-लपि-त्रपि-चमि-
दभः । पा०३।१।१२६,१२४वा०३। १४८ आ-समः स्तोः । पा०३।१।१४१।
- १३४ अमावसो वा । पा०३।१।१२२। १४९ हृ-सः अवात् । पा०३।१।१४१।
- १३५ प्रणाय्योऽसंमते । पा०३।१।१२८। १५० दु-न्यः अप्रादेः । पा०३।१।१४२।
- १५१ भुवो वा । काशिका ३।१।१४३।
- १५२ ग्रहः । पा०३।१।१४३।

१ अत्र काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “ भवतेश्च इति वक्तव्यम् ” इत्येवं निर्दिश्य भुवः ग्रहणम् ।

- १५३ गेहे कः । पा० ३।१।१४४। १५७ नृति-खनि-रजः शिल्पिनि ष्वन् ।
 १५४ गः थकन् । पा० ३।१।१४६। पा० ३।१।१४५+भा०।
 १५५ ण्युट् । ३।१।१४७। १५८ प्रु-सृ-ल्वः वुन् । पा० ३।१।१४९।
 १५६ हः व्रीहि-कालयोः । पा० ३।१।१४८। १५९ आशिषि । पा० ३।१।१५०।

[प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ व्याप्याद् अण् । पा० ३।२।१। १६ वह-अभ्राद् लिहः । पा० ३।२।३२।
 २ आतः अप्रादेः कः । पा० ३।२।३। १७ परिमाणात् पचः । पा० ३।२।३३।
 ३ सुपः । पा० ३।२।४+वा० २+भा०। १८ मित-नखात् । पा० ३।२।३४।
 ४ चरेः टः । पा० ३।२।१६। १९ विधु-अरुस्-तिलात् तुदः ।
 ५ पुरस्-अप्रतस्-अग्नेभ्यः सतेः । पा० ३।२।३५। पा० ३।२।२८+वा० १।
 पा० ३।२।१८। २० वातमज-शर्धजह-इरंमद-परंतप-
 ६ पूर्वात् कर्तुः । पा० ३।२।१९। द्विषंतप-भगंदर-पुरंदराः । पा० ३।२।
 ७ कृञः हेतु-शील-अनुलोमेषु । २८+वा० १। पा० ३।२।३७, ३९,
 पा० ३।२।२०। ४१। काशिका ३।२।४१।
 ८ स्तम्भ-शकृ-द्व्यां व्रीहि-वत्सयोः इन् । २१ उग्र-असूर्याद् दृशः ।
 पा० ३।२।२४+वा० १। पा० ३।२।३७, ३६।
 ९ ह्रञः दृति-नाथात् पशौ । पा० ३।२।२५। २२ ललाटात् तपः । पा० ३।२।३६।
 १० फलेग्रहिः आत्मंभरिः कुंक्षिभरिः । २३ प्रिय-वशाद् वदः । पा० ३।२।३८।
 पा० ३।२।२६+वा० १। २४ वाचंयमो व्रते । पा० ३।२।४०।
 ११ एजेः खश् । पा० ३।२।२८। २५ सर्वात् सहः । पा० ३।२।४१।
 १२ शुनी-स्तनात् धेटः । पा० ३।२।२८। २६ कूल-अभ्र-करीषाच्च कषः ।
 वा० १। पा० ३।२।२९। पा० ३।२।४२।
 १३ नासिका-नाडी-मुष्टि-घटी-खरीभ्यः । २७ मेघ-ऋति-भयात् कृञः खः ।
 पा० ३।२।२९, ३०, २९+भा०। पा० ३।२।४३।
 १४ ध्मः पाण्यादिभ्यश्च । २८ क्षेम-प्रिय-मद्राद् अण् च ।
 पा० ३।२।२९, ३०, ३७। पा० ३।२।४४।
 १५ कूलाद् उदो रुजि-वहः । २९ आशिताद् भुवः भाव-करणयोः ।
 पा० ३।२।३१। पा० ३।२।४५।

- ३० भृ-वृ-तृ-जि-सहि-तपि-दमो नाम्नि ।
पा०३।२।४६।
- ३१ धारेर्धर् च । पा०३।२।४६।
- ३२ गमः । पा०३।२।४७।
- ३३ विहायसो विह च । पा०३।२।३८
वा०२।
- ३४ खड् । पा०३।२।३८वा०३।
- ३५ डः । पा०३।२।३८वा०४।
- ३६ उरगः । पा०३।२।४८वा०२।
- ३७ हनः । पा०३।२।४६,५०।
- ३८ शीर्ष-कुमाराद् णिनिः । पा०३।२।५१।
- ३९ टक् । पा०३।२।५२,५३।
- ४० शक्तौ हस्ति-कपाटात् । पा०३।२।५४।
- ४१ नगराद् अहस्तिनि ।
पा०३।२।५३ भा०।
- ४२ पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि ।
पा०३।२।५५।
- ४३ राजघः । पा०३।२।५५वा०१।
- ४४ गः । पा०३।२।८।
- ४५ सीधु-सुरात् पिवः ।
पा०३।२।८वा०१।
- ४६ सुभग-आढ्य-स्थूल-पलित-नग्न-अन्ध-
प्रियाद् अच्चेर्भुवः खिष्णुच्-खुकञौ ।
पा०३।२।५७,५६।
- ४७ कृञः करणे ख्युन् । पा०३।२।५६।
- ४८ स्पृशः अनुदकात् क्विन् ।
पा०३।२।५८।
- ४९ दधृग्-उष्णिक्-ऋञ्चः । पा०३।२।५९।
- ५० अञ्चु-युजः । पा०३।२।५९।
- ५१ समान-अन्य-त्यदादेः उपमानाद्
व्याप्ये दृशः क्स-कञौ च । पा०३।२।
६०+वा०१। काशिका ३।२।६०।
- ५२ भजो ण्विः । पा०३।२।६२।
- ५३ क्विप्-क्विच्-मनिन्-यवनिप्-वनिपः ।
पा०३।२।७४,७६।
- ५४ दुहो दुघः । पा०३।२।७०।
- ५५ आवश्यके णिनिः । पा०३।२।१७०।
- ५६ अजातेः शील-आभीक्ष्ण्ययोः ।
पा०३।२।७८,८१।
- ५७ साधोः । पा०३।२।७८वा०१।
- ५८ कर्तुः उपमानात् । पा०३।२।७६।
- ५९ व्रते । पा०३।२।८०।
- ६० मनः । पा०३।२।८२।
- ६१ आत्मनि खश्च । पा०३।२।८३।
- ६२ भूते । पा०३।२।८४।
- ६३ यजः । पा०३।२।८५।
- ६४ हनः कुत्सायाम् । पा०३।२।८६।
काशिका ३।२।८६।
- ६५ डः । पा०३।२।९७।
- ६६ क्तवतुः । पा०३।२।१०२।
- ६७ भाव-आप्ययोः क्तः । पा०३।२।१०२।
पा०३।४।७०।
- ६८ कर्तरि च आरम्भे । पा०३।४।७१।
- ६९ श्लिष-शीङ्-स्था-आस-वस-जन-रुह-
जृभ्यः । पा०३।४।७२।
- ७० गत्यर्थान्नाप्याद् आधारे च ।
पा०३।४।७२,७६।
- ७१ आहारार्थात् । पा०३।४।७६।
- ७२ जृषः अतृन् । पा०३।२।१०४।
- ७३ श्रु-सद्-वसो लिट् वा ।
पा०३।२।१०८।
- ७४ लिटः क्वसुः । पा०३।२।१०७।
- ७५ ईयिवान्-अनाश्रान्-अनूचानः ।
पा०३।२।१०९।
- ७६ लुङ् । पा०३।२।११०।

७७ अनद्यतने लङ् । पा०३।२।१११।	१०१ न य-दीक्षः । पा०३।२।१५२,१५३।
७८ स्मृत्युक्तौ लृट् । पा०३।२।११२।	१०२ लष-पत-पद-स्था-भू-शृ-वृष-हन-कम- गमः उकञ् । पा०३।२।१५४।
७९ न यदि । पा०३।२।११३।	१०३ जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ट-वृडः षाकन् । पा०३।२।१५५।
८० वा आकाङ्क्षायाम् । पा०३।२।११४।	१०४ स्पृहि-गृहि-पति-शीडः आलुच् । पा०३।२।१५६+वा०१।
८१ परोक्षे लिट् । पा०३।२।११५।	१०५ धे-सि-शद-सदो रुः । पा०३।२।१५६।
८२ वर्तमाने लट् । पा०३।२।१२३।	१०६ सू-घस्-अदः क्मरच् । पा०३।२।१६०।
८३ विदेः श्रसुः । पा०७।१।३६।	१०७ भञ्जि-भास-मिदो घुरच् । पा०३।२।१६१।
८४ शतृ । पा०३।२।१२४।	१०८ विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच् । पा०३।२।१६२।
८५ इडः शक्तौ । पा०३।२।१३०।	१०९ इण्-जि-सृ-नशः क्वरप् । पा०३।२।१६३।
८६ शानच् । पा०३।२।१२४।	११० गत्वरः । पा०३।२।१६४।
८७ शक्ति-वयः-शीलेषु । पा०३।२।१२६।	१११ जागुः ऊकः । पा०३।२।१६५।
८८ तौ लृटः । पा०३।२।१२७। पा०३।३।१४।	११२ यज-जप-दह-दशो यडः । पा०३।२।१६६।
८९ शील-साधु-धर्मेषु तृन् । पा०३।२।१३४,१३५।	११३ सहि-चलि-वहः कि-किनौ । पा०३।२।१७१भा०।
९० निरा-अलंभ्यां कुः इष्णुच् । पा०३।२।१३६।	११४ पापतिः । पा०३।२।१७१वा०४।
९१ उदः पच-पत-मदः । पा०३।२।१३६।	११५ चक्रि-सस्त्रि-जज्ञयः । पा०३।२।१७१वा०३।
९२ प्रजन-रुचि-अपत्रप-वृत्तु-वृधु- सह-चर-भ्राजः । पा०३।२।१३६। तथा काशिका३।२।१३८।	११६ स्मि-अजस-हिंस-दीप-नम-कम- कम्पो रः । पा०३।२।१६७।
९३ भुवः । पा०३।२।१३८।	११७ सन्-आशंस उः । पा०३।२।१६८।
९४ जि-नलश्च वस्तुः । पा०३।२।१३९।	११८ विन्दुः इच्छुः । पा०३।२।१६९।
९५ स्थास्तुः । पा०३।२।१३९।	
९६ त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपेः व्तुः । पा०३।२।१४०।	
९७ चाल-शब्दार्थाद् अनाप्याद् युच् । पा०३।२।१४८।	
९८ तड्वतो हलादेरडः । पा०३।२।१४९।	
९९ जु-चङ्कम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल- शुच-लष-पत-पदः । पा०३।२।१५०।	
१०० क्रुध-भूषार्थात् । पा०३।२।१५१।	

- ११९ स्वप्नक्-तृष्णक् । पा०३।२।१७२। १२२ स्था-भास-पिस-कसो वरच् ।
 १२० शृ-वन्देः आहः । पा०३।२।१७३। पा०३।२।१७५।
 १२१ भियः क्लुः । पा०३।२।१७४। १२३ यो यडः । पा०३।२।१७६।

[प्रथमस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ उणादयः । पा०३।३।१। २२ नीवाराः । पा०३।३।४८।
 २ भविष्यति लृट् । पा०३।३।१३,३। २३ यज्ञे संस्तावः । पा०३।३।३१।
 ३ अनद्यतने लुट् । पा०३।३।१५। २४ प्रस्त्रोऽन्यत्र । पा०३।३।३२।
 ४ माङि लुङ् । पा०३।३।१७५। २५ प्रथने वेः अशब्दे । पा०३।३।३३।
 ५ स्मपरे लङ् च । पा०३।३।१७६। २६ छन्दोनाम्नि । पा०३।३।३४।
 ६ तुमुन् भावे क्रियायां तदर्थायाम् । २७ अवात् त्रश्च । पा०३।३।१२०।
 पा०३।३।१०+भा०। २८ न्यायो नये । पा०३।३।३७।
 ७ घञ् कारके च । २९ पर्यायः क्रमे । पा०३।३।३८।
 पा०३।३।१६,१८,१९। ३० वि-उपात् शीङः । पा०३।३।३९।
 ८ संख्यातात् । पा०३।३।२०। ३१ हस्तप्राप्ये चेः अस्तेये ।
 पा०३।३।४०।
 ९ इडः षिद् वा । पा०३।३।२१+वा०१। ३२ चिति-राशि-वास-देहेषु चः कः ।
 पा०३।३।४१।
 १० शृ वायु-वर्ण-निवृत्तेषु । ३३ संघे अनुत्तराऽधरे । पा०३।३।४२।
 पा०३।३।२१वा०२। ३४ उदः श्रि-यु-पू-द्रुवः । पा०३।३।४९।
 ११ प्रादिभ्यो रुवः । पा०३।३।२२। ३५ आक्रोशे नि-अवाद् ग्रहः ।
 पा०३।३।४५।
 १२ समो यु-द्रु-द्रुवः । पा०३।३।२३। ३६ समः मुष्टौ । पा०३।३।३६।
 १३ वेः क्षु-श्रुवः । पा०३।३।२५। ३७ परेः यज्ञे । पा०३।३।४७।
 १४ श्रि-भुवः अप्रादेः । पा०३।३।२४। ३८ प्रात् लिप्सायाम् । पा०३।३।४६।
 १५ नियः । पा०३।३।२४। ३९ वा वणिजाम् । पा०३।३।५२,५०।
 १६ अव-उदः । पा०३।३।२६। ४० रस्मौ । पा०३।३।५३।
 १७ परेर्घृते । पा०३।३।३७। ४१ अवाद् वर्षविवन्धे । पा०३।३।५१।
 १८ प्रात् लु-द्रु-स्तुवः । पा०३।३।२७। ४२ आङो रु-प्लोः । पा०३।३।५०।
 १९ निर्-अभेः पू-रुवः । पा०३।३।२८।
 २० नि-उदो वः । पा०३।३।२९।
 २१ क् धान्ये । पा०३।३।३०।

- ४३ वृष्यः आच्छादे । पा०३।३।५४।
- ४४ परेर्भुवः अवज्ञाने । पा०३।३।५५।
- ४५ एः अच् । पा०३।३।५६।
- ४६ स्था-स्ना-पा-व्यधि-हनि-युधः कः ।
पा०३।३।५८वा०४।
- ४७ ऋत्-ओः अप् । पा०३।३।५७।
- ४८ ग्रह-वृ-दृ-निश्चि-नाम-वश-रणः ।
पा०३।३।५८+वा०३।
- ४९ प्रादिभ्यः अदः । पा०३।३।५९।
- ५० नेर्णं च । पा०३।३।६०।
- ५१ व्यध-जपः अप्रादेः । पा०३।३।६१।
- ५२ स्वन-हसो वा । पा०३।३।६२।
- ५३ यमः सं-वि-उपाच्च । पा०३।३।६३।
- ५४ नेः । पा०३।३।६३।
- ५५ गद-नद-पठ-स्वनः । पा०३।३।६४।
- ५६ क्वणो वीणायाश्च । पा०३।३।६५।
- ५७ पणः परिमाणे । पा०३।३।६६।
- ५८ मदः अप्रादेः । पा०३।३।६७।
- ५९ प्र-संभ्यां हर्षे । पा०३।३।६८।
- ६० सम्-उद्भ्याम् अजः पशुषु ।
पा०३।३।६९।
- ६१ प्रजने सतेः । पा०३।३।७१।
- ६२ हवः । पा०३।३।७५।
- ६३ निपानम् आहावः । पा०३।३।७४।
- ६४ वधः घातः । पा०३।३।७६।
- ६५ मूर्तां घनः । पा०३।३।७७।
- ६६ गृहांशे प्रघाणः । पा०३।३।७९।
- ६७ परिघ-उद्घ-निघाः ।
पा०३।३।८४,८६,८७।
- ६८ द्वितः क्विन्नः । पा०३।३।८८।
- ६९ द्वितः अयुच् । पा०३।३।८९।
- ७० विच्छ-रक्षो नङ् । पा०३।३।९०।
- ७१ प्रादिभ्यः दा-धः किः ।
पा०३।३।९२।
- ७२ व्याप्याद् आधारे । पा०३।३।९३।
- ७३ अभिविधौ इनुण् । पा०३।३।९४।
- ७४ स्त्रियां क्तिन् । पा०३।३।९४।
- ७५ ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयः ।
पा०३।३।९७।
- ७६ व्यतिहारे णच् । पा०३।३।९३।
- ७७ नास्मि क्तिच् । पा०३।३।१७४।
- ७८ समज-मन-विद-सु-शी-भृञ्-इणः भावे
क्वप् । पा०३।३।९९।
- ७९ नेः सत्-पतः । पा०३।३।९९।
- ८० कृ-व्रज-यजः । पा०३।३।१००,९८।
- ८१ मृगया-अटाट्ये । पा०३।३।१०१भा०।
- ८२ परेः सू-चरो यः । पा०३।३।१०१भा०।
- ८३ जागुः । पा०३।३।१०१भा०।
- ८४ अः सनाद्यन्ताच्च ।
पा०३।३।१०१भा०।१०२।
- ८५ गुरोर्हलः । पा०३।३।१०३।
- ८६ भिदादिषितोऽङ् । पा०३।३।१०४।
- ८७ आतः अन्तः-प्रादिभ्यः । पा०३।३।
१०६ तथा काशिका ३।३।१०६।
- ८८ कुम्बि-चचिभ्याम् । पा०३।३।१०५।
- ८९ णि-श्रन्थ-ग्रन्थ-विद-आस-घट्ट-
वन्दो युच् । पा०३।३।१०७+वा०१।
- ९० इषः अनिच्छायाम् ।
पा०३।३।१०७ वा०२।
- ९१ ण्वुच् । पा०३।३।१११।
- ९२ प्रश्न-आख्यानयोः इञ् च ।
पा०३।३।११०।
- ९३ संपदादिभ्यः क्विप् ।
पा०३।३।१०८ वा०९।

- ९४ आक्रोशे नञः अनिः ।
पा०३।३।११२।
- ९५ ग्ला-हा-ज्यः । पा०३।३।९५ वा०४।
- ९६ इ-कि-शितपः स्वरूपे ।
पा०३।३।१०८ वा०२।
- ९७ ल्युट् । पा०३।३।११५।
- ९८ ष्ठिवु-सिवो दीर्घश्च ।
- ९९ कृञः कर्तरि ।
- १०० घः । पा०३।३।११८।
- १०१ व्रज-व्यजौ । पा०३।३।११९।
- १०२ खनः डर-इकौ च ।
पा०३।३।१२५+भा०।
- १०३ ईषद्-डुः-सुन्म्यः खल् ।
पा०३।३।१२६।
- १०४ कर्तृ-आप्याभ्यां च भू-कृञः ।
पा०३।३।१२७।
- १०५ आतः युच् । पा०३।३।१२८।
- १०६ शासि-युधि-दृशि-धृषि-मृषः ।
पा०३।३।१३० वा०१+भा०।
- १०७ लिङि अतिपत्तौ लृङ् ।
पा०३।३।१३९।
- १०८ आ शेषाद् भूते वा ।
पा०३।३।१४०, १४१।
- १०९ गर्हायां कथमि लिङ् ।
पा०३।३।१४३, १४२।
- ११० किमि लृट् च । पा०३।३।१४४।
- १११ क्रोध-अश्रद्धयोः । पा०३।३।१४५।
- ११२ किकिल-अस्त्यर्थयोः लृट् ।
पा०३।३।१४६।
- ११३ यद्-यदि-यदा-जातुषु लिङ् ।
पा०३।३।१४७+वा०१।
- ११४ यच्च-यत्रयोर्गर्हायां च ।
पा०३।३।१४८, १४९।
- ११५ आश्चर्ये । पा०३।३।१५०।
- ११६ शेषे लृट् । पा०३।३।१५१।
- ११७ उत्त-अप्योः वाढार्थे लिङ् ।
पा०३।३।१५२।
तथा काशिका३।३।१५२।
- ११८ संभावनने अलमर्थे तदर्थप्रयोगे ।
पा०३।३।१५४।
- ११९ धातूक्तौ अयदि वा ।
पा०३।३।१५५।
- १२० हेतु-फलयोः । पा०३।३।१५६।
- १२१ विधि-संप्रश्न-प्रार्थनेषु ।
पा०३।३।१६१।
- १२२ लोट् । पा०३।३।१६२।
- १२३ प्रैष-अनुज्ञा-प्राप्तकालेषु ।
पा०३।३।१६३।
- १२४ लिङ् च ऊर्ध्वमौहूर्तिके ।
पा०३।३।१६४।
- १२५ स्मे लोट् । पा०३।३।१६५।
- १२६ अधीष्टौ । पा०३।३।१६६।
- १२७ काल-समय-वेलासु लिङ् यदि ।
पा०३।३।१६७, १६८।
- १२८ अर्ह-शक्त्योः ।
पा०३।३।१६९, १७२।
- १२९ अलं-खल्वोः प्रतिषेधे क्त्वा वा ।
पा०३।४।१८।
- १३० मेडः । पा०३।४।१९।
- १३१ एककर्तृकयोः पूर्वात् ।
पा०३।४।२१।
- १३२ आभीक्ष्ये णमुल् च । पा०३।४।२२।
- १३३ पूर्व-अग्रे-प्रथमेषु । पा०३।४।२४।
- १३४ व्याप्याद् आक्रोशे कृञः खमुञ् ।
पा०३।४।२५।

- १३५ स्वाद्वर्थात् अदीर्घात् ।
पा०३।४।२६+वा०१।
१३६ जीवाद् ग्रहो णमुलू स चानु ।
पा०३।४।३६,४६।
१३७ हस्तेन । पा०३।४।३६।
१३८ उपमानात् कर्तुश्च ।
पा०३।४।४५,४३।
१३९ उपदंशस्तृतीयायाम् । पा०३।४।४७।
१४० हिंसार्थात् एकाप्यात् । पा०३।४।४८।
१४१ सप्तम्यां च उपात् पीड-रुध-कर्षः ।
पा०३।४।४९।
१४२ आसत्तौ । पा० ३।४।५०।

- १४३ प्रमाणे । पा०३।४।५१।
१४४ पञ्चम्यां त्वरायाम् । पा०३।४।५२।
१४५ द्वितीयायाम् । पा०३।४।५३।
१४६ अध्रुवे स्वाङ्गे । पा०३।४।५४।
१४७ पीडायाम् । पा०३।४।५५।
१४८ विशि-पति-पदि-स्कन्दां वीप्सा-
आभीक्ष्ययोः । पा०३।४।५६।
१४९ असु-तृषः कालेषु विच्छेदे ।
पा०३।४।५७।
१५० नाम्नि ग्रह-आदिशः ।
पा०३।४।५८।

[प्रथमस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ लः तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-
वस्-मस्-ता-तां-झ-थास्-आथां-ध्वम्-
इद्-वहिं-महिङ् । पा०३।४।७७,७८।
२ अतः आतः इत् ।
पा०७।२।८१,८०। पा०६।१।६६।
३ झः अन्तः । पा०७।१।३।
४ द्विरुक्ताद् अत् । पा०७।१।४।
५ जक्षादिभ्यः पञ्चम्यः । पा०६।१।६,५।
६ तडि अनतः । पा०७।१।५।
७ शीडो रत् । पा०७।१।६।
८ वेत्तेर्वा । पा०७।१।७।
९ लिटः इरच् । पा०३।४।८१।
१० तस्य एश् । पा०३।४।८१।
११ अतडां णल्-अतुस्-उस्-
थल्-अथुस्-अण्-अल्-व-माः ।
पा०३।४।८२।
१२ विदो लटो वा । पा०३।४।८३।
१३ ब्रुवः पञ्चानामादित आह च ।
पा०३।४।८४।
१४ आतो णल औः । पा०७।१।३४।
१५ टित् तडाम् एत् । पा०३।४।७६।
१६ आमः । पा०३।४।७६।
१७ थासः से । पा०३।४।८०।
१८ लुट आद्यानां डा-रौ-रसः ।
पा०२।४।८५।
१९ तडाम् । पा०२।४।८५।
२० लोट एः उः । पा०३।४।८६,८५।
२१ सेः हिङ् । पा०३।४।८७।
२२ आशिषि तु-ह्योः तातड् वा ।
पा०७।१।३५।
२३ मेः आनिः । पा०३।४।८९।
२४ आम् एतः । पा०३।४।९०।

२५ स्-वो वा-ऽमौ । पा०३।४।६१।
 २६ इडादीनाम् ऐप् । पा०३।४।६३।
 २७ व्-मोः टाप् । पा०३।४।६२।
 २८ त-स्थ-स्थानां तां-तं-ता डित्श्च ।
 पा०३।४।१०१।

२९ वस्-मसोर्लोपः ।
 पा०३।४।६६, ६८, ६७।

३० इतः अतडि । पा०३।४।१००, ६७।

३१ मिपः अस् । पा०३।४।१०१।

३२ लिङः सीयुट् । पा०३।४।१०२।

३३ यासुट् अतडः कित् ।

पा०३।४।१०४, १०३।

३४ डित् अनाशिषि । पा०३।४।१०३।

३५ अत् इय् । पा०७।२।८०।

३६ सो लोपः अनन्त्यस्य । पा०७।२।७६।

३७ झस्य रन् । पा०३।४।१०५ ।

३८ इटः अत् । पा०३।४।१०६।

३९ सुट् त-थोः । पा०३।४।१०७।

४० झेः जुस् । पा०३।४।१०८।

४१ सिचः । पा०३।४।१०९।

४२ आतः । पा०३।४।११०।

४३ लङो द्विषश्च वा ।

पा०३।४।१११, ११२।

४४ विदः । पा०३।४।१०९।

४५ अति । पा०३।४।१०९।

४६ तङाना यथापाठम् । पा०१।३।१२।

४७ भाव-आप्ययोः । पा०१।३।१३।

४८ डितः । पा०१।३।१२।

४९ विनिमये । पा०१।३।१४।

५० न गति-हिंसा-शब्दार्थहसः ।

पा०१।३।१५+वा०१।

५१ नेविशः । पा०१।३।१७।

५२ परि-वि-अवात् क्रियः । पा०१।३।१८।

५३ वि-पराभ्यां जेः । पा०१।३।१९।

५४ आडः दः । पा०१।३।२०।

५५ न स्वप्रसारणे ।

पा०१।३।२०+वा०१, २।

५६ गमेः क्षान्तौ । पा०१।३।२१ वा०२।

५७ तु-प्रच्छः । पा०१।३।२१ वा०६।

५८ क्रीडः अनु-परिभ्यां च ।

पा०१।३।२१।

५९ समः अकूजने । पा०१।३।२१ वा०१।

६० अपस्करः । पा०१।३।२१ वा०४।

६१ ह्रवः गतिशीले । पा०१।३।२१ वा०५।

६२ आशिषि नाथः । पा०१।३।२१ वा०७।

६३ शपः शपथे । पा०१।३।२१ वा०८।

६४ स्थः प्रतिज्ञा-निर्णय-प्रकाशनेषु ।

पा०१।३।२२ वा०१। पा०१।३।२३।

६५ सं-वि-प्र-अवात् । पा०१।३।२२।

६६ उदः अनुध्वंहायाम् ।

पा०१।३।२४+वा०१।

६७ उपात् मन्त्रेण । पा०१।३।२५।

६८ पथि-आराधनयोः ।

पा०१।३।२५ भा०।

६९ वा लिप्सायाम् । पा०१।३।२५ वा०२।

७० अव्याप्यात् । पा०१।३।२६।

७१ समः गम्-ऋछि-प्रछि-स्वृ-श्रु-वेत्ति-

अर्ति-दृशः । पा०१।३।२६+वा०१, २।

७२ प्रादिभ्यः असु-ऊहो वा ।

पा०१।३।२६ वा०३।

७३ आडः यम-हनः स्वाङ्गाप्याच्च ।

पा०१।३।२८+वा०१।

७४ व्युदस्तपः । पा०१।३।२७।

७५ तपआप्यात् । पा०३।१।८८।

- ७६ ति-सं-वि-उपेभ्यः ह्रः । पा० १।३।३०। १०० किरादि-श्रन्थ-ग्रन्थ-सनाम् आप्ये ।
 ७७ स्पर्धायाम् आडः । पा० १।३।३१। पा० ३।१।८७ वा० १८।
 ७८ सूचन-अवक्षेपण-सेवा-साहस-
 यत्न-कथा-उपयोगेषु कृञः । पा० ३।१।८६ भा०।
 पा १।३।३२। १०१ लुङि अचः । पा० ३।१।६२।
 ७९ अधेः शक्तौ । पा० १।३।३३। पा० ३।१।४३।
 ८० वेः शब्दाप्यात् । पा० १।३।३४। १०२ स्तु-नमः स्वयम् ।
 ८१ अव्याप्यात् । पा० १।३।३५। पा० ३।१।८६। पा० ३।१।८७।
 ८२ पूजा-उत्सङ्ग-उपनयन-ज्ञान-भूति-
 व्यय-विगणनेषु नित्यः । पा० १।३।३६। १०३ सृजः श्राद्धे ।
 ८३ कर्तृस्थामूर्ताप्यात् । पा० १।३।३७। पा० ३।१।८७ वा० १५+भा०।
 ८४ वृत्ति-उत्साह-तायनेषु क्रमः । १०४ शे श्यन् ।
 पा० १।३।३८। पा० ३।१।८७ वा० १५+भा०।
 ८५ परा-उपात् । पा० १।३।३९। १०५ लुङि ते चिण् ।
 ८६ आडो ज्योतिरुद्गतौ । १०६ उदञ्चरः साप्यात् ।
 पा० १।३।४०+वा० १। पा० १।३।५३।
 ८७ वेः पादाभ्याम् । पा० १।३।४१। १०७ समस्तृतीयायुक्तात् । पा० १।३।५४।
 ८८ प्र-उपाद् आरम्भे । पा० १।३।४२। १०८ दाणः सा चेत् चतुर्थ्यर्थे ।
 ८९ अप्रादेः वा । पा० १।३।४३। पा० १।३।५५।
 ९० निह्रवे ज्ञः । पा० १।३।४४। १०९ उपयम उद्वाहे ।
 ९१ अव्याप्यात् । पा० १।३।४५। पा० १।३।५६ तथा काशिका १।३।५६।
 ९२ सं-प्रतेः अस्मृतौ । पा० १।३।४६। ११० आमः कृञः प्राग्वत् ।
 ९३ ज्ञान-यत्न-उपच्छन्दनेषु वदः । पा० १।३।४७। पा० १।३।६३। पा० १।३।६२।
 पा० १।३।४७। १११ सनः । पा० १।३।६२।
 ९४ अनोः अव्याप्यात् । पा० १।३।४८। ११२ स्मृ-दृशः । पा० १।३।५७।
 ९५ विमतौ । पा० १।३।५०। ११३ अननोर्ज्ञः । पा० १।३।५८।
 ९६ व्यक्तं सहोक्तौ । पा० १।३।४८। ११४ श्रुवः अनाड-प्रतेः । पा० १।३।५६।
 ९७ तयोर्वा । पा० १।३।५०। ११५ शदेः शिति । पा० १।३।६०।
 पा० १।३।४८ भा०। ११६ मृडो लुङ्-लिङोश्च । पा० १।३।६१।
 ९८ अवाद् गिरः । पा० १।३।५१। ११७ प्रादेः अजाद्यन्ताद् युजेः अयज्ञपात्रेषु।
 पा० १।३।६४+भा०।
 ९९ समः प्रतिज्ञायाम् । पा० १।३।५२। ११८ समः क्षणुवः । पा० १।३।६५।
 १२० प्रयोजकाद् भी-स्मेणोः । ११९ भुजः अपालने । पा० १।३।६६।
 पा० १।३।६८। पा० १।३।६७।

- १२१ गृध्रि-वञ्चैः प्रलम्भने । पा० १।३।६६। १३५ रमो वि-आडोश्च । पा० १।३।८३।
 १२२ लियः पूजा-अभिभवयोश्च । पा० १।३।८४। १३६ उपात् । पा० १।३।८५।
 १२३ मिथ्यायोगे कृत्वः अभ्यासे । पा० १।३।८६। १३७ अव्याप्याद् वा । पा० १।३।८५।
 १२४ फलवति । पा० १।३।७२। १३८ अणौ चित्तवत्कर्तृकाद् णेः । पा० १।३।८६,८६।
 १२५ पाठे विभाषितात् । पा० १।३।७२। १३९ चलन-आहारार्थात् । पा० १।३।८७।
 १२६ वितः । पा० १।३।७२। १४० प्रु-दु-स्तु-बुध-युध-इङ्-नश-जनः । पा० १।३।८६।
 १२७ अपवदः । पा० १।३।७३। १४१ न पा-दम-आयस-आयस-परिमुह-
 १२८ सम्-उद्-आङ्भ्यो यमेः अग्रन्थे । पा० १।३।८६+वा० १
 पा० १।३।७५। तथा काशिका १।३।८७।
 १२९ अप्रादेर्ज्ञः । पा० १।३।७६। १४२ वा क्यषः । पा० १।३।८०।
 १३० शब्दान्तरगतौ वा । पा० १।३।७७। १४३ द्यु-द्व्यो लुङि । पा० १।३।८१।
 १३१ न अनु-पराभ्यां कृत्वः । पा० १।३।७८,७८। १४४ वृ-द्व्यः स्य-सन्तोः । पा० १।३।८२।
 पा० १।३।७९,७९। १४५ लुटि क्लृपः । पा० १।३।८३।
 १३२ प्रति-अति-अभीनां क्षिपः । पा० १।३।८०। १४६ युष्मदि मध्यमत्रयम् । पा० १।४।१०५,१०५।
 पा० १।३।८०। १४७ अस्मदि उत्तमम् । पा० १।४।१०७।
 १३३ प्राद् वहः । पा० १।३।८१। १४८ एक-द्वि-बहुषु । पा० १।४।१०२। पा० १।४।२१,२२।
 १३४ परेर्मूषश्च । पा० १।३।८२ तथा
 काशिका १।३।८२।

[प्रथमस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे प्रथमः अध्यायः समाप्तः]

[द्वितीयः अध्यायः प्रथमः पादः]

- १ सु-औ-जस्-अम्-औट्-शस्-
टा-भ्यां-भिस्-डे-भ्यां-भ्यस्-
डसि-भ्यां-भ्यस्-डस्-ओस्-आम्-
डि-ओस्-सुप् । पा०४।१।२।
- २ अतो भिस ऐस् । पा०७।१।६।
- ३ इदम्-अदसोः कात् । पा०७।१।११।
- ४ टा-डसोः इन-स्यौ । पा०७।१।१२।
- ५ डे-डस्योः य-आतौ ।
पा०७।१।१३,१२।
- ६ सर्वादिभ्यः स्मै-स्मातौ ।
पा०७।१।१४,१५।
- ७ डेः स्मिन् । पा०७।१।१५।
- ८ जसः शीः । पा०७।१।१७।
- ९ आत् आमः साम् । पा०७।१।५२,५०।
- १० न अन्यच्च नामा-ऽप्रधानात् ।
पा०१।१।२७ वा०२।
- ११ तृतीयार्थयोगे । पा०१।१।३०+भा०।
- १२ चार्थसमासे । पा०१।१।३१।
- १३ शी वा । पा०१।१।३२।
- १४ प्रथम-चरम-तय-अय-अल्प-अर्ध-नेम-
कतिपयात् । पा०१।१।३३।
- १५ पूर्वादिभ्यो नवभ्यः स्मात्-स्मिन्तौ च ।
पा०७।१।१६। पा०१।१।३४-३६।
- १६ स्मै च तीयात् । पा०१।१।३६ वा०३।
- १७ आपः औतः शीः । पा०७।१।१८,१७।
- १८ नपुंसकात् । पा०७।१।१६।
- १९ जस्-शसोः शिः । पा०७।१।२०।
- २० अष्टाभ्यः औश् । पा०७।१।२१।
- २१ ष-णः संख्याया लुक् ।
पा०७।१।२२। पा०१।१।२४,२३।
- २२ कतेः । पा०१।१।२५।
- २३ सु-अमोः नपुंसकात् । पा०७।१।२३।
- २४ अतः अम् । पा०७।१।२४।
- २५ इतरादिभ्यः पञ्चभ्यः अनेकतरात् तः।
पा०७।१।२५,२६ वा०१।
- २६ युष्मद्-अस्मद्भ्यां डसः अश् ।
पा०७।१।२७।
- २७ डे-सुटः अम् । पा०७।१।२८।
- २८ शसः नः । पा०७।१।२९।
- २९ भ्यसः अभ्यम् । पा०७।१।३०।
- ३० डसेश्च अत् । पा०७।१।३१,३२।
- ३१ आमः आकम् । पा०७।१।३३।
- ३२ ह्रस्व-आपो नुट् । पा०७।१।५४।
- ३३ संख्याया अनतः । पा०७।१।५५।
- ३४ त्रयाणाम् । पा०७।१।५३।
- ३५ स्त्री-यूभ्याम् । पा०७।१।५४।
पा०१।४।३।
- ३६ सेयुवो वा । पा०१।४।५।
- ३७ स्त्रीणाम् । पा०१।४।४।
- ३८ सुपः असंख्याद् लुक् ।
पा०२।४।८२,५८।
- ३९ ऐकार्थ्ये । पा०२।४।७१।
पा०१।२।४५,४६।
- ४० ततः प्राक् कारकात् ।
पा०१।१।४१,३७।
- ४१ न अतः अम् अपञ्चम्याः ।
पा०२।४।८३।
- ४२ तृतीया-सप्तम्योर्वा । पा०२।४।८४।
- ४३ क्रियाप्ये द्वितीया । पा०२।३।२।
पा०१।४।४६-५१।

- ४४ गति-बोध-आहार-शब्दार्थ-
अनाप्यानां प्रयोज्ये । पा०१।४।५२।
- ४५ ह-क्रोर्वा । पा०१।४।५३।
- ४६ दृश्-अभिवाद्योः तडाने ।
पा०१।४।५३ वा०१।
- ४७ न नी-खादि-अदि-ह्वा-शब्दाय-ऋन्दः ।
पा०१।४।५२ वा०५,१भा०।
- ४८ वहेः अनियन्तृके ।
पा०१।४।५२ वा०६।
- ४९ भक्षेः अहिंसायाम् ।
पा०१।४।५२ वा०७।
- ५० समया-निकषा-हा-धिग्-अन्तरा-
अन्तरेणयुक्तात् पा०२।३।२
वा०१+भा०।पा०२।३।४।
- ५१ द्वित्वे अध्यादिभिः ।
पा०२।३।२ भा०।
- ५२ सर्व-अभि-परि-उभयात् तसा ।
पा०२।३।२ भा०।
- ५३ एनपा । पा०२।३।३१।
- ५४ लक्षण-वीप्सा-इत्थंभूतेषु अभिना ।
पा०१।४।६१,६०,८३। पा०२।३।८।
- ५५ प्रति-परिभ्यां भागे च । पा०१।४।६०।
- ५६ अनुना । पा०१।४।६०।
- ५७ सहार्थे । पा०१।४।८५।
- ५८ हीने । पा०१।४।८६।
- ५९ उपेन । पा०१।४।८७।
- ६० सप्तमी आधिक्ये । पा०२।३।१६।
- ६१ स्वाम्ये अधिना । पा०२।३।१६।
पा०१।४।६७।
- ६२ कर्तरि तृतीया । पा०२।३।१८।
- ६३ करणे । पा०२।३।१८।
- ६४ परिक्रियश्चतुर्थी च । पा०१।४।४४।
- ६५ सहार्थेन । पा०२।३।१६।
- ६६ लक्षणे । पा०२।३।२१।
- ६७ संज्ञः व्याप्ये वा । पा०२।३।२२।
- ६८ हेतौ । पा०२।३।२३।
- ६९ ऋणे पञ्चमी । पा०२।३।२४।
- ७० गुणे वा । पा०२।३।२५।
- ७१ षष्ठी हेतुना । पा०२।३।२६।
- ७२ सर्वाः सर्वादिभ्यः हेत्वर्थैः ।
पा०२।३।२७+भा०।
- ७३ संप्रदाने चतुर्थी । पा०२।३।२३।
- ७४ रुचिमति । पा०१।४।३३।
- ७५ धारेः उत्तमर्णे । पा०१।४।३५।
- ७६ कोपस्थाने अनाप्ये ।
पा०१।४।३७,३८।
- ७७ प्रति-अनुभ्यां गृणः व्याप्ये ।
पा०१।४।४१।
- ७८ नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-वषट्-
शक्तार्थैः । पा०२।३।१६+वा०२।
- ७९ तादर्थ्ये । पा०२।३।१३ वा०१।
- ८० मन्याप्ये कुत्सायाम् अनावादौ वा ।
पा०२।३।१७+भा०।
- ८१ अवधेः पञ्चमी ।
पा०२।३।२८।पा०१।४।२४।
- ८२ परि-अपाभ्यां वर्जने ।
पा०२।३।१०।पा०१।४।८८।
- ८३ प्रतिना प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः ।
पा०२।३।११। पा०१।४।६२।
- ८४ ऋते द्वितीया च । पा०२।३।२६।
- ८५ विना तृतीया च । पा०२।३।३२।
तथा काशिका २।३।३२।
- ८६ पृथग्-नानाभ्याम् । पा०२।३।३२।
- ८७ स्तोत्र-अल्प-कृच्छ्र-कतिपयाद्
असत्त्वार्थात् करणे । पा०२।३।३३।

- ८८ सप्तमी आधारे । पा० २।३।४७।
 ८९ संबोधने । पा० २।३।४७।
 पा० २।३।३६। पा० १।४।४५। ९५ षष्ठी संबन्धे ।
 ९० निमित्ताद् व्याप्येन । पा० २।३।५०। तथा काशिका २।३।५०।
 पा० २।३।३६। वा० ६। ९६ तुल्यार्थेस्तृतीया वा । पा० २।३।७२।
 ९० यत्क्रिया क्रियाचिह्नम् । पा० २।३।३७। ९७ हित-सुखाभ्यां चतुर्थी च ।
 ९१ षष्ठी च अनादरे । पा० २।३।३८। पा० २।३।७३।
 ९२ यतः निर्धारणम् । पा० २।३।४१। ९८ आशिषि आयुष्य-भद्रार्थ-कुशलार्थेश्च ।
 ९३ अर्थमात्रे प्रथमा । पा० २।३।४६। पा० २।३।७३। तथा काशिका २।३।७३।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ सुप् सुपा एकार्थम् । पा० २।१।४। १५ तन्नपुंसकम् । पा० २।४।१८।
 २ असंख्यं विभक्ति-समीप-अभाव- १६ कारकं बहुलम् । पा० २।१।२४-४८।
 ख्याति-पश्चात्-यथा-युगपत्-संपत्- १७ चतुर्थी प्रकृत्या । पा० २।१।३६ भा०।
 साकल्यार्थे । पा० २।१।६। १८ विशेषणम् एकार्थेन । पा० २।१।५७।
 ३ यथा न तुल्ये । पा० २।१।७। १९ प्राप्त-आपन्नौ द्वितीयया अत्वं च ।
 ४ यावद् इयत्त्वे । पा० २।१।८। पा० २।२।४+भा०।
 ५ प्रतिना मात्रार्थे । पा० २।१।९। २० नञ् । पा० २।२।६।
 ६ संख्या-अक्ष-शलाकाः परिणा द्यूते २१ ईषद् गुणेन । पा० २।२।७+वा० १।
 अन्यथावृत्तौ । पा० २।१।१०+भा०। २२ षष्ठी । पा० २।२।८।
 ७ परि-अप-आङ्-बहिर्-अञ्चः २३ न ल-निर्धार्य-पूरण-भाव-तृप्तार्थैः ।
 पञ्चम्या वा । पा० २।१।११-१३। पा० २।२।११,१०।
 ८ लक्षणेन अभि-प्रती । पा० २।१।१४। २४ कु-प्रादयः असुप्विधौ नित्यम् ।
 ९ अनुः सामीप्य-आयामयोः । पा० २।२।१८+वा० १।
 पा० २।१।१५,१६। २५ ऊर्यादिकारिकाच्चिडाचः क्रियार्थैः ।
 १० तिष्ठद्गु-आदीनि । पा० २।१।१७। पा० १।४।६१,६० वा० १।
 ११ पारे मध्ये षष्ठ्या वा । २६ अनुकरणम् । पा० १।४।६२।
 पा० २।१।१८। २७ भूषण-आदर-अनादरेषु
 १२ संख्या वक्ष्येन । पा० २।१।१९। अलं-सत्-असतः । पा० १।४।६३,६४।
 १३ नदीभिः । पा० २।१।२०। २८ अग्रहे अन्तः । पा० १।४।६५।
 १४ अन्यार्थे नाम्नि । पा० २।१।२१। २९ कणे-मनसी तृप्तौ । पा० १।४।६६।

- ३० पुरस्-अस्तम् असंख्यम् ।
पा० १।४।६७, ६८।
- ३१ अच्छ गत्यर्थ-वदिभिः । पा० १।४।६९।
- ३२ अदः अनुपदेशे । पा० १।४।७०।
- ३३ तिरः अन्तर्धौ । पा० १।४।७१।
- ३४ कृत्वा वा । पा० १।४।७२।
- ३५ उपाजे-अन्वाजे । पा० १।४।७३।
- ३६ साक्षात्-आदीनि । पा० १।४।७४।
- ३७ अनत्याधाने उरसि-मनसि-मध्ये-पदे-
निवचने । पा० १।४।७५, ७६।
- ३८ नित्यं हस्ते-पाणौ उद्वाहे ।
पा० १।४।७७।
- ३९ प्राघ्वं बन्धे । पा० १।४।७८।
- ४० जीविका-उपनिषदौ औपम्ये ।
पा० १।४।७९।
- ४१ असंख्यं वा अनभिप्रेताख्याने क्त्वा ।
पा० ३।४।५९।
- ४२ तिर्यक् समाप्तौ । पा० ३।४।६०।
- ४३ स्वाङ्गात् तस्-ना-धार्थं भुवा च ।
पा० ३।४।६१, ६२।
- ४४ तूष्णीम् । पा० ३।४।६३।
- ४५ अन्वग् आनुकूल्ये । पा० ३।४।६४।
- ४६ अनेकम् अन्यार्थे । पा० २।२।२४।
- ४७ तत्र गृहीत्वा तेन प्रहृत्य युद्धे सरूपम् ।
पा० २।२।२७।
- ४८ चार्थे । पा० २।२।२९।
- ४९ समाहारे नपुंसकम् । पा० २।४।१७।
- ५० अनुवादे चरणानां स्था-इणोर्लुङि ।
पा० २।४।३+वा० १, २।
- ५१ अध्वर्यु-ऋतूनामनपुंसकानाम् । ।
पा० २।४।४।
- ५२ संनिकृष्टपाठानाम् । पा० २।४।५।
- ५३ अप्राणिजातीनाम् । पा० २।४।६।
- ५४ नदी-देश-नगराणां भिन्नलिङ्गानाम् ।
पा० २।४।७।
- ५५ नित्यं वैरिणाम् । पा० २।४।९।
- ५६ कारुणाम् । पा० २।४।१०।
- ५७ गवाश्व-आदीनाम् । पा० २।४।११।
- ५८ प्राणि-तूर्याङ्गणाम् । पा० २।४।२।
- ५९ सेनाङ्गानां बहुत्वे ।
पा० २।४।२+१२वा० १।
- ६० क्षुद्रजन्तूनाम् । पा० २।४।८।
- ६१ फलानाम् । पा० २।४।१२ वा० १।
- ६२ वा वृक्ष-तृण-धान्य-मृग-शकुनि-
विशेषाणाम् । पा० २।४।१२।
- ६३ व्यञ्जनानाम् । पा० २।४।१२।
- ६४ अश्ववडवौ । पा० २।४।१२, २७।
- ६५ विरोधिनाम्-अद्रव्याणाम् ।
पा० २।४।१३।
- ६६ न दधिपय-आदीनाम् । पा० २।४।१४।
- ६७ नाम्नि षष्ठ्याः कन्था उशीनरेषु ।
पा० २।४।२०।
- ६८ उपज्ञा-उपक्रमं तदादित्वे ।
पा० २।४।२१।
- ६९ ईश्वरार्थात् अराज्ञः सभा ।
पा० २।४।२३। काशिका २।४।२३।
- ७० अमनुष्यात् । पा० २।४।२३।
- ७१ अशाला । पा० २।४।२४।
- ७२ सेना-सुरा-शाला-निशा वा ।
पा० २।४।२५।
- ७३ छाया । पा० २।४।२५।
- ७४ बाहुल्ये । पा० २।४।२२।
- ७५ पथः असंख्यात् ।
पा० २।४।३+वा० १।

७६ संख्यादिः समाहारे ।

पा० २।४।३० वा० २।

७७ अः स्त्री । पा० २।४।३० भा० ।

७८ वा आप् । पा० २।४।३० वा० ३।

७९ अनो लोपः । पा० २।४।३० भा० ।

८० न पात्रादयः । पा० २।४।३० भा० ।

८१ रात्र-अहन-वाकाः पुंसि ।

पा० २।४।२६+वा० १।

८२ अहः असुदिन-पुण्यात् ।

पा० २।४।२६, ३० भा० ।

८३ नपुंसके च अर्धर्च-आदयः । पा० २।४।३१ ।

८४ सुपि ह्रस्वः । पा० १।२।४७ ।

८५ गोः अप्रधानस्य अन्त्यस्य ।

पा० १।२।४८ ।

८६ ड्यादीनाम् । पा० १।२।४८ ।

८७ लुक् अणादिलुकि अगोण्यादीनाम् ।

पा० १।२।४९, ५०+भा० ।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ स्त्रियाम् । पा० ४।१।३।

२ ऋ-नो ङीप् । पा० ४।१।५।

३ उगितः । पा० ४।१।६।

४ अब्रः । पा० ४।१।६ वा० २।

५ अहशो वनो र च ।

पा० ४।१।७+वा० १।

६ अन्यार्थे वा । पा० ४।१।७ वा० २।

७ पादः । पा० ४।१।८।

८ अनः । पा० ४।१।२८।

९ ऊधसो नश्च । पा० ४।१।२५। तथा

पा० ५।४।१३१।

१० दाम्नः संख्यादेः । पा० ४।१।२७।

११ हायनाद् वयसि । पा० ४।१।२७+भा० ।

१२ नोपान्तवतः । पा० ४।१।१२।

१३ मनः । पा० ४।१।११।

१४ ताभ्यां डाप् । पा० ४।१।१३।

१५ अजाद्यतः । पा० ४।१।१४।

१६ स्वार्थे । पा० ४।१।१४।

१७ टित्-ढ-अण्-अच्-ठक्-ठच्-नच्-

स्नच्-कच्-क्वरप्-ख्युनः ।

पा० ४।१।१५+वा० ६+भा० ।

१८ यवोऽषावटात् । पा० ४।१।१६, ७४

वा० १।पा० ४।१।७५।

१९ ष्फो वा । पा० ४।१।१७।

२० लोहितादिभ्यः शकलान्तेभ्यः ।

पा० ४।१।१८+वा० १।

२१ कौरव्य-आसुरि-माण्डूकात् ।

पा० ४।१।१९+वा० १।

२२ वयसि अचरमे । पा० ४।१।२० भा० ।

२३ संख्यादेः । पा० ४।१।२१।

२४ परिमाणाल्लुकि असंख्या-काल-विस्ता-
आचित-कम्बल्यात् ।

पा० ४।१।२२+भा० ।

२५ काण्डाद् अक्षेत्रे । पा० ४।१।२३।

२६ पुरुषाद् वा । पा० ४।१।२४।

२७ केवल-मामक-भागधेय-पाप-अवर-

समान-आर्यकृत-मुमङ्गल-भेषजाद्

नाम्नि । पा० ४।१।३०।

२८ अन्तर्वत्नी गर्भिण्याम् ।

पा०४।१।३२+वा०१।

२९ पतिवत्नी भार्यायाम् ।

पा०४।१।३२+वा०१।

३० पत्युर्न ऊढायाम् । पा०४।१।३३।

३१ सपूर्वस्य वा । पा०४।१।३४।

३२ अन्यार्थे । पा०४।१।३४ वा०१।

३३ समानादिभ्यः । पा०४।१।३५।

३४ श्वेत-एत-हरित-रोहितात् तो नः ।

पा०४।१।३६।

३५ वनः असित-पलितात् ।

काशिका ४।१।३६१।

३६ षितः डीष् । पा०४।१।४१।

३७ गौरादिभ्यः । पा०४।१।४१।

३८ भाज-गोण-नाग-स्थल-कुण्ड-काल-

कुश-कामुक-कवरात् पक्व-आवपन-

स्थूल-अकृत्रिम-अक्षत्र-कृष्ण-आयसी-

रिरंसु-केशवेशेषु । पा०४।१।४२।

३९ नीलात् प्राणि-ओषधयोः ।

पा०४।१।४२ वा०१,२।

४० वा नास्मि । पा०४।१।४२ वा०३।

४१ शोणादिभ्यः । पा०४।१।४३,४५।

४२ एः अकितनः । काशिका ४।१।४५१।

पा०४।१।४५।

४३ ओः गुणाद् अखरु-संयोगोपान्तात् ।

पा०४।१।४४+वा०२।

४४ पुंनाम्नो योगाद् अपालकान्तात् ।

पा०४।१।४५+भा०।

४५ पूतकतु-वृषाकपि-अग्नि-कुसित-

कुसीदानाम् ऐ च ।

पा०४।१।३६,३७।

४६ मनोः औ वा । पा०४।१।३८।

४७ सूर्या देवी । पा०४।१।४८ भा०।

४८ इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृडानाम्

आनुक् च । पा०४।१।४९।

४९ आचार्यानी । पा०४।१।४९ वा०६।

५० मातुल-उपाध्यायाद् वा ।

पा०४।१।४९ वा०४।

५१ आर्य-क्षत्रियाच्च पा०४।१।४९।वा०७।

५२ हिम-अरण्याद् महत्त्वे ।

पा०४।१।४९ वा०१।

५३ यवाद् दोषे । पा०४।१।४९ वा०२।

५४ यवनात् लिप्याम् ।

पा०४।१।४९ वा०३।

५५ क्रीतात् करणादेः । पा०४।१।५०।

५६ क्ताद् अल्पोक्तौ । पा०४।१।५१।

५७ स्वाङ्गात् अकृत-मित-जात-

प्रतिपन्नात् अन्यार्थे । पा०४।१।५४।

पा०६।२।१७०।पा०४।१।५२ वा०१।

५८ पाणिगृहीती ऊढा ।

पा०४।१।५२ वा०२।

५९ जातेः अनाच्छादाद् वा ।

पा०४।१।५३। पा०६।२।१७०।

६० संज्ञायाम् । पा०४।१।५२। वा०३,४।

६१ स्वाङ्गाद् अप्रधानात् । पा०४।१।५४।

६२ नासिका-उदर-ओष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्ण-

शृङ्ग-अङ्ग-गात्र-कण्ठात् ।

पा० ४।१।५५। काशिका ४।१।५४।

१ अस्य सूत्रस्य वृत्तौ "भापायामपीप्यते" इति निर्विशय 'असिकनी-पलिकनी' रूपसिद्धि-
बोधिता ।

२ अप्रापि कामिकायाम् अस्मिन् सूत्रे 'कृदिकारात् अकितनः' इति वार्तिकम् ।

- ६३ पुच्छात् । पा० ४।१।५५ वा० १।
 ६४ कवर-मणि-विष-शरात् ।
 पा० ४।१।५५ वा० २।
 ६५ उपमानादेः । पा० ४।१।५५ वा० ३।
 ६६ पक्षात् । पा० ४।१।५५ वा० ३।
 ६७ न क्रोडादिभ्यः । पा० ४।१।५६।
 ६८ सह-नञ्-विद्यमानादेः ।
 पा० ४।१।५७।
 ६९ नख-मुखाद् नाम्नि । पा० ४।१।५८।
 ७० सखी अशिखी । पा० ४।१।६२।
 ७१ जातेः अस्त्रीविषयाद् अयोपान्तात् ।
 पा० ४।१।६३।
 ७२ पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-
 बालान्तात् । पा० ४।१।६४।
 ७३ इतः नृजातेः । पा० ४।१।६५।
 ७४ इञ् । पा० ४।१।६५ वा० १।
 ७५ ऊङ् उतः । पा० ४।१।६६।
 ७६ अप्राणिनाम् अरज्ज्वादिभ्यः ।
 पा० ४।१।६६ वा० १।
 ७७ बाह्वन्त-कद्रु-कमण्डलुभ्यो नाम्नि ।
 पा० ४।१।६७, ७२।
 ७८ पङ्गूः श्वश्रूः । पा० ४।१।६८।
 काशिका ४।१।६८।
 ७९ ऊरोः उपमा-संहित-सहित-सह-शफ-
 वाम-लक्ष्मणादेः । पा० ४।१।६९, ७०।
 ७० भा०।
 ८० यङ्श्चाप् । पा० ४।१।७४।
 ८१ यूनस्तिः । पा० ४।१।७७।
 ८२ अनृषेर्गुरुपोत्तमाद् गोत्रे अणिञोः
 ष्यङ् । पा० ४।१।७८।
 ८३ कुलनाम्नः । पा० ४।१।७९।
 ८४ क्रौड्यादीनाम् । पा० ४।१।८०।
 ८५ दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-सात्यमुग्रि-
 काण्ठेविद्धीनां वा । पा० ४।१।८१।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ प्राग्जिताद् अण् । पा० ४।१।८३।
 २ दिति-अदिति-आदित्य-यमाद् ण्यः ।
 पा० ४।१।८५। काशिका ४।१।८५।
 ३ पत्युरनश्वाद्यादेः । पा० ४।१।८५, ८४।
 ४ अः स्थात्मनः । पा० ४।१।८५ वा० ७।
 ५ लोम्नः अपत्येषु । पा० ४।१।८५
 वा० ८।
 ६ पृथिव्या ष्यः । पा० ४।१।८५ वा० २।
 ७ उत्सादिभ्यः अञ् । पा० ४।१।८६।
 ८ देवात् । पा० ४।१।८५ वा० ३।
 ९ यञ् । पा० ४।१।८५ वा० ३।
 १० बहिषः टीकक् च ।
 पा० ४।१।८५ वा० ५, ४।
 ११ संख्यादेः संख्येयाद् अनपत्ये अजादेलुङ्
 अङ्घ्रिः । पा० ४।१।८८+भा०।
 १२ प्राग् वतेः अग्नि-कलिभ्यां ढक् ।
 पा० ४।२।७ भा०।
 १३ स्त्री-पुंसाभ्यां नञ्-स्त्वौ ।
 पा० ४।१।८७+वा० १।
 १४ भावे वा । पा० ४।१।८७ वा० २।
 १५ गोः अचि यत् । पा० ४।१।८५ वा० ९।
 १६ तस्य अपत्यम् । पा० ४।१।८२।

- १७ आद्यात् । पा०४।१।६३।
 १८ पौत्रादेः अस्त्रियां गुर्वयित्ते ।
 पा०४।१।६४।
 १९ अतः इच् । पा०४।१।६५।
 २० बाह्यादिभ्यो गोत्रादिभ्यः ।
 पा०४।१।६६ वा०१।
 २१ व्यासादीनाम् अकङ् च ।
 पा०४।१।६७ भा०।
 २२ विदादिभ्यः अच् । पा०४।१।१०४।
 २३ ऋषेः पौत्रादौ । पा०४।१।१०४।
 २४ गर्गादिभ्यो यच् । पा०४।१।१०५।
 २५ मधोर्बाह्याणे । पा०४।१।१०६।
 २६ वभ्रोः कौशिके । पा०४।१।१०६।
 २७ कपेः आङ्गिरसे । पा०४।१।१०७।
 २८ वोधात् । पा०४।१।१०७।
 २९ वतण्डात् । पा०४।१।१०८।
 ३० स्त्रियां लुक् । पा०४।१।१०९।
 ३१ अश्यादिभ्यः फच् । पा०४।१।११०।
 ३२ भर्गात् त्रैगते । पा०४।१।१११।
 ३३ कुञ्जादिभ्यः पयच् ।
 पा०४।१।११२ भा०।
 ३४ स्त्रीबहुषु फक् । पा०५।३।११३।
 पा०४।१।११५ भा०।
 ३५ नडादिभ्यः । पा०४।१।११६।
 ३६ हरितादिभ्यः अवः । पा०४।१।१००।
 ३७ यञिञः । पा०४।१।१०१।
 ३८ शरद्वत्-शुनक-इर्भाद् भर्गव-वात्स्य-
 आश्रायणेषु । पा०४।१।१०२।
 ३९ पर्यन्त-जीवन्ताद् वा । पा०४।१।१०३।
 ४० द्रोणात् । पा०४।१।१०३।
 ४१ शिवादिभ्यः अण् । पा०४।१।११२।
 ४२ नदी-मानुषीनाम्नः अनार्दजाद्यचः ।
 पा०४।१।११३।

- ४३ कुञ्जा-कोकिलाभ्याम् ।
 पा०४।१।१२० भा०।
 ४४ ऋषि-कुरु-वृष्णि-अन्धकात् ।
 पा०४।१।११४।
 ४५ मातुः उत् संख्या-सं-भद्रादेः ।
 पा०४।१।११५।
 ४६ कन्यायाः कनीन च ।
 पा०४।१।११६।
 ४७ शुङ्ग-च्छगल-विकर्णाद् भारद्वाज-
 वात्स्य-आत्रेयेषु । पा०४।१।११७।
 ४८ पीला-मण्डूकाद् वा ।
 पा०४।१।११८, ११९।
 ४९ ङक् । पा०४।१।११९।
 ५० डी-आप्-ति-ऊङः । पा०४।१।१२०।
 ५१ द्व्यचः । पा०४।१।१२१।
 ५२ इतोऽनियः । पा०४।१।१२२।
 ५३ शुभ्रादिभ्यः । पा०४।१।१२३।
 ५४ विकर्ण-कुषीतकात् काश्यपे ।
 पा०४।१।१२४।
 ५५ भ्रौवेयः । पा०४।१।१२५।
 ५६ कल्याण्यादीनाम् इनङ् ।
 पा०४।१।१२६।
 ५७ कुलटाया वा । पा०४।१।१२७।
 ५८ चटकात् ऐरक् ।
 पा०४।१।१२८+वा०१।
 ५९ लुक् स्त्रियाम् ।
 पा०४।१।१२८ वा०२।
 ६० जाण्ड-पाण्डाद् आरक् ।
 पा०४।१।१३० भा०।
 ६१ गोधायाः । पा०४।१।१३०।
 ६२ एरक् । पा०४।१।१२९।
 ६३ क्षुद्राभ्यो वा । पा०४।१।१३१।

- ६४ भ्रातुर्व्यत् । पा०४।१।१४४। ८६ त्यदादिभ्यो वा ।
 ६५ छः । पा०४।१।१४४। काशिका ४।१।१५६१।
 ६६ स्वसुः । पा०४।१।१४३। ९० अगोत्रादादैजाद्यचः । पा०४।१।१५७।
 ६७ पितृ-मात्रादेः छण् । ९१ वाकिनादीनां कुक् च ।
 पा०४।१।१३२, १३४। पा०४।१।१५८।
 ६८ ढकि लोपः । पा०४।१।१३३। ९२ पुत्रान्ताद् वा । पा०४।१।१५९।
 ६९ क्षत्रात् जातौ घः । पा०४।१।१३८। ९३ फिन् बहुलम् । पा०४।१।१६०।
 काशिका ४।१।१३८। ९४ मनोजर्तौ यत् सुक् च ।
 ७० राज्ञो यत् । पा०४।१।१३७+वा०१। पा०४।१।१६१।
 ७१ श्वशुरात् । पा०४।१।१३७। ९५ अञ् । पा०४।१।१६१।
 ७२ कुलात् ढकञ् च । पा०४।१।१४०। ९६ जनपदनाम्नः क्षत्रियाद् राज्ञि च ।
 ७३ खः पदान्ताच्च । पा०४।१।१३९ । पा०४।१।१६८+वा०३।
 ७४ दुरः ढक् वा । पा०४।१।१४२। ९७ गान्धारि-शाल्वेयात् ।
 ७५ महाकुलाद् अञ्-खञौ । पा०४।१।१६९।
 पा०४।१।१४१। ९८ आदैजाद्यचो व्यङ् । पा०४।१।१७१।
 ७६ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् । पा०४।१।१३५। ९९ इत् कोशल-आजादात् ।
 ७७ गृष्ट्यादिभ्यः । पा०४।१।१३६। पा०४।१।१७१।
 ७८ रेवत्यादिभ्यः ठक् । पा०४।१।१४६। १०० द्व्यच्-मगध-कलिङ्ग-शूरमसाद्^२
 ७९ पौत्रादेः स्त्रियाः कुत्सिते ण च । अण् । पा०४।१।१७०।
 पा०४।१।१४७। १०१ कुरु-नादिभ्यः ण्यः ।
 ८० सौवीरेषु वा । पा०४।१।१४८। पा०४।१।१७२।
 ८१ फेद्रेछ च । पा०४।१।१४९। १०२ पाण्डोडर्चण् । पा०४।१।१६८ भा०।
 ८२ फाण्टाहृतेः ण-फिञौ । पा०४।१।१५०। १०३ शाल्वाङ्ग-प्रत्यग्रथ-कलकूट-
 ८३ मिमतात् । पा०४।१।१५०। अश्मकात् इञ् । पा०४।१।१७३।
 ८४ कुर्वादिभ्यो ण्यः । पा०४।१।१५१। १०४ कम्बोजादिभ्यो लुक् ।
 ८५ सेनान्त-कारु-लक्ष्मणाद् इञ् च । पा०४।१।१७५+वा०१।
 पा०४।१।१५२, १५३। १०५ स्त्रियां कुरु-कुन्ति-अवन्तिभ्यः ।
 ८६ तिकादिभ्यः फिन् । पा०४।१।१५४। पा०४।१।१७६।
 ८७ दगु-कोशल-कर्मारि-च्छाग-वृषाद् १०६ अतः अप्राच्य-भर्गादिभ्यः ।
 युद् च । पा०४।१।१५५ वा०१। पा०४।१।१७७, १७८।
 ८८ द्व्यचोऽणः । पा०४।१।१५६।

१. अत्र सूत्रे "त्यदादीनां वा फिन् वक्तव्यः" इति वार्तिकम् ।

२. अत्र सवृत्तिके चान्द्रव्याकरणे 'सूरमसाद्' इति पाठः ।

- १०७ यञ्-अञोः बहुषु अस्त्रियाम् । ११५ तिक-कितवादिभ्यश्च अर्थैकार्थ्ये ।
पा०२।४।६४,६२। पा०२।४।६८।
- १०८ कुण्डिनाः । पा०२।४।७०। ११६ न गोपवनादिभ्यः अष्टभ्यः ।
पा०२।४।६७+वा०१।
- १०९ व्यादीनाम् । पा०४।१।१७४। ११७ प्राग्जितीये अचि । पा०४।१।८६।
पा०२।४।६२। ११८ गोत्राद् लुक् । पा०४।१।९०।
- ११० यस्कादिभ्यः । पा०२।४।६३। ११९ फक्-फिञोर्वा । पा०४।१।९१।
- १११ अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-अङ्गिरस्- १२० अब्राह्मणात् । पा०२।४।५८ भा०।
गोतमात् । पा०२।४।६५। १२१ पैलादिभ्यः । पा०२।४।५९।
- ११२ अगस्तयः । पा०२।४।७०। १२२ प्राच्याद् इवः अतौल्वलिभ्यः ।
पा०२।४।६०,६१।
- ११३ बह्वचः प्राच्याद् इवः । १२३ ङिद्-आर्षण्याद् अणिञोः ।
पा०२।४।६६। पा०२।४।५८।
- ११४ उपकादिभ्यो वा । पा०२।४।६६।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे द्वितीयः अध्यायः समाप्तः]

[तृतीयः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- | | |
|---|---|
| <p>१ तेन रक्तं रागात् । पा०४।२।१।</p> <p>२ लाक्षा-रोचनात् ठक् । पा०४।२।२।</p> <p>३ शकल-कर्दमाद् वा । पा०४।२।२।
वा०१।</p> <p>४ नील-पीताद् अन्-कनौ ।
पा०४।२।२। वा०२,३।</p> <p>५ नक्षत्रैरिन्द्रियुक्तैः कालः ।
पा०४।२।३+वा०१।</p> <p>६ चार्थात् छः । पा०४।२।६।</p> <p>७ दृष्टं साम डित् वा ।
पा०४।२।७+भा०।</p> <p>८ गोत्रात् अङ्कुवत् । पा०४।२।७ भा०।</p> <p>९ वामदेव्यम् । पा०४।२।९।</p> <p>१० परिवृतो रथः । पा०४।२।१०।</p> <p>११ कौमारी प्राथम्ये । पा०४।२।१३।</p> <p>१२ तत्र उद्धृतं पात्रेभ्यः । पा०४।२।१४।</p> <p>१३ स्थण्डिले शेते व्रती । पा०४।२।१५।</p> <p>१४ संस्कृतं भक्ष्यम् । पा०४।२।१६।</p> <p>१५ शूल-उखात् यत् । पा०४।२।१७।</p> <p>१६ दघ्नः ठक् । पा०४।२।१८।</p> <p>१७ क्षीरात् ढञ् । पा०४।२।२०।</p> <p>१८ साऽस्य पौर्णमासी । पा०४।२।२१।</p> <p>१९ आप्रहायणी-अश्वत्थात् ठक् ।
पा०४।२।२२।</p> <p>२० फाल्गुनी-श्रवणा-कार्तिकी-चैत्रीभ्यो
वा । पा०४।२।२३।</p> <p>२१ देवता । पा०४।२।२४।</p> <p>२२ कस्य इत् । पा०४।२।२५।</p> | <p>२३ शुक्रात् घन् । पा०४।२।२६।</p> <p>२४ पैङ्गाक्षीपुत्रादिभ्यः छः ।
पा०४।२।२८ वा०१।</p> <p>२५ शतरुद्रात् घञ् । पा०४।२।२८ वा०२।</p> <p>२६ अपोनपात्-अपांनपातोः तृ चातः ।
पा०४।२।२७,२८।</p> <p>२७ महेन्द्राद् वा । पा०४।२।२९।</p> <p>२८ सोमात् ट्यण् । पा०४।२।३०।</p> <p>२९ वायु-ऋतु-पितृ-उषसो यत् ।
पा०४।२।३१।</p> <p>३० द्यावापृथिवी-शुनासीर-मरुत्वत्-
अग्नीषोम-वास्तोष्पति-गृहमेधात्
छञ् । पा०४।२।३२।</p> <p>३१ कालेभ्यो भववत् । पा०४।२।३४।</p> <p>३२ महाराज-प्रोष्ठपदात् ठञ् ।
पा०४।२।३५।</p> <p>३३ आदेश्छन्दसः प्रगाथे । पा०४।२।५५।</p> <p>३४ योद्धृप्रयोजनात् संग्रामे ।
पा०४।२।५६।</p> <p>३५ प्रहरणात् अस्यां क्रीडायां ञः ।
पा०४।२।५७।</p> <p>३६ भावघञो वः । पा०४।२।५८।</p> <p>३७ तद् अधीते तद् वेद । पा०४।२।५९।</p> <p>३८ ऋतु-उक्त्वादिभ्यः ठक् । पा०४।२।६०।</p> <p>३९ शत-वष्टेः पथः ष्ठन् ।
पा०४।२।६०। भा० (कारिका?)</p> <p>४० क्रमादिभ्यो वृन् । पा०४।२।६१।</p> <p>४१ प्रीषतात् लृक् । पा०४।२।६४।</p> |
|---|---|

१ इयं च कारिका श्रीकृष्णार्जुनसंवादे व्याकरणमहाभाष्ये एवं कर्तव्या—

“अनुपूर्वध्वजक्षणे सर्वसादेदिगोष लः । इत्तु पदोत्तरयदात् यत-वष्टेः पितृन् पथः” ॥

— इतिव भागे पृ० २८४ । कारिकायां तु ४।२।६० सूत्रे एवं कर्तव्यम्— “शत-वष्टेः पितृन् पथो वृत्तम्” ।

- ४२ सूत्रात् संख्याकात् ।
पा०४१२।६५+भा०।
- ४३ तस्य समूहः । पा०४१२।३७।
पा०४१२।५१ वा०१।
- ४४ भिक्षादिभ्यः अण् । पा०४१२।३८।
- ४५ गोत्र-उक्ष-उष्ट्र-उरभ्र-राज-राजपुत्र-
वत्स-अज-वृद्धात् वुञ् ।
पा०४१२।३९+भा०।
- ४६ केदारात् यञ् च । पा०४१२।४०।
- ४७ कवचिनश्च ठक् । पा०४१२।४१।
- ४८ हस्ति-अचित्तात् । पा०४१२।४७।
- ४९ धेनोरनवः । पा०४१२।४५ भा० ।
काशिका ४१२।४७ वा०।
- ५० गणिका-ब्राह्मण-माणव-वाडवात् यञ् ।
पा०४१२।४० भा०। पा०४१२।४२।
- ५१ केशाद् वा । पा० ४१२।४८।
- ५२ अश्वात् छः । पा०४१२।४८।
- ५३ पार्श्व-पौष्पेये । पा०४१२।४३ वा०३।
पा०५११।१० भा०।
- ५४ पृष्ठ्य-अहीनौ ऋतौ । पा०४१२।४२
वा०१। पा०४१२।४३ वा०१,२।
- ५५ वातात् ऊलः । पा०५१२।१२२ वा०९।
- ५६ पाशादिभ्यः यः । पा०४१२।४९।
- ५७ खलादिभ्यः इनिः ।
पा०४१२।५१ वा०१।
- ५८ गोत्रा । पा०४१२।५१।
- ५९ ग्राम-जन-गज-वन्धु-सहायात् तल् ।
पा०४१२।४३+भा०।
- ६० पितृव्य-मातामह-पितामहाः ।
पा०४१२।३६।
- ६१ विषये देशे । पा०४१२।५२।
- ६२ राजन्यादिभ्यः वुञ् । पा०४१२।५३।
- ६३ भौरिकि-ऐषुकार्यादिभ्यः विधल्-
भक्तलौ । पा०४१२।५४।
- ६४ निवासे तन्नाम्नि । पा०४१२।६९,६७।
- ६५ अद्वरभवे । पा०४१२।७०।
- ६६ तेन निर्वृत्ते । पा०४१२।६८।
- ६७ तद् इह अस्ति च । पा०४१२।६७।
- ६८ वुञ्-छण्-क-ठच्-इल-स-इनि-र-ढञ्-
-ण्य-य-फक्-फिञ्-इञ्-ञ्य-कक्-ठक्-
छ-कीय-ड्मत्तुप्-ड्वलचः ।
पा०४१२।८०,९०,९१,८७,८८।

[तृतीयस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ शेषे । पा०४१२।९२।
- २ राष्ट्राद् घः । पा०४१२।९३।
- ३ पारावार-अवारपारात् खः ।
पा०४१२।९३वा०१,२।
- ४ ग्रामात् य-खञौ । पा०४१२।९४।
- ५ कत्र्यादिभ्यश्च ढक्ञ् ।
पा०४१२।९५+भा०।
- ६ नद्यादिभ्यः ढक् । पा०४१२।९७।
- ७ दक्षिणा-पश्चात्-पुरसः त्यक् ।
पा०४१२।९८।
- ८ बह्लि-उर्दि-पर्दि-कापिशीभ्यः ष्फक् ।
पा०४१२।९९+भा०।
- ९ रङ्गोः प्राणिनि वा । पा०४१२।१००।
काशिका ४१२।१००।
- १० द्यु-प्राग्-अपाग्-उदक्-प्रतीचो यत् ।
पा०४१२।१०१।

- ११ कन्थायाः ठक् । पा०४।२।१०२। ३४ बाहीकग्रासात् । पा०४।२।११७।
- १२ वर्णो वुक् । पा०४।२।१०३। ३५ वा उशीनरेषु । पा०४।२।११८।
- १३ क्व-अमा-इह-त्र-तसः त्यप् । ३६ प्रस्थ-वह-पुरान्त-योपान्त-धन्वार्थत्
पा०४।२।१०४ भा०। वुञ् । पा०४।२।१२२,१२१।
- १४ निसो गते । पा०४।२।१०४ भा०। ३७ रोपान्त-ईतः प्राच्यात् ।
पा०४।२।१०५। ३८ जनपदेभ्यः । पा०४।२।१२४।
- १६ दूरेत्य-औत्तराहौ । ३९ बहुत्वविषयेभ्यः । पा०४।२।१२५।
पा०४।२।१०४ भा०। ४० कच्छ-अग्नि-वक्त्र-वर्तन्तात्^१।
पा०४।२।१०४ भा०। ४१ धूमादिभ्यः । पा०४।२।१२७।
- १७ णः अरण्यात् । पा०४।२।१०४ भा०। ४२ नगरात् कुत्सा-प्रावीण्ययोः ।
पा०४।२।१०४ भा०। ४३ अरण्यात् पथि-न्याय-अध्याय-हस्ति-
१८ रूप्यान्तात् वः । पा०४।२।१०६। ४४ नर-विहारेषु । पा०४।२।१२६+भा०।
- १९ दिगादेरनाम्नि अमद्रात् । ४५ वा गोमये । पा०४।२।१२६ भा०।
पा०४।२।१०७,१०८। ४६ कुरु-युगन्धरात् । पा०४।२।१३०।
- २० बाहीकादिभ्यः अण् । पा०४।२।११०। ४७ वृजि-सद्रात् कन् । पा०४।२।१३१।
- २१ शकलादिभ्यः गोत्रात् । ४८ कोपान्ताद् अण् । पा०४।२।१३२।
पा०४।२।१११। ४९ कच्छादिभ्यः । पा०४।२।१३३।
- २२ इवः । पा०४।२।११२। ५० नृ-तत्स्थयोर्बुञ् । पा०४।२।१३४।
- २३ न द्वचचः प्राच्यात् । पा०४।२।११३। ५१ शाल्वाद् गो-यवाग्वोः ।
पा०४।२।११३। ५२ गतन्तात् छः । पा०४।२।१३७।
- २४ आदौजाद्यच्चम्ब्लः । पा०४।२।११४। ५३ कटादेः प्राच्यात् । पा०४।२।१३६।
- २५ एडाद्यचः प्राग्देशात् । ५४ क-खोपान्त-कन्था-पलद-नगर-ग्राम-
पा०१।१।७५। ह्रदान्तात् छे । पा०४।२।१४१,१४२।
- २६ नृनाम्नो वा । पा०१।१।७३ वा०५। ५५ पर्वतात् । पा०४।२।१४३।
- २७ गोत्रान्तात् तद्वद् अजिह्वाकात्य- ५६ अनरे वा । पा०४।२।१४४।
हरितकात्यात् । पा०१।१।७३
वा०७,८। ५७ कृकण-पर्णाद् भारद्वाजात् ।
पा०४।२।१४५।
- २८ त्यदादिभ्यः । पा०१।१।७४। ५८ गहादिभ्यः । पा०४।२।१३८।
- २९ भवतो दश्च । पा०४।२।११५।
पा०१।४।१६।
- ३० ठञ् । पा०४।२।११५।
- ३१ ओः देशात् । पा०४।२।११६।
- ३२ प्राच्यात् छे । पा०४।२।१२०।
- ३३ काश्यादिभ्यः ञिकश्च ।
पा०४।२।११६।

१ पाणिनीये तु - 'वक्त्र-गर्तोत्तरपदान्' इति पाठः । उदाहरणमपि-चाक्रगर्तकः ।

- ५६ पृथिवीमध्यस्य मध्यमश्च ।
पा०४।२।१३८ वा०१। ७३ रोग-आतपयोः वा । पा०४।३।१३।
- ५७ निशा-प्रदोषात् । पा०४।३।१४। ७४ निशा-प्रदोषात् । पा०४।३।१४।
- ५८ निवासस्य चरणे अण् च ।
पा०४।२।१३८ वा०२। ७५ श्वसः तुट् च । पा०४।३।१५।
- ५९ वेणुकादिभ्यः छण् ।
काशिका ४।२।१३८१। ७६ प्राह्ले-प्रगे-सायं-चिरम्-असंख्यात् ट्युः।
पा०४।३।२३।
- ६० युष्मद्-अस्मदोः खञ् युष्माक-
अस्माकौ च । पा०४।३।११,२। ७७ पूर्वाण्ह-अपराण्हात् वा ।
पा०४।३।२४।
- ६१ अण् । पा०४।३।१। ७८ परत्-परारि-चिरात् त्तः ।
पा०४।३।२३। भा०।
- ६२ तवक-ममकौ एकत्वे । पा०४।३।३। ७९ सन्ध्यादि-ऋतु-नक्षत्रात् अण् ।
पा०४।३।१६।
- ६३ द्वीपादनुसमुद्रात् ज्यः । पा०४।३।१०। ८० हेमन्ताद् वा तलोपश्च ।
पा०४।३।२१,२२।
- ६४ अर्घात् यत् । पा०४।३।४। ८१ वर्षा-प्रावृड्भ्यां ठक्-एण्यौ ।
पा०४।३।१८,१७।
- ६५ पर-अवर-अधम-उत्तमादेः ।
पा०४।३।५। ८२ मध्य-आदिभ्यां मः । पा०४।३।८।
काशिका ४।३।८ वा०।
- ६६ दिगादेः ठञ् च । पा०४।३।६। ८३ अग्र-अन्त-पश्चाद् इमच् ।
पा०४।३।२३ भा०।
- ६७ ग्राम-जनपदांशात् अण् च ।
पा०४।३।७।
- ७० सपूर्वात् । पा०४।३।४। वा०१।
- ७१ कालेभ्यः । पा०४।३।११।
- ७२ शरदः श्राद्धे । पा०४।३।१२।

[तृतीयस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ तत्र जाते प्रावृषः ठप् ।
पा०४।३।२५,२६। ४ सिन्धु-अपकरात् वा ।
पा०४।३।३२,३३।
- २ पूर्वाह्ण-अवराह्ण-आर्द्रा-मूल-प्रदोष-
अयस्करात् कन् नास्ति ।
पा०४।३।२८,२७। ५ अमावस्यायत् अश्च ।
पा०४।३।३०,३१।
तथा काशिका ४।३।३०,३१।
- ३ पन्थकः । पा०४।३।२६। ६ स्थानान्त-गोशाल-खरशालात् लुक् ।
पा०४।३।३५।

१ यानिकायाम् अस्मिन् सूत्रे "वेणुकादिभ्यः छण् वक्तव्यः," इति वार्तिकनिर्देशो
अस्य वाच्यत्वस्य समावेशः ।

- ७ वत्स-शाल-नक्षत्रेभ्यः बहुलम् ।
पा०४।३।३६,३७।
- ८ डिदण् । पा०४।२,७ भा०।
- ९ श्रविष्ठा-आषाढात् छण् ।
पा०४।३।३४ वा०३।
- १० फल्गुन्याः टः । पा०४।३।३४ वा०२।
- ११ आश्वयुज्याम् उप्ते वुञ् ।
पा०४।३।४५,४४।
- १२ ग्रीष्म-वसन्ताद् वा । पा०४।३।४६।
- १३ कालाद् देयम् ऋणम् ।
पा०४।३।४७,४३।
- १४ कलापि-अश्वत्थ-यवबुसाद् वुन् ।
पा०४।३।४८।
- १५ ग्रीष्म-अवरसमात् वुञ् ।
पा०४।३।४९।
- १६ संवत्सर-आग्रहायण्याः ठञ् च ।
पा०४।३।५०।
- १७ दिगादिभ्यः भवे यत् ।
पा०४।३।५४,५३।
- १८ देहांशात् । पा०४।३।५५।
- १९ दृति-कुक्षि-कलशि-वस्ति-अस्ति-अहेः
ढञ् । पा०४।३।५६।
- २० ग्रीवातः अण् च । पा०४।३।५७।
- २१ गम्भीर-पञ्चजनात् ज्यः ।
पा०४।३।५८,६० भा०।
- २२ चातुर्मास्यं यज्ञे । पा०५।१।६४
वा०६।
- २३ परिमुखादिभ्यः । पा०४।३।५८
वा०१।
- २४ अन्तःपूर्वात् तदर्थात् ठञ् ।
पा०४।३।६०।
- २५ परि-अनुभ्यां ग्रामात् । पा०४।३।६१।
- २६ समानात् । पा०४।३।६० भा०।
- २७ तदादेः । पा०४।३।६० भा०।
- २८ लोकान्तात् । पा०४।३।६० भा०।
- २९ अध्यात्मादिभ्यः । पा०४।३।६० भा०।
- ३० जिह्वामूल-अङ्गुलेः छः ।
पा०४।३।६२।
- ३१ वर्गान्तात् । पा०४।३।६३।
- ३२ अशब्दे यत्-खौ च । पा०४।३।६४।
- ३३ मध्यात् मण्-मीयौ च ।
पा०४।३।६० भा०।
- ३४ ललाटात् भूषणे कन् ।
पा०४।३।६५।
- ३५ कर्णात् । पा०४।३।६५।
- ३६ उपादेः ठक् । पा०४।३।६०।
- ३७ जानु-नीवीभ्याम् । पा०४।३।६०।
- ३८ तस्य व्याख्याने च व्याख्येयनाम्नः ।
पा०४।३।६६।
- ३९ बह्वचः अन्तोदात्तात् ठञ् ।
पा०४।३।६७।
- ४० यज्ञेभ्यः । पा०४।३।६८।
- ४१ अध्यायेषु एव ऋषेः । पा०४।३।६९।
- ४२ पौरोडाश-पुरोडाशात् षण् ।
पा०४।३।७०।
- ४३ छन्दसो यत् । पा०४।३।७१।
- ४४ अण् । पा०४।३।७१।
- ४५ ऋगयनादिभ्यः । पा०४।३।७३।
- ४६ द्वचच्-ऋत्-ऋग्-ब्राह्मण-प्रथम-अध्वर-
-पुरश्चरण-नाम-आख्यातात् ठक् ।
पा०४।३।७२।
- ४७ आयस्थानात् आगते ।
पा०४।३।७५,७४।
- ४८ शुण्डिकादिभ्यः अण् । पा०४।३।७६।
- ४९ विद्या-योनि-संबन्धात् वुञ् ।
पा०४।३।७७।

- ५० ऋतः कञ् । पा०४।३।७८।
 ५१ पित्र्यं वा । पा०४।३।७९।
 ५२ नृ-हेतुभ्यो रूप्यः । पा०४।३।८१।
 ५३ मयट् । पा०४।३।८२।
 ५४ गोत्रात् अङ्कवत् । पा०४।३।८०।
 ५५ वैदूर्यम् । पा०४।३।८४।
 ५६ शिशुकन्दादीन् अधिकृत्य कृते ग्रन्थे
 छः । पा०४।३।८८, ८७।
 ५७ चार्थान् अदेवासुरादीन् ।
 पा०४।३।८८+वा०१।
 ५८ सोऽस्य अभिजनः गिरिभ्यः
 शस्त्रजीविषु । पा०४।३।९०, ९१।
 ५९ शालातुरीयः । पा०४।३।९४।
 ६० शण्डिकादिभ्यः ज्यः । पा०४।३।९२।
 ६१ सिन्ध्वादिभ्यः अण् । पा०४।३।९३।
 ६२ तुदी-वर्मतीभ्यां ढञ् । पा०४।३।९४।
 ६३ तत्र भक्तिर्महाराजात् ठक् ।
 पा०४।३।९५, ९७।
 ६४ अचित्तात् अदेश-कालात् ।
 पा०४।३।९६।
 ६५ वासुदेव-अर्जुनात् कन् । पा०४।३।९८।
 ६६ गोत्रात् बहुलं वुञ् । पा०४।३।९९।
 ६७ क्षत्रियात् । पा०४।३।९९।
 ६८ जनपदवत् सर्वं तत्सरूपात् बहुत्वे ।
 पा०४।३।१००।
 ६९ तेन प्रोक्तं वेदं वेत्ति अधीते ।
 पा०४।३।१०१। पा०४।२।६६।
 ७० तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिक-उखात्
 छण् । पा०४।३।१०२।
 ७१ काश्यप-कौशिकाभ्यामृषिभ्यां कल्पं च
 णिनिः । पा०४।३।१०३।
 पा०४।२।६६ वा० ६।
 ७२ शौनकादिभ्यः । पा०४।३।१०६।
 ७३ कलापि-वैशम्पायनशिष्येभ्यः ।
 पा०४।३।१०४।
 ७४ कठ-चरकात् लुक् । पा०४।३।१०७।
 ७५ कलापिनः अण् । पा०४।३।१०८।
 ७६ छगलिनः द्विनुक् । पा०४।३।१०९।
 ७७ कर्मन्द-कृशाश्राभ्यां भिक्षु-नटसूत्रम्
 इतिः । पा०४।३।१११।
 ७८ पाराशर्य-शिलालिभ्यां णिनिः ।
 पा०४।३।११०।
 ७९ पुराणर्षेर्ब्रह्मिणम् । पा०४।३।१०५।
 ८० कल्पे । पा०४।३।१०५।
 ८१ अथर्वणः अण् वेदे ।
 पा०४।३।१३१वा०२।
 ८२ पुरुषात् कृते ढञ् । पा०५।१।१०भा०।
 ८३ संज्ञायां वातपात् अञ् ।
 पा०४।३।११७, ११९।
 ८४ कुलालादिभ्यः वुञ् । पा०४।३।११८।
 ८५ तस्य स्वं रथात् यत् ।
 पा०४।३।१२०, १२१।
 ८६ यानादेः अञ् । पा०४।३।१२२।
 ८७ यानात् पा०४।३।१२३।
 ८८ हल-सीरात् ठक् । पा०४।३।१२४।
 ८९ चार्थाद् वैरे वुन् अदेवासुरादिभ्यः ।
 पा०४।३।१२५+वा०१।
 ९० विवाहे । पा०४।३।१२५।
 ९१ नटात् ज्यः नृत्ये । पा०४।३।१२६।
 ९२ छन्दोग-औक्थिक-याज्ञिक-बह्वृचात्
 धर्म-आम्नाय-संघेषु ।
 पा०४।३।१२९, १२० वा०११।
 ९३ आथर्वणः । पा०४।३।१३१वा०२।
 ९४ चरणात् वुञ् । पा०४।३।१२६।

६५ गोत्रात् अदण्डमाणव-अन्तेवासिषु पा०४।३।१२६, १३०।	१०६ मयट् अभक्ष-आच्छादने । पा०४।३।१४३।
६६ रैवतिकादिभ्यः छः । पा०४।३।१३१।	११० एकाचः । काशिका ४।३।१४४ ^१ ।
६७ कौपिञ्जल-हास्तिपदात् अण् । पा०४।३।१३१ वा०१।	१११ छे । पा०४।३।१४४।
६८ संघ-अङ्क-घोष-लक्षणेषु अञ् यञिञः । पा०४।३।१२७+वा०१।	११२ व्रीहेः पुरोडाशे । पा०४।३।१४८।
६९ शाकलात् वा । पा०४।३।१२८।	११३ तिल-यव-पिष्टात् असंज्ञायाम् । पा०४।३।१४६, १४६।
१०० वहेः तुः इट् च । पा०४।३।१२० वा०८।	११४ शरादिभ्यः । पा०४।३।१४४।
१०१ आग्नीध्रं शरणे । पा०४।३।१२० वा०९।	११५ क्रीतवत् परिमाणात् । पा०४।३।१५६।
१०२ समिधः आधाने षेण्यण् । पा०४।३।१२० वा०१०।	११६ शम्याः प्लञ् । पा०४।३।१४२।
१०३ विकारे । पा०४।३।१३४।	११७ उष्ट्रात् वुञ् । पा०४।३।१५७।
१०४ वृक्ष-ओषधिभ्यः अंशे च । पा०४।३।१३५।	११८ उमा-ऊर्णात् वा । पा०४।३।१५८।
१०५ प्राणिभ्यः अञ् । पा०४।३।१५४, १३५ ।	११९ एणी-कोशात् ढञ् । पा०४।३।१५९। पा०४।३।४२ वा०१।
१०६ तालादिभ्यः अण् । पा० ४।३।१५२।	१२० पुरुषाद् वधे च । पा०५।१।१० वा०२।
१०७ हेमार्थात् परिमाणे । पा०४।३।१५३।	१२१ हैयंगवीनं संज्ञायाम् । पा०५।२।२३+वा०१।
१०८ त्रपु-जतुनोः षुक् । पा०४।३।१३८।	१२२ पयसः यत् । पा०४।३।१६० ।
	१२३ आप्यं वा० । पा०४।३।१४४ ^२ ।
	१२४ द्रोः । पा०४।३।१६१।
	१२५ माने वयः । पा०४।३।१६२।
	१२६ कांस्य-पारशवौ । पा०४।३।१६८।
	१२७ न द्विः । पा०४।३।१५५ भा० ।

[तृतीयस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

१. इदं सूत्रं त्वेवम् "नित्यं वृद्ध-शरादिभ्यः" तथापि तद्वृत्तौ "एकाचो नित्यं मयटम् इच्छन्ति तद् अनेन क्रियते" इति निर्देशेन प्रस्तुतस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य अस्मिन् सूत्रे समावेशः ।

२. अस्य सूत्रस्य वृत्तौ सिद्धान्तकौमुद्याम् एवं निर्देशः—"कथं तर्हि आप्यम् अम्मयम्? इति । तस्येदम् पा०४।३।१२०। इति अणन्तात् स्वार्थे ष्यञ्" अत्र च निर्देशे अस्य सूत्रस्य समावेशः ।

[चतुर्थः पादः]

- १ प्राग् यतः ठक् । पा०४।४।१।
- २ तेन जितं जयति दीव्यति खनति ।
पा०४।४।२।
- ३ संस्कृते । पा०४।४।३।
- ४ कुलत्थ-कोपान्तात् अण् ।
पा०४।४।४।
- ५ तरति । पा०४।४।५।
- ६ द्व्यच्-नौभ्यां ठन् । पा०४।४।७।
- ७ चरति । पा०४।४।८।
- ८ पर्पादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।१०।
- ९ श्रमणाद् वा । पा०४।४।११।
- १० वेतनादिभ्यो जीवति । पा०४।४।१२।
- ११ वस्न-क्रय-विक्रयात् ठन् ।
पा०४।४।१३।
- १२ छश्च आयुधात् । पा०४।४।१४।
- १३ व्रातात् खञ् । पा०५।२।२१।
- १४ हरति उत्सङ्गादिभ्यः । पा०४।४।१५।
- १५ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।१६।
- १६ विवध-वीवधाद् वा ।
पा०४।४।१७+भा०।
- १७ अण् कुटिलिकायाः । पा०४।४।१८।
- १८ निर्वृत्ते अक्षद्युतादिभ्यः ।
पा०४।४।१९।
- १९ भावात् इमप् । पा०४।४।२०+भा०।
- २० त्रैः । पा०४।४।२०।
- २१ अपमित्य कक् । पा०४।४।२१।
- २२ संसृष्टे । पा०४।४।२२।
- २३ चूर्णात् इनिः । पा०४।४।२३।
- २४ लवणात् लुक् । पा०४।४।२४।
- २५ मूत्रात् अण् । पा०४।४।२५।
- २६ ओजस्-सहस्-अम्भसा वर्तते ।
पा०४।४।२७।
- २७ तं प्रत्यनोः ईप-लोम-कूलात् ।
पा०४।४।२८।
- २८ परेः सुख-पाश्र्वत् । पा०४।४।२९।
काशिका ४।४।२९।
- २९ उञ्छति । पा०४।४।३२।
- ३० रक्षति । पा०४।४।३३।
- ३१ शब्द-दर्दरं करोति । पा०४।४।३४।
- ३२ पक्षि-मत्स्य-मृगान् हन्ति ।
पा०४।४।३५।
- ३३ परिपन्थं तिष्ठति च । पा०४।४।३६।
- ३४ माथान्त-पदवी-अनुपद-आक्रन्दं
धावति । पा०४।४।३७,३८।
- ३५ पदान्त-प्रतिकण्ठ-अर्थ-ललामं
गृह्णाति । पा०४।४।३९,४०।
- ३६ गर्ह्ये । पा०४।४।३०+भा०।
- ३७ वृद्धेर्वृधुषः । पा०४।४।३० वा०३।
- ३८ दश-एकादश-कुसीदात् ष्ठन् ।
पा०४।४।३१।
- ३९ धर्म-अधर्मं चरति । पा०४।४।४१+
वा०१।
- ४० प्रतिपथमेति ठञ्च । पा०४।४।४२।
- ४१ समाजार्थान् समवैति । पा०४।४।४३।
- ४२ परिषदः ष्यः । पा०४।४।४४।
- ४३ सेनाया वा । पा०४।४।४५।
- ४४ लालाटिक-कौटुकिकौ ।
पा०४।४।४६।
- ४५ परदारादीन् गच्छति ।
पा०४।४।१ वा०४।

- ४६ सुस्नातादीन् पृच्छति ।
पा०४।४।१ वा०३।
- ४७ प्रभूतादीन् आह । पा०४।४।१ वा०२।
- ४८ माशब्द इत्यादिभ्यः ।
पा०४।४।१ त्रा०१।
- ४९ तस्य धर्म्यम् । पा०४।४।४७।
- ५० ऋ-महिष्यादिभ्यः अण् ।
पा०४।४।४९, ४८।
- ५१ वैशस्त्र-वैभाजित्रे ।
पा०४।४।४९, वा०२, ३।
- ५२ अवक्रयः । पा०४।४।५०।
- ५३ तदस्य पण्यम् । पा०४।४।५१।
- ५४ लवणात् ठञ् । पा०४।४।५२।
- ५५ किशरादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।५३।
- ५६ शलालुनो वा । पा०४।४।५४।
- ५७ शिल्पम् । पा०४।४।५५।
- ५८ मड्डुक-झर्झरात्-अण् वा ।
पा०४।४।५६।
- ५९ प्रहरणम् । पा०४।४।५७।
- ६० शक्ति-यष्टयोः टिकक् । पा०४।४।५९।
- ६१ अस्ति नास्ति दिष्टमिति मतिः ।
पा०४।४।६०।
- ६२ शीलम् । पा०४।४।६१।
- ६३ छत्रादिभ्यः णः । पा० ४।४।६२।
- ६४ कर्म अध्ययने वृत्तम् । पा०४।४।६३।
- ६५ बह्वच्-पूर्वपदात् ठच् । पा०४।४।६४।
- ६६ हिता भक्षाः । पा०४।४।६५।
- ६७ दीयते नियुक्तम् । पा०४।४।६६।
- ६८ ओदनात् ठट् । पा०४।४।६७।
- ६९ भक्ताद् अण् वा । पा०४।४।६८।
- ७० तत्र नियुक्तम् । पा०४।४।६९।
- ७१ अगारान्तात् ठन् । पा०४।४।७०।
- ७२ अदेश-कालात् अधीते ।
पा०४।४।७१।
- ७३ कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानात् व्यवहरति ।
पा०४।४।७२।
- ७४ निकटादिषु वसति । पा०४।४।७३।
- ७५ सतीर्थ्यः । पा०४।४।१०७।
- ७६ प्राग् हितात् यत् । पा०४।४।७५।
- ७७ तद् वहति युग-प्रासङ्गात् ।
पा०४।४।७६।
- ७८ धुरः ढक् च । पा०४।४।७७।
- ७९ सर्व-उत्तर-दक्षिणादेः खः ।
पा०४।४।७८। काशिका ४।४।७८।
- ८० एकादेर्लुक् च । पा०४।४।७९।
- ८१ नाम्नि जन्याः । पा०४।४।८२।
- ८२ विध्यति अकरणेन ।
पा०४।४।८३ वा०१।
- ८३ धन-गणं लब्धा । पा०४।४।८४।
- ८४ अन्नात् णः । पा०४।४।८५।
- ८५ वशं गतः । पा०४।४।८६।
- ८६ पदम् अस्मिन् दृश्यम् ।
पा०४।४।८७।
- ८७ मूलम् अस्य अदृढम् । पा०४।४।८८।
- ८८ धेनुष्या-गार्हपत्यौ नाम्नि ।
पा०४।४।८९, ९०।
- ८९ मूलेन आनाम्ये । पा०४।४।९१।
- ९० वयसा च तुल्ये । पा०४।४।९१।
- ९१ नौ-तुला-विषैः तार्य-संमित-वध्येषु ।
पा०४।४।९१।
- ९२ सीतया समिते । पा०४।४।९१।
- ९३ धर्मेण प्राप्ये । पा०४।४।९१।
- ९४ पथि-अर्थ-न्यायाच्च अनपेते ।
पा०४।४।९२।
- ९५ छन्दसा निर्मिते । पा०४।४।९३।

९६ उरसा अण् च । पा०४।४।९४।	१०२ भक्तात् णः । पा०४।४।१००।
९७ हृदयस्य प्रिये । पा०४।४।९५।	१०३ परिषदः ण्यश्च । पा०४।४।१०१।
९८ मत-जनयोः करण-जल्पयोः ।	काशिका ४।४।१०१।
पा०४।४।९७।	१०४ कथादिभ्यः ठक् । पा०४।४।१०२।
९९ हलस्य कर्षे । पा०४।४।९७।	१०५ पथि-अतिथि-वसति-स्वपतेः ढञ् ।
१०० तत्र साधुः । पा०४।४।९८।	पा०४।४।१०४।
१०१ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ।	१०६ समानोदरे शयितः ।
पा०४।४।९९।	पा०४।४।१०८।

[तृतीयस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे तृतीयः अध्यायः समाप्तः]

[चतुर्थः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ प्राक् क्रीतात् छः । पा०५।१।१। २५ आर्हात् । पा०५।१।१६।
 २ उ-गवादिभ्यः यत् । पा०५।१।२। २६ कंस-अर्धात् ठट् ।
 ३ वा हविर्-यूपादिभ्यः । पा०५।१।४। पा०५।१।२५+वा०१।
 ४ तस्मै हितम् । पा०५।१।५। २७ कार्षापिणात् । पा०५।१।२५ वा०२।
 ५ न राज-आचार्य-वृषन्-ब्राह्मणात् । २८ प्रतिवस्यि । पा०५।१।२५ वा०२।
 काशिका ५।१।७। २९ शूर्पात् अञ् । पा०५।१।२६।
 ६ देहांशात् यत् । पा०५।१।६। ३० सहस्र-वसन-विंशतिक-शतमानात्
 ७ खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्म-रथात् । अण् । पा०५।१।२७।
 पा०५।१।७। ३१ शतात् केवलात् ठन्-यतौ अतस्मिन् ।
 ८ अज-अविभ्यां थ्यन् । पा०५।१।८। पा०५।१।२१+वा०१।
 ९ भोगान्त-आत्मनः खः । पा०५।१।९। ३२ संख्याया अतिशतः कन् ।
 १० पञ्च-विश्रात् जनान्तात् तदर्थत् । पा०५।१।२२।
 पा०५।१।९+वा०४। ३३ कति-गणौ तद्वत् । पा०५।१।२३।
 काशिका ५।१।९। ३४ वतोः । पा०५।१।२३।
 ११ सर्वात् । पा०५।१।९ वा०५। ३५ इड् वा । पा०५।१।२३ ।
 १२ महत्श्च ठञ् । पा०५।१।९ वा०६। ३६ विंशति-त्रिंशद्भ्याम् ।
 १३ सर्वात् णः वा । पा०५।१।१०+वा०१। पा०५।१।२४+भा०।
 १४ पुरुषात् ढञ् । पा०५।१।१०। ३७ अनास्मि ड्वुन् । पा०५।१।२४।
 १५ माणक्-चरकात् खञ् । पा०५।१।११। ३८ संख्या-अध्यधदिः संख्येयात् लुक् अद्विः।
 १६ विकृतेः प्रकृतौ । पा०५।१।१२। पा०५।१।२८+भा०।
 १७ ऋषभ-उपानहो ज्यः । पा०५।१।१४। ३९ कार्षापिण-सहस्र-सुवर्ण-शतमानात् वा ।
 १८ चर्मणि अञ् । पा०५।१।१५। पा०५।१।२९+वा०१।
 १९ छदिर्-बलिभ्यां ढञ् । पा०५।१।१३। ४० द्वि-त्रि-बह्वादेर्निष्क-विस्तात् ।
 २० उपघेः । पा०५।१।१३। पा०५।१।३०, ३१+वा०२।
 २१ तद् अस्य अत्र स्यादिति । ४१ विंशतिकात् खः । पा०५।१।३२।
 पा०५।१।१६। ४२ खारी-काकणीभ्यः ईकन् ।
 २२ परिखाया ढञ् । पा०५।१।१७। पा०५।१।३३+वा०१-३।
 २३ प्राग् वतेः ठञ् । पा०५।१।१८। ४३ पण-पाद-माषात् यत् । पा०५।१।३४।
 २४ संख्यादेश्चालुकः । पा०५।१।२०+वा०२।

४४ शताद् वा ।

पा० ५।१।३४+३५ वा० १।

४५ शान्तात् । पा० ५।१।३५।

४६ द्वि-त्र्यादेः अण् च । पा० ५।१।३६।

४७ तेन क्रीतं मूल्यात् । पा० ५।१।३७।

काशिका ५।१।३७।

४८ तस्य वापः । पा० ५।१।४५।

४९ पात्रात् षठ् । पा० ५।१।४६।

५० वात-पित्त-श्लेष्म-संनिपातात् शमन-

कोपने । पा० ५।१।३८ वा० १, २।

५१ निमित्तं संयोग-उत्पाते ।

पा० ५।१।३८।

५२ दृचचः असंख्यापरिमाण-अश्वादीर्यत् ।

पा० ५।१।३९।

५३ ब्रह्मवर्चसात् । पा० ५।१।३९ वा० १।

५४ पुत्रात् छत्र । पा० ५।१।४०।

५५ पृथिवी-सर्वभूमेः अब्-अणौ ।

पा० ५।१।४१।

५६ ईश्वरे । पा० ५।१।४२।

५७ तत्र विदिते । पा० ५।१।४३।

५८ लोक-सर्वलोकात् । पा० ५।१।४४।

५९ तद् अत्र अस्मि वृद्धि-आय-लाभ-शुल्क-

उपदे दीयते । पा० ५।१।४७+वा० १।

६० पूरण-अर्घात् ठन् । पा० ५।१।४८।

६१ भागात् यव । पा० ५।१।४९।

६२ तद् अस्य परिमाणम् । पा० ५।१।५०।

६३ पञ्च-दशत् वर्गे वा । पा० ५।१।५०।

६४ स्तोत्रे षट् । पा० ५।१।५१ वा० ८।

६५ त्रिशत्-चत्वारिंशतः ब्राह्मणाख्यायां

उण् । पा० ५।१।५२।

६६ भृति-वस्त्र-भंगाः । पा० ५।१।५३।

६७ तन् पर्यति द्रोणात् अण् च ।

पा० ५।१।५३+वा० १।

६८ संभवति-अवहरति च । पा० ५।१।५२।

६९ पात्र-आचित-आढकात् खो वा ।

पा० ५।१।५३।

७० संख्यादेः षंश्च । पा० ५।१।५४।

७१ कुलिजात् वा । पा० ५।१।५५।

७२ वंशादिभ्यः हरति वहति आवहति

भारात् । पा० ५।१।५०।

७३ द्रव्य-वस्तात् कन्-ठनौ ।

पा० ५।१।५१।

७४ अर्हति । पा० ५।१।६३।

७५ छेदादिभ्यः नित्यम् । पा० ५।१।६४।

७६ शीर्षच्छेदात् यच्च । पा० ५।१।६५।

७७ यज्ञात् घः । पा० ५।१।७१।

७८ पात्रात् यश्च । पा० ५।१।६८।

७९ दण्डादिभ्यः । पा० ५।१।६६।

८० दक्षिणा-कडङ्गर-स्थाली-विलात् छश्च ।

पा० ५।१।६९, ७०।

८१ आर्त्विजीनः । पा० ५।१।७१।

८२ अवृष्ट-अकार्ययोः शालीन-कौपीने ।

पा० ५।२।२०।

८३ पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति ।

पा० ५।१।७२।

८४ संशयमापन्नः । पा० ५।१।७३।

८५ योजनं गच्छति । पा० ५।१।७४।

८६ क्रोश-योजनादेः शतात् अभिगमनाहं

च । पा० ५।१।७४ वा० १, २।

८७ पथः षठ् । पा० ५।१।७५।

८८ णः पन्थश्च नित्यम् । पा० ५।१।७६।

८९ अज-शङ्कु-उत्तर-वारि-जङ्गल-

कान्तारादिना आहृते च ।

पा० ५।१।७७+वा० १, २।

९० स्थलादिना । पा० ५।१।७७ वा० १।

- ६१ मधुक-मरीचयोः अण् ।
पा०५।१।७७ वा०३।
- ६२ कालात् । पा०५।१।७८।
- ६३ तेन निर्वृत्तः । पा०५।१।७९।
- ६४ तस्मै भूतः अधीष्टः ।
पा०५।१।८०+वा०२।
- ६५ तं भूतः भावी । पा०५।१।८०।
- ६६ मासाद् वयसि यत्-खञ्जी ।
पा०५।१।८१।
- ६७ संख्यादेर्यप् । पा०५।१।८२।
- ६८ षषो ष्यञ्च वा । पा०५।१।८३।
- ६९ ठञ्चान्यत्र । पा०५।१।८४।
- १०० समायाः खः । पा०५।१।८५।
- १०१ संख्यादेर्वा । पा०५।१।८६।
- १०२ रात्री-अहः-संवत्सरात् ।
पा०५।१।८७।
- १०३ वर्षात् लुक् च । पा०५।१।८८।
- १०४ प्राणिनि । पा०५।१।८९।
- १०५ तेन सुकर-कार्य-लभ्य-परिजय्यम् ।
पा०५।१।९३।
- १०६ तत् अस्य ब्रह्मचर्ये । पा०५।१।९४।
- १०७ महानाम्नादीनाम् ।
पा०५।१।९४ वा०१।
- १०८ तत् चरति । पा०५।१।९४ वा०२।
- १०९ देवव्रतादिभ्यः डिनिः ।
पा०५।१।९४ वा०३।
- ११० अष्टाचत्वारिंशतो ड्वञ्च ।
पा०५।१।९४ वा०४।
- १११ चातुर्मास्यात् यलोपश्च ।
पा०५।१।९४ वा०५।
- ११२ तस्य दक्षिणा यज्ञेभ्यः ।
पा०५।१।९५।
- ११३ तत्र दीयते । पा०५।१।९६।
- ११४ कालात् कार्यं च भववत् ।
पा०५।१।९६+भा०।
- ११५ व्युष्टादिभ्यः अण् । पा०५।१।९७।
- ११६ यथाकथाच्चात् णः । पा०५।१।९८।
- ११७ तेन हस्तात् यत् । पा०५।१।९८।
- ११८ शोभते । पा०५।१।९९।
- ११९ कर्म-वेशात् यत् । पा०५।१।१००।
- १२० तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ।
पा०५।१।१०१।
- १२१ योगात् यत् च । पा०५।१।१०२।
- १२२ कर्मणः उक्ञ् । पा०५।१।१०३।
- १२३ सोऽस्य प्राप्तः समयात् ।
पा०५।१।१०४।
- १२४ ऋत्वादिभ्यः अण् ।
पा०५।१।१०५, ९७ भा०।
- १२५ कालात् यत् । पा०५।१।१०७।
- १२६ प्रकृष्टः । पा०५।१।१०८।
- १२७ प्रयोजनम् पा०५।१।१०९।
- १२८ एकागारात् चौरैः । पा०५।१।११३।
- १२९ आकालात् ठञ्च ।
पा०५।१।११४ वा०२।
- १३० चूडादिभ्यः अण् ।
पा०५।१।११७ भा०।
- १३१ विशाखा-आषाढात् मन्थ-दण्डयोः ।
पा०५।१।११०।
- १३२ उत्थापनादिभ्यः छः ।
पा०५।१।१११+वा०१।
- १३३ स्वर्गादिभ्यः यत् ।
पा०५।१।१११ वा०२।
- १३४ पुण्याहवाचनादिभ्यः लुक् ।
पा०५।१।१११ वा०३।
- १३५ इवे वतिः । पा०५।१।११५, ११६।

- १३६ तस्य भावः त्व-तलौ ।
पा०५।१।११६।
- १३७ नञः अनन्यार्थे । पा०५।१।१२१।
- १३८ चतुर-संगत-लवण-वड-बुध-कतर-
सलसात् वा । पा०५।१।१२१।
- १३९ पृथ्वादिभ्यः इमनिच् ।
पा०५।१।१२२।
- १४० वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ् च ।
पा०५।१।१२३।
- १४१ गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च ।
पा०५।१।१२४।
- १४२ सखि-द्वृत्त-वणिग्भ्यः यः ।
पा०५।१।१२६। काशिका
५।१।१२६।
- १४३ स्तेयम् । पा०५।१।१२५।
- १४४ कपि-ज्ञात्योः ढक् । पा०५।१।१२७।
- १४५ प्राणिजाति-वयोऽर्थ-उद्गात्रादिभ्यः
अञ् । पा०५।१।१२६।
- १४६ हायनान्त-युवादिभ्यः अण् ।
पा०५।१।१३०।
- १४७ लघोः इकः अकवेः ।
पा०५।१।१३१। काशिका
५।१।१३१।
- १४८ योपान्तात् गुरुपोत्तमात् असुप्रख्याद्
वुञ् । पा०५।१।१३२। पा०२।४।५४
वा०४।
- १४९ चार्थसमास-मनोज्ञादिभ्यः ।
पा०५।१।१३३।
- १५० गोत्रचरणात् श्लाघा-अधिक्षेप-
अवगतेषु । पा०५।१।१३४।
- १५१ ऋत्विग्भ्यः छः । पा०५।१।१३५।
- १५२ ब्रह्मणः त्वः । पा०५।१।१३६।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ धान्येभ्यः क्षेत्रे खञ् । पा०५।२।१।
- २ व्रीहि-शालेः ढक् । पा०५।२।२।
- ३ यव-यवक-षष्टिकात् यत् ।
पा०५।२।३।
- ४ वा तिल-माष-उमा-भङ्ग-अणुभ्यः ।
पा०५।२।४।
- ५ अत्रात् एकाहगमे खञ् ।
पा०५।२।६।
- ६ गोष्ठाद् भूते । पा०५।२।७।
- ७ साप्तपदीन् सख्ये । पा०५।२।२२।
- ८ सर्वचर्मणा कृतः । पा०५।२।५।
- ९ खः । पा०५।२।५।
- १० यथामुख-संमुखं दृश्यते अस्मिन् ।
पा०५।२।६।
- ११ सर्वादिपथि-अङ्ग-कर्म-पत्र-पात्रं
व्याप्नोति । पा०५।२।७।
- १२ आप्रपदं प्राप्नोति । पा०५।२।८।
- १३ अनुपदं बद्धा । पा०५।२।९।
- १४ अयानयं नेयः । पा०५।२।९।
- १५ सर्वान्निम् अत्ति । पा०५।२।९।
- १६ परोवर-परंपर-पुत्रपौत्रम् अनुभवति ।
पा०५।२।१०।
- १७ पारावार-अवारपार-अत्यन्त-अनुकामं
गामी । पा०५।२।११।
काशिका ५।२।११।

- १८ अनुग्वलम् । पा०५।२।१५।
- १९ अध्वानं यच्च । पा०५।२।१६।
- २० अभ्यमित्रं छश्च । पा०५।२।१७।
- २१ समांसमीन-अद्यश्वीन-आगवीनाः ।
पा०५।२।१२-१४।
- २२ अषडक्ष-आशितंगु-अलंकर्म-अलंपुरुष-
अध्यन्तात् । पा०५।४।७।
- २३ अदिशि अञ्चां वा । पा०५।४।८।
- २४ पील्वादीनां पाके कुणप् ।
पा०५।२।२४।
- २५ कर्णादीनां मूले जाहच् ।
पा०५।२।२४।
- २६ पक्षस्य तिः । पा०५।२।२५।
- २७ तेन वित्तः चुञ्चुप्-चण्पो ।
पा०५।२।२६।
- २८ विना नाना । पा०५।२।२७।
- २९ वेः शालच्-शङ्कटचौ । पा०५।२।२८।
- ३० सं-प्र-उत्-नेश्च कटच् । पा०५।२।२९।
- ३१ अवात् कुटारच्च । पा०५।२।३०।
- ३२ नासान्तौ टीटञ्-नाटच्-भ्रटचः ।
पा०५।२।३१।
- ३३ निविड-निविरीष-चिक्र-चिकिन-
चिपिटाः । पा०५।२।३२, ३३+वा०१।
- ३४ किलन्नचक्षुषि चिल्ल-पिल्ल-चुल्लाः ।
पा०५।२।३३ वा०२+भा०।
- ३५ उपत्यका-अधित्यके । पा०५।२।३४।
- ३६ कर्मणि घटते अठच् । पा०५।२।३५।
- ३७ तत् अस्य संजातं तारकादिभ्यः इतच् ।
पा०५।२।३६।
- ३८ माने मात्रट् । पा०५।२।३७।
- ३९ ऊर्ध्वं दध्णट्-द्वयसट् च ।
पा०५।२।३७+भा०।
- ४० हस्ति-पुरुषात् अण् च ।
पा०५।२।३८।
- ४१ संख्यादेः संख्येयात् लुक् ।
पा०५।२।३७ भा०।
- ४२ शन्-शत्-शतेः डिनिर्वा ।
पा०५।२।३७ भा०।
- ४३ यत्-तद्-एतद्-वतुप् । पा०५।२।३९।
- ४४ इयत्-कियत् । पा०५।२।४०।
- ४५ कतिः संख्यायाम् । पा०५।२।४१।
- ४६ अंशे संख्यायाः तयट् । पा०५।२।४२।
- ४७ द्वि-त्रिभ्याम्-अयट् वा । पा०५।२।४३।
- ४८ उभात् । पा०५।२।४४।
- ४९ निमान-निमेययोः मयट् ।
पा०५।२।४७+वा०५।
- ५० शति-शद्-दशान्ताद् अधिका अस्मिन्
शतसहस्रे डः । पा०५।२।४५+भा०।
- ५१ तस्य पूरणे डट् । पा०५।२।४८।
- ५२ विशत्यादिभ्यः तमट् वा ।
पा०५।२।५६।
- ५३ शतादिमास-अर्धमास-संवत्सरात् ।
पा०५।२।५७।
- ५४ षट्चादेः असंख्यादेः । पा०५।२।५८।
- ५५ नो मट् । पा०५।२।४९।
- ५६ षट्-कति-कतिपयात् थट् ।
पा०५।२।५१।
- ५७ चतुरः । पा०५।२।५१।
- ५८ यत्-छौ चलोपश्च ।
पा०५।२।५१ वा०१।
- ५९ द्वितीय-तृतीयौ । पा०५।२।५४, ५५।
- ६० बहु-पूग-गण-संघात् तिथट् ।
पा०५।२।५२।
- ६१ वतोः इथट् । पा०५।२।५३।

- ६२ भागे अष्टमात् ओ वा ।
पा०५।३।५०।
- ६३ षष्ठात् । पा०५।३।५०।
- ६४ माने कंश्च । पा०५।३।५१।
- ६५ तेन गृह्णातीति लुक् च ।
पा०५।२।७७ वा०२।
- ६६ ग्रहणे वा । पा०५।२।७७।
- ६७ एकाद् आकिनिञ्च असहाये ।
पा०५।३।५२।
- ६८ आकर्षादिषु कुशलः । पा०५।२।६४।
- ६९ पथकः । पा०५।२।६३।
- ७० धन-हिरण्ये कामः । पा०५।२।६५।
- ७१ स्वाङ्गेषु सक्तः । पा०५।२।६६।
- ७२ औदरिकः अलसे । पा०५।२।६७।
- ७३ सस्येन परिजातः । पा०५।२।६८।
- ७४ अंशं हारी । पा०५।२।६९।
- ७५ तन्त्रात् नवोद्धृते । पा०५।२।७०।
- ७६ ब्राह्मणात् नाम्नि । पा०५।२।७१।
- ७७ उष्णात् । पा०५।२।७१।
- ७८ शीतात् च कारिणि । पा०५।२।७२।
- ७९ अधिकम् । पा०५।२।७३।
- ८० अनुक-अभिक-अभीकं कम्पिता ।
पा०५।२।७४।
- ८१ पार्श्वेन अन्विच्छति । पा०५।२।७५।
- ८२ अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक् ।
पा०५।२।७६।
- ८३ सोऽस्य ग्रामणीः । पा०५।२।७८।
- ८४ शृङ्खलं बन्धनं करभे । पा०५।२।७९।
- ८५ उत्क उन्मनाः । पा०५।२।८०।
- ८६ काल-हेतु-फलात् नाम्नि ।
पा०५।२।८१ काशिका ५।२।८१।
- ८७ प्रायः अन्नमस्मिन् । पा०५।२।८२।
- ८८ कुल्माषात् अण् । पा०५।२।८३।
- ८९ वटकात् इनिः । पा०५।२।८२ वा०१।
- ९० साक्षात् द्रष्टा । पा०५।२।९१।
- ९१ श्राद्धमनेन अद्य भुक्तं ठञ्च ।
पा०५।२।८५+वा०१।
- ९२ पूर्वात् । पा०५।२।८६।
- ९३ सपूर्वात् । पा०५।२।८७।
- ९४ इष्टादिभ्यः । पा०५।२।८८।
- ९५ अनुपदी अन्वेष्टा । पा०५।२।९०।
- ९६ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ।
पा०५।२।९२।
- ९७ इन्द्रियम् । पा०५।२।९३।
- ९८ तद् अस्य अस्ति अत्रेति मतुप् ।
पा०५।२।९४।
- ९९ प्राण्यङ्गात् आतो लच् वा ।
पा०५।२।९६+भा०।
- १०० सिध्मादिभ्यः । पा०५।२।९७।
- १०१ वत्स-अंसात् स्नेह-बलिनोः ।
पा०५।२।९८।
- १०२ फेनात् । पा०५।२।९९।
- १०३ पिच्छादिभ्यश्च इलच् ।
पा०५।२।१००, ९९।
- १०४ लोमादि-पामादिभ्यः श-नौ ।
पा०५।२।१००।
- १०५ प्रज्ञा-श्रद्धा-अर्चा-वृत्तिभ्यो णः ।
पा०५।२।१०१+वा०१।
- १०६ तपः-सहस्राभ्याम् अण् ।
पा०५।२।१०३।
- १०७ ज्योत्स्नादिभ्यः । पा०५।२।१०३
वा० २।
- १०८ सिकता-शर्कराभ्याम् ।
पा०५।२।१०४।
- १०९ इलच् देशे । पा०५।२।१०५।
- ११० दन्तुरः । पा०५।२।१०६।

- १११ ऊवादिभ्यः रः । पा०५।२।१०७। १३० हस्त-दन्तात् जातो । पा०५।२।१३३।
 ११२ छु-द्रुभ्यां मः । पा०५।२।१०८। १३१ दणाद् ब्रह्मचारिणि ।
 ११३ केशादिभ्यो वः । पा०५।२।१३४।
 पा०५।२।१०९+वा० १+भा०। १३२ पुष्करादिभ्यो देशे । पा०५।२।१३५।
 ११४ मेधा-रथात् इरः । १३३ मन्-मात् नाम्नि । पा०५।२।१३७।
 पा०५।२।१०९ वा० ३। १३४ शिखादिभ्यः वा । पा०५।२।१३६।
 ११५ काण्ड-अण्डात् ईरच् । १३५ रूपात् आहत-प्रशस्ययोः यप् ।
 पा०५।२।१११। पा०५।२।१२०।
 ११६ कृष्यादिभ्यो वलच् । १३६ हिमादिभ्यः ।
 पा०५।२।११२। पा०५।२।१२० वा०१।
 ११७ ज्योत्स्ना-तमिस्र-ऊर्जस्विन्- १३७ अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः ।
 ऊर्जस्वल-मलीमसाः । पा०५।२।११४। पा०५।२।१२१।
 ११८ नावादिभ्यः ठन् । पा०५।२।११६। १३८ आमयावी ।
 भा०। काशिका ५।२।११६। पा०५।२।१२२ वा०२।
 ११९ व्रीह्यादि-अस इनिश्च । १३९ वृन्दात् आरकन् ।
 पा०५।२।११६, ११५। पा०५।२।१२२ वा०३।
 १२० नैकाचः । पा०५।२।११५ वा०१। १४० शृङ्गात् । पा०५।२।१२२ वा०३।
 १२१ सप्तम्याम् । पा०५।२।११५ भा०। १४१ फल-बर्ह-मलाच्च इनच् ।
 १२२ एक-गोपूर्वात् ठञ् । पा०५।२।११८। पा०५।२।१२२ वा०४।
 १२३ निष्कादेः शत-सहस्रात् । पा०५।२।११४।
 पा०५।२।११९। १४२ पर्व-मरुद्भ्यां तप् ।
 १२४ नवयज्ञादिभ्यः । पा०४।२।३५। पा०५।२।१२२ वा०१०।
 वा० १। १४३ स्वामिन् ईशे । पा०५।२।१२६।
 १२५ चार्य-रोग-गर्हितात् प्राणिस्थात् १४४ गोमिन् पूज्ये । पा०५।२।११४।
 अस्वाङ्गात् इनिः । पा०५।२।१२८। १४५ वाचो ग्मिनिः । पा०५।२।१२४।
 काशिका ५।२।१२८। १४६ आलच्-आटचौ कुत्सायाम् ।
 १२६ वात-अतिसार-पिशाचानां कुक् च । पा०५।२।१२५+भा०।
 पा०५।२।१२९+भा०। १४७ अर्शआदिभ्यः अच् ।
 १२७ वयसि पूरणात् । पा०५।२।१३०। पा०५।२।१२७।
 १२८ सुखादिभ्यः । पा०५।२।१३१। १४८ तुण्डि-वलि-वटेर्भः ।
 १२९ धर्म-शील-वर्णान्तात् । पा०५।२।१३६।
 पा०५।२।१३२। १४९ कं-शंभ्याम् । पा०५।२।१३८।

- १५० ति-तु-व-यस्-ताः । पा०५।२।१३८। १५६ गोसदादिभ्यः वुन् । पा०५।२।६२।
 १५१ युस् । पा०५।२।१३८। १५७ निद्रा-तन्द्रा-श्रद्धा-दया-हृदयात् वा
 १५२ ऊर्णा-अहं-शुभंभ्यः । आलुच् । पा०३।२।१५८।
 पा०५।२।१२२ वा०५।
 १५३ सूक्त-साम्नोः छः । १५८ शीत-उष्ण-तृप्रं न सहते ।
 पा०५।२।१२२ वा०६।
 १५४ अव्याय-अनुवाक्योः लुग् वा । १५९ हिंसं सहते चेलुः ।
 पा०५।१।१२२ वा०७।
 पा०५।२।६०+धा०१। १६० बल-वातं चूलः ।
 १५५ विमुक्तादिभ्यः अण् । पा०५।२।६१। पा०५।२।१२२ वा०८,९।

[चतुर्यस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ षष्ठ्याः व्याश्रये तस् ।
 पा०५।४।४८।
 २ रोगात् प्रतीकारे । पा०५।४।४९।
 ३ क्षेप-अतिग्रह-अव्यथनेषु अकर्तरि
 तृतीयायाः । पा०५।४।४६।
 ४ हीयमान-पापयुक्तात् । पा०५।४।४७।
 ५ प्रतिना पञ्चम्याः । पा०५।४।४४।
 ६ अवधौ अहाक्-रहोः । पा०५।४।४५।
 ७ सर्वादि-बहुभ्यः अदृद्यादिभ्यः ।
 पा०३।२।७।
 ८ कुतः अतः इतः । पा०३।३।५।
 पा०७।२।१०४।
 ९ आद्यादिभ्यः । पा०५।४।४४ वा०१।
 १० सप्तम्याः त्रल् । पा०५।३।१०।
 ११ क्व कुत्र इह-अत्र ।
 पा०५।३।१२,११,५,३।
 १२ भवद्-दीर्घाद्यिष्-आयुष्मत्-देवानांप्रियैः
 ते अन्याभ्यश्च । पा०५।३।१४ भा०।
 १३ सर्व-एक-अन्य-किं-यत्-तदः काले दा ।
 पा०५।३।१५।
 १४ लदा अधुना इदानीं तदानीम् ।
 पा०५।३।६,१७,१८,१९।
 १५ किं-यद्-अन्याद् अनद्यतने हिल् वा ।
 पा०५।३।२१।
 १६ तर्हि एतर्हि सद्यः परेद्यवि ।
 पा०५।३।२१,१६,२२।
 १७ पूर्व-अन्य-अन्यतर-इतर-अपर-अधर-
 उत्तराद् एद्युस् । पा०५।३।२२
 (वा०६)।
 १८ उभयाद् द्युश्च ।
 पा०५।३।२२ वा०६,७।
 १९ प्रकारे थाल् । पा०५।३।२३।
 २० धा संख्यायाः । पा०५।३।४२।
 २१ षोढा वा । पा०६।३।१०९ वा०४।
 २२ ऐक्यम् । पा०५।३।४४।
 २३ द्वि-त्रैधमुञ् । पा०५।३।४५।
 २४ एधा । पा०५।३।४६।

- २५ तद्वति धण् । पा० ५।३।४५ वा० १।
- २६ जातीयर् । पा० ५।३।६६।
- २७ स्थूलादिभ्यः कन् । पा० ५।४।३।
- २८ दिक्शब्दाद् दिग्-देश-कालार्थात्
सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमाभ्यः अस्तातिः ।
पा० ५।३।२७।
- २९ अञ्चो लुक् । पा० ५।३।३०।
- ३० उपरि-उपरिष्ठात् । पा० ५।३।३१।
- ३१ पूर्व-अधरयोः पुर्-अधौ च ।
पा० ५।३।४०।
- ३२ अस् । पा० ५।३।३६।
- ३३ अवरस्य अच् । पा० ५।३।३६।
- ३४ वा अस्ताति । पा० ५।३।४१।
- ३५ पश्चात् । पा० ५।३।३२।
- ३६ पश्चार्धम् । पा० ५।३।३२ वा० ४।
- ३७ पर-अवरात् तस् वा । पा० ५।३।२६।
- ३८ दक्षिण-उत्तरात् आच्च ।
पा० ५।३।३६, २८, ३८।
- ३९ आहि च द्वरे । पा० ५।३।३७, ३८।
- ४० अधरात् चात् । पा० ५।३।३४।
- ४१ एनप् अद्वरे वा । पा० ५।३।३५।
- ४२ निन्द्ये पाशप् । पा० ५।३।४७।
- ४३ भूतपूर्वे चरट् । पा० ५।३।५३।
- ४४ षष्ठ्याः रूप्य च । पा० ५।३।५४।
- ४५ द्वि-बहुषु प्रकर्षे तरप्-तमपौ ।
पा० ५।३।५७, ५५।
- ४६ किम्-ए-तिङ-असंख्यात् आमन्तौ
अद्रव्ये । पा० ५।४।११।
- ४७ गुणात् ईयसुन्-इष्टनौ च ।
पा० ५।३।५८।
- ४८ विन्-मतोर्लुक् । पा० ५।३।६५।
- ४९ प्रशस्यस्य श्रः । पा० ५।३।६०।
- ५० वृद्धस्य च ज्यः । पा० ५।३।६१, ६२।
- ५१ बाढ-अन्तिकयोः साध-नेदौ ।
पा० ५।३।६३।
- ५२ युव-अल्पयोः कन् वा । पा० ५।३।६४।
- ५३ तिङश्च रूपप् । पा० ५।३।६६+वा० १।
- ५४ किञ्चिद्बूने कल्पप्-देश्य-देशीयरः ।
पा० ५।३।६७।
- ५५ प्राग् ढञः कः । पा० ५।३।७०।
- ५६ तिङ-असंख्यानाम् अचः अत्यात् पूर्वः
अकच् । पा० ५।३।७१ काशिका
५।३।७१।
- ५७ कश्च दः । पा० ५।३।७२।
- ५८ तूष्णीकाम् । पा० ५।३।७२ वा० १।
- ५९ शीले तूष्णीकः । पा० ५।३।७२
वा० २।
- ६० सर्वादीनाम् । पा० ५।३।७१।
- ६१ सुपः । पा० ५।३।७२ भा०।
- ६२ अज्ञात-कुत्सयोः । पा० ५।३।७३, ७४।
- ६३ दयायाम् । पा० ५।३।७६।
- ६४ नृनाम्नि ठच्-घन्-इलचो वा ।
पा० ५।३।७८, ७६।
- ६५ डश्च उपात् । पा० ५।३।८०।
- ६६ षषः । काशिका ५।३।८३।
- ६७ ऋतः ल-यो । काशिका ५।३।८३।
- ६८ उदन्तात् । काशिका ५।३।८३।

१ “ कथं षडङ्गुलिदत्तः षडिकः ? इति ” । “ षषः ठाजादिवचनात् सिद्धम् ” । इत्येवमस्य सूत्रस्य वृत्ती अस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य नामग्राहं समावेशः ।

२ अस्मिन् सूत्रे पितृदत्तः पितृकः इत्यादिके उदाहरणे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

३ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “ उवर्णात् ल इलस्य च ” इति वार्तिके अस्य चान्द्रस्य अन्तर्भावः तथा च तद्विषया कारिकाऽपि अत्रैव सूत्रे —

“ चतुर्थादिनजादौ च लोपः पूर्वपदस्य च । अप्रत्यये तथैवेष्टः उवर्णात् ल इलस्य च ॥ ”

- ६९ अल्पे । पा० ५।३।८५।
 ७० ह्रस्वे । पा० ५।३।८६।
 ७१ कुटी-शमी-शुण्डाभ्यः रः ।
 पा० ५।३।८८।
 ७२ कुतुपः । पा० ५।३।८९।
 ७३ कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् ।
 पा० ५।३।९०।
 ७४ वत्स-उक्ष-अश्व-ऋषभाणां तनुत्वे ।
 पा० ५।३।९१।
 ७५ यत्-तद्-एकात् द्वाभ्यां निर्धारणे
 उत्तरच् पा० ५।३।९२, ९४ ।
 ७६ जातौ उत्तमच् बहुभ्यः ।
 पा० ५।३।९३, ९४।
 ७७ तौ किमः । पा० ५।३।९२, ९३।
 ७८ इवे संज्ञा-प्रतिकृत्योः ।
 पा० ५।३।९६, ९७।
 ७९ वस्तेः ढञ् । पा० ५।३।१०१।
 ८० शिलायाः ढञ्च । पा० ५।३।१०२।
 काशिका ५।३।१०२।
 ८१ शाखादिभ्यः यः । पा० ५।३।१०३।
 ८२ कुशाग्रात् छः । पा० ५।३।१०५।
 ८३ आकस्मिके । पा० ५।३।१०६।
 ८४ शर्करादिभ्यः अण् । पा० ५।३।१०७।
 ८५ अङ्गुल्यादिभ्यः ठक् । पा० ५।३।१०८।
 ८६ एकशालायाः ठच्च । पा० ५।३।१०९।
 ८७ कर्क-लोहितात् ईकक् ।
 पा० ५।३।११०।
 ८८ पूगात् ज्यः । पा० ५।३।११२।
 ८९ व्राताद् अस्त्रियाम् । पा० ५।३।११३।
 ९० वाहीकेषु अत्राह्यण-राजन्यात्
 शस्त्रजीविसंघात् ज्यट् ।
 पा० ५।३।११४।
 ९१ वृकात् णेप्यट् । पा० ५।३।११५।
 ९२ दामन्यादिभ्यः छः । पा० ५।३।११६।
 ९३ पश्वदिभ्यः अण् अस्त्रियाम् ।
 पा० ५।३।११७।
 ९४ ज्यादीनां बहुषु लुक् ।
 पा० ५।३।११९। पा० २।४।६२।
 ९५ अभिजित्-विदभृत्-शालावत्-
 शिखावत्-शमीवत्-ऊर्णावत्-श्रुमद्भ्यः
 अपत्याणः यञ् । पा० ५।३।११८।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ बहु-अल्पाथार्थात् कारकात् मङ्गले शस्
 वा । पा० ५।४।४२+वा० १।
 २ संख्या-एकार्थात् वीप्तायाम् ।
 पा० ५।४।४३।
 ३ संख्यादेः वुन् । पा० ५।४।१।
 ४ दण्ड-दानयोः । पा० ५।४।२।
 ५ वारसंख्यायाः कृत्वसुच् ।
 पा० ५।४।१७।
 ६ बहोः धा च अविप्रकर्षे ।
 पा० ५।४।२०।

१ काशिकायाम् अत्र सूत्रे (५।३।११४) 'वाहीकेषु' इति ।

- ७ द्वि-त्रि-चतुरः सुच् । पा०५।४।१८। २६ भागात् यत् च ।
 ८ सकृत् । पा०५।४।१९। पा०५।४।३६^२ वा०२।
 ९ प्रकृते मयट् । पा०५।४।२१। २७ सूर-मर्त-क्षेम-यविष्ठात् ।
 १० अनन्त-आवसथ-इतिह-भेषजात् ञ्यः । पा०५।४।३६^३ वा०७,८।
 पा०५।४।२३। २८ नवात् । पा०५।४।३६^४ वा०७।
 ११ तीयात् ईकम् न विद्या चेत् । २९ त्तप्-त्तन-खा नू च ।
 पा०४।२।७^१। भा०। पा०५।४।३०^४ वा०६।
 १२ यावादिभ्यः कन् । पा०५।४।२९। ३० प्रात् पुराणे नश्च ।
 १३ लोहितात् मणौ । पा०५।४।३०। पा०५।४।३०^५ वा०७।
 १४ रक्त-अनित्ययोः । पा०५।४।३१,३२। ३१ देवतान्तात् तदर्थे यत् ।
 १५ कालात् । पा०५।४।३३। पा०५।४।२४।
 १६ क्तात् अनात्यन्तिके । पा०५।४।४। ३२ अर्घात् । पा०५।४।२५।
 १७ विनयादिभ्यः ठक् । पा०५।४।३४। ३३ पाद्यम् । पा०५।४।२५।
 १८ वाचः संदेशे । पा०५।४।३५। ३४ अतिथेः ण्यः । पा०५।४।२६।
 काशिका ५।४।३५ ३५ अभूततद्भावे कृ-भू-अस्तियोगे
 ("वाचो व्याहृतार्थायाम्") ३५ विकारात् च्विः । पा०५।४।५०+
 १९ तथा कर्मणः अण् । पा०५।४।३६। वा०१।
 २० ओषधेः अजातौ । पा०५।४।३७।
 २१ णच्-इनुणः । पा०५।४।१४,१५। ३६ अरुप्-मनस्-चक्षुष्-चेतस्-रहस्-रजसां
 २२ प्रज्ञादिभ्यः वा । पा०५।४।३८। लोपश्च पा०५।४।५१।
 २३ मृदः तिकन् । पा०५।४।३९। ३७ अभिविधौ संपदा च सातिर्वा ।
 २४ स-स्नौ स्तुतौ । पा०५।४।४०। पा०५।४।५३,५२।
 २५ नाम-रूपात् धेयः । ३८ तदधीने । पा०५।४।५४।
 पा०५।४।३६^२ वा०२। ३९ देये त्रा च । पा०५।४।५५।

१ काशिकायाम् ४।२।८। सूत्रे "तीयात् ईकक् स्वार्थे वा वक्तव्यः" "न विद्यायाः" इत्येवं वार्तिकद्वयम् । तथा च तत्रैव कारिका —

"दृष्टे सामनि जाते च द्विरण् डिद् वा विधीयते । तीयात् ईकक् न विद्यायाः गोत्रादङ्कुवदिष्यते" ॥

२ काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे "भाग-रूप-नामभ्यो धेयः प्रत्ययो वक्तव्यः" इति वार्तिकम् ।

३ अत्रापि ५।४।२५। काशिकायां वार्तिकम् ।

४ अत्रापि काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे वार्तिकम् :— "नवस्य नू आदेशः त्तप्-त्तनप्-खाश्च प्रत्ययाः" ।

५ अत्रापि काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे वार्तिकम् :— "नश्च पुराणे प्रात्" ।

- ४० देवादिभ्यः द्वितीया-सप्तम्योः बहुलम् ।
पा० ५।४।५६।
- ४१ अव्यक्तानुकरणात् अनेकाचः अनितौ
डाच् । पा० ५।४।५७।
- ४२ कृत्रा द्वितीय-तृतीय-शम्ब-बीजात्
कृषौ । पा० ५।४।५८।
- ४३ संख्यादेर्गुणात् । पा० ५।४।५९।
- ४४ समयात् यापनायाम् । पा० ५।४।६०।
- ४५ सप्तत्र-निष्पत्रात् अतिव्यथने ।
पा० ५।४।६१।
- ४६ निष्कुलात् निष्कोषणे । पा० ५।४।६२।
- ४७ प्रिय-मुखात् आनुकूल्ये ।
पा० ५।४।६३।
- ४८ दुःखात् प्रातिकूल्ये । पा० ५।४।६४।
- ४९ शूलात् पाके । पा० ५।४।६५।
- ५० सत्यात् अशपथे । पा० ५।४।६६।
- ५१ मद्र-भद्रात् वपने ।
पा० ५।४।६७।+भा०।
- ५२ समासान्तः । पा० ५।४।६८।
- ५३ न किमः क्षेपे । पा० ५।४।७०।
- ५४ पूजायां सु-अतेः प्राग् अन्यार्थात् ।
पा० ५।४।६९ वा० १, २।
- ५५ नचः अनन्यार्थे । पा० ५।४।७१।
- ५६ पथः वा । पा० ५।४।७२।
- ५७ पुर्-अप्-धुरश्च अनक्षस्य अच् ।
पा० ५।४।७४।
- ५८ ऋचः । पा० ५।४।७४।
- ५९ नञ्-बहोः माणव-चरणयोः ।
काशिका ५।४।७४ वा० ("अनृचो
माणवको जेयः, वह्, वृचः चरणा-
न्यायाम् ") ।
- ६० प्रति-अनु-अवात् साम-लोम्नः ।
पा० ५।४।७५।
- ६१ अक्षणः अचक्षुषः । पा० ५।४।७६।
- ६२ धेन्वनडुह्-ऋग्यजुष-अक्षिभ्रुव-
दारगव-ऊर्द्धठीव-पदठ्ठीव-नक्तंदिब-
रान्निदिब-अर्हदिब-सरजस-पुरुषायुष-
द्विचायुष-त्र्यायुष-जातोक्ष-महोक्ष-
वृद्धोक्ष-उपशुन-गोष्ठश्चाः ।
पा० ५।४।७७।
- ६३ ब्रह्म-हस्ति-राज-पत्यात् वर्चसः ।
पा० ५।४।७८+भा०।
- ६४ सम्-अव-अन्धात् तमसः ।
पा० ५।४।७९।
- ६५ श्वसो वसीयसः । पा० ५।४।८०।
- ६६ निसश्च श्रेयसः । पा० ५।४।८०, ७७।
- ६७ तप्त-अनु-अवात् रहसः ।
पा० ५।४।८१।
- ६८ प्रतेः उरसः आधारात् ।
पा० ५।४।८२।
- ६९ अनुगवम् आयात्रे । पा० ५।४।८३।
- ७० द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ।
पा० ५।४।८४।
- ७१ प्रादिभ्यः अध्वनः । पा० ५।४।८५।
- ७२ पाण्डु-उदक्-कृष्णाद् भूमेः ।
काशिका ५।४।७५^१।
- ७३ संख्याया नदी-गोदावर्योश्च ।
काशिका ५।४।७५^१।
- ७४ असंख्याच्च अङ्गुलेः अनन्यासंख्यार्थे ।
पा० ५।४।८६।
- ७५ अहः-सर्व-एकदेश-संख्यात-पुण्य-वर्षा-
दीर्घाच्च रात्रेः । पा० ५।४।८७।

१. अत्र च कारिका —

"शुभ्र-उदक्-पाण्डुपूर्याः भूमेः अच् प्रत्ययः स्मृतः । गोदावर्योश्च नद्याश्च संख्याया उत्तरे यदि ॥"

- ७६ सखि-अहर्-राज्ञां टच् । पा०५।४।११। ६७ अङ्गुलेर्दारुणि । पा०५।४।११४।
 ७७ गोः अलुकि अचार्थे । पा०५।४।११२। ६८ द्वि-त्रिभ्यां मूर्ध्नः । पा०५।४।११५।
 ७८ उरसः अग्रे । पा०५।४।११३। ६९ अप् पूरण्याः तासु ।
 ७९ अनस्-अश्म-अयः-सरसां जाति-
 नाम्नोः । पा०५।४।११६+वा०१।
 ८० ग्राम-कौटात् तक्षणः । पा०५।४।११५। १०० प्रमाण्याः । पा०५।४।११६।
 ८१ अतेः शुनः । पा०५।४।११६। १०१ अन्तर्-बहिर्भ्यां लोम्नः ।
 ८२ उपमानात् अप्राणिनि । पा०५।४।११७। १०२ नक्षत्रात् नेतुः ।
 ८३ मृग-पूर्व-उत्तराच्च सक्थनः ।
 पा०५।४।११६ वा०२।
 ८४ संख्या-अर्धात् नावः एकार्थात् । १०३ नव्-सु-वि-उप-त्रेः चतुरः अच् ।
 पा०५।४।११६, १००। पा०५।४।७७+वा०१।
 ८५ खार्या वा । पा०५।४।१०१। १०४ नाभेः । पा०५।४।७५।
 ८६ द्वि-त्रिभ्याम् अञ्जलेः । पा०५।४।१०२। १०५ सुप्रात-सुश्र-सुदिव-शारिकुक्ष-
 चतुरश्राः । पा०५।४।१२०।
 ८७ कु-मह-द्व्यां ब्रह्मणः । पा०५।४।१०५। १०६ नव्-सु-दुर्भ्यः सक्थनो वा ।
 ८८ जनपदात् । पा०५।४।१०४। पा०५।४।१२१।
 ८९ चार्थे चु-इ-ष-हः समाहारे । १०७ प्रजाया असिच् । पा०५।४।१२२।
 पा०५।४।१०६। १०८ मन्द-अल्पाच्च मेधायाः ।
 ९० शरदादिभ्यः असंख्यार्थे । पा०५।४।१२२।
 पा०५।४।१०७। १०९ नाम्नि नासाया नसः अस्थूलात् ।
 ९१ अनः । पा०५।४।१०८। पा०५।४।११८।
 ९२ नपुंसकात् वा । पा०५।४।१०९। ११० प्रादिभ्यः । पा०५।४।११९।
 ९३ गिरि-नदी-पौर्णमासी-आग्रहायणी-
 ज्ञयः । पा०५।४।११०-११२। १११ वे खः । पा०५।४।११९ भा०।
 ९४ निसः शतो डच् । पा०५।४।७३ वा०१। ११२ खुर-खरात् नस् वा ।
 ९५ संख्याया अब्रहोः अन्यार्थे । पा०५।४।११८ भा०।
 पा०५।४।७३। ११३ धर्मात् अनिच् केवलात् ।
 ९६ सक्थि-अक्षणः स्वाङ्गात् पच् । पा०५।४।१२४।
 पा०५।४।११३। ११४ सु-हरित-तृण-सोमात् जम्भात् ।
 पा०५।४।१२५।

१ अत्र सूत्रे काशिकायाम् "अन्यत्रापि च दृश्यते । पञ्चनाभः ऊर्णनाभः दीर्घपात्रः समरात्रः अरात्रः । तदेतत् सर्वमिह योगविभागं कृत्वा साधयन्ति" इत्येवं निर्देशे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

- ११५ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे । पा०५।४।१२६। १३३ अग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-वृष-चराह-अहि-
मूषिक-श्याव-शिखर-अरोकात् वा ।
११६ इच् व्यतिहारे । पा०५।४।१२७। पा०५।४।१४५, १४४। काशिका
११७ द्विदण्ड्यादीनि । पा०५।४।१२८। ५।४।१४५, १४४।
११८ भृति-मासात् ठच् । १३४ ककुत् ककुदस्य अवस्थायाम्
पा०५।४।११६ वा०१। पा०५।४।१४६।
११९ सं-प्रात् जानुनो ज्ञः । १३५ त्रिककुत् पर्वते । पा०५।४।१४७।
पा०५।४।१२९। १३६ वि-उदः काकुत् काकुदस्य ।
१२० ऊर्ध्वात् वा । पा०५।४।१३०। पा०५।४।१४८।
१२१ धनुर्नाम्नि । पा०५।४।१३३। १३७ पूर्णात् वा । पा०५।४।१४९।
१२२ जायाया निङ् । पा०५।४।१३४। १३८ सुहृद्-दुर्हृदौ मित्र-अमित्रयोः ।
१२३ सु-उत्-वृति-सुरभेः गन्धस्य इत् । पा०५।४।१५०।
पा०५।४।१३५। १३९ उरोभ्यः कप् । पा०५।४।१५१।
१२४ आगन्तोर्वा । पा०५।४।१३५ वा०१। १४० इनः स्त्रियाम् । पा०५।४।१५२।
१२५ अल्पे । पा०५।४।१३६। १४१ डी-ऊङ्-ऋतः अभ्रुवः ।
१२६ उपमानात् । पा०५।४।१३७। पा०५।४।१५३।
१२७ पादस्य पात् अहस्त्यादिभ्यः । १४२ शेषात् वा । पा०५।४।१५४।
पा०५।४।१३८। १४३ न नाम्नि । पा०५।४।१५५।
१२८ कुम्भपद्यादयः । पा०५।४।१३९। १४४ ईयसः । पा०५।४।१५६।
१२९ सु-संख्यादेः । पा०५।४।१४०। १४५ ड्यः ईत् । पा०५।४।१५६ वा०१।
१३० वयसि दन्तस्य द्तु । १४६ स्तुतौ भ्रातुः । पा०५।४।१५७।
पा०५।४।१४१। १४७ नाडी-तन्त्र्योः स्वाङ्गे ।
१३१ षोडन् । पा०६।३।१०९ वा०३। पा०५।४।१५९।
१३२ स्त्रीनाम्नि । पा०५।४।१४३। १४८ निष्प्रवाणिः । पा०५।४।१६०।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे चतुर्थः अध्यायः समाप्तः]

[पञ्चमः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ सन्-यङोः आद्यम् एकाच् द्विः ।
पा०६।१।६,१।
- २ चङ-लिटोः । पा०६।१।११,८।
- ३ आद्यात् अचः । पा०६।१।२।
- ४ न न्दो हलि । पा०६।१।३।
काशिका ६।१।३।
- ५ अयि रः । पा०६।१।३१।
- ६ पुनः ।
- ७ ईर्ष्यः यिः सन् वा ।
पा०६।१।३ वा०२+भा०।
- ८ सुपो यथेष्टम् । पा०६।१।३ भा०।
- ९ दाश्चान् साह्वान् मीढ्वान् चिक्लिदं
चक्नसम् । पा०६।१।१२+वा०
५+भा०।
- १० चराचर-चलाचल-पतापत-वदावद-
घनाघन-पाटूपाटा वा ।
पा०६।१।१२ वा०६-८।
- ११ ष्यङः प्रधानस्य पुत्र-पत्योः स्वयोः
इक् यणः । पा०६।१।१३।
- १२ बन्धौ अन्यार्थे । पा०६।१।१४।
- १३ मात-मातृक-मातृषु वा ।
पा०६।१।१४ भा०।
- १४ वच्चि-स्वपि-यजादीनां लिटि अपिति ।
पा०६।१।१५। पा०१।२।५।
- १५ ग्रहि-व्यधोः । पा०६।१।१६।
- १६ शिन्डितोः । पा०६।१।१६।
पा०१।२।४।
- १७ ज्या-व्रश्च-प्रछ-भ्रस्जाम् ।
पा०६।१।१६।
- १८ वशः तिङ्शिति अपिति ।
पा०६।१।१६।
- १९ व्यचः अङ्गिति अनसि ।
पा०६।१।१६,१७ वा०४।
- २० किति तेषाम् । पा०६।१।१५।
- २१ लिटि अश्वेद्विस्वते । पा०६।१।१७।
- २२ ग्रहि-प्रछोः सनि । पा०१।२।८।
- २३ स्वपः । पा०१।२।८।
- २४ चङि । पा०६।१।१८।
- २५ यङि । पा०६।१।१९।
- २६ व्ये-स्यमोः । पा०६।१।१९।
- २७ चायः कीः । पा०६।१।२१।
- २८ प्रे स्त्यः त-त्त्वतोः । पा०६।१।२३।
- २९ स्पर्श-द्रवमूर्त्योः श्यः । पा०६।१।२४।
- ३० प्रतेः । पा०६।१।२५।
- ३१ वा अभि-अवात् । पा०६।१।२६।
- ३२ स्फायः स्फीः । पा०६।१।२२।
- ३३ शृतं क्षीर-हविषोः ।
पा०६।१।२७+भा०।
- ३४ प्यायः पीः । पा०६।१।२८।
- ३५ आङः अन्धु-ऊधसोः ।
पा०६।१।२८ वा०१।
- ३६ लिट्-यङोः । पा०६।१।२९।
- ३७ वा श्वेः । पा०६।१।३०।
- ३८ णौ सन्-चङोः । पा०६।१।३१।
- ३९ ह्वः । पा०६।१।३२।
- ४० द्वित्वे । पा०६।१।३३।
- ४१ न तस्मिन् । पा०६।१।३७।
- ४२ लिटि । पा०६।१।३८।

१. काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे “ यकारपरस्य रेफस्य प्रतिषेधो न भवतीति वक्तव्यम् ” इत्येवं निर्देशे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

- ४३ वयो यः । पा०६।१।३८।
 ४४ वेः अपिति वा । पा०६।१।३९,४०।
 ४५ ल्यपि च । पा०६।१।४१।
 ४६ ज्यः । पा०६।१।४२।
 ४७ व्यः । पा०६।१।४३।
 ४८ परेर्वा । पा०६।१।४४।
 ४९ एचः अशिति आत् । पा०६।१।४५।
 ५० अलिङि व्यः । पा०६।१।४६।
 ५१ स्फुरि-स्फुलोर्घञि । पा०६।१।४७।
 ५२ दीङः अक्किङ्सनि ल्यपि ।
 पा०६।१।५०।
 ५३ मि-म्योः अखल्-अचि ।
 पा०६।१।५०+वा०२।
 ५४ लियो वा । पा०६।१।५१।
 ५५ अपगुरो णमुलि । पा०६।१।५३।
 ५६ चि-स्फुरोः णौ । पा०६।१।५४।
 ५७ प्रजने वियः । पा०६।१।५५।
 ५८ भियः प्रयोजकात् । पा०६।१।५६।
 ५९ स्मेञ्च । पा०६।१।५७।
 ६० क्री-इङ्-जीनाम् । पा०६।१।४८।
 ६१ अण्ठिवु-ण्वक्कादेः यः सः ।
 पा०६।१।६४+वा०१।
 ६२ णः नः । पा०६।१।६५।
 ६३ यः वलि लोपः । पा०६।१।६६।
 ६४ वेः अनचः । पा०६।१।६७।
 ६५ हलः ति-सिपः । पा०६।१।६८।
 ६६ सोः । पा०६।१।६८।
 ६७ डी-आपो दीर्घात् । पा०६।१।६८।
 ६८ एङ्-ह्रस्वात् संबुद्धौ अतः ।
 पा०६।१।६९+वा०१।
 ६९ ह्रस्वस्य अतिङि पिति तुक् ।
 पा०६।६।७१।
 ७० छे । पा०६।१।७३।
 ७१ आङ्-माङः । पा०६।१।७४।

- ७२ दीर्घस्य । पा०६।१।७५।
 ७३ पदान्तस्य वा । पा०६।१।७६।
 ७४ इकः यण् अचि । पा०६।१।७७।
 ७५ एचः अच्-अच्-आच्-आचः ।
 पा०६।१।७८।
 ७६ यि परे अच्-आची । पा०६।१।७९।
 ७७ धातोस्तत्रैव । पा०६।१।८०।
 ७८ गव्यतिः अध्वमाने ।
 पा०६।१।७९ वा०३।
 ७९ शक्ये क्षि-ज्योः अच् । पा०६।१।८१।
 ८० क्रियः क्रयार्थे । पा०६।१।८२।
 ८१ द्वयोः एकः । पा०६।१।८४।
 ८२ आत् अदेङ् । पा०६।१।८७।
 ८३ आदेर्जेवाद्यटः । पा०६।१।९०।
 ८४ एचि । पा०६।१।८८।
 ८५ इण्-एधोः । पा०६।१।८९।
 ८६ ऊठि । पा०६।१।९१।
 ८७ अक्षात् ऊहिन्याम् ।
 पा०६।१।९२+वा०३।
 ८८ स्वात् ईर-ईरिणोः ।
 पा०६।१।९२ वा०५।
 ८९ प्रात् ऊढ-ऊढि-एष-एष्येषु ।
 पा०६।१।९२ वा०४।
 ९० ऋते तृतीयासमासे ।
 पा०६।१।९२ वा०६।
 ९१ प्र-दश-ऋण-वसन-कम्बल-वत्सरात्
 ऋणे । पा०६।१।९२ वा०७,८।
 ९२ ओतः अम्-शसोः आत् ।
 पा०६।१।९३।
 ९३ प्रादीनाम् ऋति धातौ ।
 पा०६।१।९३।
 ९४ वा सुपि लृति च ।
 पा०६।१।९२। काशिका ३।१।९२।
 ९५ एङि पररूपम् । पा०६।१।९४।
 ९६ अनियोगे एवे । पा०६।१।९४ वा०३।

- ६७ ओष्ठ-ओत्वोः समासे वा ।
पा०६।१।६४ वा०५।
- ६८ शकन्ध्वादयः । पा०६।१।६४ वा०४।
- ६९ ओम्-आङोः । पा०६।१।६५।
- १०० उसि अनादौ । पा०६।१।६६।
- १०१ अतः अदेङि । पा०६।१।६७।
- १०२ अव्यक्तानुकरणस्य अनेकाच्चः अतः
इतौ । पा०६।१।६८+वा०१।
- १०३ न द्वित्वे । पा०६।१।६९।
- १०४ तः वा । पा०६।१।६९।
- १०५ डाच्चि पूर्वस्य । पा०६।१।६९ वा०१।
- १०६ अकः अकिदीर्घः । पा०६।१।१०१।
- १०७ ऋति ऋतः ऋर्वा ।
पा०६।१।१०१ वा०१।
- १०८ लृति लृः । पा०६।१।१०१ वा०२।
- १०९ प्रथमयोः अचि । पा०६।१।१०२।
- ११० ततः शसो नः पुंसि ।
पा०६।१।१०३।
- १११ न आत् इचि । पा०६।१।१०४।
- ११२ दीर्घात् जसि च । पा०६।१।१०५।
- ११३ अमि पूर्वः । पा०६।१।१०७।
- ११४ यण् इकः । पा०६।१।१०८।
- ११५ एङः अतिपदादौ । पा०६।१।१०९।
- ११६ डसि-डसोः । पा०६।१।११०।
- ११७ ऋतः उत् । पा०६।१।१११।
- ११८ सख्युः पत्युः । पा०६।१।११२।
- ११९ हशि च अतः रोः ।
पा०६।१।११३, ११४।
- १२० गोः ओ वा । पा०६।१।१२२।
- १२१ अचि अवङ् । पा०६।१।१२३।
- १२२ अक्ष-इन्द्रे । पा०६।१।१२४।
काशिका ६।१।१२४, १२३।
- १२३ न प्लुतः अनितौ ।
पा०६।१।१२५, १२६।
- १२४ क्वच्चिद् वा । पा०६।१।१३०।
- १२५ ईत्-ऊत्-एत् द्विवचनम् ।
पा०६।१।१२५। पा०१।१।११।
- १२६ अमू अमी । पा०१।१।१२।
- १२७ अच् अनाङ् । पा०१।१।१४।
- १२८ ओत् । पा०१।१।१५।
- १२९ सौ वा इतौ । पा०१।१।१६।
- १३० उञ् । पा०१।१।१७।
- १३१ ऊँ । पा०१।१।१८।
- १३२ इकः असस्थाने ह्रस्वश्च असमासे ।
पा०६।१।१२७+वा०१।
- १३३ ऋत्-लृति अकः । पा०६।१।१२८।
- १३४ एतत्-तदोः सुलोपः अकोः
अनञ्समासे हलि । पा०६।१।१३२।
- १३५ दिवः अन्ते च उत् ।
पा०६।१।१३३।
काशिका ६।१।१३३।
- १३६ सं-परेः कृञः सुट् ।
पा०६।१।१३७, १३५।
- १३७ उपात् भूषण-समवाय-यत्न-वैकृत्य-
अध्याहारेषु । पा०६।१।१३७, १३६।
- १३८ किरः लवने । पा०६।१।१४०।
- १३९ हिंसायां प्रतेश्च । पा०६।१।१४१।
- १४० अपात् चतुष्पात्-शकुनिषु हृष्ट-
अन्न-कुलायार्थिषु । पा०६।१।१४२+
वा०१।
- १४१ अपरस्पराः सातत्ये ।
पा०६।१।१४४।
- १४२ पारस्करादीनि नास्ति ।
पा०६।१।१५७।

[द्वितीयः पादः]

- १ अलुग् उत्तरपदे । पा०६।३।१।
- २ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः । पा०६।३।२।
- ३ ब्राह्मणाच्छंसी । पा०६।३।२ वा०१।
- ४ खिति इच एकाचः अमः ।
पा०६।३।६।
- ५ ओजस्-सहस्-अम्भस्-तपस्-अञ्जसः
तृतीयायाः । पा०६।३।३+वा०१।
- ६ मनसो नास्मि । पा०६।३।४।
- ७ आज्ञायिनि । पा०६।३।५।
- ८ पुस्-जनुभ्याम् अनुज-अन्धयोः ।
पा०६।३।३ वा०२।
- ९ आत्मनः पूरणे । पा०६।३।५ वा०१।
- १० नास्मि पराञ्च चतुर्थ्याः ।
पा०६।३।७,८।
- ११ सप्तम्या बहुलम् । पा०६।३।१४।
- १२ षष्ठ्या आक्रोशे । पा०६।३।२१।
- १३ पुत्रे वा । पा०६।३।२२।
- १४ वाग्-दिक्-पश्यद्भ्यः युक्ति-दण्ड-
हरेषु । पा०६।३।२१ वा०१।
- १५ अदसः फग्-बुबोः ।
पा०६।३।२१ वा०२+भा०।
- १६ शूनः शेष-पुच्छ-लाङ्गूलेषु नास्मि ।
पा०६।३।२१ वा०४।
- १७ दिवो दासे । पा०६।३।२१ वा०५।
- १८ ऋतः विद्या-योनि-संबन्धात् तत्र ।
पा०६।३।२३+वा०१।
- १९ स्वसृ-पत्योर्वा । पा०६।३।२४।
- २० मातर-पितरौ चार्थे । पा०६।३।३२।
- २१ ऋतः तत्र-आनङ्गः । पा०६।३।२५।
- २२ पुत्रे । पा०६।३।२५ वा०१।
- २३ देवतानाम् अवायूनां वेदे सह
श्रुतानाम् । पा०६।३।२६+ वा०१+
भा०।
- २४ न आदैचि अग्नेरविष्णौ ।
पा०६।३।२८+वा०१।
- २५ सोम-वरुणयोः ईत् । पा०६।३।२७।
- २६ दिवः द्यावा । पा०६।३।२६।
- २७ दिवस्पृथिव्यां वा । पा०६।३।३०।
काशिका ६।३।३०।
- २८ उषासा उषसः । पा०६।३।३१।
- २९ स्त्रियां पुंवत् उक्तपुंस्कम् अनूङ्कार्थे
स्त्रियाम् अप्रधानपूरणी-प्रियादौ ।
पा०६।३।३४+वा०८।
- ३० प्रसूता-प्रजाता-नाभिण्यः ।
पा०६।३।३४ भा०।
- ३१ त्र-तस्-तर-तम-चरट्-कल्पप्-देश्य-
रूपप्-पाशप्-शस्-थ्यन्-क्यङ्-मानिषु ।
पा०६।३।३५ वा०१-५,८,९।
पा०६।३।३६।
- ३२ यच्च अणादौ । पा०६।३।३५ वा०११।
- ३३ डे अग्नायी ।
पा०६।३।३५ वा०११+भा०।
- ३४ न त्यादि-बु-कोपान्तम् ।
पा०६।३।३७+वा०१।
- ३५ संज्ञा-पूरण्योः । पा०६।३।३८।
- ३६ अच आदैच्चेतुः अरक्त-विकारे ।
पा०६।३।३९।
- ३७ स्वाङ्गात् ईत् अमानिनि ।
पा०६।३।४०+वा०१।

- ३८ जातिः अष्फादौ च । पा०६।३।४१। ६२ यति अवर्णे । पा०६।२।६३
 ३९ पुंवत् स्वपदार्थ-जातीय-देशीयेषु । वा०२+भा०।
 पा०६।३।४२। ६३ शिरसः शीर्षन् वा ।
 ४० त्व-तलोगुणः । पा०६।३।३५ वा०१०। पा०६।१।६१+वा०२।
 ४१ सर्वादयः वृत्तिमात्रे । पा०६।३।३५। ६४ शीर्षः अच्चि । पा०६।१।६१ वा०३।
 ४२ तर-तम-रूप-कल्प-चेलट्-ब्रुव-गोत्र- ६५ नाम्नि उदकस्य उदः ।
 मत-हते ड्यो ह्रस्वः । पा०६।३।४३। पा०६।३।५७।
 ४३ वा एकाचः । पा०६।३।४४। ६६ उत्तरस्य । पा०६।३।५७ वा०१।
 ४४ उगितः । पा०६।३।४५। ६७ वास-वाहने । पा०६।३।५८।
 ४५ ऊडः । पा०६।३।४४। ६८ पेष्टे पिष्टौ । पा०६।३।५८।
 ४६ आत् महतः जातीय-एकार्थयोः ६९ एकह्लादौ भाण्डे वा । पा०६।३।५९।
 अच्च्यर्थे । पा०६।३।४६+भा०। ७० मन्थ-ओदन-सक्तु-बिन्दु-वज्र-भार-
 ४७ घास-कर-विशिष्टे पुंवच्च । हार-वीवध-गाहेषु । पा०६।३।६०।
 पा०६।३।४६ वा०१। ७१ इको ह्रस्वः । पा०६।३।६१।
 ४८ इच्चि । पा०६।३।१३७। ७२ न च्चिडीयण्-इयुवाम् अभ्रुकुं-
 ४९ नाम्नि अष्टनः । पा०६।३।१२५। सादीनाम् । पा०६।३।६१ वा०३।
 ५० कपाले हविषि । पा०६।३।४६ वा०२। पा०६।३।६१+भा०।
 ५१ गवि युवते । पा०६।३।४६ वा०३। ७३ डी-आपोस्तु अनाम्नोर्बहुलम् ।
 ५२ द्वेश्च संख्यायां प्राक् शतात् अनन्यार्थ- पा०६।३।६३, ६४।
 अशीत्योः । पा०६।३।४७+भा०। ७४ इष्टका-इषीका-भालानां चित-तूल-
 ५३ त्रेः त्रयस् । पा०६।३।४८। भारिषु । पा०६।३।६५।
 ५४ चत्वारिंशदादौ वा । पा०६।३।४९। ७५ खिति ससंख्यस्य मुम् च ।
 ५५ हृदयस्य अणि हृत् । पा०६।३।५०। पा०६।३।६६, ६७।
 ५६ लेखे । पा०६।३।५०। ७६ अरुषः । पा०६।३।६७।
 ५७ लास-यतोः । पा०६।३।५०। ७७ कारे अस्तु-सस्य-अगदस्य ।
 ५८ पादस्य आजि-आति-न-उप-हते पदः । पा०६।३।७०+वा०१।
 पा०६।३।५२। ७८ लोकस्य पृणे । पा०६।३।७० वा०४।
 ५९ हिम-हति-काषि-ष्ठन्-यति पद् । पा०६।३।७० वा०५।
 पा०६।३।५३, ५४, ५३ वा०१। ८० भ्राष्ट्र-अग्न्योः इन्धे ।
 ६० ऋचः शि । पा०६।३।५५। पा०६।३।७० वा०६।
 ६१ नस् नासिकायाः तस्-क्षुद्रे । ८१ अगिलस्य गिले ।
 पा०६।१।६३ वा०२। पा०६।३।७० वा०७।

- ८२ भद्र-उष्णयोः करणे । पा०६।३।७० वा०८।
- ८३ मध्यस्य दिने । पा०६।३।८५। काशिका ६।३।८४।
- ८४ श्येन-तिलयोः पाते जे । पा०६।३।७१।
- ८५ रात्रेर्धातौ वा । पा०६।३।७२।
- ८६ धेनोर्भव्यायाम् । पा०६।३।७० वा०३।
- ८७ मांसस्य पचि घञ्-ल्युटोर्लोपः । काशिका^१ ६।१।१४४।
- ८८ समः तते । पा०६।१।१४४^१ वा०१।
- ८९ तुमश्च काम-मनसोः । पा०६।१।१४४^१ वा०२+भा०।
- ९० तव्यादिषट्के अवश्यमः । पा०६।१।१४४^१ वा०३।
- ९१ नञः नः । पा०६।३।७३।
- ९२ तिङि अवक्षेपे । पा०६।३।७३ वा०१।
- ९३ ततः अचि नुट् । पा०६।३।७४।
- ९४ एकात् अन्न-अद्नौ संख्यायाम् । पा०६।३।७६+भा०।
- ९५ नखादयः । पा०६।३।७५।
- ९६ नगः अप्राणिनि वा । पा०६।३।७७।
- ९७ सहस्य सः अन्यार्थे । पा०६।३।८२।
- ९८ नाम्नि । पा०६।३।७८।
- ९९ अनुपाख्ये । पा०६।३।८०।
- १०० अकाले स्वार्थे । पा०६।३।८१।
- १०१ ग्रन्थान्ताधिक्ये । पा०६।३।७९।
- १०२ न आशिषि अगो-वत्स-हृले । पा०६।३।८३ + वा०१ + भा०।
- १०३ समानस्य पक्षादिषु । पा०६।३।८५, ८६ । काशिका ६।३।८४।
- १०४ नाम-गोत्र-रूप-स्थान-वर्ण-वयस्-वचन-धर्म-जातीये वा । पा०६।३।८५। काशिका ६।३।८४।
- १०५ उदरे ये । पा०६।३।८८।
- १०६ दृग्-दृश-दृक्षे । पा०६।३।८९+वा०१।
- १०७ वतौ च इदम्-किमोः ईश्-की । पा०६।३।८९, ९०।
- १०८ आः सर्वादीनाम् । पा०६।३।९१।
- १०९ विष्वग्-देवयोश्च डद्विगाञ्च वौ । पा०६।३।९२।
- ११० समः समिः । पा०६।३।९३।
- १११ सहस्य सध्रिः । पा०६।३।९५।
- ११२ तिरसः तिरि अति । पा०६।३।९४।
- ११३ द्वि-अन्तर्-प्रादेः अनात् अपः ईत् । पा०६।३।९७+भा०।
- ११४ देशे अनूपः । पा०६।३।९८।
- ११५ समापः नाम्नि । पा०६।३।९७ वा०१।
- ११६ छ-कारके अन्यस्य डुक् । पा०६।३।९९।
- ११७ अषष्ठी-तृतीयस्य आशीर्-आशा-आस्था-आस्थित-उत्सुक-ऊति-रागेषु । पा०६।३।९९।
- ११८ अर्थे वा । पा०६।३।१००।
- ११९ कोः कत् अचि उत्तरार्धे । पा०६।३।१०१।
- १२० त्रि-रथ-वदेषु । पा०६।३।१०२, १०१ वा०१।
- १२१ तृणे जातौ । पा०६।३।१०३।

१ अत्र काशिकायाम् इयं कारिका—

“लुम्पते अवश्यमः कृत्ये तुम्-काम-मनसोरपि । समो वा हित-ततयोः मांसस्य पचि-युट्-घ्नोः” ॥

- १२२ का अक्ष-पथोः । पा०६।३।१०४। १३५ वले । पा०६।३।११८।
 १२३ ईषदर्थे । पा०६।३।१०५। १३६ चितेः कपि । पा०६।३।१२७।
 १२४ पुरुषे वा । पा०६।३।१०६। १३७ ढ्रलोपे अणः । पा०६।३।१११।
 १२५ कवङ्ग च उष्णे । पा०६।३।१०७। १३८ सहि-वहोः ओत् । पा०६।३।११२।
 १२६ दिक्शब्दात् तीरस्य तारः । १३९ कर्णे चिह्नस्य अविष्ट-अष्ट-पञ्च-
 पा०६।३।१०९ वा०१। भिन्न-च्छिन्न-च्छिद्र-खुव-स्वस्तिकस्य ।
 १२७ पृषोदरादीनि । पा०६।३।१०९। पा०६।३।११५।
 १२८ संख्या-वि-सायादेः अह्नस्य अहन्
 डौ वा । पा०६।३।११०। १४० नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-
 तनिषु क्वौ । पा०६।३।११६।
 १२९ विश्वस्य वसु-राटोः दीर्घः । १४१ प्रादीनां घञि बहुलम् ।
 पा०६।३।१२८ । पा०६।३।१२२।
 १३० नरे नाम्नि । पा०६।३।१२९। १४२ इकः काशे । पा०६।३।१२३।
 १३१ ऋषौ मित्रे । पा०६।३।१३०। १४३ दः ति । पा०६।३।१२४।
 १३२ वन-गिर्योः कोटर-अञ्जनादीनाम् । १४४ वहे । पा०६।३।१२१।
 पा०६।३।११७। १४५ अन्येषामपि । पा०६।३।१३७।
 १३३ मतौ बह्वचः अनजिरादीनाम् । १४६ चौ । पा०६।३।१३८।
 पा०६।३।११९। १४७ यण इकः । पा०६।३।१३९।
 १३४ शरादीनाम् । पा०६।३।१२०।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

- १ प्रकृतेः । पा०६।४।१। ९ अप्-तृ-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्-
 २ हलः । पा०६।४।२। होतृ-पोतृ-प्रशास्त्रृणाम् ।
 ३ अलुकि । पा०६।४।११।
 ४ नामि अतिसृ-चतस्रोः । १० सौ असंबुद्धौ । पा०६।४।८।
 पा०६।४।३,४। ११ अतु-असोः । पा०६।४।१४।
 ५ नुर्वा । पा०६।४।६। १२ इन्-हन्-पूष-अर्यम्णां शौ च ।
 ६ नः । पा०६।४।७। पा०६।४।१२,१३।
 ७ शि-सुटि । पा०६।४।८। १३ अच्-हनोः सनि झलि ।
 ८ स्-महतोर्नुमि । पा०६।४।१०। पा०६।४।१६,१५।

- ११२ दरिद्रः किति ।
पा०६।४।११४ वा०१।
- ११३ अचि अयुवौ । पा०६।४।११४भा०।
- ११४ लुङि वा । पा०६।४।११४ वा०३।
- ११५ अस्-दा-धां हौ एत् अद्विभ्रा ।
पा०६।४।११६।
- ११६ लिटि अनादेशादेः एकहल्मध्ये
अतः । पा०६।४।१२०।
- ११७ थलि इटि । पा०६।४।१२१।
- ११८ तृ-फल-भज-त्रयः । पा०६।४।१२२।
- ११९ राधः हिंसायाम् । पा०६।४।१२३।
- १२० वा जृ-भ्रम-त्रसाम् ।
पा०६।४।१२४।
- १२१ फणादीनां सप्तानाम् ।
पा०६।४।१२५।
- १२२ दम्भ-श्रन्थ-ग्रन्थाम् ।
पा०६।४।१२० वा०५। काशिका
१।२।६।
- १२३ मनि-पचि-मचां नास्मि ।
- १२४ नशः अङि । पा०६।४।१२० भा०।
- १२५ न शस-दद-वादि-अदेडाम् ।
पा०६।४।१२६।
- १२६ यच्चि अशि-सुटि । पा०६।४।१२६।
- १२७ पादः पत् । पा०६।४।१३०।
- १२८ वसोर्व उत् । पा०६।४।१३१।
- १२९ श्र-युवन्-मघोनाम् अणणादौ ।
पा०६।४।१३३+वा०१।
- १३० अल्लोपः अनः । पा०६।४।१३४।
- १३१ षपूर्व-हन्-धृतराज्ञाम् अणि ।
पा०६।४।१३५।
- १३२ डि-श्योर्वा । पा०६।४।१३६।
- १३३ न संयोगात् व-मः । पा०६।४।१३७।
- १३४ अचः । पा०६।४।१३८।
- १३५ उदः ईत् । पा०६।४।१३९।
- १३६ आतः । पा०६।४।१४०।
- १३७ विशतेर्डिति तेः । पा०६।४।१४२।
- १३८ अन्त्याऽजादेः । पा०६।४।१४३।
- १३९ नः अणादौ । पा०६।४।१४४।
- १४० कलाप्यादीनाम् ।
पा०६।४।१४४ वा०१-५।
- १४१ अह्लः खे । पा०६।४।१४५।
- १४२ असर्व-असंख्य-एकदेशात् टे ।
पा०५।४।८६,८८।
- १४३ समाहारे । पा०५।४।८६।
- १४४ एकात् । पा०५।४।९०।
- १४५ अन्तिकस्यं तमे तादेः ।
पा०६।४।१४९ वा०६।
- १४६ कादेर्वहुलम् ।
पा०६।४।१४९ वा०८।
- १४७ ओः ओत् । पा०६।४।१४६।
- १४८ डे । पा०६।४।१४७।
- १४९ यस्य । पा०६।४।१४८।
- १५० ड्याम् । पा०६।४।१४८।
- १५१ मत्स्यस्य यः ।
पा०६।४।१४९ वा०५।
- १५२ हलः यच्चादेः । पा०६।४।१५०।
- १५३ सूर्य-अगस्त्ययोः छे च ।
पा०६।४।१४९ वा०६।
- १५४ तिष्य-पुष्ययोर्नक्षत्रे अणि ।
पा०६।४।१४९ वा०७।
- १५५ आपत्यस्य अनाति अणादौ ।
पा०६।४।१५१।
- १५६ क्य-च्योः । पा०६।४।१५२।
- १५७ विल्वकीयादीनाम् ईयः ।
पा०६।४।१५३।

- १५८ इष्ठ-इम-ईयस्सु अन्त्याऽजादेः ।
पा० ६।४।१५४, १५५।
- १५९ स्थूल-दूर-युव-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणा-
देर्वोः एङ् च । पा० ६।४।१५६।
- १६० बहोः एः भू च । पा० ६।४।१५८।
- १६१ इष्ठे यिक् च । पा० ६।४।१५९।
- १६२ ज्यायान् । पा० ६।४।१६०।
- १६३ प्रिय-स्थिर-स्फिर-उरु-गुरु-बहुल-
तृप्र-दीर्घ-ह्रस्व-वृद्ध-वृन्दारकाणां प्र-
स्थ-स्फ-वर-गर-बंह-त्रप-द्राघ-ह्रस्-
वर्ष-वृन्दाः । पा० ६।४।१५७, १५६।
- १६४ रः ऋतः पृथु-मृदु-कृश-भृश-दृढ-
परिवृढानाम् । पा० ६।४।१६१+
भा०।
- १६५ नैकाचः । पा० ६।४।१६३।
- १६६ अके राजन्य-मनुष्य-यूनाम् ।
पा० ६।४।१६३ वा०३।
- १६७ आत्म-अध्वनोः खे ।
पा० ६।४।१६६।
- १६८ अभाव-कर्मणोः अनो ये ।
पा० ६।४।१६८।
- १६९ अणि । पा० ६।४।१६७।
- १७० कर्मणः अशीले । पा० ६।४।१७२।
- १७१ मात् वर्मणः अपत्ये ।
पा० ६।४।१७०।
- १७२ हितनाम्नो वा ।
पा० ६।४।१७० वा०१।
- १७३ ब्रह्मणो जातौ । पा० ६।४।१७१।
- १७४ उक्षणः । पा० ६।४।१७३।
- १७५ संयोगात् इनः असमूहे ।
पा० ६।४।१६६। काशिका
६।४।१६६।
- १७६ गाथि-विदथि-केशि-गणि-पणिनाम् ।
पा० ६।४।१६५।
- १७७ अनपत्ये च । पा० ६।४।१६४।
- १७८ दाण्डिनायन-हास्तिनायन-
जैह्याशिनय-वासिनायनि-भ्रौण-
हत्य-धैवत्य-सारव-ऐक्ष्वाक-
हिरण्मयानि । पा० ६।४।१७४।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ युवोः अन-अकौ असः । पा० ७।१।१।
- २ आयन्-एय्-ईन्-ईय्-इयः फ-ङ-ख-छ-घां
ष्फाद्यादीनाम् । पा० ७।१।२।
- ३ ठस्य इकः । पा० ७।३।५०।
- ४ इस्-उस्-उग्-दोर्भ्यः कः ।
पा० ७।३।५१+भा०।
- ५ तः अशश्वतः । पा० ७।३।५१।
- ६ अनञ्समासे वत्वः ल्यप् ।
पा० ७।३।३७।
- ७ ऋत इत् धातोः । पा० ७।१।१००।
- ८ उपान्तस्य । पा० ७।१।१०१।
- ९ उत् ओष्ठ्यात् । पा० ७।१।१०२।
- १० इदितः नुम् । पा० ७।१।५८।
- ११ शे मुचादीनाम् । पा० ७।१।५९।
- १२ नशः झलि । पा० ७।१।६०।
- १३ मस्जः अन्त्यात् पूर्वः ।
पा० ७।१।६०। काशिका ७।१।६०।
- १४ जभः अचि । पा० ७।१।६१।

- १४ इडो गमः । पा०६।४।१६+वा०१।
- १५ तनो वा । पा०६।४।१७।
- १६ क्रमः त्वि । पा०६।४।१८।
- १७ वमः किति वौ च । पा०६।४।१९।
- १८ वनि च च्छ्वोः शूट् ।
पा०६।४।१९।
- १९ ज्वर-त्वर-अव-श्रिवु-मवांसोपान्तस्य ।
पा०६।४।२०।
- २० रात् लोपः । पा०६।४।२१।
- २१ प्राग्युवोः अब्रुग्युग् असिद्धं समाना-
श्रये । पा०६।४।२२+वा०१२,१४।
- २२ इनान्नः । पा०६।४।२३।
- २३ हलः अनिदितः ड्ङिति उपान्तस्य ।
पा०६।४।२४।
- २४ शिति अपिति । पा०१।२।४।
- २५ लिटि इन्वि-श्रन्थ-ग्रन्थाम् ।
पा०१।२।६। काशिका १।२।६।
- २६ दम्भः स्सनि च । काशिका १।२।११।
- २७ स्वञ्जः । पा०१।२।६। काशिका
१।२।६।
- २८ शपि दंश-सञ्जेश्च । पा०६।४।२५।
- २९ रञ्जः । पा०६।४।२६।
- ३० णौ भृगरमणे । पा०६।४।२४ वा०३।
- ३१ घञि भाव-करणयोः । पा०६।४।२७।
- ३२ स्यदो जवे । पा०६।४।२८।
- ३३ अवोद-एध-ओद्म-प्रश्रथ-हिमश्रथाः ।
पा०६।४।२९।
- ३४ लङ्गि-कम्प्योः उपताप-शरीर-
विकारयोः । पा०६।४।२४ वा०१।
- ३५ तनादिअनिट्-वनां ल्यपि वमः ।
पा०६।४।३७,३८।
- ३६ सो वा । पा०६।४।३७ वा०२।
- ३७ झलि तिडि अपिति ।
पा०६।४।३७। पा०१।२।४।
- ३८ किडति । पा०६।४।३७।
- ३९ जन-सन-खनाम् आत् । पा०६।४।४२।
- ४० सनि । पा०६।४।४२।
- ४१ ये वा । पा०६।४।४३।
- ४२ तनो यकि । पा०६।४।४४।
- ४३ सनः कित्चि लोपश्च । पा०६।४।४५।
- ४४ लिङि तिङि गमः । पा०१।२।१३,११।
- ४५ सिद्धि । पा०१।२।१३।
- ४६ हनः । पा०१।२।१४।
- ४७ यमः सूचने । पा०१।२।१५।
- ४८ वा उद्वाहे । पा०१।२।१६।
- ४९ गमादीनां क्वौ । पा०६।४।४०+भा०।
- ५० न अञ्चः पूजायाम् । पा०६।४।३०।
- ५१ कित्चि दीर्घश्च । पा०६।४।३६।
- ५२ कित्त्व स्कन्द-स्यन्दोः । पा०६।४।३१।
- ५३ सेटि । पा०१।२।१८।
- ५४ वञ्चि-लुञ्चि-थ-फो वा ।
पा०१।२।२४,२३।
- ५५ ज-नशः । पा०६।४।३२।
- ५६ भञ्जेः चिणि । पा०६।४।३३।
- ५७ शासः किडति शिस् । पा०६।४।३४।
- ५८ तिङि हलि अपिति । पा०१।२।४।
- ५९ शा हौ । पा०६।४।३५।
- ६० हनो जः । पा०६।४।३६।
- ६१ लिट्-आशीलिङ्-अतिङ्गिति ।
पा०६।४।४६।
- ६२ भ्रस्जो भर्ज् वा । पा०६।४।४७।
- ६३ लोपः अतः । पा०६।४।४८।

१ अत्र काशिकायाम् सूत्रवृत्तौ “दम्भेर्हल्ग्रहणस्य जातिवाचकत्वात् सिद्धम्—
धीप्नति, धिप्नति” इति निर्देशः ।

- ६४ यकि ।
 ६५ यस्य हलः । पा०६।४।४६।
 ६६ क्यस्य वा । पा०६।४।५०।
 ६७ णेः अनिटि । पा०६।४।५१।
 ६८ त-तवति इटि । पा०६।४।५२।
 ६९ अय् आम्-अन्त-आलु-आय्य-इत्नुषु ।
 पा०६।४।५५।
 ७० ल्यपि लघोः । पा०६।४।५६।
 ७१ आपः वा । पा०६।४।५७।
 ७२ क्षेः क्षीः । पा०६।४।५८।
 ७३ उपदेशे अच्-हन-ग्रह-दृग्भ्यः स्य-सिच्-
 सीयुट्-तासां भाव-आप्ययोः चिण्वत्
 इट् वा । पा०६।४।६२।
 ७४ दीङः लिटि युक् । पा०६।४।६३।
 ७५ लोपः अच्चि किडति च आतः ।
 पा०६।४।६४।
 ७६ ईद् यति । पा०६।४।६५।
 ७७ मा-स्या-सा-गा-पिब-हाग्-दा-धां हलि।
 पा०६।४।६६।
 ७८ लिङि एत् । पा०६।४।६७।
 ७९ वा संयोगादेः अस्थः । पा०६।४।६८।
 ८० न ल्यपि । पा०६।४।६९।
 ८१ मेङः इद् वा । पा०६।४।७०।
 ८२ लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु अट् अमाङ्योगे ।
 पा०६।४।७१,७४।
 ८३ अचि ष्नु-धातु-भ्रुवां य्-वोः इय्-उवौ ।
 पा०६।४।७७।
 ८४ द्वित्वे पूर्वस्य असमे । पा०६।४।७८।
 ८५ स्त्रियाः । पा०६।४।७९।
 ८६ वा अम्-शसोः । पा०६।४।८०।
 ८७ इणः यण् । पा०६।४।८१।
 ८८ एः असंयोगात् अनेकाचः ।
 पा०६।४।८२।
 ८९ कारक-असंख्यात् ओश्च सुपि
 असुधियः । पा०६।४।८३,८५।
 काशिका ६।४।८३।
 ९० वर्षा-दृन्-पुनः-कारात् भुवः ।
 पा०६।४।८४।+भा०।
 ९१ हु-श्नुवोः अलिटि । पा०६।४।८७।
 ९२ भुवः वुग् लुङ्-लिटोः । पा०६।४।८८।
 ९३ ऊद् गोहः अचः । पा०६।४।८९।
 ९४ दुषः णौ । पा०६।४।९०।
 ९५ वा चित्ते । पा०६।४।९१।
 ९६ गम-जन-खन-घसां ले लोपः अपिति ।
 पा०६।४।९८।
 ९७ किति च हनः । पा०६।४।९८।
 ९८ हु-झलः अनिटः हेः धिः ।
 पा०६।४।१०१+वा०१।
 ९९ अतः लुक् । पा०६।४।१०५।
 १०० उतः असंयोगात् अधातोः ।
 पा०६।४।१०६।
 १०१ वाऽस्य व्-मोः । पा०६।४।१०७।
 १०२ कृञः ये च । पा०६।४।१०८,१०९।
 १०३ अत उत् तत्रापिति ।
 पा०६।४।११०।
 १०४ श्न-सोर्लोपः । पा०६।४।१११।
 १०५ श्ना-द्विख्यतयोः आतः ।
 पा०६।४।११२।
 १०६ ई हलि तिङि अदा-धः ।
 पा०६।४।११३।
 १०७ इद् दरिद्रः । पा०६।४।११४।
 १०८ भियो वा । पा०६।४।११५।
 १०९ हाकः । पा०६।४।११६।
 ११० हौ वा । पा०६।४।११७।
 १११ यि लोपः । पा०६।४।११८।

- १५ रधः । पा०७।१।६१।
- १६ इटि लिटि । पा०७।१।६२।
- १७ रभः अशप्-लिटोः । पा०७।१।६३।
- १८ लभः । पा०७।१।६४।
- १९ आडो यि । पा०७।१।६५।
- २० उपात् स्तुतौ । पा०७।१।६६।
- २१ प्रादिभ्यः खल्-घञोः । पा०७।१।६७।
- २२ न सु-दुरः केवलात् । पा०७।१।६८।
- २३ चिण्-णमोः अप्रादेर्वा ।
पा०७।१।६९+वा०१।
- २४ पंसुटि उगितः । पा०७।१।७०।
- २५ अञ्चः । पा०७।१।७०।
- २६ युजेः असमासे । पा०७।१।७१।
- २७ शौ अयमः । पा०७।१।७२।
- २८ बहृजि बहृञ्जि । पा०७।१।७२
वा०४,५।
- २९ इकः अचि सुपि । पा०७।१।७३।
- ३० उक्तपुंस्कस्य रादौ वा ।
पा०७।१।७४।
- ३१ अस्थि-दधि-सद्विथ-अक्षणाम् अनङ् ।
पा०७।१।७५।
- ३२ न अञ्जेः शतुः । पा०७।१।७८।
- ३३ शौ वा । पा०७।१।७९।
- ३४ आत् शी-ङ्योः । पा०७।१।८०।
- ३५ शप्-ङ्यनः । पा०७।१।८१।
- ३६ सौ अनङुहः । पा०७।१।८२।
- ३७ दिवः औत् । पा०७।१।८४।
- ३८ पथि-मथि-ऋभुक्षाम् आत् ।
पा०७।१।८५।
- ३९ शि-सुटि एः । पा०७।१।८६।
- ४० थः न्यः । पा०७।१।८७।
- ४१ इनः अचि लोपः । पा०७।१।८८।
- ४२ पुंसः असुङ् । पा०७।१।८९।
- ४३ गोः औः स्वार्थे । पा०७।१।९०।
- ४४ सख्युः अशौ ऐत् । पा०७।१।९२।
- ४५ ऋत्-उशनस्-पुरुदंशस्-अनेहसां चानङ्
सौ । पा०७।१।९३,९४।
- ४६ न संबुद्धौ । पा०७।१।९२।
- ४७ वा उशनसः । काशिका ७।१।९४१।
- ४८ कुशस्तुनः तृच् । पा०७।१।९५।
- ४९ स्त्रियाम् । पा०७।१।९६।
- ५० चतुर्-अनङुहोः आम् । पा०७।१।९८।
- ५१ अम् सौ संबुद्धौ । पा०७।१।९९।
- ५२ अष्टनः वा सुपि आत् ।
पा०७।२।८४। काशिका ७।२।८४।
- ५३ रायः हलि । पा०७।२।८५।
- ५४ युष्मद्-अस्मदोः अनादेशे ।
पा०७।२।८६।
- ५५ औ-शस्-अम्सु । पा०७।२।८७,८८।
- ५६ यः अचि । पा०७।२।८९।
- ५७ शेषे लोपः अदः । पा०७।२।९०।
- ५८ भाग्यस्य युव-आवौ द्विवचने ।
पा०७।२।९१,९२।
- ५९ यूय-वयौ जसि । पा०७।२।९३।
- ६० त्व-अहौ सौ । पा०७।२।९४।
- ६१ तुभ्य-मह्यौ डयि । पा०७।२।९५।
- ६२ त्व-ममौ डसि । पा०७।२।९६।
- ६३ त्व-मौ एकस्मिन् । पा०७।२।९७।
- ६४ त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ ।
पा०७।२।९९।

१ " संवोचने तूशनसस्त्रिरूपं सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम् " । इत्येवं कारिकां वर्तते काशिकायाम् ।

- ६५ तिसृका । पा०७।२।६६ वा०१।
 ६६ ऋतः रः अचि । पा०७।२।१००।
 ६७ जराया जरस् वा । पा०७।२।१०१।
 ६८ त्रदां तसादिषु च आ द्वेः अः ।
 पा०७।२।१०२+वा०१।
 ६९ किमः कः । पा०७।२।१०३।
 ७० तः सः सौ । पा०७।२।१०६।
 ७१ असौ असुकः असकौ ।
 पा०७।२।१०६,१०७+वा०१।
 ७२ इदम् अयम् इयम् ।
 पा०७।२।१०८,१११,११०।
 ७३ दः नः । पा०७।२।१०६।
 ७४ टा-ओसि अकः अनः ।
 पा०७।२।११२।
 ७५ हलि अश् । पा०७।२।११३।
 ७६ एतस्य चान्वादेशे द्वितीयायां चैनः ।
 पा०२।४।३२,३४।
 ७७ पत्-निश्-मास्-हृद्-यूषन्-दोषन्
 शसादौ वा । पा०६।१।६३।
 काशिका ६।१।६३।
 ७८ लिट्-आशीलिङ्-अतिङ्गिति ।
 पा०२।४।३५।
 ७९ अस्तेः भूः । पा०२।४।५२।
 ८० भ्रुवः वच् । पा०२।४।५३।
 ८१ चक्षः ख्याञ् । पा०२।४।५४।
 ८२ वा लिटि । पा०२।४।५५।
 ८३ न अस्-अन-वर्जनेषु ।
 पा०२।४।५४ वा०१०,६।
 ८४ अजेः दी अयु-वञ्-अप्-व्येषु ।
 पा०२।४।५६ वा०१। पा०२।४।५७।
 ८५ ति किति अदः जग्धः ।
 पा०२।४।३६।
 ८६ त्यपि । पा०२।४।३६।
 ८७ लुङ्-सन्-अच्-घञ्-अप्सु घस्लृः ।
 पा०२।४।३७+वा०१। पा०२।४।३८।
 ८८ वेचः लिटि वच् वा ।
 पा०२।४।४०,४१।
 ८९ हनः वध लिङि । पा०२।४।४२।
 ९० लुङि । पा०२।४।४३।
 ९१ तङि वा । पा०२।४।४४।
 ९२ एतेः गाः । पा०२।४।४५।
 ९३ णौ गम् अबोधे । पा०२।४।४६।
 ९४ सनि । पा०२।४।४७।
 ९५ इङ् । पा०२।४।४८।
 ९६ चाङ् लिटि । पा०२।४।४९।
 ९७ वा लुङ्-लृङोः । पा०२।४।५०।
 ९८ णौ संश्रङोः । पा०२।४।५१।
 ९९ वलादेः इट् । पा०७।२।३५।
 १०० ग्रहः अस्य अलिटि ईत्
 पा०७।२।३७+वा०३।
 १०१ वृ-ऋतो वा । पा०७।२।३८।
 १०२ न लिङि । पा०७।२।३९।
 १०३ सिञ्चि अतङि । पा०७।२।४०।
 १०४ इट् सनो वा । पा०७।२।४१।
 १०५ लिङ्-सिचोः तङि । पा०७।२।४२।
 १०६ ऋतः संयोगादेः । पा०७।२।४३।
 १०७ स्वृ-सूङ्-ऊदितः । पा०७।२।४४।
 १०८ रघादिभ्यः । पा०७।२।४५।
 १०९ निष्कुषः । पा०७।२।४६।
 ११० त-तवतोः । पा०७।२।४७।
 १११ पू-दिलशः त्वश्च ।
 पा०७।२।५१,५०।
 ११२ वस-क्षुध इट् । पा०७।२।५२।
 ११३ अञ्चः ने । पा०७।२।५३।
 ११४ लुभ आकुले । पा०७।२।५४।

- ११४ नृपः स्वः । पा० ७२।५५।
- ११६ वृश्चिवा । पा० ७२।५५।
- ११७ उदितो वा । पा० ७२।५६।
- ११८ ति-इषु-सह-लुभ-व्य-रिषः ।
पा० ७२।४८। काशिका ७२।४८।
- ११९ सनि इवन्त-श्रुध-भ्रसज-दम्भु-श्रि-
स्व-यु-ऊर्णु-भर-नपि-सनि-तति-पति-
वरिद्रः । पा० ७२।४९। काशिका
७२।४९।
- १२० स्य-सिचि कृत-वृत्-च्छृद-तृद-नृतः ।
पा० ७२।५७।
- १२१ अनिडः प्रमेः इट् ।
पा० ७२।५८+वा० १।
- १२२ न तडानैः । पा० ७२।५८।
- १२३ वृश्म्य इट् । पा० ७२।५९।
- १२४ तासश्च फलूपः । पा० ७२।६०।
- १२५ न स्तोः । पा० ७२।६१।
- १२६ प्रमः । पा० ७२।६१।
- १२७ तद्विषययात् कर्तरि अतिडः ।
पा० ७२।६६ वा० ५।
- १२८ वशि । पा० ७२।६८।
- १२९ तैः ब्रह्मादिभ्यः । पा० ७२।६
वा० १।
- १३० एकाचः अशि-श्रि-डी-श्रीङ्-ऊ-व्या-
विषदृकात् । पा० ७२।१०+भा०।
- १३१ तिषि-दुषि-स्विदि-मनि-पुष-श्रिद्वः
मयना । पा० ७२।१० भा०। काशिका
७२।१०।
- १३२ विदेः अलुक्तः । पा० ७२।१० भा०।
- १३३ य-र-याद् भाः । पा० ७२।१० भा०।
- १३४ य-र-ण-नात् सः । पा० ७२।१० भा०।
- १३५ शकादिभ्यः । पा० ७२।१० भा०।
- १३६ श्रि-उग्-ऊर्णोः कितः ।
पा० ७२।११। काशिका ७२।११।
- १३७ सनः ग्रह-नुहश्च । पा० ७२।१२।
- १३८ स्वार्थे ।
- १३९ श्रि-ईदितः त-तवतोः ।
पा० ७२।१४।
- १४० यतः अपतेर्वा । पा० ७२।१५।
काशिका ७२।१५।
- १४१ आवितः । पा० ७२।१६।
- १४२ भाव-आरम्भयोर्वा । पा० ७२।१७।
- १४३ जपि-वमः । काशिका ७२।१६^१।
- १४४ वि-आडः श्रसः ।
काशिका ७२।१६^१।
- १४५ क्षुब्ध-स्वान्त-ध्वान्तं मन्थ-मनस्-
तमः । पा० ७२।१८।
- १४६ विरिब्व-फाण्ट-वाढ-म्लिष्टानि
स्वर-अनायास-भृश-अस्पष्टेषु ।
पा० ७२।१८।
- १४७ धृष-शसः प्रागल्भ्ये ।
पा० ७२।१९।
- १४८ दृढः स्थूल-वलिनीः ।
पा० ७२।२०।
- १४९ प्रभी परिवृढः । पा० ७२।२१।
- १५० कृच्छ्र-गहनयोः कथः ।
पा० ७२।२२।
- १५१ घुषेः अतिशब्दने । पा० ७२।२३।
- १५२ सन्-नि-घेः अर्दः । पा० ७२।२४।
- १५३ अभेः अविदूरे । पा० ७२।२५।

१५४ णेः वृत्तं ग्रन्थे । पा०७।२।२६।	१६५ क्वसोः एकाच्-आत्-घसः ।
१५५ वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट- च्छन्न-ज्ञप्ताः । पा०७।२।२७।	पा०७।२।६७।
१५६ रुष-हृष-अस-त्वर-संबुष-आस्वनः ।	१६६ वा हन-गम-विद-विश-दृशः ।
पा०७।२।२८,२९।	पा०७।२।६८+भा०।
१५७ अपवितिः । पा०७।२।३० भा०।	१६७ ऋ-हनः स्ये । पा०७।२।७०।
१५८ सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुवः लिटः ।	१६८ अञ्जेः सिचः । पा०७।२।७१।
पा०७।२।३१।	१६९ स्तु-सुच्यः अतडि । पा०७।२।७२।
१५९ कृच्यः असुटः । पा०७।२।३३ वा०१।	१७० यम-रम-नम-आतां सकृ च ।
१६० ऋतः तासि नित्यानितस्थलः ।	पा०७।२।७३।
पा०७।२।६३,६१।	१७१ ऋ-स्मि-पूङ्-अञ्ज-अशः सनः ।
१६१ अचो वा । पा०७।२।६३।	पा०७।२।७४।
काशिका ७।२।६३। ^१	१७२ कृभ्यः पञ्चभ्यः । पा०७।२।७५।
१६२ पाठे अत्वतः । पा०७।२।६२।	१७३ रु-द्रुच्यः तिङः । पा०७।२।७६।
१६३ सृ-जि-दृशः । पा०७।२।६५।	१७४ जनि-ईशि-ईडः स्-ध्वे ।
१६४ ऋ-वृ व्येञ्-अदः । पा०७।२।६६,	पा०७।२।७७,७८+भा०
६४ भा०।	१७५ आने सुग् अतः । पा०७।२।८२।
	१७६ आसीनः । पा०७।२।८३ ।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे पञ्चमः अध्यायः समाप्तः]

१ अत्र सूत्रे "ऋत एव भारद्वाजस्य नान्येषां धातूनाम्" । इति निर्देशे अस्य चान्द्रसूत्रस्य समावेशः ।

[षष्ठः अध्यायः, प्रथमः पादः]

- १ मृजेः आत् । पा०७।२।११४।
- २ ऋतः अचि वा । पा०७।२।११४।
- ३ अजागृ-णि-श्वीनां तिचि अतडि
आदैच् । पा०७।२।५,१।
- ४ हलः अचः । पा०७।२।३।
- ५ न इटि । पा०७।२।४।
- ६ वा ऊर्णोः । पा०७।२।६।
- ७ हलादेः उपान्तस्य अश्रस-क्षण-ह्-म्-
य्-एदितः अतः । पा०७।२।७,५।
- ८ वद-व्रज-ल्-रः । पा०७।२।३,२।
- ९ ङिणत्ति । पा०७।२।११५,११६।
- १० अचः । पा०७।२।११५।
- ११ किति च अपत्यादौ अचाम् आदेः ।
पा०७।२।११८,११७।
- १२ देविका-शिशपा-दीर्घसत्र-श्रेयसामात् ।
पा०७।३।१।
- १३ केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेरियः ।
पा०७।३।२।
- १४ ऐज्भाविनः य्-वः पदान्तात्
प्राग् ऐच् । पा०७।३।३।
- १५ द्वारादीनाम् । पा०७।३।४।
- १६ न्यग्रोधस्य केवलस्य । पा०७।३।५।
- १७ न व्यतिहारे । पा०७।३।६।
- १८ स्वागतादीनाम् । पा०७।३।७।
- १९ श्वादेरिति । पा०७।३।८।
- २० पदस्य वा । पा०७।३।९।
- २१ उत्तरस्य । पा०७।३।१०।
- २२ अंशात् ऋतोः । पा०७।३।११।
- २३ सु-सर्व-अर्धात् जनपदस्य ।
पा०७।३।१२।
- २४ अमद्राणां दिशः । पा०७।३।१३।
- २५ प्राचां ग्रामाणाम् । पा०७।३।१४।
- २६ संख्यायाः संवत्सर-परिमाणस्य असंज्ञा-
ज्ञान-कुलिजस्य । पा०७।३।१५,१७।
काशिका ७।३।१५,१७।
- २७ बर्बस्याभाविनि । पा०७।३।१६।
- २८ जाते प्रोष्ठ-भद्रात् पदस्य ।
पा०७।३।१८। काशिका ७।३।१८।
- २९ हृद्-भग-सिन्धोः पूर्वस्य च ।
पा०७।३।१९।
- ३० अनुशतिकादीनाम् । पा० ७।३।२०।
- ३१ देवतानां चार्थे सूक्त-हृविषोः ।
पा०७।३।२१। काशिका ७।३।२१।
- ३२ नेन्द्रस्य परस्य । पा०७।३।२२।
- ३३ दीर्घात् वरुणस्य । पा०७।३।२३।
- ३४ प्राचां नगरस्य । पा०७।३।२४।
- ३५ जङ्गल-धेनु-वलजस्य वा ।
पा०७।३।२५।
- ३६ अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा ।
पा०७।३।२६।
- ३७ नातः । पा०७।३।२७।
- ३८ प्रात् वाहनस्य हे । पा०७।३।२८।
- ३९ नञः शुचि-ईश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल-
निपुणानाम् । पा०७।३।३०।
- ४० हनः तः अचिण्-णलोः । पा०७।३।३२।
- ४१ आतो युग् अणलि ।
पा०७।३।३३+भा०।
- ४२ सः सेटः न अवमि-अमि-कम-आचम-
विश्रमः । पा०७।३।३४।+भा०।
- ४३ जनि-वधोः । पा०७।३।३५।

- ४४ मेर्णलि वा । पा०७।१।१६१।
- ४५ ऋ-री-व्ही-ह्वी-वनूयी-क्ष्मायि-आतां
पुग् णी । पा०७।३।३६।
- ४६ शा-छा-सा-ह्वा-व्या-वे-पां युक् ।
पा०७।३।३७।
- ४७ वः विधूनने जुक् । पा०७।३।३८।
- ४८ धञ्-प्रीजोर्नुक् । पा०७।३।३७ वा०१।
- ४९ लियः स्नेह-विलापने वा ।
पा०७।३।३९।
- ५० लो लुक् । पा०७।३।३९।
- ५१ पातेः । पा०७।३।३७ वा०२।
- ५२ प्रयोक्तुभिः षुक् । पा०७।३।४०।
- ५३ स्फायो वः । पा०७।३।४१।
- ५४ शदेः अगतौ तः । पा०७।३।४२।
- ५५ सत्य-अर्थ-वेदानाम् आयुक् ।
पा०३।१।२५ वा०२।
- ५६ मित्तां ह्रस्वः । पा०६।४।१६२।
- ५७ चिण्-णमोः दीर्घश्च । पा०६।४।१६३।
- ५८ छादेः घे । पा०६।४।१६६।
- ५९ प्रादौ एकस्मिन् । पा०६।४।१६६।
- ६० इस्-मन्-त्रन्-क्विवु । पा०६।४।१६७।
- ६१ चङि उपान्तस्य । पा०७।४।१।
- ६२ न अग्लोपि-शासू-ऋदिताम् ।
पा०७।४।२।
- ६३ आज-भास-भाष-दीप-जीव-
मील-पीडां वा । पा०७।४।३।
- ६४ कणादीनाम् । पा०७।४।३ भा०।
- ६५ उः ऋत् । पा०७।४।७।
- ६६ घ्रः इत् । पा०७।४।६।
- ६७ स्थः । पा०७।४।५।
- ६८ पिबः पीप्यः । पा०७।४।४।
- ६९ देङ्ङि दिगि लिटि । पा०७।४।९।
- ७० अधातोः कीदतोऽसुप आपि ।
पा०७।३।४४।
- ७१ य-काभ्यामापः अत्यक्-त्यपो वा ।
पा०७।३।४६,४४ वा० ५।
- ७२ भस्त्रा-एषा-अजा-ज्ञा-ह्वा-स्वानाम् ।
पा०७।३।४७+वा०२।
- ७३ अनुक्तपुंस्कात् आञ्च ।
पा०७।३।४८,४९।
- ७४ वर्तकां शकुनौ । पा०७।३।४५ वा०८।
- ७५ सूतका-पुत्रका-वृन्दारकाः ।
पा०७।३।४५ वा०१०।
- ७६ नरिका । पा०७।३।४४ वा०४।
- ७७ न यत्-तदोः । पा०७।३।४५।
- ७८ आशिषि । पा०७।३।४५ वा०३।
- ७९ क्षिपकादीनाम् । पा०७।३।४५ वा०५।
- ८० तारका ज्योतिषि ।
पा०७।३।४५ वा०६।
- ८१ वर्णकातान्तवे । पा०७।३।४५ वा०७।
- ८२ अष्टका पितृणाम् ।
पा०७।३।४५ वा०९।
- ८३ च-जोः कुः घित्-ण्यतोः ।
पा०७।३।५२।
- ८४ न्यङ्कुआदयः । पा०७।३।५३।
- ८५ ङिण्-नि हनो हः ।
पा०७।३।५४।
- ८६ द्वित्वहेतौ । पा०७।३।५५।
- ८७ हेः अचङि । पा०७।३।५६।
- ८८ सन्-लिटोः जेः । पा०७।३।५७।
- ८९ चेर्वा । पा०७।३।५८।
- ९० न क्वादेः । पा०७।३।५९।
- ९१ अजि-मजोः । पा०७।३।६०।
- ९२ वज्रेर्गतौ । पा०७।३।६३।

- ६३ ण्ये आवश्यक्ते । पा०७।३।६५। १०२ शमामष्टानां इये दीर्घः ।
 ६४ ऋच-रुच-याच-त्यजाम् । पा०७।३।७४।
 पा०७।३।६६+वा०३। १०३ ष्ठिद्वु-क्लम्-आचमां शिति ।
 पा०७।३।७५+वा०१।
 ६५ वचः अशब्दाख्यायाम् । पा०७।३।६७। १०४ क्रमः अतडाने । पा०७।३।७६।
 ६६ प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्ये । पा०७।३।७७।
 पा०७।३।६८। १०५ इषु-गमि-यमां छः । पा०७।३।७७।
 काशिका ७।३।७७।
 ६७ भोज्यम् अन्ने । पा०७।३।६९। १०६ पा-घ्ना-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश-शद-
 सदां यिद्व-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-
 ६८ यजः बहुलम् । पा०७।३।६६,६२। पश्य-शीय-सीदाः । पा०७।३।७८।
 ६९ ओलोपः इये । पा०७।३।७१।
 १०० वसस्य अचि । पा०७।३।७२। १०७ ज्ञा-जनोः जाः । पा०७।३।७९।
 १०१ लुग् वा दुह-दिह-लिह-गुहां तडि
 दन्त्ये । पा०७।३।७३। १०८ प्वादीनां ह्रस्वः । पा०७।३।८०।
 १०९ मिदेः एत् । पा०७।३।८२।

[षष्ठस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

- १ इकः अदेडः क्रियार्थायाः ।
 पा०७।३।८४। १२ अतिडि आच तल्लोपे ।
 पा०१।१।४+वा०७।
 २ उ-न्तोः । पा०७।३।८४। १३ कुटादीनाम् अञ्जिति । पा०१।२।१।
 ३ जुस्-पुकोः । पा०७।३।८३,८६। १४ विजः इटि । पा०१।२।२।
 ४ लघोः उपान्तस्य । पा०७।३।८६। १५ वा ऊर्णोः पा०१।२।३।
 ५ सृजि-दृशोः झलि अम् । पा०६।१।५८। १६ त-तवतोः अपू-शी-स्विदि-मिदि-
 क्ष्विदि-धृषः । पा०१।२।१६,२२।
 ६ स्पृश-मृश-कृष-तृष-दृष-सृषां वा ।
 पा०६।१।५९। १७ मृषः अक्षान्तौ । पा०१।२।२०।
 ७ द्विरुक्तस्य न अचि अलिटि ।
 पा०७।३।८७। १८ उत्तुपान्तस्य शब्दतः भाव-
 आरम्भयोर्वा । पा०१।२।२१+वा०१।
 ८ तिडशिति अपिदाशीलिडि ।
 पा०१।२।४,५। १९ मृड-मृद-गुध-कुष-क्लिश-वद-वस-
 लुच-ग्रहां क्त्व । पा०१।२।७,२४,८।
 ९ जागुः अलिटि । पा०७।३।८५। २० ऋत-तृष-मृष-कृशां वा ।
 पा०१।२।२४,२५।
 १० चिण्णलिडित्सु । पा०७।३।८५। २१ रलः हलादेः इद्गतोः सनि च ।
 पा०१।२।२६।
 ११ विडति । पा०१।१।५।

- २२ रुद-विद-सुध-ग्रहाम् । पा०१२।८।
- २३ इकः अनिटि । पा०१२।९।
- २४ उपान्तस्य । पा०१२।१०।
- २५ लिङ्ग-सिचोः तडि । पा०१२।११।
- २६ उः । पा०१२।१२।
- २७ सिचि दा-धा-स्थाम् इच्च ।
पा०१२।१७।
- २८ गाड ईत् स्ये च । पा०१२।१।
- २९ भू-सुवः अद्वेः तिडि ।
पा०७।३।८८+वा०१।
- ३० हलि पिति उतः औत् । पा०७।३।८९।
- ३१ वा ऊर्णोः । पा०७।३।९०।
- ३२ न अलि । पा०७।३।९१।
- ३३ तृगहः इन् । पा०७।३।९२।
- ३४ ब्रुव ईट् । पा०७।३।९३।
- ३५ यडो वा । पा०७।३।९४।
- ३६ अस्ति-सिचः अलः । पा०७।३।९६।
- ३७ रुद्ध्यः पञ्चभ्यः अट् च ।
पा०७।३।९८।९९।
- ३८ अदः । पा०७।३।१००।
- ३९ अतः आत् यञि । पा०७।३।१०१।
- ४० सुपि । पा०७।३।१०२।
- ४१ बहुषु झलि एत् । पा०७।३।१०३।
- ४२ ओसि । पा०७।३।१०४।
- ४३ टि च आपः । पा०७।३।१०५।
- ४४ संबोधने सौ । पा०७।३।१०६।
- ४५ अम्बार्यानाम् अडलेकानां ह्रस्वः
पा०७।३।१०७+भा०।
- ४६ डी-ऊडः । पा०७।३।१०७।
- ४७ मातुः मातृच् पुत्रे श्लाघ्ये ।
पा०७।३।१०७ भा०।
- ४८ इत्-उतोः एङ् । पा०७।३।१०८।
- ४९ जसि । पा०७।३।१०९।
- ५० डिति असख्युः । पा०७।३।१११।
पा०१।४।७।
- ५१ पत्युः समासे । पा०१।४।८।
- ५२ स्त्रियां वा । पा०१।४।९।
- ५३ ई-ऊभ्यां च आट् । पा०७।३।११२।
- ५४ सेयुवो वा । पा०१।४।१०,६।
- ५५ स्त्रियाः । पा०१।४।४।
- ५६ याड् आपः । पा०७।३।११३।
- ५७ स्मैवतः स्याड् अत् च ।
पा०७।३।११४।
- ५८ द्वितीया-तृतीयात् वा ।
पा०७।३।११५।
- ५९ डेः आम् तत्र । पा०७।३।११६,११७।
- ६० नियः । पा०७।३।११६।
- ६१ इत्-उद्भ्याम् औत् । पा०७।३।११८।
- ६२ एङः अत् च । पा०७।३।११९।
- ६३ टः अस्त्रियां ना । पा०७।३।१२०।
- ६४ ऋतः डि-सुटि अत् । पा०७।३।११०।
- ६५ संयोगादेः लिटि । पा०७।४।१०+
वा०२।
- ६६ स्कृञः । पा०७।४।१० वा०१।
- ६७ ऋत्-ऋछ्-ऋणाम् । पा०७।४।११।
- ६८ ऋ-थि-दृशः अडि । पा०७।४।१६,१८।
- ६९ असु-पत-वर्चां थुक्-पुम्-उमः
पा०७।४।१७,१९,२०।
- ७० के अणो ह्रस्वः । पा०७।४।१३।
- ७१ न कपि । पा०७।४।१४।
- ७२ आपः वा । पा०७।४।१५।
- ७३ शीडः एत् अलिटि । पा०७।४।२१।
- ७४ यि क्तिडिति अयङ् । पा०७।४।२२।
- ७५ प्रादिभ्य ऊहः ह्रस्वः । पा०७।४।२३।

७६ लिङि इणः । पा०७।४।२।४।	१०१ हृ एति । पा०७।४।२।२।
७७ आशिपि दीर्घः । पा०७।४।२।५।	१०२ क्यङि वा । पा०३।१।१।१। वा०१।
७८ च्वि-यङ्-यक्-व्येषु ।	१०३ ओजस्-अप्सरसोः ।
पा०७।४।२।६,२।५।	पा०३।१।१।१। वा०२।
७९ रीङ् ऋतः ये च । पा०७।४।२।७।	१०४ य्-इवर्णयोः द्वीधो-वैधयोः ।
८० रिङ् श-यग्-आशीलिङि ।	पा०७।४।२।३।
पा०७।४।२।८।	१०५ यण् अच्चि । पा०१।१।१।६।
८१ ऋ-संयोगाद्योः अत् । पा०७।४।२।९।	१०६ मि-मी-मा-रभ-लभ-शफ-पत्त-पद-वा-
८२ यङि । पा०७।४।३।०।	धाम् अचः सि सनि इस् ।
८३ हनः त्री हितायाम् ।	पा०७।४।२।४। काशिका ७।४।२।४।
पा०७।४।३।० वा०१।	१०७ राघः हितायाम् । पा०७।४।२।४।
८४ ई छा-ध्मोः । पा०७।४।३।१।	वा०१।
८५ अस्य च्चौ । पा०७।४।३।२।	१०८ जपि-आप्-ऋधाम् ईत् ।
८६ क्यच्चि । पा०७।४।३।३।	पा०७।४।२।५।
८७ न क्षुधि अज्ञानस्य । पा०७।४।३।४।	१०९ दम्भः इत् च । पा०७।४।२।६।
८८ धनस्य तृष्णायाम् । पा०७।४।३।४।	११० अव्याप्यस्य मुचेः ओत् वा ।
८९ उदस्यः । पा०७।४।३।४।	पा० ७।४।२।७।
९० वृष-अश्रयोः मंथुने सुक् ।	१११ द्वित्वे पूर्वस्यात्र लोपः ।
पा०७।१।५।१ वा०१।	पा०७।४।२।८।
९१ असुक् च अत्तुम् ।	११२ हलः अनादेः । पा०७।४।३।०।
पा०७।१।५।१ भा०।	११३ खयि खरः । पा०७।४।३।१+वा०१।
९२ दो-सो-मा-स्याम् इत् ति किति ।	११४ चर् । पा०८।४।२।४।
पा०७।४।४।०।	११५ जषः जश् पा०८।४।२।४,५।३।
९३ छो वा । पा०७।४।४।१।	११६ कु-होः चुः । पा०७।४।३।२।
९४ घाञः हिः । पा०७।४।४।२।	११७ न कुङ्कः यङि । पा०७।४।३।३।
९५ हाकः त्वि । पा०७।४।४।३।	११८ उः अत् । पा०७।४।३।६।
९६ दो दत् । पा०७।४।४।६।	११९ हस्वः । पा०७।४।२।९।
९७ प्रादेः अचः तः । पा०७।४।४।७।	१२० द्युति-स्वाप्योः यणः इक् ।
९८ अपो भि । पा०७।४।४।८।	पा०७।४।३।७।
९९ सि सः लिङ्गतिङि । पा०७।४।४।९।	१२१ व्यथः लिटि । पा०७।४।३।८।
१०० तास्-असोः रि च लोपः	१२२ दीर्घः अपिति इणः । पा०७।४।३।९।
पा०७।४।५।०,५।१।	१२३ अतः आदेः । पा०७।४।७।०।

१२४	नुक् च अनेकहलः । पा० ७।४।७१।	१३५	जप-जभ-दह-दश-भञ्ज-पशाम् ।
१२५	अदन्तोतेः । पा० ७।४।७२।		पा० ७।४।८६।
१२६	भुवः अत् । पा० ७।४।७३।	१३६	क्षर-फलोः । पा० ७।४।८७।
१२७	निजां लुकि एत् । पा० ७।४।७५।	१३७	ति च उत् अतः । पा० ७।४।८९, ८८।
१२८	ऋ-पृ-भृ-मा-हाडाम् इत् ।	१३८	रीग् ऋत्वतः । पा० ७।४।९०+
	पा० ७।४।७७, ७६।		वा० १।
१२९	सनि अतः । पा० ७।४।७९।	१३९	रुग्-रिक्ौ च लुकि । पा० ७।४।९१।
१३०	ओः पु-यण्-जि अपरे । पा० ७।४।८० ।	१४०	सन्वत् लघुनि णौ चडि अनग्लोपे ।
१३१	स्रु-श्रु-द्रु-प्रु-प्लु-च्यूनां वा ।		पा० ७।४।९३।
	पा० ७।४।८१।	१४१	दीर्घः लघोः । पा० ७।४।९४।
१३२	आ-अदेडः यडि । पा० ७।४।८२, ८३।	१४२	स्मृ-दृ-त्वर-प्रथ-म्रद-स्तृ-स्पशाम्
१३३	नीग् वञ्च-स्रंसु-ध्वंसु-भ्रंशु-कस-पत-		अत् । पा० ७।४।९५।
	पद-स्कन्दास् । पा० ७।४।८४।	१४३	वा वेष्टि-चेष्टयोः । पा० ७।४।९६।
१३४	ञमः अतः नुक् । पा० ७।४।८५।	१४४	ईत् च गणः । पा० ७।४।९७।

[षष्ठस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१	वीप्सा-आभीक्ष्ण्ययोः द्वे । पा० ८।१।४।	९	व्यतिहारे सर्वादीनां सुर्वहुलम् ।
	पा० ८।१।१।		पा० ८।१।१२ वा० ११।
२	परेः वर्जने वाक्ये वा । पा० ८।१।५+	१०	परस्य अपुंसि आम् ।
	वा० १, २।		पा० ८।१।१२ वा० १२।
३	अधि-उपरि-अधसां सामीप्ये ।	११	यथास्वे यथायथम् । पा० ८।१।१४।
	पा० ८।१।७।	१२	द्वन्द्वं रहस्य-मर्यादा-व्युत्क्रान्ति-यज्ञ-
४	वाक्यादेः आसन्त्रितस्य असूया-		पात्रप्रयोगेषु । पा० ८।१।१५।
	संमत्योः । पा० ८।१।८।	१३	अत्यन्तसहचरिते लोकविज्ञाते ।
५	एकस्य सुप्लुक् । पा० ८।१।९+वा० ३।		पा० ८।१।१५ वा० १।
६	आबाधे पुंवच्च । पा० ८।१।१०+९ वा० ३।	१४	संभ्रमे यावद्बोधम् ।
७	प्रकारे गुणस्य । पा० ८।१।१२।		पा० ८।१।१२ वा० ५+भा०।
८	अकृच्छ्रे प्रिय-सुखयोर्वा ।	१५	अपादादौ पदादेकवाक्ये ।
	पा० ८।१।१३।		पा० ८।१।१८, १७, १८ वा० ५।

१६ युष्मद्-अस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-
द्वितीयान्तयोः वाम्-नौ वा ।

पा०दा११२०, २६ भा०।

१७ बहुवचनस्य वस्-नसौ । पा०दा११२१।

१८ एकवचनस्य ते-मे । पा०दा११२२।

१९ त्वा-सौ द्वितीयायाः । पा०दा११२३।

२० अन्वादेशे । पा०दा११२६ वा०१।

२१ सपूर्वात् प्रथमान्तात् वा ।

पा०दा११२६।

२२ न च-त्रा-ह-अह-एङ्ययोगे ।

पा०दा११२४।

२३ दृश्यर्थे अनालोचने । पा०दा११२५।

२४ आमन्त्रितं पूर्वम् असद्वत् ।

पा०दा११७२।

२५ न सामान्यवचनमेकार्थे ।

पा०दा११७४ भा०।

२६ बहुत्वे वा । पा०दा११७४।

२७ पूर्वत्र असिद्धम् । पा०दा१११।

२८ सुपि न लोपः । पा०दा१२।

२९ न नि सुः । पा०दा१३।

३० सिज्जलोपः एकादेशे । पा०दा१६।

वा० ५।

३१ ष-ठनि क्तादेशः । पा०दा१६ वा०७।

३२ प्लुतस्तुकि । पा०दा१६ वा०११।

३३ घुटि श्चुः । पा०दा१६ वा०१२।

३४ द्वित्वे परसवर्णः । पा०दा१६।

वा०१४।

३५ मात् उपान्ताच्च मतोर्वः । पा०दा१६।

३६ जयः । पा०दा११०।

३७ नाम्नि । पा०दा१११।

३८ न यवादिभ्यः । पा०दा१६।

३९ अष्ठीवत्-वकीवत्-कक्षीवत्-उदन्वत्-
रुमण्वत्-चर्मण्वती ।

पा०दा११२, १३।

४० राजन्वान् सौराज्ये । पा०दा११४।

४१ कृपो रो लोऽङ्गुपजादीनाम् ।

पा०दा११८+भा०।

४२ प्रादीनाम् अयत्तौ । पा०दा११६।

४३ श्रो घडि । पा०दा१२०।

४४ अचि वा । पा०दा१२१।

४५ परेः घ-अङ्गु-योगेषु ।

पा०दा१२२+भा०।

४६ कपिरिकादीनाम् ।

पा०दा११८ भा०।

४७ डः ।

४८ सुपः प्रकृतेर्नो लोपः । पा०दा१७।

४९ न संबुद्धौ । पा०दा१८।

५० नपुंसके वा । पा०दा१८ वा०२।

५१ झुपि वलि तद्वत् । पा०११४।१७, १८।

५२ संयोगस्य पदस्य । पा०दा१२३।

५३ रात् सः । पा०दा१२४।

५४ धि सडि । पा०दा१२५, २२ वा०१।

५५ झलः झलि । पा०दा१२६।

५६ ह्रस्वात् । पा०दा१२७।

५७ इटः ईटि । पा०दा१२८।

५८ स्-कोः संयोगाद्योः अन्ते च ।

पा०दा१२६।

५९ चोः कुः । पा०दा१३०।

६० क्विनः । पा०दा१६२।

६१ नग् वा । पा०दा१६३।

६२ हः ङः । पा०दा१३१।

६३ दादेर्वालिः घः । पा०दा१३२।

६४ वा द्रुह-मुह-स्तुह-स्निहाम् ।

पा०दा१३३।

- ६५ नह-आहो घः । पा०दा२।३४,३५ ६२ ह्लादः ह्लाद् । पा०दा१।४।६५।
- ६६ व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज- ६३ कित्ति । काशिका ६।४।६५।
- शां षः । पा०दा२।३६। ६४ फुह्ल-क्षीव-कृश-उह्लाघाः ।
- ६७ झलः जश् । पा०दा२।३६। पा०दा२।५५।
- ६८ त-सोस्त-सौ मत्वर्थे । पा०१।४।१६। ६५ न ध्या-ख्या-प-मूर्च्छि-मदाम् ।
- ६९ झषः एकाचः स-ध्वोः वशो भष् । पा०दा२।५७।
- पा०दा२।३७। ६६ वित्तः प्रतीत-भोगयोः । पा०दा२।५८।
- ७० घस्त-थोश्च । पा०दा२।३८। ६७ भित्तं शकले । पा०दा२।५९।
- ७१ त-योः घः अधः । पा०दा२।४०। ६८ ससजुषः रः । पा०दा२।६६।
- ७२ सि ष-डोः कः । पा०दा२।४१। ६९ अह्लः । पा०दा२।६८।
- ७३ मो नो म्जोश्च । पा०दा२।६४,६५। १०० लुकि अरि रः । पा०दा२।६९।
- ७४ र-दात् त-तवतोर्दश्च । पा०दा२।४२। १०१ प्रचेतसः राजनि वा ।
- ७५ यणसंयोगात् आतः । पा०दा२।४३। पा०दा२।७०वा०१।
- ७६ ऋ-ल्वादिभ्यः कित्तनश्च । १०२ पत्यादिषु अहरादीनाम् ।
- पा०दा२।४४+वा०१। पा०दा२।७० भा०।
- ७७ पूवः नाशे । पा०दा२।४४ वा०३। १०३ दः अनडुहः । पा०दा२।७२।
- ७८ दु-न्वोः ऊ च । पा०दा२।४४ वा०२। १०४ वसु-संभु-ध्वंसां सः । पा०दा२।७२।
- ७९ सेः प्राप्ते । पा०दा२।४४ वा०४। १०५ त्रिपि । पा०दा२।७३।
- ८० ओदितः । पा०दा२।४५। १०६ त्रिपि र्वा । पा०दा२।७४।
- ८१ क्षेः क्षी च । पा०दा२।४६। १०७ दः । पा०दा२।७५।
- ८२ वा भाद्र-आक्रोश-दैत्येषु । १०८ धातोः र्-वोः अनच्च इकः दीर्घः ।
- पा०दा२।४६+वा०१। पा०दा२।७६,७७।
- ८३ इयः अस्पर्शे । पा०दा२।४७। १०९ न सुपि, यच्चि । पा०दा२।७६।
- ८४ अञ्जः अनवधौ । पा०दा२।४८। ११० द्वित्वे । पा०दा२।७८ वा०१।
- ८५ अद्यूते दिवः । पा०दा२।४९। १११ कुरु-च्छुरोः । पा०दा२।७९।
- ८६ अवाते निर्वाणः । पा०दा२।५०। ११२ अदसः अत्वे दात् उ दः मः ।
- ८७ घ्रा-त्रा-अति-ही-नुद-उन्द-विदो वा । पा०दा२।८०।
- पा०दा२।५६,६०। ११३ अद्रौ वा । पा०दा२।८० भा०।
- ८८ प्रस्त्यः मः । पा०दा२।५४। ११४ एत ईत् । पा०दा२।८१।
- ८९ क्षः । पा०दा२।५३। ११५ वाक्याचां प्लुतः अन्त्यः ।
- ९० शुषः कः । पा०दा२।५१। पा०दा२।८२।
- ९१ पचो वः । पा०दा२।५२। ११६ दूराह्वाने । पा०दा२।८४।

- ११७ अनन्त्येषुपि हे-है । पा०दा२।८५। १२५ विचारे । पा०दा२।९७, ९८।
 ११८ गुरु एकैकम् अनृतं वा । १२६ प्रतिश्रुती । पा०दा२।९९।
 पा०दा२।८६। १२७ पूजिते । पा०दा२।१००।
 ११९ अस्त्री-शूद्रप्रत्यभिवादे । १२८ चिति उपमार्थे । पा०दा२।१०१।
 पा०दा२।८३+घा०१। १२९ निन्दा-आशीः-प्रैष्येषु तिङ् ।
 १२० प्रत्युक्तौ हिः । पा०दा२।९३। आकाङ्क्षम् । पा०दा२।१०४।
 १२१ उपालम्भे । पा०दा२।९४। १३० अनन्त्यस्यापि प्रश्न-आख्यानयोः ।
 १२२ अङ्गयुक्तं तिङ् आकाङ्क्षम् । पा०दा२।१०५।
 पा०दा२।९६। १३१ एचः प्रश्नान्त-पूजा-विचार-
 १२३ भर्त्सने द्विरुक्तं पर्यायेण । प्रत्यभिवादेषु आत् इत्-उत्परः
 पा०दा२।९५+वा०१। पा०दा२।१०७+वा०२+भा०।
 १२४ असूया-संमत्योः पूर्वम् । १३२ न एतो द्वित्वे । पा०दा२।१०७।
 पा०दा२।१०३। १३३ तयोः य्-वौ अचि । पा०दा२।१०८।

[षष्ठस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

- १ समः स्रुटि सः । पा०दा३।५, १। १२ ङ-णोः कुक्-टुको शरि ।
 २ पुमः खयि अमि । पा०दा३।६। पा०दा३।२८।
 ३ नः छवि अप्रशानः^१ । पा०दा३।७। १३ डः सः धुट् । पा०दा३।२९।
 ४ कान् कानि । पा०दा३।१२। १४ नः । पा०दा३।३०।
 ५ नृन् पे रः वा । पा०दा३।१०। १५ शि तुक् । पा०दा३।३१।
 काशिका दा३।१०। १६ मयः उवः अचि वः ।
 ६ अत्र अनुनासिकः पूर्वस्य । पा०दा३।१। पा०दा३।३३, ३२।
 ७ अनुस्वारः । पा०दा३।४। १७ उमो ह्रस्वात् द्वे । पा०दा३।३२।
 ८ हलि मः । पा०दा३।२३, २२। १८ ठे अनादौ ढलोपः ।
 ९ नश्च अनन्त्यस्य झलि । पा०दा३।२४। पा०दा३।१३+वा०१।
 १० सम्राट् । पा०दा३।२५। १९ रः रि । पा०दा३।१४।
 ११ हे म-न-य-व-लपरे ते वा । २० विरामे विसर्जनीयः । पा०दा३।१५।
 पा०दा३।२६, २७, २६ वा०१। २१ खरि । पा०दा३।१५।

१ मूलसूत्रपाठपुस्तके 'अप्रशान्' इति ।

- २२ शर्परे । पा०दा३।३५।
- २३ रोः सुषि । पा०दा३।१६।
- २४ भो-भगो-अघोभ्यः अशि लोपः ।
पा०दा३।१७,२०।
- २५ आत् । पा०दा३।१७।
- २६ यः अचि वा अनुचि ।
पा०दा३।१७,२१,२२।
- २७ व्-योः ईषत्स्पृष्टौ च । पा०दा३।१८।
- २८ छवि रः सः । पा० दा३।३४।
- २९ वा शरि । पा०दा३।३६।
- ३० खरि लोपः । पा०दा३।३६ वा०१।
- ३१ कु-प्वोः) (क०पौ । पा०दा३।३७।
- ३२ ससंख्यस्य अनादौ सः ।
पा०दा३।३८+वा०१।
- ३३ रोः काम्ये । पा०दा३।३८ वा०२।
- ३४ इणः षः । पा०दा३।३९।
- ३५ निर्-दुर्-बहिर-आविर-चतुर्-प्रादुर्-
पुरसाम् । पा०दा३।४१,४०।
- ३६ सुचो वा । पा०दा३।४३।
- ३७ इस्-उसोः संबन्धे । पा०दा३।४४।
- ३८ प्लुतात् ति च । पा०दा३।४१ वा०२।
- ३९ समासे अनुत्तरस्य । पा०दा३।४५।
- ४० अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा-
कर्णेषु ससंख्यस्य । पा०दा३।४६।
- ४१ अधः-शिरसोः पदे । पा०दा३।४७।
- ४२ नमसः । पा०दा३।४०।
- ४३ कृञि वा । पा०१।४।७४।
- ४४ तिरसः । पा०१।४।७२।
- ४५ कस्कादयः । पा०दा३।४८।
- ४६ कोश्च आदेश-सनादि-शासि-वसि-घसां
सः । पा०दा३।५७,५९,६०,५६।
- ४७ नुम्-द्विसर्जनीय-शर्ग्यवाये ।
पा०दा३।५८।
- ४८ स्तोः षणिः । पा०दा३।६१।
- ४९ णेः अस्विदि-स्वदि-सहः ।
पा०दा३।६१,६२।
- ५० प्रादीनां सु-सू-सो-स्तु-स्तुभ-स्था-सेनि-
सेध-सिच-सञ्ज-स्वञ्जाम् पा०दा३।६५।
- ५१ सदः अप्रतेः । पा०दा३।६६।
- ५२ स्तम्भेः । पा०दा३।६७।
- ५३ अवात् औजित्य-आलम्बन-अविद्वर्षेषु ।
पा०दा३।६८।
- ५४ वेश्च स्वनः भोजने । पा०दा३।६९।
- ५५ नि-परेश्च सेव-सिबु-सह-सुटाम्
पा०दा३।७०।
- ५६ स्तु-स्वञ्ज-सिवादीनां वा अङ्गव्यवाये ।
पा०दा३।७०,७१।
- ५७ स्वादीनाम् । पा०दा३।६३।
- ५८ स्थादीनां द्विरुक्तेन तस्य च ।
पा०दा३।६४।
- ५९ नेः सय-सितयोः । पा०दा३।७०।
- ६० वि-परेः पा०दा३।७०।
- ६१ निर्-अभि-अनोश्च स्यन्दः अप्राणिनि
वा । पा०दा३।७२।
- ६२ वेः स्कन्दः अत-तवतोः ।
पा०दा३।७३।
- ६३ परेः । पा०दा३।७४।
- ६४ स्फुरि-स्फुलोः निर्-नि-विभ्यः ।
पा०दा३।७६।
- ६५ वेः स्कन्नः षः । पा०दा३।७७।
- ६६ समासे अङ्गुलेः सङ्गः । पा०दा३।८०।
- ६७ भीरोः स्थानम् । पा०दा३।८१।
- ६८ अग्नेः स्तुत् । पा०दा३।८२।
- ६९ ईतः सोमः । पा०दा३।८२+वा०१।
- ७० ज्योतिर्-आयुषश्च स्तोमः ।
पा०दा३।८३,८२।

- ७१ मातृ-पितृभ्यां स्वसा । पा०दा३।८४। ६८ सदि-स्वस्त्रेः लिटि ।
- ७२ अलुकि वा । पा०दा३।८५। पा०दा३।१८+वा०१।
- ७३ अभिनिष्ठातो वर्णे । पा०दा३।८६। ६९ धातोः सीलुङोश्च घः ङः ।
- ७४ प्रादुः-प्रादिभ्यः यच्चि अस्तेः । पा०दा३।७८।
- पा०दा३।८७। १०० वेष्टः । पा०दा३।७६।
- ७५ सु-वि-निर्-दुर्भ्यः सम-सूति-सुपाम् । १०१ र-पात् नः णः एकपदे । पा०दा४।१।
- पा०दा३।८८। १०२ पूर्वपदात् नास्ति । पा०दा४।३।
- ७६ नदीष्णः कुशले । पा०दा३।८९। १०३ वनं पुरगा-मिश्रका-सिधका-
शारिका-अग्ने-कोटरात् ।
- ७७ नेः स्नातः पा०दा३।९०। पा०दा४।४।
- ७८ प्रतेः सूत्रे । पा०दा३।९०। पा०दा४।४।
- ७९ प्रष्ठः अग्रगामी । पा०दा३।९२। १०४ प्र-निर्-अन्तः-शर-इक्षु-प्लक्ष-आम्र-
कार्ण्य-पीयूषा-खदिरात् ।
- ८० वेः स्त्रः नास्ति । पा०दा३।९३,९४। पा०दा४।५।
- ८१ गवि-युधेः स्थिरः । पा०दा३।९५। १०५ वा औषधिवृक्षात् द्वि-त्र्यचः
अनिरिकादेः पा०दा४।६+भा०।
- ८२ कपेः स्थलस्य । पा०दा३।९६। १०६ अह्नः अतः । पा०दा४।७।
- ८३ वि-कु-शमि-परिभ्यः । पा०दा३।९६। १०७ त्रि-चतुर्भ्यां हायनो वयसि ।
पा०दा४।१२७ भा०। काशिका
- ८४ अम्ब-आम्ब-गो-भूमि-द्वि-त्रि-कु-शेकु-
शङ्कु-अङ्कु-मञ्जि-पुञ्जि-वर्हिस्-दिवि-
अग्निभ्यः स्थः । पा०दा३।९७। ४।१२७।
- ८५ एति संज्ञायाम् अकोः । पा०दा३।९९। १०८ वाहनं वाह्यात् । पा०दा४।८।
- ८६ नक्षत्रात् इतो वा । पा०दा३।१००। १०९ पानं देशे । पा०दा४।९।
- ८७ ह्रस्वात् सुपः ति । पा०दा३।१०१। ११० वा भाव-करणयोः । पा०दा४।१०।
- ८८ निसः तपि सकृत् । पा०दा३।१०२। १११ गिरिनद्यादीनाम् ।
पा०दा४।१० वा०१।
- ८९ सुषामादयः । पा०दा३।९८। ११२ समस्तान्त-समीपयोः अयुवादीनाम् ।
पा०दा४।११ वा०१,३।
- ९० न आदि-अन्तयोः । पा०दा३।१११। ११३ कुसत्-एकाचः । पा०दा४।१२,१३।
- ९१ सात् । पा०दा३।१११। ११४ प्रादि-अन्तरः अदुरः णः ।
पा०दा४।१४। पा०दा४।६५ वा०१।
- ९२ सिचः यङि । पा०दा३।११२। पा०दा४।६० वा०७।
- ९३ सिधः गतौ । पा०दा३।११३। ११५ हितु-मीना-आनि ।
पा०दा४।१५,१६।
- ९४ नि-प्रतेः स्तब्धः । पा०दा३।११४।
- ९५ सोढः । पा०दा३।११५।
- ९६ प्रादिभ्यः स्तम्भु-सिबु-सहां चङि ।
पा०दा३।११६+वा०१।
- ९७ सोः स्य-सन्नोः । पा०दा३।११७।

- ११६ नेः गद-नद-पत-पद-दा-धा-मा-त्रा-
दिह-वह-शम-हन-या-सा-द्रा-प्सा-चि-
दपिषु । पा०दा४।१७।
- ११७ अक-खादौ अषान्ते पाठे वा ।
पा०दा४।१८।
- ११८ अनःअन्ते च । पा०दा४।१९,२० ।
- ११९ हनः । पा०दा४।२१।
- १२० व्-मोः वा । पा०दा४।२३।
- १२१ अन्तरः अयनस्य च अदेशे ।
पा०दा४।२४,२५।
- १२२ सुपि अचः । पा०दा४।२६।
- १२३ निर्विण्णः । पा०दा४।२६ वा०१।
- १२४ णेर्वा । पा०दा४।३०।
- १२५ हलदिः इव्उपान्तात् ।
पा०दा४।३१।
- १२६ नुमिइच्-आदेर्हलः । पा०दा४।३२।
- १२७ वा निक्ष-निस-निन्दाम् ।
पा०दा४।३३।
- १२८ न भा-भू-पूञ्-कमि-गमि-प्यायी-
वेपाम् । पा०दा४।३४+वा०१।
- १२९ षः पदे । पा०दा४।३५।
- १३० नशेःष्-कः । पा०दा४।३६+वा०१।
- १३१ अन्ते । पा०दा४।३७।
- १३२ चु-टु-तु-ल-शर्व्यवाये ।
पा०दा४।२।
- १३३ सुपा अनाङ्ग-मयेन । पा०दा४।३८।
पा०दा४।२। पा०दा४।३८ भा०।
- १३४ घाहः । पा०दा४।२२। पा०दा४।२।
वा०४,५।
- १३५ क्षुभ्नादीनाम् । पा०दा४।३९।
- १३६ स्-तोः श्-चु-ष्-टुभ्यां तौ ।
पा०दा४।४०,४१।
- १३७ न टोः अनवति-नगर्योः आदेः ।
पा०दा४।४२+भा०।
- १३८ तोः षि । पा०दा४।४३।
- १३९ शात् । पा०दा४।४४।
- १४० यरः जमि जम् वा ।
पा०दा४।४५।
- १४१ अचः र-हात् द्वे । पा०दा४।४६।
- १४२ अनचि । पा०दा४।४७।
- १४३ यणः मयः । पा०दा४।४७ वा०१।
- १४४ शरः खयः । पा०दा४।४७ वा०२।
- १४५ न आक्रोशे पुत्रस्य आदिनि तत्परे
च । पा०दा४।४८+वा०१।
- १४६ शरः अचि रात् । पा०दा४।४९।
- १४७ दीर्घात् । पा०दा४।५२।
- १४८ खरि चर् झलः । पा०दा४।५५।
- १४९ वा विरामे । पा०दा४।५६।
- १५० अणः अनुनासिकः । पा०दा४।५७।
- १५१ अनुस्वारस्य ययि यम् ।
पा०दा४।५८।
- १५२ पदादौ वा । पा०दा४।५९।
- १५३ तोः लि । पा०दा४।६०।
- १५४ उदः स्था-स्तम्भोः तः ।
पा०दा४।६१।
- १५५ हलः झरां झरि सस्थाने लोपो
वा । पा०दा४।६५।
- १५६ झयः हो झय् । पा०दा४।६२।
- १५७ शः छः अमि । पा०दा४।६३।
- १५८ चयः शरि द्वितीयः ।
पा०दा४।४८ वा०३।

[षष्ठस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

॥ चान्द्रे व्याकरणे सूत्रस्य षष्ठः अध्यायः समाप्तः ॥

[आचार्यचन्द्रगोमिकृतं चान्द्रं व्याकरणं मूलसूत्रपाठतः समाप्तम्]

अकारादिक्रमेण चान्द्रव्याकरणसूत्रनिर्दिष्टगणानां

तत्तत्सूत्रनिर्देशपूर्वकं सूचिः ।

- | | |
|------------------------------|----------------------------|
| १ अक्षद्युतादि ३।४।१८। | २८ ऊषादि ४।२।१११। |
| २ अङ्गल्यादि ४।३।८५। | २९ ऋगयनादि ३।३।४५। |
| ३ अजादि २।३।१५। | ३० ऋतुआदि ४।१।१२४। |
| ४ अजिरादि ५।२।१३३। | ३१ ऐपुकारिआदि ३।१।६३। |
| ५ अङ्गनादि ५।२।१३२। | ३२ कच्छादि ३।२।४८। |
| ६ अदादि (धातुगण) १।१।८३। | ३३ कणादि (धातुगण) ६।१।६४। |
| ७ अध्यादि २।१।५१। | ३४ कण्डूआदि (,,) १।१।३६। |
| ८ अध्यात्मादि ३।३।२६। | ३५ कत्त्रिआदि ३।२।५। |
| ९ अनुशक्तिकादि ६।१।३०। | ३६ कथादि ३।४।१०४। |
| १० अर्घर्चादि २।२।८३। | ३७ कपिरिकादि ६।३।४६। |
| ११ अर्शस्-आदि ४।२।१४७। | ३८ कम्बोजादि २।४।१०४। |
| १२ अश्वादि २।४।३। | ३९ कर्णादि ४।२।२५। |
| ४।१।५२। | ४० कलापिन्आदि ५।३।१४०। |
| १३ अश्वादि २।४।३१। | ४१ कल्याणीआदि २।४।५६। |
| १४ अहर् (अहन्)-आदि ६।३।१०२। | ४२ कस्कादि ६।४।४५। |
| १५ आकर्षादि ४।२।६८। | ४३ काशीआदि ३।२।३३। |
| १६ आदिआदि ४।३।६। | ४४ किसरादि ३।४।५५। |
| १७ इरिकादि ६।४।१०५। | ४५ कुञ्जादि २।४।३३। |
| १८ इष्टादि ४।२।६४। | ४६ कुटआदि (धातुगण) ६।२।१३। |
| १९ उक्थादि ३।१।३८। | ४७ कुम्भपदीआदि ४।४।१२८। |
| २० उण् (' उण् ' प्रत्यय) आदि | ४८ कुरुआदि २।४।८४। |
| १।३।१। | ४९ कुलालादि ३।३।८४। |
| २१ उत्थापनादि ४।१।१३२। | ५० कृपणादि ६।३।४१। |
| २२ उत्सादि २।४।७। | ५१ कृषिआदि ४।२।११६। |
| २३ उत्सङ्गादि ३।४।१४। | ५२ कृआदि (धातुगण) १।४।१००। |
| २४ उद्रातृआदि ४।१।१४५। | ५।४।१७२। |
| २५ उपक २।४।११४। | ५३ केशादि ४।२।११३। |
| २६ उरस्-आदि ४।४।१३६। | ५४ कोटरादि ५।२।१३२। |
| २७ ऊरीआदि २।२।२५। | ५५ क्रमादि ३।१।४०। |

५६ क्रीआदि (घ तुगण) ११११०१।	८५ तालादि ३३११०६।
५७ क्रोडादि २३१६७।	८६ तिकादि २४।८६।
५८ क्रौडिआदि २३।८४।	८७ तिककितवादि २४।११५।
५९ क्षिपकादि ६।१।७६।	८८ तिष्ठद्गुआदि २।२।१०।
६० क्षुम्नादि ६।४।१३५।	८९ तुदादि (घातुगण) १।१।६२।
६१ खलादि ३।१।५७।	९० तौल्वल्यादि २।४।१२२।
६२ गमादि (घातुगण) ५।३।४६।	९१ त्यदादि १।२।५१।
६३ गर्गादि २।४।२४।	२।४।८६।
६४ गवाश्चादि २।२।५७।	३।२।२८।
६५ गहादि ३।२।५८।	५।४।६८।
६६ गिरिनद्यादि ६।४।१११।	९२ दण्डादि ४।१।७६।
६७ गृष्ट्यादि २।४।७७।	९३ दधिपयस्आदि २।२।६६।
६८ गोआदि ४।१।२।	९४ दामनि-आदि ४।३।६२।
६९ गोणीआदि २।२।८७।	९५ दिवादि (घातुगण) १।१।८७।
७० गोपवनादि २।४।११६।	९६ दिशुआदि ३।३।१७।
७१ गोसदादि ४।२।१५६।	९७ दृढादि ४।१।१४०।
७२ गौरादि २।३।३७।	९८ देवादि ४।४।४०।
७३ ग्रहादि (घातुगण) १।१।१४०।	९९ देवव्रतादि ४।१।१०६।
५।४।१२६।	१०० देवासुरादि ३।३।५७।
७४ चत्वारिंशत्आदि ५।२।५४।	३।३।८६।
७५ चुरादि (घातुगण) १।१।४५।	१०१ द्युतादि १।१।७३।
७६ चूडादि ४।१।१३०।	१।४।१४३।
७७ छत्रादि ३।४।६३।	१०२ द्वारादि ६।१।१५।
७८ छेदादि ४।१।७५।	१०३ द्विदण्डिआदि ४।४।११७।
७९ जक्षादि (घातुगण) १।४।५।	१०४ धूमादि ३।२।४१।
८० ज्योत्स्नादि ४।२।१०७।	१०५ नखादि ५।२।६५।
८१ ज्वलादि (घातुगण) १।१।१४६।	१०६ नडादि २।४।३५।
८२ डतरादि (प्रत्यय) २।१।२५।	१०७ नद्यादि ३।२।६।
८३ तनादि (घातुगण) १।१।६४।	१०८ नन्दादि (घातुगण) १।१।१४०।
१।१।६४।	१०९ नवयज्ञादि ४।२।१२४।
५।३।३५।	११० निकटादि ३।४।७४।
८४ तारकादि ४।२।३७।	१११ निजादि (घातुगण) ६।२।१२७।

११२ नौ-आदि २।१।८०।	१।३।४६।
४।२।११८।	१।३।५१।
११३ न्यङ्कुआदि ६।१।८४।	१।३।५८।
११४ पक्षादि ५।२।१०३।	१।३।७१।
११५ पत्यादि ६।३।१०२।	१।३।८७।
११६ परदारादि ३।४।४५।	१।४।७२।
११७ परिमुखादि ३।३।२३।	१।४।८६।
११८ पर्पादि ३।४।८।	१।४।११७।
११९ पशुआदि ४।३।६३।	१।४।१२६।
१२० पाण्यादि १।२।१४।	२।२।२४।
१२१ पात्रादि २।२।८०।	४।४।७१।
१२२ पामन्-आदि ४।२।१०४।	४।४।११०।
१२३ पारस्करादि ५।१।१४२।	५।१।६३।
१२४ पाशादि ३।१।५६।	५।२।११३।
१२५ पिच्छादि ४।२।१०३।	५।२।१४१।
१२६ पील्वादि ४।२।२४।	५।४।२१।
१२७ पुण्याहवाचनादि ४।१।१३४।	५।४।२३।
१२८ पुष्आदि (धातुगण) १।१।७३।	६।१।५६।
१२९ पुष्करादि ४।२।१३२।	६।२।७५।
१३० पूआदि (धातुगण) ६।१।१०८।	६।२।६७।
१३१ पूर्वादि २।१।१५।	६।३।४२।
१३२ पृथु ४।१।१३६।	६।४।५०।
१३३ पृषोदरादि ५।२।१२७।	६।४।७४।
१३४ पिङ्गाक्षिपुत्रादि ३।१।२४।	६।४।६६।
१३५ पैलादि २।४।१२१।	६।४।११४।
१३६ प्रादि १।१।१०६।	१३७ प्रज्ञादि ४।४।२२।
१।१।१४२।	१३८ प्रतिजनादि ३।४।१०१।
१।१।१४४।	१३९ प्रभूतादि ३।४।४७।
१।१।१५०।	१४० प्रियाआदि ५।२।२६।
१।२।२।	१४१ फण् आदि (धातुगण) ५।३।१२१।
१।३।११।	१४२ बाहीकादि ३।२।२०।
१।३।१४।	१४३ बाहुआदि २।४।२०।

१४४ विदादि २।४।२२।	१७३ लोमन् आदि ४।२।१०४।
१४५ विल्वकीयादि ५।३।१५७।	१७४ लोहितादि १।१।३१।
१४६ ब्राह्मणादि ४।१।१४१।	१७५ लोहितादि २।३।२०।
१४७ भर्गादि २।४।१०६।	१७६ वंशादि ४।१।७२।
१४८ भस्त्रादि ३।४।१५।	१७७ वाकिनादि २।४।६१।
१४९ भिक्षादि ३।१।४४।	१७८ विशत्यादि ४।२।५२।
१५० भिदादि (धातुगण) १।३।८६।	१७९ विनयादि ४।४।१७।
१५१ भृशादि १।१। ३०।	१८० विमुक्तादि ४।२।१५५।
१५२ भौरिकिआदि ३।१।६३।	१८१ वृत्आदि (धातुगण) १।४।१४४।
१५३ भ्रुकुंसादि ५।२।७२।	५।४।१२३।
१५४ मनोज्ञादि ४।१।१४६।	१८२ वेणुकादि ३।२।६१।
१५५ महानाम्नीआदि ४।१।१०७।	१८३ वेतनादि ३।४।४०।
१५६ महिषीआदि ३।४।५०।	१८४ व्यासादि २।४।२१।
१५७ 'मा' शब्दादि ३।४।४८।	१८५ व्युष्टादि ४।१।११५।
१५८ मुचादि (धातुगण) ५।४।११।	१८६ व्रीहिआदि ४।२।११६।
१५९ यजादि (धातुगण) ५।१।१४।	१८७ शकादि (धातुगण) ५।४।१३५।
१६० यवादि ६।३।३८।	१८८ शकन्धुआदि ५।१।६८।
१६१ यस्कादि २।४।११०।	१८९ शकलादि ३।२।२१।
१६२ यावादि ४।४।१२।	१९० शण्डिकादि ३।३।६०।
१६३ युवन्आदि ४।१।१४६।	१९१ शतादि ४।२।५३।
६।४।११२।	१९२ शब्दादि १।१।३६।
१६४ यूपादि ४।१।३।	१९३ शमादि (धातुगण) ६।१।१०२।
१६५ रज्जुआदि २।३।७६।	१९४ शरादि ३।३।११४।
१६६ रघादि (धातुगण) ५।४।१०८।	५।२।१३४।
१६७ राजन्यादि ३।१।६२।	१९५ शरद्आदि ४।४।६०।
१६८ रुदादि (धातुगण) ५।४।१७३।	१९६ शर्करादि ४।३।८४।
६।२।३७।	१९७ शाखादि ४।३।८१।
१६९ रुधादि (धातुगण) १।१।६३।	१९८ शिखादि ४।२।१३४।
१७० रेवत्यादि २।४।७८।	१९९ शिवादि २।४।४१।
१७१ रैवतिक ३।३।६६।	२०० शिशुकन्दादि ३।३।५६।
१७२ लू आदि (धातुगण) ६।३।७६।	२०१ शुण्डिकादि ३।३।४८।
	२०२ शुभ्रादि २।४।५३।

२०३ शोणादि २।३।४१।	२१४ सिव्आदि (घातुगण) ६।४।५६।
२०४ शौनकादि ३।३।७२।	२१५ सुआदि (घातुगण) १।१।६५।
२०५ षष्टि आदि ४।२।५४।	६।४।५७।
२०६ संतापादि ४।१।१२०।	६।४।५०।
२०७ संपद्आदि १।३।६३।	२१६ सुखादि । १।१।३५।
२०८ संध्यादि ३।२।७६।	४।२।१२८।
२०९ समानादि २।३।३३।	२१७ सुषामन्आदि ६।४।८६।
२१० सर्वादि २।१।६।	२१८ सुस्नातादि. ३।४।४६।
२।१।७२।	२१९ स्तोकादि ५।२।२।
४।३।७।	२२० स्थाआदि (घातुगण) ६।४।५८।
४।३।६०।	६।४।५०।
५।२।४१।	२२१ स्थूलादि ४।३।२७।
५।२।१०८।	२२२ स्वर्गादि ४।१।१३३।
६।३।६।	२२३ स्वागतादि ६।१।१८।
२११ साक्षात्आदि २।२।३६।	२२४ हरितादि २।४।३६।
२१२ सिध्मादि ४।२।१००।	२२५ हस्तिन् आदि ४।४।१२७।
२१३ सिन्धुआदि ३।३।६१।	२२६ हिमादि ४।२।१३६।

[इति चान्द्रसूत्रोक्तगणसूचिः समाप्ता]

[स्वर-व्यञ्जनानां स्थान-करण-प्रयत्नपरिचयः^१]

स्थान-करण-प्रयत्नेभ्यो वर्णा जायन्ते ।

(१) तत्र स्थानम् —

कण्ठः अ-कु-ह-विसर्जनीयानाम् ।
कण्ठ-तालुकम् इत्-एत्-ऐताम् ।
कण्ठ-ओष्ठम् उत्-ओत्-औताम् ।
मूर्धा ऋ-टु-र-षाणाम् ।
दन्ता लृ-तु-ल-सानाम् ।
नासिका अनुस्वारस्य ।
स्वस्थान-अनुनासिका

ङ-ञ-ण-न-माः ।

तालु इ-चु-य-शानाम् ।
ओष्ठौ उ-पु-उपध्मानीयानाम् ।
दन्त-ओष्ठम् वकारस्य ।
जिह्वामूलम् जिह्वामूलीयस्य ॥

(२) करणम् —

जिह्वाग्रम् दन्त्यानाम् ।
जिह्वोपाग्रम् शिरस्यानाम् ।
जिह्वामध्यम् तालव्यानाम् ।
शेषाः स्वस्थानकरणाः ॥

(३) प्रयत्नः द्विविधः-आभ्यन्तरः बाह्य-

श्च । तत्र आभ्यन्तरः —
संवृतत्वम् विवृतत्वम् स्पृष्टत्वम् ।
ईषत्स्पृष्टत्वं च ।
संवृतत्वम् अकारस्य ।
विवृतत्वम् स्वराणाम् ऊष्मणां च ।
तेभ्यः विवृततरत्वम् एत्-ओतोः ।
ताभ्याम् ऐत्-औतोः । ताभ्यामपि
आकारस्य ।

स्पृष्टत्वम् स्पर्शानाम् ।
ईषत्स्पृष्टत्वम् अन्तःस्थानाम् ।

बाह्यः —

वर्गाणां प्रथम-द्वितीयाः श-ष-स-

विसर्जनीय - जिह्वामूलीय - उपध्मानीयाश्च
विवृतकण्ठाः श्वासानुप्रदानाः अघोषाश्च ।

प्रथम-तृतीय-पञ्चमाः अन्तःस्थाश्च
अल्पप्राणाः ।

इतरे महाप्राणाः ।

तृतीय-चतुर्थ-पञ्चमाः सानुस्वार-
अन्तःस्थ-हकाराः संवृतकण्ठाः नादानु-
प्रदानाः घोषवन्तः ।

द्वितीय-चतुर्थाः श-ष-स-हाश्च
ऊष्माणः ।

कादयः मावसानाः स्पर्शाः ।

अन्तःस्था य-र-ल-वा इति एष बाह्य-
प्रयत्नः ।

अत्र च अवर्णः ह्रस्वः दीर्घः प्लुत
इति त्रिधा भिन्नः ।

प्रत्येकम् उदात्त-अनुदात्त-स्वरितभेदेन
सानुनासिक-निरनुनासिकभेदेन च अष्टा-
दशधा भवति ।

एवम् इवर्ण-उवर्णौ ऋवर्णश्च ।

लृवर्णस्य दीर्घा न सन्ति तेन स
द्वादशधा भवति ।

सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वाभावात् तानि अपि
द्वादशधा ।

एकमात्रिकः ह्रस्वः ।

द्विमात्रिकः दीर्घः ।

त्रिमात्रिकः प्लुतः ।

उच्चैः उदात्तः ।

नीचैः अनुदात्तः ।

समाहारः स्वरितः ।

स्वस्थानानुनासिकः निरनुनासिकश्च ।

अन्तःस्थाः द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः

सानुनासिका निरनुनासिकाश्च ।

[इति चन्द्रगोमिकृतं वर्णसूत्रं समाप्तम्]

१ एतद्विषयः "इकः असस्थाने ह्रस्व इव असमासे" ५।२।१३२। इत्यस्मिन् सूत्रे प्रयुक्ते 'सस्थान' शब्दे ।

॥ नमो मञ्जुघोषाय ॥

आचार्यश्रीचन्द्रगोमिविरचितम् उणादिप्रकरणम्

- उणादयः । १।३।१।
- १ कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साधि-अशूभ्यः
उण् ।
कारुः शिल्पी ।
वायुः समीरणः ।
पायुः अपानम् ।
जायुः औषधम् ।
मायुः पित्तम् ।
गोमायुः सृगालः ।
स्वादुः मधुरम् ।
साधुः परोपकारी ।
आशु शीघ्रम् धान्यनाम च ।
- २ वृ-सनि-जनि-चरि-चटि-तलिभ्यः वृण् ।
दारु काष्ठम् ।
सानुः गिरिप्रदेशः ।
जानु जङ्घास्थानम् ।
चारु शोभनम् ।
चाटुः स्फुटवादी ।
तालुः वदनैकदेशः ।
- ३ किम्-जराभ्याम् शृ-इणः ।
किशारुः शारः ।
जरायुः गर्भवेष्टनम् ।
- ४ कृकात् वचः कश्च ।
कृकवाकुः कुक्कुटः कृकलासश्च ।
- ५ भृ-मृ-तृ-चरि-तनि-मस्जि-शीभ्यः उः ।
भरुः भर्ता ।
मरुः निर्जलो देवः ।
तरुः पादपः ।
- चरुः हविष्यान्नम् ।
तनुः शरीरम् ।
मद्गुः पक्षिविशेषः ।
शयुः अजगरः ।
- ६ अणः ।
अणु सूक्ष्मम् ।
- ७ धान्ये नित् ।
अणुः व्रीहिः ।
- ८ पटि-असि-वसि-त्रपि-हनि-मनि-इन्दि-
कन्दि-बन्धिभ्यः ।
पटुः स्फुटवादी ।
असुः प्राणः ।
वसु द्रव्यम् ।
त्रपु सीसम् ।
हनुः वदनैकदेशः ।
मनुः प्रजापतिः ।
इन्दुः चन्द्रमाः ।
कन्दुः पाकस्थानम् ।
वन्धुः स्वजनः ।
- ९ वहि-पंसेः दीर्घश्च ।
वाहुः भुजः ।
पांसुः रेणुः ।
- १० नमि-मनि-जनां नाकि-ध-तश्च ।
नाकुः बल्मीकम् ।
मधु क्षौद्रम् ।
जतु लाक्षा ।
- ११ वलि-फलेः गुक् च ।
वल्गुः मनोज्ञः ।

- फल्गुः असारः ।
 १२ नेः अञ्चेः ।
 न्यङ्कुः मृगः ।
 १३ इषि-भिदि-व्यधि-गृधि-धृषि-
 पृ-पृथि-मृदेः कुः ।
 इषुः शरः ।
 भिदुः वज्रम् ।
 विधुः अग्निः ।
 गृधुः कामः ।
 धृषुः प्रगल्भः ।
 पुरुः समुद्रः ।
 पृथुः विस्तीर्णः ।
 मृदुः मर्दितः ।
 १४ शशि-रपयोः अतः इत् च ।
 शिशुः बालः ।
 रिपुः शत्रुः ।
 १५ कृ-प्रोः उत् च ।
 कुरुः राजा ।
 गुरुः आचार्यः ।
 १६ अर्तेः ऊत् च ।
 ऊरुः सन्धिः ।
 उरुः महान् ।
 १७ स्यन्दः यणः इक् धश्च ।
 सिन्धुः नदी ।
 १८ भ्रस्जि-स्पशेः सलोपश्च ।
 भृगुः प्रपातः ।
 पशुः चतुष्पादः ।
 १९ सृजेः असुम् च ।
 रज्जुः द्वित्रिवृत्ता ।
 २० आखनि-वंहेः नलोपश्च ।
 आखुः मूषिकः ।
 बहु भूरि ।
 २१ शङ्कुआदयः ।
 शङ्कुः चिह्नम् ।
 तर्कुः कर्तनद्रव्यम् ।
 शरुः आयुधम् ।
 त्सरुः दर्पणदण्डः ।
 धनुः शस्त्रम् ।
 मयुः किल्लरः ।
 अपष्ठुः बालः ।
 सुष्ठु शोभनम् ।
 दुष्ठुः दुर्विनीतः ।
 हरिद्रुः वृक्षजातिः ।
 मितद्रुः समुद्रः ।
 मित्रयुः मित्रवत्सलः ।
 शतद्रुः नदी ।
 देवयुः धार्मिकः ।
 कुमारयुः कुमारघाती ।
 मृगयुः व्याधः ।
 जटायुः पक्षी ।
 पटायुः वस्त्रम् ।
 २२ सि-तनि-गमि-मसि-सचि-अवि-धाञ्-
 क्रुशिभ्यः तुन् ।
 सेतुः जलबन्धः ।
 तन्तुः सूत्रम् ।
 गन्तुः पथिकः ।
 आगन्तुः अभ्यागतः ।
 मस्तु दध्यवयवः ।
 सक्तुः यवविकारः ।
 ओतुः विडालः ।
 धातुः लोहादिः ।
 क्रोष्टुः सृगालः ।
 २३ वसेः णित् वा ।
 वास्तुः गृहभूमिः ।
 वस्तु पदार्थः ।

- २४ कसि-मनि-जनि-हिभ्यः तुः ।
 कन्तुः कन्दर्पः ।
 मन्तुः प्रजापतिः ।
 जन्तुः प्राणी ।
 हेतुः कारणम् ।
- २५ ऋतुआदयः ।
 ऋतुः हेमन्तादिः ।
 क्रतुः ससोमको यज्ञः ।
 केतुः ध्वजः ।
 पीतुः सूर्यः ।
 गातुः उद्गाता ।
 भातुः भास्करः ।
 यातुः कामुकः ।
 एधतुः पुरुषः ।
 वहतुः अनड्वान् ।
 जीवातुः औषधम् ।
 अप्तुः याज्ञिकः ।
- २६ स्तनि-हृषि-पुषि-गदि-मदिभ्यः णेः
 इत्नुच् ।
 स्तनयित्नुः मेघः ।
 हर्षयित्नुः सुवर्णम् ।
 पोषयित्नुः कोकिलः ।
 गदयित्नुः वावदूकः ।
 मदायित्नुः सुरा ।
- २७ ह-क्रोः एणुः ।
 हरेणुः गन्धद्रव्यम् ।
 करेणुः हस्ती ।
- २८ दा-भान्यां नुः ।
 दानुः दाता ।
 भानुः भास्करः ।
- २९ दी-वृत्रोः नित् ।
 रेणुः वृत्रिः ।

- वर्णुः नदः ।
- ३० सू-विषिभ्यां कित् ।
 सूनुः पुत्रः ।
 विष्णुः नारायणः ।
- ३१ धेनुआदयः ।
 धेनुः नवप्रसूता गौः ।
 जह्नुः ऋषिः ।
 स्थाणुः महादेवः ।
 वेणुः वंशः ।
 वग्नूः वावदूकः ।
- ३२ क्षिपि-नदिभ्यां चनुङ् ।
 क्षिपणुः वायुः ।
 नदनुः मेघः ।
- ३३ सर्तेः अयुः ।
 सरयुः नदी ।
- ३४ जनि-मनि-दसि-भुजेः क्युस् ।
 जन्युः प्राणी ।
 मन्युः क्रोधः ।
 दस्युः चौरः ।
 भुज्युः ओदनः ।
- ३५ ही-इषि-कृशिभ्यः कुक् सुग् आनुक् ।
 हीकुः अधृष्टः ।
 ल्लीकुः स एव ।
 इक्षुः खाद्यविशेषः ।
 कृशानुः वह्निः ।
- ३६ मृडः त्युक् ।
 मृत्युः प्राणवियोगः ।
- ३७ शीडः धुक् ।
 शीधुः सुराविशेषः ।
- ३८ शुन्-अशुचौ पुरः ।
 पर्शुः पाश्वरिस्थि ।
 परशुः कुठारः ।

३६ पी-म्योः रुः ।

पेरुः भास्करः ।

मेरुः पर्वतराजः ।

सुमेरुः स एव ।

४० जत्रुआदयः ।

जत्रु ग्रीवाप्रदेशः ।

शत्रुः अमित्रः ।

रुरुः मृगः ।

श्मश्रु मुखरोम ।

खरुः दर्पः ।

शिग्रुः शोभाञ्जनकः ।

४१ योः आगूच् ।

यवागूः पेया ।

४२ भ्रमेः डूः ।

भ्रूः नेत्रोपरिस्थानम् ।

४३ चमि-तनि-बधिभ्यः ऊः ।

चमूः सेना ।

तनूः शरीरम् ।

वधूः पुत्रभार्या ।

४४ कषेः छश्च ।

कच्छूः पामा ।

४५ तिरः डुट् च ।

तर्दुः परिवेषणभाण्डम् ।

४६ यालोपः दरिद्रः ।

दद्रूः कुष्ठविकारः ।

४७ जम्बूआदयः ।

जम्बूः वृक्षजातिः ।

दृन्भूः सर्पजातिः ।

दिधिषुः रण्डिका ।

पुनर्भूः पुनरुदिका ।

कर्कन्धूः बदरीफलम् ।

आडूः जलतरणी ।

अलाबूः तुम्बीफलम् ।

कषेरूः भक्षणद्रव्यम् ।

कासूः विकलवाक् ।

पादूः पादधारणी ।

सर्जूः विद्युत् ।

खर्जूः वृक्षजातिः ।

मर्जूः मलविशुद्धभाण्डम् ।

नृतूः दीर्घकृमिः ।

शृधूः यज्ञः ।

कर्षूः शुष्कगोमयाग्निः ।

कम्बूः परद्रव्यापहारी ।

रतूः नदी ।

अन्दूः भूषणजातिः ।

कफलूः श्लेष्मातकः ।

४८ दिवेः ऋन् ।

देवा पतिभ्राता ।

४९ नियो डित् ।

ना पुरुषः ।

५० पितृआदयः ।

पिता जनकः ।

माता जननी ।

दुहिता आत्मजा ।

ननान्दा पतिभगिनी ।

भ्राता सोदर्यः ।

जामाता दुहितृपतिः ।

स्वसा भगिनी ।

नप्ता पौत्रः ।

नेष्टा ऋत्विक् ।

त्वष्टा आदित्यः ।

क्षत्ता प्रतीहारः ।

होता विष्णुः ।

पोता बालः ।

प्रशास्ता उपाध्यायः ।

५१ रवि-कवि-दरि-शरि-बलि-बल्लि-
ध्वनि-अवि-हरि-ग्रन्थिभ्यः इः ।

रविः सूर्यः ।

कविः काव्यकर्ता ।

दरिः प्रपातः ।

शरिः शारः ।

बलिः असुरेन्द्रः ।

बल्लिः शाखा ।

ध्वनिः शब्दः ।

अविः मेषः ।

हरिः विष्णुः ।

ग्रन्थिः पर्वसन्धिः ।

५२ इगुपान्तात् किः ।

क्षिपिः योद्धा ।

शुचिः विविक्तः ।

रुचिः अभिलाषः ।

कृषिः कर्षणम् ।

५३ क्रमः अतः इत् च ।

क्रिमिः क्षुद्रजन्तुः ।

५४ मनेः उत् च ।

मुनिः ऋषिः ।

५५ अंहि-कम्पोः नलोपश्च ।

अहिः सर्पः ।

कपिः वानरः ।

५६ शृ-वसि-वपि-राजि-वृ-हनि-नभेः इव् ।

शारिः शारिका ।

वासिः तक्षकभाण्डम् ।

वापिः पुष्करिणी ।

राजिः पङ्क्तिः ।

वारिः सलिलम् ।

घातिः प्रहरणम् ।

नाभिः शरीरावयवः ।

५७ अजि-जनि-अति-घसि-रशि-पणेः इण् ।

आजिः युद्धम् ।

जनिः माता ।

आतिः गमनम् ।

घासिः अग्निः ।

राशिः समूहः ।

पाणिः करः ।

५८ वेचः डिः ।

विः पक्षी ।

५९ नेः ईत् च ।

नीविः मेखला ।

६० सखीआदयः ।

सखा मित्रम् ।

अश्रिः कोटिः ।

प्रहिः कूपः ।

भ्रमिः वायुः ।

कारिः शिल्पी ।

६१ सञ्ज्-असिभ्यां क्थिन् ।

सक्थि ऊरुप्रदेशः ।

अस्थि शरीरावयवः ।

६२ सारेः अथिन् ।

सारथिः रथवाहः ।

६३ अङ्गि-अतिभ्याम् उरि-इथिनौ ।

अङ्गुरिः करावयवः ।

अङ्गुलिः स एव ।

अतिथिः अभ्यागतः ।

- ६४ नी-दलिभ्यां मिः ।
 नेमिः शकटम् ।
 दलिम्ः शक्रः ।
- ६५ ऊर्मि-रश्मि-भूमयः ।
 ऊर्मिः तरङ्गः ।
 रश्मिः प्रभा ।
 भूमिः पृथ्वी ।
- ६६ कुषेः सिक् ।
 कुक्षिः उदरम् ।
- ६७ अशेः नित् ।
 अक्षि नेत्रम् ।
- ६८ मृ-कणिभ्याम् ईचिः ।
 मरीचिः मयूखः
 कणीचिः लता ।
- ६९ रा-शदिभ्यां त्रिप् ।
 रात्रिः क्षया ।
 शक्तिः कुञ्जरः ।
- ७० भू-सूङ्-अदिभ्यः क्रिन् ।
 भूरि प्रभूतम् ।
 सूरिः आदित्यः ।
 अद्रिः पर्वतः ।
- ७१ शकि-भूभ्याम् उन्ति-अन्तिचौ ।
 शकुन्तिः पक्षी ।
 भवन्तिः कालः ।
- ७२ अर्तेः अत्तिच् ।
 अरत्तिः करः ।
- ७३ अञ्जेः अलिच् ।
 अञ्जलिः करसम्पुटः ।
- ७४ ऋ-तृ-सृ-धृ-धमि-अशि-अवि-वृत्ति-ग्रहेः
 अनिः ।
 अरणिः अग्निकाष्ठम् ।
 तरणिः समुद्रः ।
- सरणिः पन्थाः ।
 धरणिः पृथ्वी ।
 धमनिः गलसिरा ।
 अशनिः वज्रः ।
 अवनिः पृथ्वी ।
 वर्तनिः कर्तनद्रव्यम् ।
 ग्रहणिः वह्निस्थानम् ।
- ७५ क्षिपः कित् ।
 क्षिपणिः वायुः ।
- ७६ शकेः उनिः ।
 शकुनिः पक्षी ।
- ७७ अगेः निः ।
 अग्निः पावकः ।
- ७८ वेणिः ।
 वेणिः केशबन्धः ।
- ७९ श्रु-श्रि-यु-बहः नित् ।
 श्रोणिः कटिप्रदेशः ।
 श्रेणिः पङ्क्तिः ।
 योनिः मार्गः ।
 वह्निः अग्निः ।
- ८० पार्णिआदयः ।
 पार्णिः पादप्रहारः ।
 वृष्णिः शक्रः ।
 घृणिः रश्मिः ।
 शृणिः अङ्कुशः ।
 भूमिः पृथिवी ।
 भूर्णिः वारणः ।
 चूर्णिः ग्रन्थविशेषः ।
 तूर्णिः त्वरितः ।
 जूर्णिः मुसलः ।
- ८१ वृ-दृभ्यां विन् ।
 वर्विः शकटम् ।

- दविः तदूः ।
 ८२ जागुः क्विन् ।
 जागृवी राजा ।
 ८३ छविआदयः ।
 छविः त्वक् ।
 स्थविः तन्तुवायः ।
 किकिः पक्षी ।
 दिविः आदित्यः ।
 दीदिविः स्वर्गः ।
 कृविः घूपः ।
 पृष्विः रजः ।
 जीविः औषधिः ।
 ८४ ह-वसिभ्यां क्वित् ।
 दृतिः चर्म ।
 वस्तिः मुद्राश्रयः ।
 ८५ पातेः डतिः ।
 पतिः स्वामी ।
 पशुपतिः महादेवः ।
 ८६ अमेः अतिः ।
 अमतिः कालः ।
 ८७ वहि-वसिभ्याम् चतिः ।
 वहतिः गौः ।
 वसतिः ग्रामसन्निवेशः ।
 ८८ तन्द्रेः ईः ।
 तन्द्रीः मूर्च्छा ।
 ८९ लक्षेः मुट् च ।
 लक्ष्मीः श्रीः ।
 ९० अवीआदयः ।
 अवीः प्रकाशः ।
 तरीः वैश्वानरः ।
 स्तरीः धूमः ।
 ययीः अश्वः ।
 पपीः आदित्यः ।

- वातप्रमीः वातमृगः ।
 ९१ रातेः डैः ।
 राः सुवर्णम् ।
 ९२ गमेः डोः ।
 गौः पृथिवी ।
 ९३ ग्ला-नुदिभ्यां डौः ।
 ग्लौः चन्द्रमाः ।
 नौः जलतरणी ।
 ९४ तारेः अन् ।
 तारा भगवती ।
 ९५ जेः नुक् च ।
 जिनः भगवान् बुद्धः ।
 ॥ उणादौ प्रथमः पादः समाप्तः ॥
 १ इण्-भी-का-पा-शलि-मचिभ्यः कन् ।
 एकः एकाकी ।
 भेकः मण्डूकः ।
 काकः वायसः ।
 पाकः बालः ।
 शल्कः वल्कलः ।
 मर्कः वायुः ।
 २ यूकाआदयः ।
 यूका ओकणी ।
 अर्भकः शिशुः ।
 पृथुकः बालः ।
 भीकः भीरुः ।
 उदकम् जलम् ।
 घूकः कालः ।
 स्यमीकः वल्मीकः ।
 वीका अन्तर्गलवतिका ।
 ह्रीकः अधृष्टः ।
 ह्लीकः स एव ।
 एवम् अन्येऽपि द्रष्टव्याः ।

३ कृ-दा-धा-रा-अचिभ्यः कः ।

कर्कः वर्णविशेषः ।

कल्कम् पिष्टद्रव्यम् ।

दाकः यज्ञः ।

धाकः ओदनः ।

राका पौर्णमासी ।

अर्कः आदित्यः ।

४ उल्कादयः ।

उल्का ज्वाला ।

उल्मुकम् अर्धदग्धकाष्ठम् ।

सृकः उत्पलम् ।

वृकः पशुजातिः ।

भूकम् छिद्रम् ।

मुष्कः वृषणम् ।

वल्कम् वल्कलम् ।

शुकः पक्षी ।

५ क्षिपि-लङ्घि-लिखि-धमिभ्यः क्वुन् ।

क्षिपकः योद्धा ।

लङ्घकः मालाकारः ।

लिखकः चित्रकरः ।

धमकः कर्मकरः ।

६ हो द्वे च ।

जहकः कालः ।

७ कृषेः अचश्चाद् वा ।

कार्षकः कुटुम्बी ।

कृष्को वा ।

८ वृश्चि-मूषेश्च किकन् ।

वृश्चिकः कीटः ।

मूषिकः आखुः ।

कृषिकः कुटुम्बी ।

९ पणि-पतेः आडः ।

आपणिकः वणिकः ।

आपतिकः बालः ।

१० स्यमः यः ईत् च ।

सीमिकः वृक्षः ।

११ भी-शीभ्याम् आनकः ।

भयानकम् गहनम् ।

शयानकः अजगरः ।

१२ शिङ्घोः आणकः ।

शिङ्घाणकः नासास्रवः ।

१३ कृति-भिदि-लतेः कितकन् ।

कृत्तिका नक्षत्रम् ।

भित्तिका कुड्यम् ।

लत्तिका गोधा ।

१४ इषेः क्तकन् ।

इष्टका पक्वमृत्तिका ।

१५ वलि-पतेः आकः ।

वलाका पक्षिजातिः ।

पताका ध्वजः ।

१६ पिनाकआदयः ।

पिनाकः त्रिशूलः ।

खजाकः पक्षी ।

मनाकः स्तोकः ।

गुवाकः पूगफलम् ।

तडाकः सरः ।

शलाका विद्योपकरणद्रव्यम् ।

नशाकः ताडयिता ।

श्यामाकः तृणजातिः ।

विदाकः ज्ञानम् ।

नमाकः पिच्छिलः ।

भण्डाकम् शुभम् ।

खुराकः मर्मच्छेदनद्रव्यम् ।

१७ क्रियः इकन् ।

क्रयिकः क्रेता ।

१८ अलि-इषः कीकन् ।

अलीकम् मृषा ।

इषीका तूलाश्रयः ।

१९ किङ्किणीकाआदय ।

किङ्किणीका क्षुद्रघण्टिका ।

तिन्तिडीका वृक्षजातिः ।

मृद्वीका द्राक्षा ।

मृडीकः उरगः ।

पतत्रीका पक्षी ।

वर्वरीका तरुणी ।

जर्जरीका छिद्रम् ।

वलीका उदरवर्तिः ।

ऋजीकः ऋजुकः ।

वाह्लीकः जनपदः ।

शर्शरीकः इन्द्रः ।

पर्परीका अश्वशाला ।

दर्दरीकः मर्दलकः ।

शृणीका लाला ।

मणीका मेखला ।

कणीका सूक्ष्मजातिः ।

२० कृञादिभ्यः वृन् ।

करका सुराभाण्डम्

सरकः सुरापानम् ।

नरकः दुःखस्थानम्

भरकः स्वामी ।

वरकः चरणम् ।

कनकम् सुवर्णम् ।

जनकः पिता ।

२१ शलि-मण्डेः ऊकञ् ।

शालूकम् उत्पलादिमूलम् ।

मण्डूकः भेकः ।

२२ उलूक आदयः ।

उलूकः पेचकः ।

मधूकः वृक्षजातिः ।

वलूकः हिंस्रः ।

जलूका प्राणकविशेषः ।

मरुकः मयूरः ।

काणूकः काकः ।

मलूकः कृमिजातिः ।

भालूकः अच्छभल्लः ।

पिचूकः कर्पासः ।

कचूकः शाकजातिः ।

२३ शमेः खः ।

शङ्खः उदकसंभवः ।

२४ मुहेः मूर्च ।

मूर्खः वालः ।

२५ शिखा ।

शिखा दीप्तिः ।

२६ मुदि-ग्रोः गक्-नौ ।

मुद्गः व्रीहिजातिः ।

गर्गः शास्त्रविशेषः ।

२७ पतेः अङ्गञ् ।

पतङ्गः शलभः ।

२८ गमेः गन् ।

गङ्गा जाह्नवी ।

२९ शृङ्ग-अङ्ग-भृङ्गाः ।

शृङ्गम् विषाणम् ।

अङ्गम् शरीरम् ।

भृङ्गः भ्रमरः ।

३० जनेः घः ।

जङ्घा प्राण्यङ्गम् ।

३१ कचेः छः ।

कच्छः पार्वः ।

३२ शकादिभ्यः अटन् ।

शकटम् वाहनम् ।

अकटम् हिरणम् ।

कुलटा बन्धकी ।

देवटः ऋषिः ।

मर्कटः वानरः ।

कमटः रुद्रः ।

३३ जटा-लोष्टम् ।

जटा केशबन्धः ।

लोष्टम् मृद्वलिः ।

३४ कृ-तृ-कृपेः कीटन् ।

किरीटम् मुकुटम् ।

तिरीटम् वेष्टनम् ।

कृपीटम् जलम् ।

३५ शमेः ण्ठः ।

शण्ठः महिषचौरः ।

३६ कमः अठत् च ।

कमठः वामनः ।

कण्ठः ग्रीवा ।

३७ कृ-वृञः अण्डन् ।

करण्डः गुह्यस्थानम् ।

वरण्डः मुखरोगः ।

३८ ऊर्णोः डः ।

ऊर्णा मेषरोम ।

३९ वमन्तात् डः ।

चण्डः दुर्जनः ।

दण्डः लगुडः ।

अण्डः पक्षिप्रसवः ।

रण्डा अप्रसवा ।

वण्डः दुश्चर्मा ।

गण्डः कपोलः ।

खण्डः गुडविकारः ।

४० कुण्ड आदयः ।

कुण्डम् भाजनम् ।

मुण्डम् शिरः ।

जुण्डम् वनम् ।

तुण्डम् मुखम् ।

एवम् अन्येऽपि द्रष्टव्याः ।

४१ शमेः ढः ।

शण्ढः अप्रसवः ।

४२ शकेः उन्तः ।

शकुन्तः पक्षी ।

४३ ज्-विशः अन्तच् ।

जरन्तः महिषः ।

वेशन्तः वल्लभः ।

४४ रुहि-नन्दि-जीवेः षित् ।

रोहन्तः वृक्षः ।

रोहन्ती ओषधी ।

नन्दन्ती सखी ।

जीवन्ती ओषधी ।

४५ भू-जि-वसि-वहि-साधि-भासि-गडि-

मण्डि-हेमिभ्यः ।

भवन्तः कालः ।

जयन्तः वृक्षविशेषः ।

वसन्तः ऋतुविशेषः ।

वहन्तः रथः ।

साधन्तः भिक्षुः ।

भासन्तः सूर्यः ।

गडयन्तः मेघः ।

मण्डयन्तः ओदनः ।

हेमन्तः ऋतुः ।

४६ अतः भुवः डुतच् ।

अद्भुतम् आश्चर्यम् ।

- ४७ र्हि-हृ-श्याभ्यः इत्च् ।
 रोहितः मत्स्यः ।
 लोहितम् रक्तम् ।
 हरितः वर्णविशेषः ।
 श्वेतः स एव ।
- ४८ भृञ्वादिभ्यः अत्च् ।
 भरतः नटः ।
 जयतः वल्लिः ।
 पर्वतः गिरिः ।
 पचतः सूपकारः ।
 यमतः व्याधिः ।
 दर्गतः सोमः ।
 नमतः नम्रः ।
 हर्यतः यज्ञः ।
 खलतः दुर्जनः ।
- ४९ पृषि-रञ्जेः कित् ।
 पृषतः मृगः ।
 रजतम् रूप्यम् ।
- ५० मृ-गृ-वा-हृ-सि-इण्-अमि-दमि-लू-पू-
 धू-विभ्यः तन् ।
 मर्तः लोकः ।
 गर्तः श्वभ्रम् ।
 वातः वायुः ।
 हस्तः करः ।
 एतः वर्णः ।
 अन्तः अवसानम् ।
 दन्तः दशनम् ।
 लोतः अश्रुपातः ।
 पोतः बालः ।
 धूर्तः शठः ।
- ५१ घृ-सि-द्वभ्यः क्तः ।
 घृतम् आज्यम् ।

- सितम् शुक्लम् ।
 दूतः प्रेष्यः ।
- ५२ तात-पलित-जर्त-सूरताः ।
 तातः पिता ।
 पलितः केशविकारः ।
 जर्तः दीर्घरोमा ।
 सूरतः सुखसंवासः ।
- ५३ शमादिभ्यः अथः ।
 शमथः समाधिः ।
 शपथः प्रत्ययकारः ।
 आवसथः गृहम् ।
 वदथः कोकिलः ।
 रवथः स एव ।
 गमथः कालः ।
 जीवथः धर्मः ।
 प्राणथः प्रजापतिः ।
 भरथः अग्निः ।
 वेदथः मार्गः ।
- ५४ रमि-कुषि-काशिभ्यः कथन् ।
 रथः स्यन्दनम् ।
 कुष्ठः व्याधिः ।
 काष्ठम् इन्धनम् ।
- ५५ अवात् भृञ्चः ।
 अवभृथः यज्ञावसानम् ।
- ५६ उषि-कुषि-गा-अतिभ्यः थन् ।
 ओष्ठः अधरः ।
 कोष्ठः उदरः ।
 गाथा ग्रन्थविशेषः । (छन्दोविशेषः)
 अर्थः धनम् ।
- ५७ वृ-वृञ्चः ऊथन् ।
 जहृथम् अग्रमांसम् ।
 वरुथः बलसमूहः ।

५८ पा-तृ-तुदि-वचि-रिचि-सिचि-विशेः
 थक् ।
 पीथम् जलम् ।
 तीर्थम् पुण्यस्थानम् ।
 तुत्यः अग्निः ।
 उक्थः सामवेदः ।
 रिक्थम् द्रव्यम् ।
 सिक्थम् मधूच्छिष्टम् ।
 विष्ठा पुरीषम् ।

५९ यूथ-आदयः ।
 यूथः प्राणिसमूहः ।
 गूथः विष्ठा ।
 पृष्ठम् प्राण्यङ्गम् ।
 समिथः ऋत्विग्विशेषः ।
 निशीथः प्रदोषान्तः ।
 निऋथः यज्ञावसानम् ।
 निभृथः भर्ता ।
 गोपीथः प्रत्यूषः ।
 उद्गीथः साम ।
 प्रोथम् घ्राणाश्रयः ।
 तिथः अग्निः ।

६० शवि-कमिभ्यां दन् ।
 शब्दः ध्वनिः ।
 कन्दः मूलम् ।

६१ अब्द-आदयः ।
 अब्दः संवत्सरः ।
 वृन्दम् समूहः ।
 कुन्दः पुष्पविशेषः ।
 मन्दः जडः ।
 तुन्दः उदरवृद्धिः ।
 श्यान्दः सुवर्णम् ।

६२ श्या-स्त्या-हृव्-अविभ्यः इनच् ।
 श्येनः पक्षी ।
 स्त्येनः चौरः ।
 हरिणः मृगः ।
 अविनः दृश्यः ।

६३ वृजिन-अजिनम् ।
 वृजिनः कुटिलः ।
 अजिनम् चर्म ।

६४ वी-पतिभ्यां तनन् ।
 वेतना भृतिः ।
 पत्तनं नगरम् ।

६५ द्रु-दक्षिभ्यां इनन् ।
 द्रविणम् द्रव्यम् ।
 दक्षिणा लोकयात्रा ।

६६ विपिन-इरिण-तुहिन-महिनानि ।
 विपिनम् गहनम् ।
 इरिणम् ऊषरम् ।
 तुहिनम् तुषारः ।
 महिनम् महत्त्वम् ।

६७ रसि-रुचि-रु-वृञः युच् ।
 रसना मेखला ।
 रोचना गोपित्तम् ।
 रवणः आदित्यः ।
 वरणा नदी ।

६८ उन्देः नलोपश्च ।
 ओदनः अन्नम् ।

६९ रञ्जेः क्युन् ।
 रजनम् रङ्गः ।
 रजनी रात्रिः ।

७० कृ-पृ-वृजि-मण्डि-निधाञः क्युः ।
 किरणः प्रभा ।
 पूरणः समुद्रः ।

- वृजनम् अन्तरीक्षम् ।
 मण्डनम् भूषणम् ।
 निधानम् निधिः ।
 ७१ घृषेः घिष च ।
 घिषणा वृद्धिः ।
 ७२ हनः जघ च ।
 जघनम् कटिप्रदेशः ।
 ७३ ब्रधि-वसि-धा-पृभ्यः नः ।
 ब्रध्नः आदित्यः ।
 वस्नः मूल्यम् ।
 धाना यवविकारः ।
 पर्णम् पत्रम् ।
 ७४ कृ-वृ-तृ-स्वपि-सि-द्रुभ्यः नन् ।
 कर्णः श्रोत्रम् ।
 वर्णः नीलादिः ।
 तर्णः समुद्रः ।
 स्वप्नः निद्रा ।
 सेना बलसमूहः ।
 द्रोणः परिमाणम् ।
 ७५ उषि-इण्-अवि-कृषि-तृषि-बुधि-रति-
 धा-पृभ्यः नक् ।
 उष्णः अग्निः ।
 इनः स्वामी ।
 ऊनः विकलः ।
 कृष्णः वर्णः ।
 तृष्णः अभिलाषः ।
 बुध्नः पृष्ठान्तः ।
 रत्नम् जातौ जातौ यद् उत्कृष्टम् ।
 धीनः समुद्रः ।
 पूर्णः स एव ।
 ७६ कृतेः सुक् च ।
 कृत्स्नम् निरवशेषम् ।
- ७७ श्लिषेः इतः अत् च ।
 श्लक्षणः मृदुः ।
 ७८ तिजेः ईत् च ।
 तीक्ष्णम् निशितम् ।
 ७९ रास्ना-आदयः ।
 रास्ना ओषधिः ।
 सास्ना गोघ्नीवा ।
 स्थूणा गृहधरणी ।
 वीणा वाद्यविशेषः ।
 तृणम् वीरणादि ।
 अर्णः विटपः ।
 जीर्णः वृद्धः ।
 ८० कृ-वृ-तृ-यमि-दारि-अर्जेः उनन् ।
 करुणा कृपा ।
 वरुणः जलराजः ।
 तरुणः युवा ।
 तलुनः स एव ।
 यमुना नदी ।
 दारुणः रौद्रः ।
 अर्जुनः वृक्षविशेषः ।
 ८१ शकेः उनः ।
 शकुनः पक्षी ।
 ८२ पृ-पा-तलेः पः ।
 पर्पः गृहम् ।
 पापम् जिह्वाम् ।
 तल्पम् शयनम् ।
 ८३ स्तोः ऊ च ।
 स्तूपम् चैत्यम् ।
 ८४ यु-कु-सूनां कित् च ।
 यूपः यज्ञयष्टिः ।
 कूपः प्रहिः ।
 सूपः व्यञ्जनम् ।

- ८५ बाष्प-आदयः ।
 बाष्पः ऊष्मागमः ।
 शष्पम् बालतृणम् ।
 शिल्पम् विज्ञानम् ।
 रूपम् नीलादि ।
 शूर्पम् कुलवः ।
 खष्पः बलात्कारः ।
- ८६ सर्तः अपः सुक् च ।
 सर्षपः व्रीहिजातिः ।
- ८७ विटप-आदयः ।
 विटपम् गहनम् ।
 विशपः गृहम् ।
 उलपः संतापः ।
 कुणपः मृतकः ।
 उषपः अग्निः ।
 कुतपः प्रस्थचतुर्थभागः ।
 दलपः प्रहरणम् ।
 कचपः शाकविशेषः ।
 विष्टपः स्वर्गः ।
 मण्डपः देवगृहम् ।
 विशिपः प्रवेशः ।
- ८८ रातेः इफः ।
 रेफः अक्षरम् ।
- ८९ गुरेः फक् ।
 गुल्फः प्रपदम् ।
- ९० गृ-शृभ्यां वः ।
 गर्वः मानः ।
 शर्वः महादेवः ।
- ९१ अशि-लटि-कणि-खटि-विशेः क्वन् ।
 अश्वः तुरङ्गः ।
 लट्वा पक्षी ।
 कण्वम् पापम् ।
- खट्वा शयनीयम् ।
 विश्वम् निरवशेषम् ।
- ९२ शिव-आदयः ।
 शिवम् शान्तम् ।
 सर्वम् अशेषम् ।
 उल्बम् जरायुः ।
 शुल्बम् ताम्रम् ।
 निम्बम् अरिष्टम् ।
 बिम्बम् शरीरम् ।
 शम्बः लोहविकारः ।
 स्तम्बः विटपम् ।
 जिह्वा रसना ।
 ग्रीवा गलप्रदेशः ।
- ९३ कृ-शृ-गर्देः अभच् ।
 करभः उष्ट्रः ।
 कलभः हस्तिपोतः ।
 शरभः पशुजातिः ।
 शलभः पतङ्गः ।
 गर्दभः खरः ।
- ९४ ऋषि-वृषि-रासि-वल्लेः कित् ।
 ऋषभः बलीबर्दः ।
 वृषभः स एव ।
 रासभः गर्दभः ।
 वल्लभः प्रियः ।
- ९५ दृडः भः ।
 दर्भः कुशः ।
- ९६ गिरः भन् ।
 गर्भः अन्तःप्रदेशः ।
- ९७ इणः कित् ।
 इभः कुक्षरः ।
- ९८ गुधेः ऊमः ।
 गोधूमः व्रीहिजातिः ।

1. 10月1日 星期一
 2. 10月2日 星期二
 3. 10月3日 星期三
 4. 10月4日 星期四
 5. 10月5日 星期五
 6. 10月6日 星期六
 7. 10月7日 星期日
 8. 10月8日 星期一
 9. 10月9日 星期二
 10. 10月10日 星期三
 11. 10月11日 星期四
 12. 10月12日 星期五
 13. 10月13日 星期六
 14. 10月14日 星期日
 15. 10月15日 星期一
 16. 10月16日 星期二
 17. 10月17日 星期三
 18. 10月18日 星期四
 19. 10月19日 星期五
 20. 10月20日 星期六
 21. 10月21日 星期日
 22. 10月22日 星期一
 23. 10月23日 星期二
 24. 10月24日 星期三
 25. 10月25日 星期四
 26. 10月26日 星期五
 27. 10月27日 星期六
 28. 10月28日 星期日
 29. 10月29日 星期一
 30. 10月30日 星期二
 31. 10月31日 星期三

1. 10月1日 星期一
 2. 10月2日 星期二
 3. 10月3日 星期三
 4. 10月4日 星期四
 5. 10月5日 星期五
 6. 10月6日 星期六
 7. 10月7日 星期日
 8. 10月8日 星期一
 9. 10月9日 星期二
 10. 10月10日 星期三
 11. 10月11日 星期四
 12. 10月12日 星期五
 13. 10月13日 星期六
 14. 10月14日 星期日
 15. 10月15日 星期一
 16. 10月16日 星期二
 17. 10月17日 星期三
 18. 10月18日 星期四
 19. 10月19日 星期五
 20. 10月20日 星期六
 21. 10月21日 星期日
 22. 10月22日 星期一
 23. 10月23日 星期二
 24. 10月24日 星期三
 25. 10月25日 星期四
 26. 10月26日 星期五
 27. 10月27日 星期六
 28. 10月28日 星期日
 29. 10月29日 星期一
 30. 10月30日 星期二
 31. 10月31日 星期三

११६ हः हिर् च ।
हिरण्यम् सुवर्णम् ।

११७ पर्जन्यः ।
पर्जन्यः शक्रः ।

११८ पुणेः क्यन् ।
पुण्यम् कुशलस्थानम् ।

११९ शिक्वयम् धिष्ण्यम् ।
शिक्वयम् उद्ग्राह्यम् ।
धिष्ण्यम् गृहम् ।

॥ उणादौ द्वितीयः पादः समाप्तः ॥

१ मदि-अङ्गि-वाशि-मथि-चतिभ्यः उरच् ।

मन्दुरा वाजिशाला ।
अङ्गुरः बीजप्रसवः ।
वाशुरा रात्रिः ।
मथुरा नगरी ।
चतुरः दक्षः ।

२ मकुर-दर्दुर-विधुराः ।

मकुरः दर्पणः ।
दर्दुरः भेकः ।
विधुरः विगुणः ।

३ असेः उरन् ।

असुरः आदित्यः ।

४ श्वशुरः ।

श्वशुरः भार्यापिता ।

५ तिमि-रुधि-मदि-मन्दि-चन्दि-बन्धिभ्यः

किरच् ।
तिमिरम् अन्धकारः ।
रुधिरम् क्षतजम् ।
मदिरा सुरा ।
मन्दिरम् गृहम् ।
चन्दिरः हस्ती ।
वधिरः श्रोत्रविकलः ।

६ स्थिर-आदयः ।

स्थिरम् अचलम् ।
अजिरम् गृहम् ।
शिशिरम् ऋतुविशेषः ।
खदिरः वृक्षजातिः ।
स्थविरः वृद्धः ।
इषिरः शरः ।
छिदिरः छिद्रम् ।
भिदिरः वज्रः ।
मुहिरः मूर्खः ।
मुचिरः दाता ।
रुचिरः शोभनः ।
श्रथिरम् शिथिलम् ।
रिफिरम् स्फीतम् ।

७ तञ्च-वञ्च-शकि-क्षिपि-क्षुदि-रुदि-
मदि-मन्दि-चन्दिभ्यः रक् ।

तक्रम् मथितम् ।
वक्रम् कुटिलम् ।
शक्रः देवराजः ।
क्षिप्रम् त्वरितम् ।
क्षुद्रः अदानी ।
रुद्रः महादेवः ।
मद्रः देशः ।
मन्द्रः धीरः ।
चन्द्रः चन्द्रमाः ।

८ श्विति-वृति-नी-वी-छिदि-मुदि-वहि-

त्पि-शुभिभ्यश्च ।
श्वित्रम् कुष्ठम् ।
वृत्रः दैत्यः ।
नीरम् जलम् ।
वीरः विक्रान्तः ।
छिद्रम् विवरः ।

- मुद्रा प्रत्ययकरणी ।
 दह्रम् तरुणम् ।
 तृप्रः पुरोडाशः ।
 शुभ्रम् शुक्लम् ।
 ६ तमि-अमि-जीनां दीर्घश्च ।
 ताम्रम् शुल्बम् ।
 आम्रः वृक्षजातिः ।
 जीरः वह्निः ।
 १० दूर-आदयः
 दूरम् विप्रकृष्टम्
 उद्रः जलचरः ।
 कृच्छ्रम् कण्ठम् ।
 चुक्रम् आम्लम् ।
 दभ्रः कुशः ।
 उस्रः केदारः ।
 उस्त्रा गोश्रीवा ।
 वाश्रम् पुरीषम् ।
 शीरः अजगरः ।
 हस्रः हासः ।
 सिध्रः साधुजनः ।
 रन्ध्रम् विवरः ।
 विकुस्रः चन्द्रमाः ।
 वन्द्रः पूजकः ।
 खिद्रः दैन्यः ।
 ११ सु-सू-धाव्-गृधेः क्रन् ।
 सुरा मद्यम् ।
 सूरः रविः ।
 धीरः मत्स्यघाती ।
 गृध्रः पक्षिजातिः ।
 १२ सि-मि-चीनाम् ईत् च ।
 सीरः लाङ्गलम् ।
 मीरः जलम् ।

- चीरम् वल्कलम् ।
 १३ वपि-वजि-वृधि-इन्दिभ्यः रन् ।
 वप्रः केदारः ।
 वज्रः कुलिशः ।
 वर्ध्रः चन्द्रः ।
 इन्द्रः शक्रः ।
 १४ भद्र-आदयः ।
 भद्रम् कल्याणम् ।
 उग्रः उत्कृष्टः ।
 भेरः दुन्दुभिः ।
 भेरी स एव ।
 अग्रम् श्रेष्ठम् ।
 गौरः अवदातः ।
 गौरी शिवा ।
 शुकम् रेतः ।
 वृध्रः वयोधिकः ।
 ऋज्रः नायकः ।
 विप्रः ब्राह्मणः ।
 कुप्रः शङ्करः ।
 चुव्रः प्रीतिकरः ।
 क्षुरः रोमायुधम् ।
 खुरः मर्मच्छेदनः ।
 इरा मही ।
 १५ चति-कटि-शृ-वृषः ट्वरच् ।
 चत्वरम् अङ्गनम् ।
 कट्वरम् दधिविकारः ।
 शर्वरः महादेवः ।
 शर्वरी निशा ।
 वर्वरी कुटिलकेशा ।
 वर्वरम् केशविकारः ।
 १६ पीवर-आदयः ।
 पीवरः स्थूलः

- चीवरम् भिक्षुप्रावरणम् ।
 तीवरः म्लेच्छः ।
 नीवरम् गृहम् ।
 गह्वरम् गहनम् ।
 चित्वरः धूर्तः ।
 चत्वरः उपस्थः ।
 धीवरः मत्स्यघाती ।
 मीवरः पूज्यः ।
 संयद्वरः बाष्पः ।
- १७ कुवः क्रवन् ।
 कुरवः पक्षी ।
- १८ मदि-अशि-वसेः सरन् ।
 मत्सरः कृपणः ।
 अक्षरम् वर्णः ।
 वत्सरः वर्षः ।
 संवत्सरः स एव ।
- १९ कृ-धू-तनेः कित् ।
 कृसरा तिलयवागूः ।
 धूसरः रूक्षः ।
 तसरः कुन्दद्रव्यम् ।
- २० भ्रमि-वठि-देवि-वासेः अरन् ।
 भ्रमरः षट्पदः ।
 वठरः मूर्खः ।
 देवरः पतिभ्राता ।
 वासरः दिवसः ।
- २१ अङ्गि-मदि-मन्दि-कडेः आरन् ।
 अङ्गारः दग्धकाष्ठम् ।
 मदारः मणिविशेषः ।
 मन्दारः वृक्षजातिः ।
 कडारः पिङ्गलः ।
- २२ शृङ्गि-भृङ्गि-मृजि-कञ्जेः चित् ।
 शृङ्गारम् दर्शनीयम् ।
- भृङ्गारः सुवर्णभाजनम् ।
 मार्जारः विडालः ।
 कञ्जारः मयूरः ।
- २३ कमः अतः उत् च ।
 कुमारः बालजनः ।
- २४ शिरः करन् ।
 शर्करा गुडविकारः ।
- २५ पुषः कित् ।
 पुष्करम् पद्मम्
- २६ क्षणः डीरच् ।
 क्षीरम् पयः ।
- २७ कृ-शृ-शौटिभ्यः ईरच् ।
 करीरः वंशाङ्कुरः ।
 शरीरम् देहः ।
 शौटीरः दाता
- २८ वशेः कित् ।
 उशीरम् वीरणमूलम् ।
- २९ गम्भीर-आदयः ।
 गम्भीरम् भयानकम् ।
 गभीरः दुरवगाहः ।
 कुम्भीरः जलचरः ।
 कुटीरः जनवासः ।
 परीरः समुद्रः ।
 पटीरः कन्दर्पः ।
 कुरीरम् मैथुनम् ।
- ३० मसेः ऊरन् ।
 मसूरः व्रीहिजातिः ।
- ३१ जनेः अरः ठश्च ।
 जठरः मूर्खः ।
- ३२ वदेर्वा ।
 वठरः जडः ।
 वदरम् कर्कन्धूफलम् ।

- वदरी तद् एव ।
 ३३ पचेः अतः इत् च ।
 पिठरः स्थालीपाकः ।
 ३४ कठि-चकिभ्याम् ओरः ।
 कठोरः निविडः ।
 चकोरः पक्षी ।
 ३५ घुणेः डोरः ।
 घोरम् अन्तकरम् ।
 ३६ धा-दा-नी-पति-पा-ज्ञसिभ्यः ष्ट्रन् ।
 धात्री धरणी ।
 दात्रम् लवनद्रव्यम् ।
 नेत्रम् चक्षुः ।
 पत्रम् पर्णम् ।
 पात्रम् भाजनम् ।
 शस्त्रम् प्रहरणम् ।
 ३७ उषि-सू-मूभ्यः कित् ।
 उष्ट्रः करभः ।
 सूत्रम् कल्याणम् (?) ।
 मूत्रम् प्रस्रावः ।
 ३८ अमि-नक्षि-कडिभ्यः अत्रच् ।
 अमत्रम् भाजनम् ।
 नक्षत्रम् तारकादि ।
 कडत्रम् भार्या ।
 कलत्रम् सा एव ।
 ३९ वृञश्च ।
 वरत्रा चर्ममयी ।
 ४० अमि-चि-मिदेः त्रक् ।
 अन्त्रम् कुक्षनाडी ।
 चित्रम् अद्भुतम् ।
 मित्रम् सुहृत् ।
 ४१ पूढः ह्रस्वश्च ।
 पुत्रः तनयः ।

- ४२ वह-लादिभ्यः इत्र-उत्रौ ।
 वहित्रम् वहनम्
 पवित्रम् यज्ञसूत्रम् ।
 कडित्रम् चर्ममयम् ।
 लोत्रम् अपहृतद्रव्यम् ।
 पोत्रम् सूकरनासाग्रम् ।
 श्रोत्रम् श्रुतिः ।
 ४३ खर्जि-पिञ्जादिभ्यः ऊर-ऊलञौ ।
 खर्जूरः वृक्षजातिः ।
 कर्पूरः मुखसुगन्धिद्रव्यम् ।
 वल्लूरम् शुष्कमांसमयम् ।
 पिञ्जूलः पक्षिजातिः ।
 लाङ्गूलम् पुच्छम् ।
 ४४ तमेः वुक् च ।
 ताम्बूलम् मुखभूषणम् ।
 ४५ शवि-कमः कलन् ।
 शवलम् व्यामिश्रम् ।
 कमलम् पद्मम् ।
 ४६ वृषादिभ्यः चित् ।
 वृषलः शूद्रः ।
 उत्पलम् इन्दीवरम् ।
 वटलः अक्षिरोगः ।
 कला कालविशेषः ।
 गलः कण्ठप्रदेशः ।
 चपलः दुर्विनीतः ।
 केवलम् असहायम् ।
 ४७ शकि-शमेः नित् ।
 शकलम् अस्थि ।
 शमलम् अशुचिः ।
 ४८ कुटेः कमलच् ।
 कुट्मलम् अविकसितम् ।

- ४९ पति-चण्डिभ्याम् आलच् ।
पातालम् रसातलम् ।
चण्डालः मातङ्गः ।
- ५० कुणि-पीभ्याम् कालन् ।
कुणालः पक्षी ।
पियालः वृक्षजातिः ।
- ५१ पालन्-वलञ्चौ शीडः ।
शेपालम् जलतृणम् ।
शैवलः स एव ।
- ५२ मङ्गैः अलच् ।
मङ्गलः प्रशस्तः ।
- ५३ माला-इल्वल-पल्वल -चषाल-शिथिल-
शुक्ल-तण्डुलाः ।
माला स्रग्दाम ।
इल्वलाः तारकाः ।
पल्वलम् शाखापत्रम् ।
चषालः यज्ञोपकरणद्रव्यम् ।
शिथिलम् अदृढम्
शुक्लम् श्वेतम् ।
तण्डुलः धान्यसंभवः ।
- ५४ अर्तेः पिशन् ।
अर्पिशः अग्रमांसम् ।
- ५५ वृ-भृ-वमि-कुभ्यः शक् ।
वृशः गौः
भृशः गत्यर्थः ।
वंशः वेणुः ।
कुशः दर्भः ।
- ५६ कीनाश-दाश-अङ्कशाः ।
कीनाशः कृपणः ।
दाशः कैवर्तः ।
अङ्ककुशः गजप्रबोधकः ।
- ५७ ऋ-र्माञ्ज-पीयि-हनि-अग्निभ्यः ऊषन् ।
अरूषः चन्द्रमाः ।
मञ्जूषा काष्ठमयम् ।
पीयूषः अमृतकम् ।
हनूषः व्याघ्रः ।
अङ्गूषः देवगमः (?) ।
- ५८ पुरः कुषन् ।
पुरुषः नरः ।
- ५९ कृ-तृभ्याम् ईषन् ।
करीषः गोमयम् ।
तरीषः समुद्रः ।
- ६० शिरीष-आदयः ।
शिरीषः वृक्षजातिः ।
पुरीषम् विष्ठा ।
अम्बरीषः भ्राष्ट्रम् ।
ऋजीषः नायकः ।
- ६१ अवेः टिषच् ।
अविषः समुद्रः ।
अविषी नदी ।
- ६२ किल्बिष-आदयः ।
किल्बिषम् पापम् ।
रोहिषः मृगः ।
लोहिषः स एव ।
ताविषः सूर्यः ।
ताविषी नदी ।
व्यथिषः व्याधिः ।
अव्यथिषः स्वर्गः ।
- ६३ वृ-त-वदि-हनि-मानि-कमि-अशि-कशेः
सः ।
वर्षः संवत्सरः ।
तर्षः समुद्रः ।
वत्सः बालः ।

- हंसः पक्षी ।
मांसम् पिशितम् ।
कंसः असुरराजः ।
अक्षम् इन्द्रियम् ।
कक्षः वनप्रदेशः ।
६४ ऋषि-वृषि-स्तुभ्यः सक् ।
ऋक्षम् नक्षत्रम् ।
वृक्षः तरुः ।
स्तुषा पुत्रवधूः ।
६५ पति-मनि-रभि-चमि-अति-वेति-युवः
असच् ।
पनसः कण्टकफलम्^१ ।
मनसम् हृदयम् ।
रभसः उत्साहः ।
चमसः पिष्टकः ।
अतसः पुष्पजातिः ।
वेतसः वृक्षः ।
यवसः घासः ।
६६ कृञः पासप् ।
कर्पासः कर्तनद्रव्यम् ।
६७ सिचैः कन् उम्-हौ च ।
सिंहः केसरी ।
६८ श्रि-स्रु-द्-प्रु-ज्वां क्विप् दीर्घश्च ।
श्रीः लक्ष्मीः ।
स्रूः स्रुक् ।
द्रूः सुवर्णम् ।
प्रूः कामचारः ।
जूः पिशाचः ।
६९ प्रछि-वचोः तौ च ।
प्राट् शिष्यः ।
वाग् वाणी ।
- ७० गमः द्वे च ।
जगत् त्रैलोक्यम् ।
७१ परिव्रजेः षश्च पदान्ते ।
परिव्राट् परिव्राजी परिव्राजः ।
७२ स्रुवः चिक् ।
स्रुग् यज्ञभाण्डम् ।
७३ वशि-वणिभ्याम् इजिक् ।
उषिक् तन्त्रवायः ।
वणिग् वाणिजः ।
७४ मृडः उतिः ।
मरुत् वायुः ।
७५ ग्री वा मुट् च ।
गरुत् पक्षः ।
गर्मुत् सुवर्णम् ।
७६ ह्र-सृ-तडि-रुहि-युषिभ्यः इतिः ।
हरित् शाद्वलः ।
सरित् नदी ।
तडित् विद्युत् ।
रोहित् मत्स्यः ।
लोहित् रक्तः ।
योषित् अङ्गना ।
७७ पृषि-वृषि-महेः शतृः ।
पृषत् मृगः ।
वृषत् विपुलः ।
महत् महायानम् ।
महान् उत्तमः ।
७८ शरद्-दरद् दृषदः ।
शरत् ऋतुः ।
दरत् द्रव्यम् ।
दृषत् शिला ।

१ कण्टकयुक्तं फलं कण्टककलम् (फणस) ।

- ७९ वृषि-तक्षि-राजि-धन्वि-प्रतिदिव-युवः कनिन् ।
 वृषा गौः ।
 तक्षा वर्धकिः ।
 राजा नृपः ।
 धन्वा धनुः ।
 प्रतिदिवा दिवसः ।
 युवा तरुणः ।
- ८० श्वन् आदयः ।
 श्वा कुक्कुरः ।
 उक्षा वलीवर्दः ।
 पूषा रविः ।
 प्लीहा व्याधिः ।
 मूर्धा शिरः ।
 मज्जा अस्थिसारः ।
 मातरिश्वा वातः ।
 मघवा इन्द्रः ।
- ८१ भसि-जनि-वृतेः मनिन् ।
 भस्म छारः ।
 जन्म उत्पत्तिः ।
 वर्त्म पन्थाः ।
- ८२ व्योमन् आदयः
 व्योम आकाशः ।
 वेम कौलिकानां भाण्डम् ।
 साम वेदः ।
 रोम अङ्गजः ।
 लोम स एव ।
 नाम संज्ञा ।
- ८३ इमनिच् ।
 हरिमा विष्णुः ।
 धरिमा पृथ्वी माता वा ।
 भरिमा स्वामी भाजनं वा ।
- ८४ पथि-मथिभ्याम् इनिः ।
 पन्था मार्गः ।
 मन्था बृहस्पतिः मन्थनदण्डो वा ।
- ८५ गमः ।
 गमी गमिष्यति ।
- ८६ आङः णित् च ।
 आगामी आगमिष्यति ।
- ८७ भुवः ।
 भविष्यति इति भावी ।
- ८८ परमेष्ठी ।
 परमेष्ठी ब्रह्मा ।
- ८९ अर्चि-हु-सृपि-च्छदि-च्छदिभ्यः इसिः ।
 अर्चिः ज्वाला ।
 हविः यज्ञः ।
 सर्पिः घृतम् ।
 छदिः आतपत्रम् ।
 छदिः उद्धारः ।
- ९० ज्योतिर् आदयः ।
 ज्योतिः दीप्तिः नक्षत्रं वा ।
 शोचिः पिङ्गलम् ।
 भुविः पृथिवी ।
 निपथिः विमार्गः ।
- ९१ जनेः उसिः ।
 जनुः जन्म ।
- ९२ ऋ-पृ-वपि-यजि-धनि-त्रपेः नित् ।
 अरुः व्रणः ।
 परुः चिरकालः ।
 वपुः शरीरम् ।
 यजुः वेदः ।
 धनुः शस्त्रम् ।
 त्रपुः सीसम् ।

- ६३ इणः कित् ।
आयुः जीवनपरिमाणम् ।
- ६४ चक्षेः उसिन् ।
चक्षुः नेत्रम् ।
- ६५ वशेः कनसिः ।
उशना शुक्रः ।
- ६६ विधि-इणः कसिः ।
वेधाः प्रजापतिः ।
अयः लोहम् ।
- ६७ पयः-पुरसः धाञ् ।
पयोधाः पर्जन्यः ।
पुरोधाः पुरोहितः ।
- ६८ चन्द्रात् माडः डित् ।
चन्द्रमाः चन्द्रः ।
- ६९ अनेहस्-अङ्गिरस्-अप्सरसः ।
अनेहाः कालः ।
अङ्गिराः नाम ऋषिः ।
अप्सराः देवयोषित् ।
- १०० असुन् ।
वयः शरीरम् ।
पयः क्षीरम् ।
तेजः दीप्तिः ।
अंहः पापम् ।
तपः पुण्यम् ।
- १०१ उषि-रञ्जि-शृभ्यः कित् ।
उषाः रविः ।
रजः रेणुः ।
शिरः मूर्धा ।
- १०२ वसि-अग्निभ्यां णित् ।
वासः वस्त्रम् ।
आगः पापम् ।
- १०३ यजेः शश्च ।
यज्ञः कीर्तिः ।
- १०४ उषेः जश्च ।
ओजः दीप्तिः ।
- १०५ वशेः सुट् च ।
वक्षः क्रोडः ।
- १०६ लु-रीडभ्याम् तुट् च ।
स्रोतः नदी ।
रेतः शुक्रम् ।
- १०७ इणः नुट् च ।
एनः पापम् ।
- १०८ शीडः फुट् च ।
शेफः लिङ्गम् ।
- १०९ छदेः नुम् च ।
छन्दः वेदः ।
- ११० अमेः भुक् च ।
अम्भः सलिलम् ।
- १११ अर्तेः उट् च ।
उरः क्रोडः ।
- ११२ शुट् च ।
अर्शः व्याधिः ।
- ११३ नुट् च ।
अर्णः जलम् ।
- ११४ युट् च ।
अर्यः वैश्यः ।

॥ उणादौ तृतीयः पादः समाप्तः ॥

॥ आचार्यचन्द्रगोमिकृतम् उणादिसूत्रम् समाप्तम् ॥

॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥

[आचार्यचन्द्रगोमिरचितः धातुपाठः]

- १ भू सत्तायाम् । (१)^१
 २ चिती संज्ञाने । (३६)
 ३ अत सातत्यगमने । (३८)
 ४ च्युतिर् आसेचने । (४०)
 ५ श्रुतिर् क्षरणे । (४१)
 ६ कुथि पुथि लुथि हिंसायाम् ।
 (४४-४६)
 ७ मन्थ विलोडने । (४३)
 ८ षिधु गत्याम् । (४८)
 ९ षिधू शिष्टौ । (४९)
 १० खादृ भक्षणे । (५०)
 ११ खद स्थितौ । (५१)
 १२ वद स्थैर्ये । (५२)
 १३ गद वचने । (५३)
 १४ रद विलेखने । (५४)
 १५ णद नर्द गर्द शब्दे । ५५, ५७, ५८
 १६ कर्द कुत्सिते शब्दे । (६०)
 १७ तर्द हिंसायाम् । (५९)
 १८ अर्द गतौ । (५६)
 १९ खर्द दशने । (६१)
 २० अति अदि बन्धने (६२, ६३)
 २१ इदि परमैश्वर्ये । (६४)
 २२ विदि अवयवे । (६५)
 २३ णिदि कुत्सायाम् । (६६)
 २४ टुनदि समृद्धौ (६७)
 २५ चदि आह्लादने (६८)
 २६ त्रिदि चेष्टायाम् । (६९)
 २७ कदि ऋदि क्लदि आह्वाने ।
 (७०-७२)
 २८ क्लिदि परिदेवने । (७३)
 २९ शुन्ध शुद्धौ । (७४)
 ३० फक्क नीचैर्गतौ । (११६)
 ३१ तक हसने । (१२०)
 ३२ तकि कृच्छ्रजीवने । (१२१)
 ३३ शुक गतौ । (१२३)
 ३४ बुक्क भषणे । (१२२)
 ३५ कक्ख हसने । (१२४)
 ३६ ओखृ राखृ लाखृ द्राखृ ध्राखृ
 शोषणे । (१२५-१२६)
 ३७ शाखृ श्लाखृ व्याप्तौ ।
 (१३०, १३१)
 ३८ उख णख वख मख रख लख
 रखि लखि इसि ईखि वलग
 व्लगि रगि लगि अगि वगि मगि
 तगि त्वगि त्रगि श्रगि श्लगि इगि
 रिगि लिगि गत्यर्थाः ।
 (१३२, १३८, १३४, १३६,
 १४०, १४२, १४१, १४३, १४५,
 १४६, १५२, १५३-१६०, १६२-
 १६५)

१ पाणिनीयधातुपाठस्थितधातुभिः सह अस्य धातुपाठस्थितस्य धातोः सादृश्यप्रदर्शनाय एते अङ्का निर्दिष्टाः । यथा चिती धातुः अत्र धातुपाठे द्वितीयः स एव च पाणिनीये धातुपाठे एकोनचत्वारिंशत्तमः ।

- ३९ युगि जुगि वुगि वर्जने ।
(१६७-१६९)
- ४० दधि पालने । (१७१)
- ४१ लधि शोषणे । (१७२)
- ४२ घग्घ हसने । (१७०)
- ४३ शिधि आघ्राणे । (१७४)
- ४४ गुच शोके । (१६८)
- ४५ कुच शब्दे । (१६९)
- ४६ क्रुन्च गतौ । (२०१)
- ४७ कुन्चु कौटिल्ये । (२००)
- ४८ लुन्चु अपनयने । (२०२)
- ४९ अन्चु वन्चु मन्चु चन्चु तन्चु त्वन्चु
म्रुन्चु म्लुन्चु म्रुचु म्लुचु गत्यर्थः ।
(२०३, २०४, २०५-२११)
- ५० ग्रुचु ग्लुचु कुजु खुजु स्तेये ।
(२१२-२१५)
- ५१ ग्लुन्चु षस्ज गतौ । (२१६-२१७)
- ५२ अर्च पूजायाम् । (२१९)
- ५३ म्लेच्छ अव्यक्ते वचने (२२०)
- ५४ लछ लाछि लक्षणे । (२२१, २२२)
- ५५ वाछि इच्छायाम् । (२२३)
- ५६ आछि आयामे । (२२४)
- ५७ ह्रीछ लज्जायाम् । (२२५)
- ५८ हुर्छा कौटिल्ये । (२२६)
- ५९ मुर्छा मोहे । (२२७)
- ६० स्फुर्छा विस्मृतौ । (२२८)
- ६१ युछ प्रमादे । (२२९)
- ६२ उछि उञ्छे । (२३०)
- ६३ उछी विवासे । (२३१)
- ६४ धृजि ध्रजि ध्वजि गतौ । (२३७,
२३३, २३६)
- ६५ अर्ज सर्ज अर्जने । (२४२, २४३)
- ६६ गर्ज शब्दे । (२४४)
- ६७ तर्ज भर्त्सने । (२४५)
- ६८ खर्ज मार्जने । (२४७)
- ६९ तेज पालने । (२४९)
- ७० गज मदे । (२६५)
- ७१ खज मन्थे । (२५०)
- ७२ खजि गतिवैकल्ये । (२५२)
- ७३ एजृ कम्पने । (२५३)
- ७४ टुओस्फूर्जा वज्रनिष्पेपे । (२५४)
- ७५ क्षि क्षये । (२५५)
- ७६ क्षीज कूज गुजि अव्यक्ते शब्दे ।
(२५६)
- ७७ लज लाजि लाज लजि भर्त्सने ।
(२५७, २६०, २५९, २५८)
- ७८ जज जजि युद्धे । (२६१, २६२)
- ७९ तुज तुजि हिंसायाम् ।
(२६३, २६४)
- ८० गज गजि गृज गृजि मुज मुजि
शब्दार्थाः । (२६५-२७०)
- ८१ अज वज व्रज गतौ । (२४८,
२७१, २७२)
- ८२ शौटृ गर्वे । (३१०)
- ८३ यौटृ सम्बन्धे । (३११)
- ८४ मेटृ म्लेटृ उन्मादने ।
(३१४, ३१२)
- ८५ कटे वरणे । (३१५)
- ८६ रट परिभाषणे । (३१६)
- ८७ लट बाल्ये । (३२०)
- ८८ शट विशरणे । (३२१)
- ८९ वट वेष्टने । (३२२)
- ९० खिट उत्त्रासने (३२४)
- ९१ शिट षिट अनादरे । (३२५, ३२६)

- ६२ जट झट पिट संघाते ।
(३२७, ३२८, ३३३)
- ६३ भट भृतौ । (३२९)
- ६४ तट उच्छ्राये । (३३०)
- ६५ खट काङ्क्षये । (३३१)
- ६६ नट नृतौ । (३३२)
- ६७ हट दीप्तौ । (३३४)
- ६८ षट अवयवे । (३३५)
- ६९ लुट विलोटने । (३३६)
- १०० चिट प्रैष्ये । (३३७)
- १०१ विट शब्दे । (३३८)
- १०२ विट आक्रोशे । (३३९)
- १०३ एठ हेठ विवाधायाम् ।
(३४३, २८६)
- १०४ अट इट पट किट कटी इ गतौ ।
(३१७, ३४०, ३१८, ३४१, ३४२)
- १०५ मडि भूषायाम् । (३४४)
- १०६ कुटि वैकल्ये । (३४५)
- १०७ मुटि प्रमर्दने । (३४६)
- १०८ चुटि अल्पीभावे । (३४७)
- १०९ मुडि खण्डने । (३४८)
- ११० वटि विभाजने । (३५१)
- १११ रुटि लुटि स्तेये । (३४९, ३५०)
- ११२ स्फुट स्फुटिर् विशरणे । (३५२)
- ११३ पठ उच्चारणे । (३५३)
- ११४ वठ स्थौल्ये । (३५४)
- ११५ मठ निवासे । (३५५)
- ११६ कठ कृच्छ्रजीवने । (३५६)
- ११७ हठ बलात्कारे । (३५८)
- ११८ रुठ लुठ उपघाते । (३५९, ३६०)
- ११९ पिठ हिंसायाम् । (३६२)
- १२० शठ कैतवे च । (३६३)
- १२१ शुठि कुठि गुठि शोषणे ।
(३६७, ३६५)
- १२२ लुठि आलस्ये । (३६६)
- १२३ रुठि लुठि गतौ । (३६८, ३६९)
- १२४ चुड्ड हावकरणे । (३७०)
- १२५ अड्ड अभियोगे । (३७१)
- १२६ क्रीडृ विहारे । (३७३)
- १२७ तुडृ तोडने । (३७४)
- १२८ हूडृ होडृ गतौ । (३७५, ३७६)
- १२९ रौडृ अनादरे । (३७७)
- १३० लौडृ उन्मादे । (३७९)
- १३१ अड उद्यमे । (३८०)
- १३२ लड विलासे । (३८१)
- १३३ कड मदे । (३८३)
- १३४ कड्ड कार्कर्ये । (३७२)
- १३५ गडि वदनैकदेशे । (३८४)
- १३६ गुपू रक्षणे । (४२२)
- १३७ धूप संतापे । (४२३)
- १३८ रप लप जप जल्प वचने ।
(४२८, ४२९, ४२४, ४२५)
- १३९ चप सान्त्वने । (४२६)
- १४० षच समवाये । (१०४६)
- १४१ चुप मन्दायां गतौ । (४३०)
- १४२ तुप तुन्प त्रुप त्रुन्प तुफ तुन्फ
त्रुफ त्रुन्फ सृभु सृन्भु हिंसार्थाः ।
(४३१-४३८, ४५७, ४५८)
- १४३ वर्फ रफ रफि अर्व पर्व खर्व गर्व
शर्व पर्व चर्व गतौ । (४४०
-४४३, ४४८-४५२)
- १४४ कुवि छादने । (४५३)
- १४५ चुवि वक्त्रसंयोगे । (४५६)
- १४६ शुन्भ भाषणे । (४६०)

- १४७ अण रण वण भण मण कण वण
व्रण भ्रण ध्रण ध्वन शब्दार्थाः ।
(४७१-४७६, ४८७, ८८१)
- १४८ ओणृ अपनयने । (४८२)
- १४९ शोणृ वर्णे । (४८३)
- १५० श्रोणृ संघाते । (४८४)
- १५१ पेणृ गतौ ।
- १५२ कनी दीप्तौ । (४८८)
- १५३ ष्टन वन कल गवदे ।
(४८९, ४९०, ५२६)
- १५४ षण संभक्तौ । (४९२)
- १५५ अम द्रम ह्यम्य मीमृ गतौ ।
(४९३, ४९४, ४९६)
- १५६ चमु छमु जमु झमु अदने ।
(४९७-४९९, ५०१)
- १५७ क्रमु पादविहरणे । (५०२)
- १५८ मव्य वन्धने । (५४१)
- १५९ पूर्क्षर्म ईर्क्ष्य ईर्ष्य ईर्ष्यार्थाः ।
(५४३, ५४४)
- १६० हय हर्य गतौ । (५४५, ५४७)
- १६१ गुच्यी अभिपवे । (५४६)
- १६२ फला विशरणे । (५४९)
- १६३ मील स्मील क्षमील निमेषणे ।
(५५०, ५५२, ५५३)
- १६४ पील प्रतिष्ठायाम् (५५४)
- १६५ नील वर्णे । (५५५)
- १६६ शील समाधौ । (५५६)
- १६७ कील वन्धे । (५५७)
- १६८ कूल वरणे । (५५८)
- १६९ शूल रजायाम् । (५५९)
- १७० तूल निष्कर्षे । (५६०)
- १७१ पूल संघाते । (५६१)
- १७२ मूल प्रतिष्ठायाम् । (५६२)
- १७३ फल निष्पत्तौ । (५६३)
- १७४ चुल्ल हावकरणे । (५६४)
- १७५ फुल्ल विकसने । (५६५)
- १७६ चिल्ल शैथिल्ये । (५६६)
- १७७ शिल्ल गतौ ।
- १७८ वेल्ल चेल्ल केल्ल खेल्ल शेल्ल पेल्ल
चलने । (५६८-५७१, ५७६)
- १७९ फेल्ल गतौ । (५७४, ५७५)
- १८० खल चलने । (५७७)
- १८१ खल संचये च । (५७८)
- १८२ गल अदने । (५७९)
- १८३ पल गतौ । (८९२)
- १८४ दल विशरणे । (५८१)
- १८५ शल श्वल आशुगमने ।
(५८२, ५८३)
- १८६ खोरु गतिप्रतिघाते । (५८४)
- १८७ घोरु गतिचातुर्ये । (५८५)
- १८८ त्सर छद्यगतौ । (५८६)
- १८९ कमर हूर्छने । (५८७)
- १९० अभ्र वभ्र मभ्र चर गत्यर्थाः ।
(५८८-५९१)
- १९१ ष्ठिवु क्षिवु निरसने ।
(५९२, ५९६)
- १९२ जि जये । (५९३)
- १९३ जीव प्राणधारणे । (५९४)
- १९४ पीव मीव नीव तीव स्थौल्ये ।
(५९५, ५९६, ५९८, ५९७)
- १९५ उर्वी तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी
हिसार्थाः । (६००, ६०४)
- १९६ मुर्वी वन्धने । (६०६)
- १९७ गुर्वी उच्चमे । (६०५)

१९८ पूर्व पर्व मर्व पूरणे । (६०७, ६०९)	२२२ चूष पाने । (७०४)
१९९ चर्व अदने । (६१०)	२२३ तूष तुष्टौ । (७०५)
२०० कर्व खर्व गर्व दर्पे । (६१२-६१४)	२२४ पूष वृद्धौ । (७०६)
२०१ अर्व शर्व भर्व हिंसायाम् । (६१५, ६१६, ६११)	२२५ मूष स्तेये । (७०७)
२०२ इवि व्याप्तौ । (६१८)	२२६ षूष प्रसवे । (७१०)
२०३ पिवि मिवि निवि सेचने । (६१६-६२१)	२२७ भूष अलंकारे (७१२)
२०४ हिवि दिवि धिवि प्रीणनार्थाः । (६२२-६२४)	२२८ ऊष रुजायाम् (७१४)
२०५ रिवि रवि धवि गत्यर्थाः । (६२६-६२८)	२२९ ईष उञ्छे । (७१५)
२०६ कृवि हिंसायाम् । (६२९)	२३० कष शिष जष झष वष मष रुष रिष यूष जूष हिंसायाम् । (७१६, ७१८-७२०, ७२२-७२५, ७११)
२०७ मव वन्धने । (६३०)	२३१ भष भर्त्सने । (७२६)
२०८ अव रक्षणे । (६३१)	२३२ उष दाहे । (७२७)
२०९ घुषिर् शब्दे । (६८३)	२३३ जिषु विषु मिषु सेचने । (७२८-७३०)
२१० अक्षू व्याप्तौ (६८४)	२३४ पुष पुष्टौ । (७३२)
२११ तक्षू त्वक्षू तनूकरणे । (६८५, ६८६)	२३५ श्रिषु शिलषु प्रुषु प्लुषु दाहे । (७३३-७३६)
२१२ उक्ष सेचने । (६८७)	२३६ पृषु वृषु सेचने (७३७, ७३८)
२१३ रक्ष पालने । (६८८)	२३७ मृषु सहने । (७३९)
२१४ णिक्ष चुम्बने । (६८९)	२३८ घृषु संहर्षे । (७४०)
२१५ तृक्ष स्तृक्ष णक्ष गतौ । (६९०-६९२)	२३९ हृषु अलीके । (७४१)
२१६ वक्ष रोषे । (६९३)	२४० तुष हृष ल्हृष रस शब्दे । (७४५)
२१७ अक्ष संघाते (६९४)	२४१ जर्त्स चर्च झर्त्स परिभाषणे । (७४८-७५०)
२१८ त्वक्ष त्वचने ।	२४२ लस क्रीडायाम् । (७४६)
२१९ मूर्क्ष अनादरे । (६९७)	२४३ पिसृ पेसृ गतौ । (७५१, ७५२)
२२० काक्षि वाक्षि माक्षि काङ्क्षायाम् । (६९८-७००)	२४४ घस्लृ अदने । (७४७)
२२१ द्राक्षि ध्राक्षि ध्वाक्षि घोरवाशिते च । (७०१-७०३)	२४५ हसे हसने (७५७)
	२४६ णिशं समाधौ । (७५८)
	२४७ मश मिश शब्दे । (७६०, ७५९)
	२४८ वश गतौ ।

- २४६ शश प्लुतगती । (७६२)
 २५० शसु हिंसायाम् । (७६३)
 २५१ शन्सु स्तुती । (७६४)
 २५२ चह परिकल्कने । (७६५)
 २५३ रह परित्यागे । (७६७)
 २५४ रहि गती । (७६८)
 २५५ दृह दृहि वृह वृहि वृद्धौ ।
 (७६९-७७२)
 २५६ वृहिर् शब्दे । (७७२)
 २५७ तुहिर् दुहिर् अर्दने । (७७३, ७७४)
 २५८ अर्ह मह पूजायाम् । (७७६, ७६६)
 २५९ घेट् पाने । (९५१)
 २६० ग्लै हर्षक्षये (९५२)
 २६१ म्लै गात्रविनामे । (९५३)
 २६२ चै न्यक्करणे । (९५४)
 २६३ द्रै स्वप्ने । (९५५)
 २६४ ध्रै दीप्तौ । (९५६)
 २६५ ध्यै स्मृ चिन्तायाम् । (९५७, ९६०)
 २६६ कै गै रै शब्दे ।
 (९६४, ९६५, ९५८)
 २६७ ष्टचै स्त्रै संघाते च । (९५९)
 २६८ खै खदने । (९६०)
 २६९ क्षै जै षै क्षये । (९६१-९६३)
 २७० श्रै स्रै पाके । (९६६, ९६७)
 २७१ पै ओवै शोषणे । (९६८, ९६९)
 २७२ ष्टै वेष्टने । (९७०)
 २७३ दैप् शोधने । (९७१)
 २७४ पा पाने । (९७२)
 २७५ घ्रा गन्धोपादाने । (९७३)
 २७६ घ्मा शब्दे । (९७४)
 २७७ ष्ठा गतिनिवृत्तौ । (९७५)
 २७८ म्ना अभ्यासे । (९७६)

- २७९ दाण् दाने । (९७७)
 २८० ह्वृ कौटिल्ये । (९७८)
 २८१ स्वृ शब्दे । (९७९)
 २८२ ह्वृ वरणे । (९८१)
 २८३ सृ गती । (९८२)
 २८४ ऋ प्रापणे । (९८३)
 २८५ गृ घृ सेचने । (९८४, ९८५)
 २८६ ध्वृ हूर्छने । (९८६)
 २८७ शु स्रु डु द्रु गती ।
 (९८७, ९९१, ९९२)
 २८८ षु प्रसवे । (९८८)
 २८९ जि जि अभिभवे । (९९३, ९९४)
 २९० तृ प्लवने । (१०१८)
 २९१ क्ष्विदा अव्यक्ते शब्दे । (१०२७)
 २९२ स्कन्दिर् गती । (१०२८)
 २९३ यभ मैथुने । (१०२९)
 २९४ णम प्रह्वत्वे शब्दे च । (१०३०)
 २९५ गम्लृ सृप्लृ गती ।
 (१०३१, १०३२)
 २९६ यमु उपरमे । (१०३३)
 २९७ तप संतापे । (१०३४)
 २९८ त्यज हानौ । (१०३५)
 २९९ षन्ज गती । (१०३६)
 ३०० दृशिर् प्रेक्षणे । (१०३७)
 ३०१ दन्श दशने । (१०३८)
 ३०२ कृष विलेखने । (१०३९)
 ३०३ दह भस्मीकरणे । (१०४०)
 ३०४ मिह सेचने (१०४१)
 ३०५ कित निवासे (१०४२)
 । अतडानाः ।
 ३०६ एध वृद्धौ । (२)
 ३०७ स्पर्ध संहर्षे । (३)

- ३०८ गाधृ प्रतिष्ठायाम् । (४)
- ३०९ बाधृ विलोडने । (५)
- ३१० दध धारणे । (८)
- ३११ स्कुदि आप्रवणे । (९)
- ३१२ श्विदि श्वैत्ये । (१०)
- ३१३ वदि अभिवादाने । (११)
- ३१४ भदि कल्याणे । (१२)
- ३१५ मदि जाड्ये । (१३)
- ३१६ स्पदि किञ्चिच्चलने । (१४)
- ३१७ क्लिदि परिदेवने । (१५)
- ३१८ मुद हर्षे । (१६)
- ३१९ दद दाने । (१७)
- ३२० ष्वद स्वाद स्वर्द आस्वादाने ।
(१८, २८, १९)
- ३२१ उर्द माने । (२०)
- ३२२ कुर्द खुर्द गुर्द क्रीडायाम् ।
(२१, २३)
- ३२३ षूद क्षरणे । (२५)
- ३२४ ह्लाद शब्दे । (२६)
- ३२५ ल्हादी सुखे च । (२७)
- ३२६ पर्द कुत्सिते शब्दे । (२९)
- ३२७ यती प्रयत्ने । (३०)
- ३२८ युतृ जुतृ भाषणे । (३१, ३२)
- ३२९ नाधृ नाथृ विथृ वेथृ याचने ।
(६, ७, ३३, ३४)
- ३३० श्रथि शैथिल्ये । (३५)
- ३३१ ग्रथ कौटिल्ये । (३६)
- ३३२ कत्य श्लाघायाम् । (३७)
- ३३३ शीकृ सेचने । (७५)
- ३३४ लोक् दर्शने । (७६)
- ३३५ श्लोक संघाते । (७७)
- ३३६ द्रेकृ ध्रेकृ वृद्धौ । (७८, ७९)
- ३३७ रेकृ शङ्कायाम् । (८०)
- ३३८ सेकृ सेकृ श्रकृ श्लकृ गत्यर्थाः
(८१, ८२)
- ३३९ शकि शङ्कायाम् । (८६)
- ३४० अकि लक्षणे । (८७)
- ३४१ वकि कौटिल्ये । (८८)
- ३४२ मकि मण्डने । (८९)
- ३४३ कक लौत्ये । (९०)
- ३४४ कुक वृक आदाने । (९१, ९२)
- ३४५ चक तृप्तौ । (९३)
- ३४६ ककि श्वकि त्रकि ढौकृ त्रौकृ ष्वस्क
वस्क मस्क टिकृ टीकृ रधि लधि
गत्यर्थाः । (९४, ९६-१०४,
१०७, १०८)
- ३४७ अधि वधि गत्याक्षेपे ।
(१०९, ११०)
- ३४८ मधि कैतवे च । (११२)
- ३४९ राधृ लाधृ सामर्थ्ये । (११३, ११४)
- ३५० द्राधृ आयासे च । (११७)
- ३५१ श्लाधृ कथने । (११८)
- ३५२ वर्च दीप्तौ । (१७५)
- ३५३ लोचृ दर्शने । (१७७)
- ३५४ षच सेचने । (१७६)
- ३५५ शच श्वचि गतौ । (१८०)
- ३५६ कच बन्धने । (१८१)
- ३५७ कचि दीप्तौ । (१८२)
- ३५८ मचि धारणे । (१८६)
- ३५९ मच मुचि कल्कने । (१८४, १८५)
- ३६० पचि व्यक्तीकरणे । (१८७)
- ३६१ ष्टुच प्रसादे । (१८८)
- ३६२ ईज ऋज गतौ । (१९६, १९९)
- ३६३ ऋजि भृजी भर्जने । (१९०, १९१)

- ३६४ एजू रेजू भ्रेजू ध्राजू दीप्ती ।
(१६२, १६५, १६३, १६४)
- ३६५ अट्ट अतिक्रमे । (२३३)
- ३६६ वेष्ट वेष्टने । (२७४)
- ३६७ चेष्ट चेष्टायाम् । (२७५)
- ३६८ गोष्ट लोष्ट संवाते । (२७६, २७७)
- ३६९ षट् चलने । (२७८)
- ३७० स्फुट विक्रमे । (२७९)
- ३७१ अठि गती । (२८०)
- ३७२ वठि एकत्रयायाम् । (२८१)
- ३७३ मठि कठि शोके । (२८२, २८३)
- ३७४ मुठि पलायने । (२८४)
- ३७५ एठ हेठ विधाधायाम् ।
(२८६, २८५)
- ३७६ हिडि गती । (२८७)
- ३७७ हुडि पिडि मंघाने ।
(२८८, २८३)
- ३७८ कुडि दाहे । (२८९)
- ३७९ वडि मडि वेष्टने ।
(२९०, २९१)
- ३८० भडि परिभाषणे । (२९२)
- ३८१ मुडि मार्जने । (२९४)
- ३८२ तुडि तोडने । (२९५)
- ३८३ भुडि भरणे । (२९६)
- ३८४ स्फुडि विक्रमे । (२९७)
- ३८५ चडि कोपे । (२९८)
- ३८६ शडि रुजायाम् । (२९९)
- ३८७ तडि ताडने । (३००)
- ३८८ पडि गती । (३०१)
- ३८९ कडि मदे । (३०२)
- ३९० खडि मन्थे । (३०३)
- ३९१ होड् अनादरे । (३०५)
- ३९२ वाड् आण्वाङ्गे । (३०६)
- ३९३ प्राड् ध्राड् विमन्थे ।
(३०७, ३०८)
- ३९४ म्हाड् म्हाधाधायाम् । (३०९)
- ३९५ जिन्नेषु ष्टेष्ु धारणायाम् ।
(३१०, ३११, ३१२)
- ३९६ म्हेषु मन्थे । (३१०)
- ३९७ दुधेषु कर्णने । (३११)
- ३९८ केषु मेषु म्हेषु च ।
(३१२-३१४)
- ३९९ केषु पेषु मेषु रेषु गती ।
- ४०० म्पूष् क्त्वायाम् । (३१६)
- ४०१ कवि चलने । (४००)
- ४०२ अवि गच्छे । (४०३)
- ४०३ रवि कवि अचन्द्रमने ।
(४०१, ४०४)
- ४०४ कव् वर्णे । (४०५)
- ४०५ क्लीव् आधाष्टये । (४०६)
- ४०६ क्षीव् मदे । (४०७)
- ४०७ जीम् कन्थने । (४०८)
- ४०८ चीम् च । (४०९)
- ४०९ रेम् गच्छे । (४१०)
- ४१० ष्टभि स्तभि स्फभि प्रतिबन्धे ।
(४१३, ४१४)
- ४११ जभि जृभि गात्रविनामे । (४१६)
- ४१२ शल्भ कर्तयने । (४१७)
- ४१३ बल्भ भोजने । (४१८)
- ४१४ गल्भ घाण्ट्ये । (४१९)
- ४१५ श्रन्भु प्रमादे । (४२०)
- ४१६ ष्टुम् स्तम्भे । (४२१)
- ४१७ घिणि घृणि घृणि ग्रहणे ।
(४६१, ४६२)

- ४१८ घुण घूर्ण भ्रमणे । (४६४, ४६५) ४४४ भिक्ष याञ्चायाम् । (६३७)
- ४१९ पन स्तुतौ । (४६७) ४४५ क्लेश बाधने । (६३८)
- ४२० पण व्यवहारे । (४६६) ४४६ दक्ष वृद्धौ । (६३९)
- ४२१ भाम क्रोधे । (४६८) ४४७ दीक्ष मौण्डचे । (६४०)
- ४२२ क्षमूष् सहने । (४६९) ४४८ ईक्ष दर्शने । (६४१)
- ४२३ कमु कान्तौ । (४७०) ४४९ ईष गतौ । (६४२)
- ४२४ अय वय मय चय तय णय रय
गतौ । (५०३, ५०४, ५०६-
५०९, ५११) ४५० भाष वचने । (६४३)
- ४२५ दय रक्षणे । (५१०) ४५१ स्पर्श स्नेहने ।
- ४२६ ऊयी तन्तुसंताने । (५१२) ४५२ ग्लेषु अन्विच्छायाम् । (६४५)
- ४२७ पूयी विशरणे । (५१३) ४५३ येषु प्रयत्ने ।
- ४२८ कनूयी शब्दे । (५१४) ४५४ जेषु णेषु एषु ह्लेषु गतौ । (६४७-
६५०)
- ४२९ क्षमायी विधूनने । (५१५) ४५५ रेषु अव्यक्ते शब्दे । (६५१)
- ४३० स्फायी ओप्यायी वृद्धौ ।
(५१६, ५१७) ४५६ काशू भासू दीप्ता । (६७८, ६५५)
- ४३१ तायू संताने । (५१८) ४५७ कासू णासू रासू हेसू शब्दे ।
(६५४, ६५६, ६५७, ६५२)
- ४३२ शल चलने । (५१९) ४५८ णस कौटिल्ये । (६५८)
- ४३३ बल संवरणे । (५२०) ४५९ भ्यस भये । (६५९)
- ४३४ मल मल्ल धारणे । (५२२, ५२३) ४६० आडः शन्सु इच्छायाम् (६६०)
- ४३५ भल भल्ल परिभाषणे ।
(५२४, ५२५) ४६१ ग्रसु ग्लसु अदने । (६६१, ६६२)
- ४३६ कल संख्याने । (५२६) ४६२ ईह चेष्टायाम् । (६६३)
- ४३७ कल्ल अव्यक्ते शब्दे । (५२७) ४६३ बहि महि वृद्धौ । (६६४, ६६५)
- ४३८ तेवृ देवृ देवने । (५२८, ५२९) ४६४ अहि गतौ । (६६६)
- ४३९ षेवृ शेवृ केवृ गोवृ ग्लेवृ पेवृ मेवृ
म्लेवृ सेवने । (५३०, ५३६, ५३९,
५३१-५३५) ४६५ गर्ह गल्ह कुत्सने । (६६७, ६६८)
- ४४० रेवृ प्लवगतौ । (५४०) ४६६ वर्ह बल्ह प्राधान्ये । (६६९, ६७०)
- ४४१ धुक्ष धिक्ष संदीपने । (६३३, ६३४) ४६७ प्लीह गतौ ।
- ४४२ वृक्ष वरणे । (६३५) ४६८ वेह जेह वाह प्रयत्ने । (६७४-६७६)
- ४४३ शिक्ष विद्योपादाने । (६३६) ४६९ द्राह निद्राक्षये । (६७७)
- ४४४ ४७० ऊह वितर्के । (६७९)
- ४४५ ४७१ गाह विलोडने । (६८०)
- ४४६ ४७२ गूह ग्रहणे (६८१).
- ४४७ ४७३ घुषिर् करणे ।

- ४७४ स्मिद्ध विहसने । (६६६)
- ४७५ गुड अव्यवर्ते शब्दे । (६६७)
- ४७६ गाड गती । (६६८)
- ४७७ घुड कुड कुड उड शब्दे ।
(१०००, ६६६, १००२, १००१)
- ४७८ च्युड क्युड ज्युड स्युड प्रुड
प्लुड रुड गती । (१००४-१००८)
- ४७९ धृड अवध्वंसने । (१००९)
- ४८० मेड प्रतिदाने । (१०१०)
- ४८१ देड रक्षणे । (१०११)
- ४८२ श्यैड गती । (१०१२)
- ४८३ प्यैड वृद्धौ । (१०१३)
- ४८४ त्रैड पालने । (१०१४)
- ४८५ पूड पवने । (१०१५)
- ४८६ मूड वन्धने । (१०१६)
- ४८७ डीड आकाशगमने । (१०१७)
- ४८८ गुप् गोपने । (१०१८)
- ४८९ तिज निशाने । (१०२०)
- ४९० मान पूजायाम् । (१०२१)
- ४९१ वव वन्धने । (१०२२)
- ४९२ रभ आरम्भे । (१०२३)
- ४९३ डुलभष् प्राप्ती । (१०२४)
- ४९४ ष्वन्ज परिष्वङ्गे । (१०२५)
- ४९५ हृद पुरीषोत्सर्गे । (१०२६)
- ४९६ द्युता दीप्तौ । (७७७)
- ४९७ श्रिता वर्णे । (७७८)
- ४९८ मिदा ण्विदा क्षिवा स्नेहने
(७७९, ७८०)
- ४९९ रुच दीप्तौ । (७८१)
- ५०० घुट परिवर्तने । (७८२)
- ५०१ रुट लुट प्रतीघाते । (७८३, ७८४)
- ५०२ शुभ दीप्तौ । (७८६)
- ५०३ शुभ संचलने । (७८७)
- ५०४ षभ गुग द्विसायाम् । (७८८,
७८९)
- ५०५ सन्मु भ्रन्मु प्रयत्नगने । (७९०, ७९२)
- ५०६ ध्वन्मु गती । (७९३)
- ५०७ सन्मु विभागे । (७९४)
- ५०८ वृन् वृत्तने । (७९५)
- ५०९ वृष् वृद्धौ । (७९६)
- ५१० शृष् शब्दकृत्यायाम् । (७९७)
- ५११ स्यन्मु नववर्णे । (७९८)
- ५१२ कृष् नामर्थे । वृन् । (७९९)
- ५१३ षट चोष्टायाम् । (८००)
- ५१४ व्यथ दुःखे । (८०१)
- ५१५ प्रथ पृन् विस्तारे । (८०२)
- ५१६ अद मृदु गर्दने । (८०४)
- ५१७ स्रवद स्रवदने । (८०५)
- ५१८ क्षजि दक्ष गती । (८०६, ८०७)
- ५१९ कृप कृपायाम् । (८०८)
- ५२० कदि क्रदि कलदि वैवल्लव्ये ।
(८०९-८११)
- ५२१ त्वरा संभ्रमे । (८१२)
- ५२२ घटादयः पित्तः तडानिनः ।
- ५२३ ज्वर रोगे । (८१३)
- ५२४ गड सेचने । (८१४)
- ५२५ हेड वेष्टने । (८१५)
- ५२६ वट भट परिभाषणे । (८१६, ८१७)
- ५२७ नट नृती । (८१८)
- ५२८ चक तृप्तौ । (८२०)
- ५२९ ष्टक प्रतीघाते । (८१९)
- ५३० कखे हसने । (८२१)
- ५३१ रगे शङ्कायाम् । (८२२)
- ५३२ लगे सङ्गे । (८२३)

५३३ ह्रगे ह्रगे षगे षठगे संवरणे ।
(८२४-८२७)

५३४ अक अग कुटिलायां गतौ ।
(८२६, ८३०)

५३५ कण रण गतौ (८३१, ८३२)

५३६ श्थथ ऋथ क्लथ हिंसायाम् ।
(८३६, ८३८, ८३९)

५३७ ज्वल दीप्तौ । (८४२)

५३८ ज्वल ह्वल ह्यल चलने । (८४३
८४४)

५३९ स्मृ अध्ययने । (८४५)

५४० दृ भये । (८४६)

५४१ नृ नये । (८४७)

५४२ श्रा पाके । (८४८)

५४३ मारण-तोषण-निशानेषुज्ञा । (८४९)

५४४ कम्पने चलिः । (८५०)

५४५ ऊर्जने छदिः । (८५१)

५४६ जिह्वोन्मथने लडिः । (८५२)

५४७ हर्ष-ग्लेपनयोः मदिः । (८५३)

५४८ घटादयो मितः ।

५४९ जनी-जू-क्नसु-रञ्जः अमन्ताश्च ।
(८६२-८६६)

५५० ज्वल-ह्वल-ह्यल-नमाम् अप्रादीनां च ।
(८६७)

५५१ ग्ला-स्ना-वनु-वमां च । (८६८)

५५२ न कमि-अमि-चमाम् (८६९)

५५३ शमो दर्शने । (८७०)

५५४ यमोऽपरिवेषणे । (८७१)

५५५ स्वदेः अप-परिभ्यां च । (८७२)

५५६ फण गतौ । वृत् (८७३)

अतडानाः ।

५५७ राज् दीप्तौ । (८७४)

विभाषितः ।

५५८ भ्राजू टुभ्राशृ टुभ्लाशृ दीप्तौ ।
(८७५-८७७)

तडानिनः ।

५५९ स्यमु स्वन ध्वन शब्दे (८७८
८७९, ८८१)

५६० षम ष्टम वैकलव्ये । (८८२, ८८३)

५६१ ज्वल दीप्तौ । (८८४)

५६२ चल कम्पने । (८८५)

५६३ जल धान्ये । (८८६)

५६४ टल ट्वल वैकलव्ये (८८७, ८८८)

५६५ ष्ठल स्थाने । (८८९)

५६६ हल विलेखने । (८९०)

५६७ णल गन्धे । (८९१)

५६८ पल गतौ । (८९२)

५६९ बल प्राणने । (८९३)

५७० पुल महत्त्वे । (८९४)

५७१ कुल संस्त्याने । (८९५)

५७२ शल हुल पल्लु पथे गतौ ।

(८९६-८९८, ९००)

५७३ क्वथे निष्पाके । (८९९)

५७४ मथे विलोडने । (९०१)

५७५ टुवम उद्गिरणे । (९०२)

५७६ भ्रमु चलने । (९०३)

५७७ क्षर संचलने । (९०४)

अतडानाः ।

५७८ षह मर्षणे । (९०५)

५७९ रमु क्रीडायाम् । (९०६)

तडानिनौ ।

५८० षद्लृ विशरणे । (९०७)

५८१ शद्लृ शातने । (९०८)

५८२ कुश आह्वाने (९०९)

५८३ कुच कौटिल्ये । (९१०)

५८४ बुध बोधने । (९११)

५८५ युध संप्रहारे ।	६१३ अप आदाने । (६४०)
५८६ रुह प्राटुभावे । (६१२)	६१४ भध भक्षणे । (६४१)
५८७ कस गती । वृत् (६१३)	६१५ दाग् दाने । (६४२)
अतङानाः ।	६१६ माह् माने । (६४३)
५८८ हिवक शब्दे । (६१४)	६१७ गृह् संवरणे । (६४४)
५८९ धावु गति-शुद्धयोः । (६३२)	६१८ श्रि सेवायाम् । (६४५)
५९० अन्चु गती । (६१५)	६१९ ह्य् हरणे । (६४६)
५९१ टुयान् यात्रायाम् । (६१६)	६२० भृन् भरणे । (६४७)
५९२ रेट् परिभाषणे । (६१७)	६२१ वृ वारणे । (६४८)
५९३ चते चदे च याचने । (६१८)	६२२ णी प्रापणे । (६४९)
५९४ प्रोशृ पर्याप्तौ । (६१९)	६२३ दान अवन्वयने । (१०४३)
५९५ मेघृ संगमे । (६२०)	६२४ शान तेजने । (१०४४)
५९६ णिदृ णेदृ संनिकर्षे । (६२१)	६२५ डुपचम् वाक्ते । (१०४५)
५९७ मिदृ मेदृ मेधा-हिसयोः । (६२०)	६२६ भज सेवायाम् । (१०४६)
५९८ शृधु मृधु उन्दे । (६२२, ६२३)	६२७ रज्ज रामे । (१०४८)
५९९ वुध बोधने । (६२४)	६२८ शप आक्रोशे । (१०४९)
६०० उचुन्दिर् निशाने (६२५)	६२९ त्विष दीप्तौ (१०५०)
६०१ र्वेणु गती । (६२६)	६३० यज देवपूजायाम् । (१०५१)
६०२ खनु अवदारणे (६२७)	६३१ डुवप व्रीजनिक्षेपे । (१०५२)
६०३ चीवृ आदाने (६२८)	६३२ वह प्रापणे । (१०५३)
६०४ चायृ पूजायाम् । (६२९)	६३३ वेञ् तन्तुसंताने (१०५५)
६०५ व्यय गती । (६३०)	६३४ व्येञ् संवरणे । (१०५६)
६०६ दागृ दाने । (६३१)	६३५ ह्येञ् स्पर्धायाम् । (१०५७)
६०७ भेषृ भये । (६३२)	द्विभाषिताः ।
६०८ अस गती । (६३४)	६३६ वस निवासे । (१०५४)
६०९ स्पश वाधने । (६३६)	६३७ वद वचने । (१०५८)
६१० लष कान्तौ । (६३७)	६३८ टुओधि गतिवृद्धौ । वृत् ।
६११ चष भक्षणे । (६३८)	(१०५९)
६१२ कष हिसायाम् । (६३९)	अतङानाः ।

भूवादयः समाप्ताः ॥१॥

१. हेमचन्द्रसंगृहीते धातुभाटे माधवीयधातुवृत्तौ च अनुक्रमेण "ओङु-दृग्-निशामने" "उचुन्दिर् निशामने" इति धातुः ।

२. एवं तयोरेव ग्रन्थयोः "त्रेणु गति-ज्ञान-चिन्ता-निशामन-वादिग्रहणेणु" इति ।

- १ अद प्सा भक्षणे । (१, ४६) ३४ चकासृ दीप्तौ । (६५)
 २ षस स्वप्ने । (६६) ३५ शासृ अनुशिष्टौ । (६६)
 ३ वश कान्तौ (७०) ३६ यङ्लुक् च । (७१)
 ४ हन हिंसायाम् । (२) अतङानाः ।
 ५ चु अभिगमने । (३१) ३७ चक्ष वचने । (७)
 ६ यु मिश्रणे । (२३) ३८ ईर गतौ । (८)
 ७ णु स्तुतौ । (२६) ३९ ईड स्तुतौ । (९)
 ८ क्षणु तेजने (२८) ४० ईश ऐश्वर्ये । (१०)
 ९ णु प्रस्रवणे । (२९) ४१ आस उपवेशने । (११)
 १० टुक्षु रु कु शब्दे । (२७, २४, ३३) ४२ आङः शासु इच्छायाम् । (१२)
 ११ इक् स्मरणे । (३८) ४३ वस आच्छादने । (१३)
 १२ इण् वी वा गतौ । (३६, ३९, ४१) ४४ कसि गतौ । (१४)
 १३ या प्रापणे (४०) ४५ णिसि चुम्बने । (१५)
 १४ भा दीप्तौ । (४२) ४६ णिजि शुद्धौ । (१६)
 १५ षणा शौचे । (४३) ४७ शिजि शब्दे । (१७)
 १६ श्रा पाके । (४४) ४८ वृजी वर्जने । (१९)
 १७ द्रा पलायने । (४५) ४९ पृची संपर्के । (२०)
 १८ पा रक्षणे (४७) ५० षूङ् प्रसवे । (२१)
 १९ रा ला आदाने । (४८, ४९) ५१ शीङ् स्वप्ने । (२२)
 २० दाप् लवने (५०) ५२ इङ् अध्ययने । (३७)
 २१ ख्या प्रकथने (५१) ५३ दीधीङ् दीप्तौ । (६७)
 २२ प्रा पूरणे (५२) ५४ वेवीङ् गतौ । (६८)
 २३ मा माने । (५३) ५५ ह्रूङ् अपनयने । (७२)
 २४ विद ज्ञाने । (५५) तङानिनः ।
 २५ अस भुवि । (५६) ५६ द्विष अप्रीतौ । (३)
 २६ मृजू शुद्धौ (५७) ५७ दुह प्रपूरणे । (४)
 २७ वच् भाषणे । (५४) ५८ दिह उपचये । (५)
 २८ रुदिर् अश्रुविमोक्षणे । (५८) ५९ लिह आस्वादने । (६)
 २९ षत्रप शये । (५९) ६० ऊर्णुञ् आच्छादने । (३०)
 ३० अन श्वस प्राणने । (६१, ६०) ६१ ष्टु स्तुतौ । (३४)
 ३१ जक्ष भक्षणे । (६२) ६२ ब्रू वचने । (३५)
 ३२ जागृ निद्राक्षये । (६३) विभाषिताः ।
 ३३ दरिद्रा दुर्गतौ (६४)

- | | |
|------------------------------|----------------------------------|
| १ हु हवने । (१) | १३ जन जनने । (२४) |
| २ भी भये । (२) | १४ ना स्तुती । (२५) |
| ३ ह्री लज्जायाम् । (३) | अतजानाः । |
| ४ प पालने । (४) | १५ णिजिर् युद्धी । (११) |
| ५ ओहाक् त्यागे । (८) | १६ विजिर् पृथग्भावे । (१२) |
| ६ घृ क्षरणे । (१४) | १७ विष्णु व्याप्ती । वृत् । (१३) |
| ७ ऋ सृ गती । (१६, १७) | १८ दुदा दाने । (६) |
| ८ भस भर्त्सने । (१८) | १९ दुधाञ् दुभृञ् धारणे । (१०, ५) |
| ९ कि कित्त ज्ञाने । (१९, २०) | विभाषिताः । |
| १० तुर त्वरणे । (२१) | २० माङ् माने । (६) |
| ११ धिष शब्दे । (२२) | २१ ओहाङ् गती । (७) |
| १२ धन धान्ये । (२३) | तजानिनी । |

जुहोत्यादयः समाप्ताः ॥ ३ ॥

- | | |
|---|------------------------------|
| १ दिवु क्रीडायाम् । (१) | १८ शो तनूकरणे । (३७) |
| २ षिवु तन्तुसंताने । (२) | १९ छो छेदने । (३८) |
| ३ श्रिवु सिवु गती । | २० षो अवसाने । (३९) |
| ४ ष्ठिवु क्षिवु निरसने । (४) | २१ दो अवखण्डने । (४०) |
| ५ क्तसु ह्वरणे । (६) | २२ राघ नाघ संसिद्धी । (७१) |
| ६ नृती नाट्ये । (९) | २३ व्यघ ताडने । (७२) |
| ७ त्रसी भये । (१०) | २४ पुष पुष्टी । (७३) |
| ८ कुथ पूतिभावे । (११) | २५ शुष शोषणे । (७४) |
| ९ पुथ हिंसायाम् । (१२) | २६ तुष प्रीती । (७५) |
| १० गुष वेष्टने । (१३) | २७ दुष वैकृत्ये । (७६) |
| ११ क्षिष प्रेरणे । (१४) | २८ श्लिष आलिङ्गने । (७७) |
| १२ पुष्य विकसने । (१५) | २९ ष्विदा पाके । (७९) |
| १३ तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रभावे
(१६, १७) | ३० ऋष कोपे । (८०) |
| १४ व्रीड चोदने । (१८) | ३१ क्षुष वृभुक्षायाम् । (८१) |
| १५ इष गती । (१९) | ३२ शुष शीचे । (८२) |
| १६ षुह शक्तौ । (२१) | ३३ षिधु संराद्धी । (८३) |
| १७ जृष् झृष् जरायाम् । (२२, २३) | ३४ रध हिंसायाम् । (८४) |
| | ३५ णश अदर्शने । (८५) |

- ३६ तृप तृप्ती । (८६)
 ३७ दृप हर्षे । (८७)
 ३८ द्रुह द्रोहे । (८८)
 ३९ मुह वैचित्त्ये । (८९)
 ४० ण्णुह उर्द्धरणे । (९०)
 ४१ णिह प्रीतौ । वृत् । (९१)
 ४२ शमु दमु उपशमे । (९२, ९४)
 ४३ तमु काङ्क्षायाम् । (९३)
 ४४ श्रमु खेदे । (९५)
 ४५ भ्रमु अनवस्थाने । (९६)
 ४६ क्षमूष् सहने । (९७)
 ४७ क्लमु ग्लानौ । (९८)
 ४८ मदी हर्षे । (९९)
 ४९ असु क्षेपणे । (१००)
 ५० यसु प्रयत्ने । (१०१)
 ५१ जसु मोक्षणे । (१०२)
 ५२ तसु दसु उपक्षेपे । (१०३, १०४)
 ५३ वसु स्तम्भे । (१०५)
 ५४ प्युष विभागे । (१०६)
 ५५ प्लुष दाहे । (१०७)
 ५६ विस प्रेरणे । (१०८)
 ५७ कुस श्लेषणे । (१०९)
 ५८ वुस उत्सर्गे । (११०)
 ५९ मुष खण्डने । (१११)
 ६० पसी मसी परिमाणे । (११२)
 ६१ लुट विलोटने । (११३)
 ६२ उच समवाये । (११४)
 ६३ भृशु भ्रन्शु अधःपतने । (११५)
 ६४ वृश वरणे । (११६)
 ६५ कृश तनूकरणे । (११७)
 ६६ तृप पिपासायाम् । (११८)
 ६७ हृष तुष्टौ । (११९)
 ६८ रुष रोषे । (१२०)
 ६९ डिप क्षेपे । (१२१)
 ७० स्तूप समुच्छ्राये । (१२७)
 ७१ कुप क्रोधे । (१२२)
 ७२ गुप व्याकुलत्वे । (१२३)
 ७३ युप रुप लुप विमोहने (१२४-१२६)
 ७४ लुभ गाध्यै । (१२८)
 ७५ क्षुम संचलने । (१२९)
 ७६ णभ तुभ हिंसायाम् । (१३०, १३१)
 ७७ क्लिद्व आर्द्रभावे । (१३२)
 ७८ मिदा स्नेहने (१३३)
 ७९ क्षिवदा मोचने । (१३४)
 ८० ऋधु वृद्धौ । (१३५)
 ८१ गृधु अभिकाङ्क्षायाम् (१३६)
 अतडानाः ।
 ८२ षूङ् प्राणिप्रसवे (२४)
 ८३ दूङ् परितापे । (२५)
 ८४ दीङ् क्षये । (२६)
 ८५ डीङ् गतौ । (२७)
 ८६ धीङ् अनादरे । (२८)
 ८७ मीङ् हिंसायाम् (२९)
 ८८ रीङ् स्रवणे । (३०)
 ८९ लीङ् श्लेषणे (३१)
 ९० व्रीङ् वरणे । (३२)
 ९१ स्वादय ओदितः ।
 ९२ पीङ् पाने । (३३)
 ९३ ईङ् गतौ । (३५)
 ९४ प्रीङ् प्रीतौ । (३६)
 ९५ जनी प्रादुर्भावे (४१)
 ९६ दीपी दीप्तौ । (४२)
 ९७ पूरी आप्यायने । (४३)
 ९८ तूरी त्वरायाम् । (४४)

६६ जूरी जरायाम् (४८)	११२ अनोः रुष कामे । (६१)
१०० गूरी घूरी धूरी झूरी हिंसायाम् । (४६, ४७, ४९, ४९)	११३ मन जाने । (६७)
१०१ चूरी दाहे । (५०)	११४ गृज समाधौ । (६८)
१०२ तप अश्रये । (५१)	११५ गृज विरामे । (६६)
१०३ वावृतु वर्तने । (५२)	११६ लुञो विनाशे ।
१०४ रक्लिञ उपतापे । (५२ अ)	११७ क्लिञ अल्पीभावे । (७०)
१०५ कागृ दीप्तौ । (५३)	तज्जनितः ।
१०६ वागृ गन्दे । (५४)	११८ गृक गृष क्षान्ती । (७८, ५५)
१०७ पद गती । (६०)	११९ ईयुचिर् पूतिभावे (५६)
१०८ खिद असहने । (६१)	१२० णहृ वन्वने । (५७)
१०९ विद सत्तायाम् । (६२)	१२१ रञ्ज रागे । (५८)
११० बुध अवगमने । (६३)	१२२ शप आक्रोशे । (५९)
१११ युध संप्रहारे । (६४)	विभाषिताः ।

दिवादयः समाप्ताः ॥४॥

१ पुञ् अभिषवे । (१)	१२ क्षि क्षये । (३०)
२ पि वन्वने । (२)	१३ पृ स्पृ प्रीतौ । (१२, १३)
३ शि निशाने । (३)	१४ आण्टु व्याप्तौ । (१४)
४ डुमिञ् प्रक्षेपणे । (४)	१५ शकलृ शकती । (१५)
५ चि चये । (५)	१६ श्रु श्रवणे ।
६ स्तृ आच्छादने । (६)	१७ राध साध संसिद्धौ । (१६, १७)
७ कृ हिंसायाम् (७)	१८ पघ तिक ष्टिक हिंसायाम् ।
८ वृञ् वरणे । (८)	(२१, २०)
९ धूञ् कम्पने । (९)	१९ धूषा प्रागल्भ्ये । (२२)
विभाषिताः ।	२० दन्मु दम्भे । (२३)
१० टुद्दु उपतापे । (१०)	२१ ऋधु वृद्धौ । (२४)
११ हि गती । (११)	

१. हेमे धातुपाठे माधवीये च "वृत्तुचि वरणे" "वृत्तु वरणे" इति धातुः । "तप अश्रये वा" इत्यस्य धातोः माधवीयवृत्तौ एवं निदिष्टम्—"केचिदिह वाग्रहणं वक्ष्यमाणस्य "वृत्तु वरणे" इत्यस्य आद्यांशमिच्छन्ति 'वावृतु वरणे' इति । तथा च भट्टिः "ततो वावृत्यमाना सा रामशालां न्यविक्षत" इति । (माध० वृ०पृ० २९३)

२. माधवीयायां धातुवृत्तौ अयं धातुः ५३—त्रिपञ्चाशत्तमः ।

- २२ ऋक्ष चिरि जिरि हिंसायाम् । २४ अशू व्याप्तौ । । (१८)
 (२६-३२) २५ ष्टिघ स्कन्दने । (१९)
 २३ तृप प्रीणने । (२५) तडानिनौ ।
 अतडानाः ।

स्वादयः समाप्ताः ॥ ५ ॥

- | | |
|-------------------------------------|--------------------------------|
| १ तुद व्यथने । (१) | २६ उवज आर्जवे । (२०) |
| २ णुद प्रेरणे । (२) | २७ उदञ्ज उत्सर्गे । (२१) |
| ३ दिश अतिसर्जने । (३) | २८ लुभ विमोहने । (२२) |
| ४ भ्रस्ज पाके । (४) | २९ ऋफ कत्थने । |
| ५ क्षिप प्रेरणे । (५) | ३० ऋफ ऋन्फ हिंसायाम् । (३०) |
| ६ कृष विलेखने (६) | ३१ तृप तृन्प तृप्तौ । (२४) |
| ७ मिल संगमे । (१३५) | ३२ दृप दृन्प उत्कलेशे (२८) |
| ८ मुच्लृ मोक्षणे । (१३६) | ३३ गुफ गुन्फ ग्रन्थे । (३१) |
| ९ लुप्लृ छेदने । (१३७) | ३४ उभ उन्भ पूरणे । (३२) |
| १० विद्लृ लाभे । (१३८) | ३५ शुभ शुन्भ शोभार्थे । (३३) |
| ११ लिप उपदेहे । (१३९) | ३६ दृभी ग्रन्थे । (३४) |
| १२ षिच क्षरणे । (१४०) | ३७ चृती हिंसायाम् । (३५) |
| विभाषिताः । | ३८ विध विधाने । (३६) |
| १३ कृती छेदने । (१४१) | ३९ जुन शुन गतौ । (३७, ४६) |
| १४ खिद परिघाते । (१४२) | ४० पृड मृड सुखने । (३९, ३८) |
| १५ पिश अवयवे । वृत् । (१४३) | ४१ पृण प्रीणने । (४०) |
| १६ ऋषी गतौ । (७) | ४२ मृण हिंसायाम् । (४१) |
| १७ ओव्रश्चु छेदने । (११) | ४३ तुण कौटिल्ये । (४२) |
| १८ व्यच व्याजीकरणे । (१२) | ४४ पुण शुभे । (४३) |
| १९ उछि उञ्छे । (१३) | ४५ मुण प्रतिज्ञाने । (४४) |
| २० उछी विवासे । (१४) | ४६ कुण शब्दे । (४५) |
| २१ ऋछ गतौ । (१५) | ४७ द्रुण हिंसायात् । (४७) |
| २२ मिछ उत्कलेशे । (१६) | ४८ घुण घूर्ण भ्रमणे । (४८, ४९) |
| २३ जत्सर् चर्च झर्झ परिभाषणे । (१७) | ४९ पुर ऐश्वर्ये (५०) |
| २४ त्वच संवरणे । (१८) | ५० कुर शब्दे । (५१) |
| २५ ऋच स्तुतौ । (१९) | ५१ खुर छुर छेदने । (५२, ७९) |

- ५२ मुर संवेष्टने (५३)
 ५३ क्षुर विलेखने । (५४)
 ५४ घुर भीमे । (५५)
 ५५ पुर अग्रगमने । (५६)
 ५६ वृह उद्यमे । (५७)
 ५७ तृह स्तृह तृह हिंसायाम् (५८)
 ५८ इपु इच्छायाम् । (५९)
 ५९ मिप स्पर्धायाम् । (६०)
 ६० किल क्रीडायाम् (६१)
 ६१ तिल स्नेहने (६२)
 ६२ चिल वसने । (६३)
 ६३ चल विलसने (६४)
 ६४ इल गती । (६५)
 ६५ विल भेदे । (६७)
 ६६ णिल गहने । (६८)
 ६७ हिल हावे । (६९)
 ६८ शिल पिल उञ्छे । (७०)
 ६९ लिख लेखने । (७२)
 ७० कुट कौटिल्ये । (७३)
 ७१ पुट संश्लेषणे । (७४)
 ७२ कुच संकोचने (७५)
 ७३ गुज शब्दे । (७६)
 ७४ गुड रक्षायाम् । (७७)
 ७५ डिप क्षेपे । (७८)
 ७६ हुड संघाते । (१०२)
 ७७ स्फुट भेदे । (८०)
 ७८ मुट प्रमर्दने (८१)
 ७९ त्रुट चुट छेदने । (८२, ८४)
 ८० तुट कलहे । (८३)
 ८१ जुड बन्धे । (८५)
 ८२ लुट संश्लेषणे ।
 ८३ कृड घसने (८८)

- ८४ कुट वाहृत्ये । (८९)
 ८५ कुट विलसने ।
 ८६ कुट प्रतीपाते । (९१)
 ८७ तुड श्रुड स्फुट कुड श्रुड संश्लेषणे ।
 (९२, ९३, ९७, ९९)
 ८८ स्फुर चकने । (९५)
 ८९ स्फुड संश्लेषणे च । (९६)
 ९० पू स्तुती । (१०४)
 ९१ धू विधूनने । (१०५)
 ९२ गुध पुरीषोक्त्यर्थे ।
 ९३ ध्रुव स्वयं । (१०७)

अतडानाः ।

- ९४ गुरी उद्यमे । (१०३)
 ९५ कुड शब्दे । वृत् । (१०८)
 ९६ पृड व्यायामे । (१०९)
 ९७ मृड प्राणत्वाने । (११०)
 ९८ जुपी शेषायाम् । (=)
 ९९ ओविजी उद्यमे । (९)

१०० ओलजी ओलस्त्री व्रीडे । (१०)
तडानिनः ।

- १०१ रि पि गती । (१११, ११२)
 १०२ धि धारणे । (११३)
 १०३ धि निवासे । (११४)
 १०४ पू प्रेरणे (११५)
 १०५ कृ विक्रमे । (११६)
 १०६ ग निगरणे । (११७)

अतडानाः ।

- १०७ दृड आदरे । (११८)
 १०८ धृड अवस्थाने । (११९)

तडानिनौ ।

- १०९ प्रछ प्रश्ने । (१२०)
 ११० सृज विसर्गे । (१२१)

१११ टुमस्जो शुद्धौ । (१२२)	११७ स्पृश संस्पर्शौ । (१२८)
११२ रुजो भङ्गे । (१२३)	११८ विश प्रवेशने । (१३०)
११३ भुजो कौटिल्ये । (१२४)	११९ मृश आमर्शौ । (१३१)
११४ छुप स्पर्शौ । (१२५)	१२० षद्लृ अवसादे । (१३३)
११५ रुश रिश हिंसायाम् । (१२६)	१२१ शद्लृ शातने । (१३४)
११६ लिश विछ गतौ । (१२७, १२९)	अतङानाः ।

तुदादयः समाप्ताः ॥ ६ ॥

१ रुधिर् आवरणे । (१)	१३ भन्जो आमर्दने । (१६)
२ भिदिर् विदारणे । (२)	१४ भुज पालने । (१७)
३ छिदिर् द्वैधीकरणे । (३)	१५ तृह हिंसि हिंसायाम् (१८, १९)
४ रिचिर् विरेचने । (४)	१६ उन्दी क्लेदने । (२०)
५ विचिर् पृथग्भावे । (५)	१७ अन्जू व्यक्तौ । (२१)
६ क्षुदिर् संपेषणे (६)	१८ तन्चू संकोचने । (२२)
७ युजिर् योगे । (७)	१९ वृजी वर्जने । (२४)
८ उच्छृदिर् दीप्तौ । (८)	२० पृची संपर्के । (२५)
९ उत्तृदिर् हिंसायाम् । (९)	अतङानाः ।
विभाषिताः ।	२१ इन्धी दीप्तौ । (११)
१० कृती वेष्टने । (१०)	२२ खिद दैन्ये । (१२)
११ शिष्ठृ विशेषणे । (१४)	२३ विद विचारे । (१३)
१२ पिष्ठृ संचूर्णने । (१५)	तङानिनः ।

रुधादयः समाप्ताः ॥ ७ ॥

१ तनु विस्तारे । (१)	७ डुकृञ् करणे । (१०)
२ षणु दाने । (२)	विभाषिताः ।
३ क्षणु हिंसायाम् । (३)	८ वनु याचने । (८)
४ ऋणु गतौ । (५)	९ मनु बोधने । (९)
५ तृणु अदने । (६)	तङानिनौ ।
६ घृणु दीप्तौ । (७)	

तनादयः समाप्ताः ॥ ८ ॥

१ डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये । (१)	४ मी हिंसायाम् । (४)
२ प्रीञ् तर्पणे । (२)	५ पि यु वन्धने । (५, ६)
३ श्री पाके । (३)	६ स्कु आप्रवणे । (६)

- ७ वन्यूयी शब्दे ।
 ८ पूञ् पवने । (१२)
 ९ लू छेदने । (१३)
 १० स्मृ छादने (१४)
 ११ कृ हिंसायाम् (१५)
 १२ वृ वरणे । (१६)
 १३ धूञ् कम्पने । (१७)
 १४ ग्रह उपादाने । (६१)

विभाषिताः ।

- १५ गृ मृ हिंसायाम् । (१८, २२)
 १६ पृ पूरणे । (१९)
 १७ भृ भर्त्सने । (२१)
 १८ दृ विदारणे । (२३)
 १९ जृ जरायाम् । (२४)
 २० नृ नये । (२५)
 २१ गृ शब्दे । (२८)
 २२ ज्या हानौ । (२९)
 २३ व्ली री ऋ गतौ । (३२, ३०, २७)
 २४ ली द्रवीकरणे । वृत् । (३१)
 २५ व्री वरणे । (३३)
 २६ भी भये ।
 २७ क्षिष् हिंसायाम् । (३५)
 २८ ज्ञा अवबोधने । (३६)

- २९ वन्ध वन्धने । (३७)
 ३० श्रन्थ ग्रन्थ संदर्भे । (३९, ४१)
 ३१ मन्थ विलोडने । (४०)
 ३२ कुन्थ संश्लेषणे । (४२)
 ३३ मृद क्षोदे । (४३)
 ३४ पृड मृड सुखने । (४४)
 ३५ गुध रोपे । (४५)
 ३६ कुष निष्कर्षे । (४६)
 ३७ क्षुभ संचलने । (४७)
 ३८ णभ तुभ हिंसायाम् । (४८, ४९)
 ३९ क्लिश बाधने । (५०)
 ४० अश भोजने । (५१)
 ४१ उधस् उच्छे । (५२)
 ४२ इष आभीक्ष्ये । (५३)
 ४३ विष विप्रयोगे । (५४)
 ४४ पुष पुष्टौ । (५७)
 ४५ प्रुष प्लुष स्नेहने । (५५, ५६)
 ४६ मुष स्तेये । (५८)
 ४७ खव प्रादुर्भावे । (५९)
 अतडानाः ।

- ४८ वृङ् संभक्तौ । (३८)
 तडानी ।

कृचादयः समाप्ताः ॥ ९ ॥

- १ चुर स्तेये । (१)
 २ चिति स्मृत्याम् । (२)
 ३ यत्रि संकोचने । (३)
 ४ स्फुडि परिहासे । (४)
 ५ लक्ष लोक दर्शने । (५, २३६)
 ६ कुद्रि अनृतभाषणे । (६)
 ७ लड उपसेवायाम् । (७)
 ८ मिद स्नेहने । (८)
 ९ ओलडि उत्क्षेपे । (९)
 १० पीड बाधायाम् । (११)

१. हेमे तथा मावर्वाये धातुपाठे 'ध्रुश् उच्छे' 'ध्रस् उच्छे' इति धातुः । एतद्विषये माधवः एवं निर्दिशति—'अत्र क्षीरस्वामी उकारं धात्ववयवमाह । तन्मते उध्रस्नाति, उध्र-सांचकार' इत्यादि । (माध० वृ० पृ० ३७४)

- ११ ऊर्ज वले । (१६)
 १२ कुट्ट छेदने । (२३)
 १३ पुट्ट अल्पीभावे । (२४)
 १४ अट्ट अनादरे । (२५)
 १५ घट्ट चलने । (८७)
 १६ खट्ट संवरणे । (८६)
 १७ षट्ट हिंसायाम् । (६०)
 १८ लुण्ट स्तेये । (२७)
 १९ श्रुंठ गतौ । (२६)
 २० तुजि पिजि हिंसायाम् । (३०, ३१)
 २१ तिज निशाने । (११०)
 २२ व्यप कूट दाहे । (६६, ३४४)
 २३ नट नाटये । (१२)
 २४ श्वल्क वल्क भाषणे । (३४, ३५)
 २५ स्फिट अनादरे ।
 २६ पथि गतौ । (३६)
 २७ पिच्च कुट्टने । (४०)
 २८ छदि संवरणे । (४१)
 २९ श्रणु दाने । (४२)
 ३० तड आघाते । (४३)
 ३१ खड खडि भेदे । (४४)
 ३२ कडि खण्डने । (४४)
 ३३ वडि विभाजने । (४८)
 ३४ भडि कल्याणे । (५०)
 ३५ वुस्त वञ्चने । (५२)
 ३६ चुद संचोदने । (५३)
 ३७ वदि अभिवादाने ।
 ३८ विद वेदनायाम् । (१६८)
 ३९ श्रा पाके ।
 ४० ज्ञा तोषणे ।
 ४१ नक्क घक्क नाशने । (५४, ५५)
 ४२ चक्क चुक्क व्यथने । (५६)
 ४३ क्षल शौचे । (५७)
 ४४ तल प्रतिष्ठायाम् । (५८)
 ४५ तुल उन्माने । (५९)
 ४६ दुल उत्क्षेपे । (६०)
 ४७ वृजी वर्जने । (२७०)
 ४८ पुल महत्त्वे । (६१)
 ४९ चुल निमज्जने । (६२)
 ५० पाल रक्षणे । (६६)
 ५१ लूष हिंसायाम् । (७०)
 ५२ चुट छेदने । (७२)
 ५३ मुट संचूर्णने । (७३)
 ५४ पसि नाशने । (७४)
 ५५ छवि गतौ ।
 ५६ क्षपि क्षान्तौ । (७८)
 ५७ क्षजि कृच्छ्रजीवने । (७९)
 ५८ पूज पूजायाम् । (१०१)
 ५९ जुड प्रेरणे । (१०५)
 ६० पचि विस्तारे । (१०६)
 ६१ सूच पैशुन्ये । (३२७)
 ६२ कृत संशब्दने । (१११)
 ६३ लप वचने ।
 ६४ मत्रि गुप्तिभाषणे । (१४०)
 ६५ तत्रि कुटुम्बधारणे । (१३६)
 ६६ लल ईप्सायाम् । (१४८)
 ६७ चर्च अध्ययने । (१७२)
 ६८ मान पूजायाम् । (२६६)
 ६९ घुषिर् विशब्दने । (१८७)
 ७० ऊन परिहाणौ । (३४२)
 ७१ संग्राम युद्धे । (३७६)
 ७२ छद अपवारणे । (२६०)
 ७३ मार्ग अन्वेषणे । (३०२)
 ७४ कठि शोके । (३०३)

७५ मृजू शौचे । (३०४)	६२ निवास आच्छादने । (३३६)
७६ मृष क्षान्ती । (३०५)	६३ भाज पृथक्क्रियायाम् । (३४०)
७७ घृष प्रसहने । (३०६)	६४ ध्वन शब्दे । (३४३)
७८ कथ वाक्यप्रवन्धे । (३०७)	६५ स्तेन चीर्ये । (३४६)
७९ वर ईप्सायाम् । (३०८)	६६ गृह प्रग्रहणे । (३५१)
८० गण संख्याने । (३०९)	६७ मृग अन्वेषणे । (३५२)
८१ शठ श्वठ सम्यगाभाषणे । (३१०)	६८ कुह विस्मापने । (३५३)
८२ रह त्यागे । (३१२)	६९ स्थूल परिवृंहणे । (३५६)
८३ ष्टन गद देवशब्दे । (३१३, ३१४)	१०० अर्थ याञ्चायाम् । (३५७)
८४ रत्र प्रतियत्नं । (३१८)	१०१ गर्व माने । (३५९)
८५ कल संख्याने । (३१९)	१०२ मिश्र संपर्के । (३७५)
८६ मह पूजायाम् । (३२१)	१०३ सुपो धात्वर्थे बहुलम् इष्टवच्च । (३८६)
८७ स्पृह ईप्सायाम् । (३२५)	१०४ णिङ्ग अङ्गनिरसने । (३९३)
८८ शील उपधारणे । (३३२)	१०५ श्वेताश्व-अश्वतर-गालोडित-आह्वर- काणाम् अश्व-तर-इत-कलोपश्च (३९४)
८९ साम सान्त्वने । (३३३)	
९० गवेष मार्गणे । (३३७)	
९१ वास उपसेवायाम् । (३३८)	

नित्यण्यन्ताश्चुरादयः समाप्ताः ॥ १० ॥

क्रियावाचित्वमाख्यातुमेकैकोऽर्थः प्रदर्शितः ।

प्रयोगतोऽनुगन्तव्या अनेकार्था हि धातवः ॥

॥ धातुपाठः समाप्तः ॥

अजातेः शील-आभीक्ष्ण्ययोः १।२।५६।	अतः उत् तत्रापिति ५।३।१०३।
अजाद्यतः २।३।१५।	अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा-
अज-अविभ्यां ध्यन् ४।१।८।	कर्णापु ससंख्यस्य ६।४।०।
अजि-जनि-अति-घसि-रशि-पणेः इण्	अतङ्गं णल्-अतुस्-उस्-थल्-अथुस्-अण्-
(उणादि) १।५७।	अल्-व-माः १।४।११।
अजि-व्रजोः ६।१।६१।	अति १।४।४५।
अजेः वी अयु-घञ्-अप्-क्येपु ५।४।८४।	अतिङि आच्च तल्लोपे ६।२।१२।
अच्-हनोः सनि झलि ५।३।१३।	अतिथेः ण्यः ४।४।३४।
अज्ञात-कुत्सयोः ४।३।६२।	अतेः शुनः ४।४।८१।
अञ् २।४।६५।	अतोऽदेङि ५।१।१०१।
अञ्वः २।३।४।	अतोऽप्राच्य-भर्गादिभ्यः २।४।१०६।
अञ्वः ५।४।२५।	अतो भिस ऐस् २।१।२।
अञ्चु-युजः १।२।५०।	अतो भुवो डुतच् (उणा०) २। ४६।
अञ्वः अनवधौ ६।३।८४।	अतः अम् २।१।२४।
अञ्चो ने ५।४।११३।	अतः लुक् ५।३।६६।
अञ्चो लुक् ४।३।२६।	अत्यन्तसहचरिते लोकविज्ञाते ६।३।१३।
अञ्जेः सिचः ५।४।१६८।	अत्रानुनासिकः पूर्वस्य ६।४।६।
अञ्जेः अलिच् (उणा०)* १।७३।	अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-अङ्गिरस्-गोतमात्
अण् ३।२।६३।	२।४।१११।
अण् ३।३।४४।	अतु-असोः ५।३।११।
अणः (उणा०) १।६।	अथर्वणः अण् वेदे ३।३।८१।
अणि ५।३।१६६।	अदः ६।२।३८।
अणोऽनुनासिकः ६।४।१५०।	अदसः फग्-वुजोः । ५।२।१५।
अणौ चित्तवत्कर्तृकाद् णेः १।४।१३८।	अदसः अत्वे दाद् उ दः मः ६।३।११२।
अण् कुटिलिकायाः ३।४।१७।	अदादिभ्यो लुक् १।१।८३।
अतः आतः इत् १।४।२।	अदिशि अञ्चो वा ४।२।२३।
अतः आदेः ६।२।१२३।	अदूरभवे ३।१।६५।
अतः आद् यञि ६।२।३६।	अदेश-कालात् अधीते ३।४।७२।
अतः इन् २।४।१६।	अदः अनुपदेशे २।२।३२।
अतः (अत्) + इय् १।४।३५।	अद्युते दिवः ६।३।८५।

* 'उणा०' इत्यनेन 'उणादि' सूच्यते ।

+ मूलसूत्रपुस्तकपाठः ।

अन्तःपूर्वात् तदथात् ठञ् ३।३।२४।
 अन्तरः अयनस्य च अदेशे ६।४।१२१।
 अन्तर्-बहिर्भ्याम् लोमनः ४।४।१०१।
 अन्तर्वत्नी गर्भिण्याम् २।३।२८।
 अन्तिकस्य तमे तादेः ५।३।१४५।
 अन्ते ६।४।१३१।
 अन्त्याऽजादेः ५।३।१३८।
 अन्नात् णः ३।४।८४।
 अन्यार्थे २।३।३२।
 अन्यार्थे नाम्नि २।२।१४।
 अन्यार्थे वा २।३।६।
 अन्येषाम् अपि ५।२।१४५।
 अन्वग् आनुकूल्ये २।२।४५।
 अन्वादेशे ६।३।२०।
 अपगुरः णमुलि ५।१।५५।
 अपचितिः ५।४।१५७।
 अपमित्य कक् ३।४।२१।
 अपरस्पराः सातत्ये ५।१।१४१।
 अपवदः १।४।१२७।
 अपस्करः १।४।६०।
 अपात् चतुष्पात्-शकुनिषु हृष्ट-अन्न-
 कुलायार्थिषु ५।१।१४०।
 अपादादौ पदात् एकवाक्ये ६।३।१५।
 अपोनपात्-अपानपातोः तृ चातः
 ३।१।२६।
 अपः भि ६।२।६८।
 अप्-तृ-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षतृ-होतृ-
 पोतृ-प्रशास्तृणाम् ५।३।६।
 अप् पूरण्याः तासु ४।४।६६।
 अप्राणिजातीनाम् २।२।५३।
 अप्राणिनाम् अरज्ज्वादिभ्यः २।३।७६।
 अप्रादेः ज्ञः १।४।१२६।

अप्रादेर्वा १।४।८६।
 अव्दादयः (उणादि) २।६१।
 अब्राह्मणात् २।४।१२०।
 अभाव-कर्मणोः अनो ये ५।३।१६८।
 अभिजित्-विदभृत्-शालावत्-शिखावत्-
 शमीवत्-ऊर्णावत्-श्रुमद्भ्यः अपत्याणः
 यञ् ४।३।६५।
 अभिनिष्टानो वर्णे ६।४।७३।
 अभिविधौ इनुण् १।३।७३।
 अभिविधौ संपदा च सात्तिर्वा
 ४।४।३७।
 अभूततद्भावे कृ-भू-अस्तियोगे विकारात्
 च्विः ४।४।३५।
 अभेः अविदूरे ५।४।१५३।
 अभ्यमित्रं छश्च ४।२।२०।
 अमद्राणां दिशः ६।१।२४।
 अमनुष्यात् २।२।७०।
 अमावसो वा १।१।१३४।
 अमावस्यार्थात् अश्च ३।३।५।
 अमि-च्चि-मिदेः ञक् (उणादि) ३।४०।
 अमि-नक्षि-कडिभ्यः अत्रच् (उणादि)
 ३।३८।
 अमि पूर्वः ५।१।११३।
 अमू अमी ५।१।१२६।
 अमेः अतिः (उणादि) १।८६।
 अमेः भुक् च (उणादि) ३।११०।
 अम्वा-अम्ब-गो-भूमि-द्वि-त्रि-कु-शेकु-शङ्कु-
 अङ्गु-मङ्गि-पुङ्ग-वर्हिस्-दिवि-अग्निभ्यः
 स्थः ६।४।८४।
 अम्वार्थानाम् अडलेकानां ह्रस्वः ६।२।४५।
 अम् सौ संवुद्धौ ५।४।५१।
 अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक् ४।२।८२।

अयानयं नेयः ४२।१४।	अल्पे ४।३।६६।
अय् आम्-अन्त-आलु-आय्य-इत्नुषु ५।३।६६।	अल्पे ४।४।१२५।
अयि रः ५।१।५।	अल्लोपः अनः ५।३।१३०।
अरण्यात् पथि-न्याय-अध्याय-हृस्ति-नर- विहारेषु ३।२।४३।	अवक्रयः ३।४।५२।
अरुष्-मनस्-चक्षुष्-चेतस्-रहस्-रजसां लोपश्च ४।४।३६।	अवद्य-पण्य-वर्याः गर्ह्य-विक्रेय-अनि- रोधेषु १।१।११२।
अरुषः ५।२।७६।	अवधी अहाक्-रुहोः ४।३।६।
अर्घात् ४।४।३२।	अवधेः पञ्चमी २।१।८१।
अर्चि-हु-सृपि-च्छदि-च्छदिभ्यः इसिः (उणादि) ३।८६।	अवरस्य अक् ४।३।३३।
अर्तेः पिशन् (उणादि) ३।५४।	अवाते निर्वाणः ६।३।८६।
अर्तेः अण्यच् (उणादि) २।११५।	अवात् कुटारच्च ४।२।३१।
अर्तेः अत्तिच् (उणादि) १।७२।	अवात् त्रश्च १।३।२७।
अर्तेः उच् च (उणादि) ३।१११।	अवात् औजित्य-आलम्बन-अविदूर्येषु ६।४।५३।
अर्तेः ऊच् च (उणादि) १।१६।	अवात् गिरः १।४।६८।
अर्थमात्रे प्रथमा २।१।६३।	अवात् वृंहः (उणादि) २।५५।
अर्थे वा ५।२।११८।	अवात् वर्षविवन्धे १।३।४१।
अर्घात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा । ६।१।३६।	अवेः टिषच् (उणादि) ३।६१।
अर्घात् यत् ३।२।६६।	अव-उदः १।३।१६।
अर्यः स्वामि-वैश्ययोः १।१।११४।	अवोद-एध-ओध-प्रश्रय-हिमश्रयाः ५।३।३३।
अर्श आदिभ्यः अच् ४।२।१४७।	अव्यक्तानुकरणस्य अनेकाच्चः अतः इती ५।१।१०२।
अर्हति ४।१।७४।	अव्यक्तानुकरणाद् अनेकाच्चः अनिती डाच् ४।४।४१।
अर्ह-शक्त्योः १।३।१२८।	अव्यादयः (उणादि) १।६०।
अलम्-खल्वोः प्रतिषेधे क्त्वा वा १।३।१२६।	अव्याप्यस्य मुचेः ओद् वा ६।२।११०।
अलिटि व्यः ५।१।५०।	अव्याप्यात् १।४।७०।
अलि-इषः कीकन् (उणादि) २।१८।	अव्याप्यात् १।४।८१।
अलुकि ५।३।३।	अव्याप्यात् १।४।६१।
अलुकि वा ६।४।७२।	अव्याप्याद् वा १।४।१३७।
अलुक् उत्तरपदे ५।२।१।	अशब्दे यत्-त्रौ च ३।३।३२।
	अशाला २।२।७१।

अग्नि-लटि-कणि-खटि-विशेः क्वन् (उणादि)

२।६१

अग्नेः नित् (उणादि) १।६७।

अग्नेतेः ६।२।१२५।

अश्ववडवी २।२।६४।

अश्वात् छः ३।१।५२।

अश्वादिभ्यः फल् २।४।३१।

अश्वात् एकाहगमे खल् ४।२।५।

अपडस-आशितंगु-अलंकर्म-अलंपुरुष-अध्य-
न्तात् ४।२।२२।

अपण्ठी-तृतीयस्य आशीर्-आशा-आस्था-

आस्थित-उत्सुक-अति-रागेषु ५।२।११७।

अष्टका पितृणाम् ६।१।८२।

अष्टनो वा सुपि आत् ५।४।५२।

अष्टाचत्वारिंशतो ड्वुंश्च ४।१।११०।

अष्टाभ्यः औश् २।१।२०।

अष्टिवु-ष्वक्कादेः पः सः ५।१।६१।

अष्टीवत्-चक्रीवत्-कक्षीवत्-उदन्वत्-रुम-
ण्वत्-चर्मण्वती ६।३।३६।

अस् ४।३।३२।

असंख्यं वा अनभिप्रेताख्याने क्त्वा

२।२।४१।

असंख्यं विभक्ति-समीप-अभाद्र-ख्याति-

पश्चात्-यथा-युगपत्-संपत्-साकल्यार्थे

२।२।२।

असंख्याच्च अङ्गुलेः अनन्यासंख्यार्थे

४।४।७४।

असर्व-असंख्य-एकदेशात् टे ५।३।१४२।

असौ असुकः असकौ ५।४।७१।

असुक् च अत्तुम् ६।२।६१।

असु-तृपः कालेषु विच्छेदे १।३।१४६।

असुन् (उणादि) ३।१।००।

असु-पत-वचाम् थुक्-पुम्-उमः ६।२।६६।

असूया-सम्मत्योः पूर्वम् ६।३।१२४।

असेः उरन् (उणादि) ३।३।

अस्ति नास्ति दिष्टम् इति मतिः

३।४।६१।

अस्ति-सिचः अलः ६।२।३६।

अस्तेः भूः ५।४।७६।

अस्त्री-शूद्रप्रत्यभिवादे ६।३।११६।

अस्थि-दधि-सक्थि-अक्षणाम् अनङ्

५।४।३१।

अस्-दा-घां हौ एत् अद्विश्च ५।३।११५।

अस्मदि उत्तमम् १।४।१४७।

अस्-माया-मेघा-स्रजो विनिः ४।२।१३७।

अस्य च्वौ ६।२।८५।

अहः-सर्व-एकदेश-संख्यात-पुण्य-वर्षा-

दीर्घाच्च रात्रेः ४।४।७५।

अहशो वनो र च २।३।५।

अहः असुदिन-पुण्यात् २।२।८२।

अहनः ६।३।६६।

अहनः खे ५।३।१४१।

अहनः अतः ६।४।१०६।

आः सर्वादीनाम् ५।२।१०८।

आकर्षादिषु कुशलः ४।२।६८।

आकस्मिके ४।३।८३।

आकालात् ठश्च ४।१।१२६।

आक्रोशे नञः अतिः १।३।६४।

आक्रोशे नि-अत्रात् ग्रहः १।३।३५।

आखनि-वंहेः नलोपश्च (उणादि)

१।२०।

आगन्तीर्वा ४।४।१२४।

आग्नीध्रं शरणे ३।३।१०१।

आग्रहायणी-अश्वत्यात् ठक् ३।१।१६।

आडो ज्योतिरुद्धौ १४१८६।
 आडो णिच्च (उणादि) ३८६।
 आडः दः १४१५४।
 आडः अन्धु-ऊधसोः ५११३५।
 आडः यम-हनः स्वाङ्गाप्याच्च
 १४१७३।
 आडो यि ५१४१६।
 आडो रु-प्लोः १३१४२।
 आङ्-माङ्ः ५११७१।
 आचार्यानी २३१४६।
 आत् शी-ङ्योः ५१४३४।
 आज्ञायिनि ५२१७।
 आत् ६४१२५।
 आतः १४१४२।
 आतः ५१३१३६।
 आतः प्रादिभ्यः ११११४२।
 आतो णल औः १४११४।
 आतः अन्तः-प्रादिभ्यः १३१८७।
 आतः अप्रादेः कः १२१२।
 आतः युक् अणलि ६११४१।
 आतः युच् १३११०५।
 आत्मनः पूरणे ५२१६।
 आत्मनि खश्च १२१६१।
 आत्म-अध्वनोः खे ५३११६७।
 आथर्वणः ३३१६३।
 आत् अदेङ् ५११८२।
 आत् आमः साम् २११६।
 आदितः ५१४१४१।
 आदिरिता समध्यः ११११।
 आदेः १११६।
 आ-अदेङ् यङि ६२११३२।
 आदेश्छन्दसः प्रगाथे ३११३३।

आदैजाद्यचः छः ३२१२४।
 आदैजाद्यचो ज्यङ् २४१६८।
 आदैजेवाद्यटः ५११८३।
 आद्यात् २४११७।
 आद्यात् अचः ५११३।
 आद्यादिभ्यः ४३१६।
 आधारात् १११२६।
 आने मुक् अतः ५१४१७५।
 आत् महतः जातीय-एकार्थयोः
 अच्च्यर्थे ५२१४६।
 आपः औतः शीः २१११७।
 आपत्यस्य अनाति अणादौ
 ५३११५५।
 आपो वा ५३१७१।
 आपो वा ६२१७२।
 आप्यं वा ३३१२३।
 आप्रपदं प्राप्नोति ४२११२।
 आबाधे पुंवच्च ६३१६।
 आभीक्ष्ये णमुल् च १३११३२।
 आमः आकम् २११३१।
 आमः १४१६।
 आमः कृञः प्राग्वत् १४१११०।
 आमन्त्रितं पूर्वम् असद्वत् ६३१२४।
 आमयावी ४२११३८।
 आम् एतः १४१२४।
 आयन्-एय्-ईन्-ईय्-इयः फ-ढ-ख-छ-घां
 ण्काद्यादीनाम् ५४१२।
 आयस्थानात् आगते ३३१४७।
 आत्विजीनः ४११८१।
 आर्य-क्षत्रियाच्च २३१५१।
 आहृत् ४११२५।
 आलच्-आटच् कृत्सायाम् ४२११४६।

आवश्यके णिनिः १।२।५५।
 आशिताद् भुवः भाव-करणयोः
 १।२।२६।
 आशिषि १।१।१५६।
 आशिषि ६।१।७८।
 आशिषि तु-ह्योः तातङ् वा १।४।२२।
 आशिषि दीर्घः ६।२।७७।
 आशिषि नाथः १।४।६२।
 आशिषि आयुष्य-भद्रार्थ-कुशलार्थेश्च
 २।१।६८।
 आशेषात् भूते वा १।३।१०८।
 आश्रयो १।३।११५।
 आश्वयुज्याम् उप्ते वुच् ३।३।११।
 आसत्तौ १।३।१४२।
 आ-समः स्रोः १।१।१४८।
 आसीनः ५।४।१७६।
 आसु-यु-वपि-रपि-लपि-त्रपि-चमि-दभः
 १।१।१३३।
 आहारार्थात् १।२।७१।
 आहि च द्वरे ४।३।३६।
 इकः काशे ५।२।१४२।
 इक्-इग्-तिपः स्वरूपे १।३।६६।
 इकः अचि सुपि ५।४।२६।
 इकः अदेङ् क्रियार्थायाः ६।२।१।
 इकः अनिटि ६।२।२३।
 इकः यण् अचि ५।१।७४।
 इकः असस्थाने ह्रस्वश्च असमासे
 ५।१।१३२।
 इकः ह्रस्वः ५।२।७१।
 इगुपान्तात् किः (उणादि) १।५।२।
 इङ् ५।४।६५।
 इङ् शक्तौ १।२।८५।
 इङ् पित् वा १।३।६।

इङ् गमः ५।३।१४।
 इचि ५।२।४८।
 इजादेर्गुरुमतोऽनृच्छ-ऊर्णोः १।१।५२।
 इच् व्यतिहारे ४।४।११६।
 इञ् २।३।७४।
 इञ् ३।२।२२।
 इट् ईटि ६।३।५७।
 इटि लिटि ५।४।१६।
 इट् अत् १।४।३८।
 इट् सनो वा ५।४।१०४।
 इडादीनाम् ऐप् १।४।२६।
 इङ् वा ४।१।३५।
 इणः कित् (उणादि) २।६७।
 इणः षः ६।४।३४।
 इण्-एधोः ५।१।८५।
 इणः णित् (उणादि) ३।६३।
 इणः नुट् च (उणादि) ३।१०७।
 इणः यण् ५।३।८७।
 इण्-जि-सृ-नश-क्वरप् १।२।१०६।
 इण्-भी-का-पा-लि-मचिभ्यः कन्
 (उणादि) २।१।
 इण्-स्तु-शासु-वृ-दृ-जुषः १।१।१२०।
 इतः अतङ् १।४।३०।
 इतः अनिञ् २।४।५२।
 इतः नृजातेः २।३।७३।
 इत् कोशल-आजादात् २।४।६६।
 इत्ये अनभ्याशस्य ५।२।७६।
 इदम्-अदसोः कात् २।१।३।
 इदम् अयम् इयम् ५।४।७२।
 इदितः नुम् ५।४।१०।
 इदुतोः एङ् ६।२।४८।
 इद्-उद्ग्याम् औट् ६।२।६१।

इद् दरिद्रः ५।३।१०७।

इनः स्त्रियाम् ४।४।१४०।

इनः अचि लोपः ५।४।४१।

इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृडानाम्

आनुक् च २।३।४८।

इन्द्रियम् ४।२।६७।

इन्-हन्-पूष-अर्यम्णाम् सौ च

५।३।१२।

इमनिच् (उणादि) ३।८३।

इयत् कियत् ४।२।४४।

इरितो वा १।१।७४।

इलज् देशे ४।२।१०६।

इवे वतिः ४।१।१३५।

इवे संज्ञा-प्रतिकृत्योः ४।३।७८।

इषि-भिदि-व्यधि-गृचि-धृषि-पृ-पृथि-

मृदेः कुः (उणादि) १।१३।

इषु-गमि-यमां छः ६।१।१०५।

इषेः क्तकन् (उणादि) २।१४।

इषः अनिच्छायाम् १।३।६०।

इष्टका-इषीका-मालानाम् चित-

तूल-भारिषु ५।२।७४।

इष्टादिभ्यः ४।२।६४।

इष्ठ-इम-ईयःसु अन्त्याजादेः

५।३।१५८।

इष्ठे यिक् च ५।३।१६१।

इसुसुगदोर्भ्यः कः ५।४।४।

इसुसोः संबन्धे ६।४।३७।

इस्-मन्-वन्-क्विषु ६।१।६०।

ई घ्रा-ध्मोः ६।२।८४।

ईच् च गणः ६।२।१४४।

ईतः सोमः ६।४।६६।

ईदूदेत् द्विवचनम् ५।१।१२५।

ईत् यति ५।३।७६।

ईयसः ४।४।१४४।

ईयिवान् अनाश्वान् अनूचानः

१।२।७५।

ईष्यः यिः सन् वा ५।१।७।

ईश्वरार्थात् अराज्ञः सभा २।२।६६।

ईश्वरे ४।१।५६।

ईषदर्थे ५।२।१२३।

ईषद् गुणेन २।२।२१।

ईषत्-दुः-सुभ्यः खल् १।३।१०३।

ई हलि तिडि अदा-धः ५।३।१०६।

उः ६।२।२६।

उक्तपुंस्कस्य टादौ वा ५।४।३०।

उक्षणः ५।३।१७४।

उ-गवादिभ्यः यत् ४।१।२।

उगितः २।३।३।

उगितः ५।२।४४।

उग्र-असूर्याद् दृशः १।२।२१।

उञ् ५।१।१३०।

उञ्छति ३।४।२६।

उणादयः १।३।१।

उत-अप्योः वाढार्थे लिङ्

१।३।११७।

उता सवर्गः १।१।२।

उतः असंयोगात् अधातोः

५।३।१००।

उत्कः उन्मनाः ४।२।८५।

उत्तरस्य ५।२।६६।

उत्तरस्य ६।१।२१।

उत्थापनादिभ्यः छः ४।१।१३२।

उत्सादिभ्यः अञ् २।४।७।

उदः ईत् ५।३।१३५।

उदः पच-पत्त-मदः १।२।६१।
 उदः श्रि-यु-पू-द्रुवः १।३।३४।
 उदः स्या-स्तम्भोः तः ६।४।१५४।
 उदन्तात् ४।३।६८।
 उदन्यः ६।२।८६।
 उदरे ये ५।२।१०५।
 उदः चरः साप्यात् १।४।१०६।
 उदितो वा ५।४।११७।
 उदुपान्तस्य शब्दतः भाव-आरम्भयोः वा
 ६।२।१८।
 उदः अनुध्वेहायाम् १।४।६६।
 उदः ओष्ठ्यात् ५।४।६।
 उन्देः नलोपश्च (उणादि) २।६८।
 उपकादिभ्यो वा २।४।११४।
 उपज्ञा-उपक्रमं तदादित्वे २।२।६८।
 उपत्यका-अधित्यके ४।२।३५।
 उपदंशः तृतीयायाम् १।३।१३६।
 उपदेशे अच्-हन-ग्रह-दृग्भ्यः स्य-सिच्-सी
 युट्-तासां भाव-आप्ययोः चिण्वद्
 इट् वा ५।३।७३।
 उपघेः ४।१।२०।
 उपमानात् ४।४।१२६।
 उपमानात् कर्तुश्च १।३।१३८।
 उपमानाद् अप्राणिनि ४।४।८२।
 उपमानाद् आचारे १।१।२५।
 उपमानादेः २।३।६५।
 उपयमः उद्वाहे १।४।१०६।
 उपरि उपरिष्ठात् ४।३।३०।
 उपाजे अन्वाजे २।२।३५।
 उपात् १।४।१३६।
 उपात् स्तुती ५।४।२०।
 उपादेः ठक् ३।३।३६।
 उपाद् भूषण-समवाय-यत्न-वैकृत्य-अध्या-
 हारेषु ५।१।१३७।

उपान्तस्य ५।४।८।
 उपान्तस्य ६।२।२४।
 उपात् मन्त्रेण १।४।६७।
 उपालम्भे ६।३।१२१।
 उपेन २।१।५६।
 उभयाद् द्युश्च ४।३।१८।
 उभात् ४।२।४८।
 उमा-ऊर्णात् वा ३।३।११८।
 उरगः १।२।३६।
 उः अत् ६।२।११८।
 उरसा अण् च ३।४।६६।
 उरसः अग्रे ४।४।७८।
 उः ऋट् ६।१।६५।
 उरोभ्यः कप् ४।४।१३६।
 उलूकादयः (उणादि) २।२।२।
 उल्कादयः (उणादि) २।४।
 उ-श्नोः ६।२।२।
 उवासा उपसः ५।२।२८।
 उपि-कुषि-गा-अतिभ्यः थन्
 (उणादि) २।५६।
 उपि-रञ्जि-शृभ्यः कित् (उणादि)
 ३।१०।१।
 उपि-सू-मूभ्यः कित् (उणादि) ३।३७।
 उपि-इण्-अवि-कृषि-तृषि-बुधि-रति-धा-
 पृभ्यः नक् (उणादि) २।७५।
 उपेः जश्च (उणादि) ३।१०।४।
 उष्ट्रात् वुञ् ३।३।११७।
 उष्णात् ४।२।७७।
 उसि अनादौ ५।१।१००।
 ऊँ ५।१।१३१।
 ऊङ् ५।२।४५।
 ऊङ् उतः २।३।७५।

ऊठि ५।१।८६।
ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयः
१।३।७५।
ऊद् गोहः अचः ५।३।६३।
ऊधसः नश्च २।३।६।
ऊरोः उपमा-संहित-सहित-सह-शफ-
वाम-लक्ष्मणादेः २।३।७६।
ऊर्णा-अहम्-शुभंभ्यः ४।२।१५२।
ऊर्णोः डः (उणादि) २।३।८।
ऊर्ध्वं दघ्नटे-द्वयसट् च ४।२।३६।
ऊर्ध्वाद् वा ४।४।१२०।
ऊर्मि-रश्मि-भूमयः (उणादि) १।६।५।
ऊर्णादिकारिकाच्चि-डाचः
क्रियार्थैः २।२।२५।
ऊषादिभ्यः रः ४।२।१११।
ऋलृक् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र २)
ऋकोऽणो रलौ १।१।१५।
ऋगयनादिभ्यः ३।३।४५।
ऋचः ४।४।५८।
ऋचः शि ५।२।६०।
ऋच-रुच-याच-त्यजाम् ६।१।६४।
ऋणे पञ्चमी २।१।६६।
ऋतः ईयङ् १।१।४८।
ऋतः उत् ५।१।११७।
ऋतः कञ् ३।३।५०।
ऋतः संयोगादेः ५।४।१०६।
ऋत-तृष-मृष-कृशां वा ६।२।२०।
ऋतः तत्र-आनङ् ५।२।२१।
ऋतः तासि नित्यानिटः थलः
५।४।१६०।
ऋतुमती उपसर्ग १।१।११५।
ऋ-त-सृ-धृ-धमि-अशि-अवि-वृति-ग्रहेः
अनिः (उणादि) १।७।४।

ऋते तृतीयासमासे ५।१।६०।
ऋते द्वितीया च २।१।८४।
ऋतः डि-सुटि अत् ६।२।६४।
ऋतः अचि वा ६।१।२।
ऋतः रः अचि ५।४।६६।
ऋतः ल-यौ ४।३।६७।
ऋतः विद्या-योनि-सम्बन्धात् तत्र
५।२।१८।
ऋति ऋतः ऋर्वा ५।१।१०७।
ऋतुआदयः (उणादि) १।२।५।
ऋत्वादिभ्यः अण् ४।१।१२४।
ऋत्विग्भ्यः छः ४।१।१५१।
ऋदुपान्ताद् अकलृपि-चृतः १।१।१२१।
ऋत्-उशनस्-पुरुदंशस्-अनेहसाम् चानङ्
सौ ५।४।४५।
ऋद्-लृति अकः ५।१।१३३।
ऋ-नः डीप् २।३।२।
ऋ-पृ-भृ-मा-हाङाम् इत् ६।२।१२८।
ऋ-पृ-वपि-यजि-धनि-त्रपेः
नित् (उणादि) ३।६।२।
ऋ-मञ्जि-पीयि-हनि-अगिभ्यः
ऊषन् (उणादि) ३।५।७।
ऋ-महिष्यादिभ्य अण् ३।४।५०।
ऋ-री-व्ली-ह्री-क्तूयी-क्षमायि-
आतां पुग् णौ ६।१।४५।
ऋ-वृ-व्येञ्-अदः ५।४।१६४।
ऋ-श्चि-दृशः अङि ६।२।६८।
ऋषभ-उपानहो ज्यः ४।१।१७।
ऋषि-कुरु-वृष्णि-अन्धकात् २।४।४४।
ऋषि-वृषि-रासि-वल्लेः कित्
(उणादि) २।६।४।
ऋषि-वृषि-स्तुभ्यः सक्
(उणादि) ३।६।४।

ऋषेः पौत्रादौ २।४।२३।
 ऋषौ मित्रे ५।२।१३१।
 ऋ-संयोगाद्योः अत् ६।२।८१।
 ऋ-सूत्रि-मूत्रि-सूचि-अट्-अवृ-
 ऊर्णुभ्यः १।१।४१।
 ऋ-सृ-शास्-असु-ख्या-वचः अङ्
 १।१।७०।
 ऋ-स्तु-सु-हु-धृ-क्षि-क्षु-भा-या-पदि-यक्षि-
 णीभ्यो मन् (उणादि) २।१००।
 ऋ-स्मि-पूङ्-अञ्ज-अशः सनः
 ५।४।१७१।
 ऋ-हनः स्ये ५।४।१६७।
 ऋ-हलो ण्यत् १।१।१३०।
 ऋत् इद् धातोः ५।४।७।
 ऋत्-ऋल्-ऋणाम् ६।२।६७।
 ऋत्-ओः अप् १।३।४७।
 ऋ-ल्वादिभ्यः क्तिनश्च ६।३।७६।
 लृति लृः ५।१।१०८।
 लृदिद्-द्युतादि-पुष्यत्यादिभ्यः अतडि
 १।१।७३।
 एओङ् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ३)
 एककर्तृकयोः पूर्वात् १।३।१३१।
 एक-गोपूर्वात् ठञ् ४।२।१२२।
 एक-द्वि-बहुषु १।४।१४८।
 एकवचनस्य ते-मे ६।३।१८।
 एकशालायाः ठच् च ४।३।८६।
 एकस्य सुप्लुक् ६।३।५।
 एकहलादौ भाण्डे वा ५।२।६६।
 एकागारात् चौरे ४।१।१२८।
 एकाचः ३।३।११०।
 एकाचः अश्वि-श्रि-डी-शीङ्-ऊ-
 र्वादिषट्कात् ५।४।१३०।

एकाचः हलादेः क्रियायाद् भृश-
 आभीक्ष्ण्ये यङ् १।१।४०।
 एकात् ५।३।१४४।
 एकाद् अन्न-अदनी संख्यायाम्
 ५।२।६४।
 एकाद् आकिनिच् चासहाये
 ४।२।६७।
 एकादेर्लुक् च ३।४।८०।
 एङाद्यचः प्राग् देशात् ३।२।२५।
 एङि पररूपम् ५।१।६५।
 एङः अच् च ६।२।६२।
 एङोऽति पदादौ ५।१।११५।
 एङ्-ह्रस्वात् संवुद्धौ अतः ५।१।६८।
 एचः प्रशान्त-पूजा-विचार-प्रत्यभिवादेषु
 आत् इत्-उत्परः ६।३।१३१।
 एचि ५।१।८४।
 एचः अय्-अव्-आय्-आवः ५।१।७५।
 एचः अशिति आत् ५।१।४६।
 एजेः खश् १।२।११।
 एणी-कोशात् ढञ् ३।३।११६।
 एतः ईत् ६।३।११४।
 एतत्-तदोः सुलोपः अकोः अनञ्-
 मासे हलि ५।१।१३४।
 एतस्य चान्वादेशे द्वितीयायां
 चैनः ५।४।७६।
 एति संज्ञायाम् अकोः ६।४।८५।
 एतेः गाः ५।४।६२।
 एघा ४।३।२४।
 एनपा २।१।५३।
 एनप् अदूरे वा ४।३।४१।
 एरक् २।४।६२।
 एः अक्तिनः २।३।४२।

एः अच् १।३।४५।

एः असंयोगात् अनेकाचः ५।३।८८।

ऐ गीच् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ४)

ऐकध्वम् ४।३।२२।

ऐकार्थ्ये २।१।३६।

ऐज्भाविनो ष्वः पदान्तात् प्राग् ऐच्
६।१।१४।

ऐषमस्-ह्यस्-श्वसो वा ३।२।१५।

ओः पु-यण्-जि अपरे ६।२।१३०।

ओजस्-सहस्-अम्भस्-तपस्-अञ्जसः
तृतीयायाः ५।२।५।

ओजस्-सहस्-अम्भसा वर्तते ३।४।२६।

ओजस्-अप्सरसोः ६।२।१०३।

ओत् ५।१।१२८।

ओतः अम्-शसोः आत् ५।१।६२।

ओदनात् ठट् ३।४।६८।

ओदितः ६।३।८०।

ओम्-आङोः ६।१।६६।

ओः आवश्यके १।१।१३२।

ओः ओत् ५।३।१४७।

ओर्गुणाद् अखरु-संयोगोपान्तात् २।३।४३।

ओर्देशात् ३।२।३१।

ओलोपः श्ये ६।१।६६।

ओषधेः अजाती ४।४।२०।

ओष्ठ-ओत्वोः समासे वा ५।१।६७

ओसि ६।२।४२।

औदरिकः अलसे ४।२।७२।

औ-शस्-अम्सु ५।४।५५।

कम्-शम्भ्याम् ४।२।१४६।

कंस-अर्धात् ठट् ४।१।२६।

ककुत् ककुदस्य अवस्थायाम् ४।४।१३४।

क-खोपान्त-कन्था-पलद-नगर-ग्राम-

ह्रदान्तात् छे ३।२।५४।

कचे छः (उणादि) २।३।१।

कच्छ-अग्नि-वक्त्र-^१वर्तन्तात् ३।२।४०।

कच्छादिभ्यः ३।२।४८।

कटादेः प्राच्यात् ३।२।५३।

कठ-चरकात् लुक् ३।३।७४।

कठि-चक्रिभ्यां ओरः (उणादि) ३।३।४।

कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानात् व्यवहरति
३।४।७३।

कणादीनाम् ६।१।६४।

कणे-मनसी तृप्तौ २।२।२६।

कण्ड्वादिभ्यो यक् १।१।३६।

कतिः संख्यायाम् ४।२।४५।

कति-गणौ तद्धत् ४।१।३३।

कतेः २।१।२२।

कत्त्रादिभ्यश्च ढकञ् ३।२।५।

कथादिभ्यः ठक् ३।४।१०४।

कन्थायाः ठक् ३।२।११।

कन्थायाः कनीन च २।४।४६।

कपय् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ११)

कपाले हविषि ५।२।५०।

कपि-ज्ञात्योः ढक् ४।१।१४४।

कपिरिकादीनाम् ६।३।४६।

कपेः स्थलस्य ६।४।८२।

कपेः अङ्गिरसे २।४।२७।

कमि-मनि-जनि-हिभ्यः तुः (उणादि)

१।२।४।

कमः अठच् च (उणादि) २।३६।
 कमः णिङ् १।१।४६।
 कमः अतः उच्च (उणादि) ३।२३।
 कम्बोजादिभ्यो लुक् २।४।१०४।
 करणे २।१।६३।
 कर्क-लोहितात् ईकक् ४।३।८७।
 कर्णात् ३।३।३५।
 कर्णादीनां मूले जाहच् ४।२।२५।
 कर्णे चिह्नस्य अविण्ट-अष्ट-पञ्च-भित्त
 -छिन्न-च्छिद्र-सुव-स्वस्तिकस्य
 ५।२।१३६।
 कर्तरि चारभ्मे १।२।६८।
 कर्तरि ष्वल्-तृच्-अत्रः १।१।१३६।
 कर्तरि तृतीया २।१।६२।
 कर्तरि शप् १।१।८२।
 कर्तुः उपमानात् १।२।५८।
 कर्तुः विप् १।१।२७।
 कर्तृस्थामूर्ताऽऽप्यात् १।४।८३।
 कर्तृ-आप्याभ्यां च भू-कृञः १।३।१०४।
 कर्मणः उकञ् ४।१।१२२।
 कर्मणि घटते अठच् ४।२।३६।
 कर्मणः अशीले ५।३।१७०।
 कर्मन्द-कृशाखाभ्यां भिक्षु-नटसूत्रम्
 इतिः ३।३।७७।
 कर्म-वेशात् यत् ४।१।११६।
 कर्माध्ययने वृत्तम् ३।४।६४।
 कलापितः अण् ३।३।७५।
 कलापि-वैशम्पायनशिष्येभ्यः ३।३।७३।
 कलापि-अश्वत्य-यववृसात् वुन् ३।३।१४।
 कलाप्यादीनाम् ५।३।१४०।
 कल्पे ३।३।८०।
 कल्याण्यादीनाम् इनङ् २।४।५६।

कवङ् च उष्णे ५।२।१२५।
 कवचिनश्च ठक् ३।१।४७।
 कवर-मणि-विष-शरात् २।३।६४।
 कश्च दः ४।३।५७।
 कषेः छश्च (उणादि) १।४४।
 कष्ट-कक्ष-सत्र-गहनाय पापे क्रमणे
 १।१।३२।
 कस्कादयः ६।४।४५।
 कस्य इत् ३।१।२२।
 कांस्य-पारशवौ ३।३।१२६।
 काक्ष-पथोः ५।२।१२२।
 काण्ड-अण्डात् ईरच् ४।२।११५।
 काण्डात् अक्षेत्रे २।३।२५।
 कादेः बहुलम् ५।३।१४६।
 कान् कानि ६।४।४।
 कारकं बहुलम् २।२।१६।
 कारक-असंख्यात् ओश्च सुपि असुधियः
 ५।३।८६।
 कारुणाम् २।२।५६।
 कारे अस्तु-सत्य-अगदस्य ५।२।७७।
 कार्षापिण-सहस्र-सुवर्ण-शतमानात् वा
 ४।१।३६।
 कार्षापिणात् ४।१।२७।
 काल-समय-वेलासु लिङ् यदि १।३।१२७।
 काल-हेतु-फलात् नाम्नि ४।२।८६।
 कालात् ४।१।६२।
 कालाक् ४।४।१५।
 कालात् कार्यं च भववत् ४।१।११४।
 कालाद् देयम् ऋणम् ३।३।१३।
 कालात् यत् ४।१।१२५।
 कालेभ्यः ३।२।७१।
 कालेभ्यो भववत् ३।१।३१।

काश्यप-कौशिकाभ्याम् ऋषिभ्यां कल्पं च णिनिः ३।३।७१।	कुणि-पीभ्यां कालन् (उणादि) ३।५०।
काश्यादिभ्यः ञिकश्च ३।२।३३।	कुण्डादयः (उणादि) २।४०।
कास्-अय-दय्-आसः १।१।५३।	कुण्डिनाः २।४।१०८।
कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् ४।३।७३।	कुतुपः ४।३।७२।
किंकिल-अस्त्यर्थयोः लृट् १।३।११२।	कुतः अतः इतः ४।३।८।
किञ्चिद्गुणे कल्पप्-देश्य-देशीयरः ४।३।५४।	कुप्य-आज्य-भिद्य-उद्धच-सिध्य- युग्यानि नाम्नि १।१।१२७।
किम्-जराभ्यां शृ-इणः (उणादि) १।३।	कु-प्रादयः असुप्विधौ नित्यम् २।२।२४।
किम्-यद्-अन्याद् अनद्यतने हिल् वा ४।३।१५।	कु-प्वोः)(क००पौ ६।४।३१।
किङ्किणीकादयः (उणादि) २।१६।	कुमदेकाचः ६।४।११३।
कितः संशय-चिकित्सयोः १।१।१८।	कु-महद्भ्यां ब्राह्मणः ४।४।८७।
किति च हनः ५।३।६७।	कुम्बि-चर्चिभ्याम् १।३।८८।
किति चापत्यादौ अचामादेः ६।१।११।	कुम्भपद्यादयः ४।४।१२८।
किति तेषाम् ५।१।२०।	कुरु-च्छुरोः ६।३।१११।
किमः कः ५।४।६६।	कुरु-नादिभ्यो ष्यः २।४।१०१।
किमि लृट् च १।३।११०।	कुरु-युगन्धरात् ३।२।४५।
किम्-ए-तिङ्-असंख्यात् आमन्तौ अद्रव्ये ४।३।४६।	कुर्वादिभ्यो ष्यः २।४।८४।
किरादि-श्रन्थ-ग्रन्थ-सनाम् आप्ये १।४।१००।	कुलटाया वा २।४।५७।
किरो लवने ५।१।१३८।	कुलत्थ-कोपान्तात् अण् ३।४।४।
किल्बिषादयः (उणादि) ३।६२।	कुलनाम्नः २।३।८३।
किशरादिभ्यः ष्ठन् ३।४।५५।	कुलात् ढकञ् च २।४।७२।
कीनाश-दाश-अङ्कुशाः (उणादि) ३।५६।	कुलालादिभ्यो वुञ् ३।३।८४।
कुञ्जादिभ्यः ष्यञ् २।४।३३।	कुलिजाद् वा ४।१।७१।
कुटादीनाम् अञ्णिति ६।२।१३।	कुल्माषाद् अण् ४।२।८८।
कुटी-शमी-शुण्डाभ्यो रः ४।३।७१।	कुवः ऋवन् (उणादि) ३।१७।
कुटेः कमलच् (उणादि) ३।४८।	कुश-अग्रात् छः ४।३।८२।
	कुषि-रजः आप्ये १।१।६१।
	कुषेः सिक् (उणादि) १।६६।
	कु-होः चुः ६।२।११६।
	कूलाद् उदो रजि-वहः १।२।१५।

कूल-अन्न-करीषाच्च कपः १।२।२६।	कृ-ग्रोः उच् च (उणादि) १।१५।
कृकण-पर्णात् भारद्वाजात् ३।२।५७।	कृ-तृ-कृपेः क्रीटन् (उणादि) २।३।४।
कृकाद् वचः कश्च (उणादि) १।४।	कृ-तृ-भ्याम् ईषन् (उणादि) ३।५।६।
कृच्छ्र-गहनयोः कपः ५।४।१५०।	कृ धान्ये १।३।२१।
कृजः करणे ख्युन् १।२।४७।	कृ-पृ-व्रजि-मण्डि-निघाजः क्युः (उणादि) २।७०।
कृजः कर्तरि १।३।६६।	
कृजः पासप् (उणादि) ३।६६।	कृभ्यः पञ्चभ्यः ५।४।१७२।
कृजादिभ्यः वुन् (उणादि) २।२०।	कृ-वृञो अण्डन् (उणादि) २।३७।
कृजा द्वितीय-तृतीय-शम्भ-व्रीजात्	कृ-शृ-गर्देः अभच् (उणादि) २।६३।
कृषौ ४।४।४२।	कृ-शृ-शौटिभ्यः ईरच् (उणादि) ३।२७।
कृजा वा २।२।३४।	केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेः ईयः ६।१।१३।
कृजि वा ६।४।४३।	
कृजो ये च ५।३।१०२।	के अणो ह्रस्वः ६।२।७०।
कृजः असुटः ५।४।१५६।	केदारात् यञ् च ३।१।४६।
कृजी हेतु-शील-अनुलोमेषु १।२।७।	केवल-मामक-भागधेय-पाप-अवर-समान- आर्य-कृत-सुमङ्गल-भेषजात् नास्मि २।३।२७।
कृति-भिदि-लतेः कितकन् (उणादि) २।१३।	
कृतेः सुक् च (उणादि) २।७६।	केशादिभ्यो वः ४।२।११३।
कृ-दा-धा-रा-अचिभ्यः कः (उणादि) २।३।	केशाद् वा ३।१।५१।
कृषो रो लः अकृपणादीनाम् ६।३।४१।	कोः कद् अचि उत्तरार्थे ५।२।११६।
कृ-भू-तनेः कित् (उणादि) २।१६।	कोपस्थाने अनाप्ये २।१।७६।
कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साधि-अशूभ्यः उण् (उणादि) १।१।	कोपान्ताद् अण् ३।२।४७।
कृ-वृ-तृ-यमि-दारि-अर्जेः उनन् (उणादि) २।८०।	कोश्च आदेश-सनादि-शासि-वसि-घसां सः ६।४।४६।
कृ-वृ-तृ-स्वपि-सि-द्रुभ्यः नन् (उणादि) २।७४।	कौपिञ्जल-हास्तिपदाद् अण् ३।३।६७।
कृ-वृ-पि-मृजि-शंसि-दुहि-गुहः १।१।१२५।	कौमारी प्राथम्ये ३।१।११।
कृ-व्रज-यजः १।३।८०।	कौरव्य-आसुरि-माण्डुकात् २।३।२१।
कृपेः अचश्चाद् वा (उणादि) २।७।	किङ्ति ५।३।३८।
कृष्यादिभ्यो वलच् ४।२।११६।	किङ्ति ६।२।११।
	क्तवतुः १।२।६६।
	क्तात् अनात्यन्तिके ४।४।१६।
	क्तात् अल्पोक्तौ २।३।५६।

क्तिचि दीर्घश्च ५।३।५१।
 क्तिनि ६।३।६३।
 क्तिव स्कन्द-स्यन्दोः ५।३।५२।
 क्नः असित-पलितात् २।३।३५।
 क्यङ् १।१।२६।
 क्यङि वा ६।२।१०२।
 क्यचि ६।२।८६।
 क्य-च्छयोः ५।३।१५६।
 क्यस्य वा ५।३।६६।
 क्रनु-उक्थादिभ्यः ठक् ३।१।३८।
 क्रतौ कुण्डपाय्य-संचाय्यौ १।१।१३७।
 क्रमः ५।४।१२६।
 क्रमः क्तिव ५।३।१६।
 क्रमादिभ्यः वुन् ३।१।४०।
 क्रमः अतः इत् च (उणादि) १।५३।
 क्रमः अतङ्गान्ते ६।१।१०४।
 क्रियः इकन् (उणादि) २।१७।
 क्रियः क्रयार्थे ५।१।८०।
 क्रियाऽऽप्ये द्वितीया २।१।४३।
 क्री-इङ्-जीनाम् ५।१।६०।
 क्रीडः अनु-परिभ्यां च १।४।५८।
 क्रीतवत् परिमाणात् ३।३।११५।
 क्रीतात् करणादेः २।३।५५।
 कुञ्चा-कोकिलाभ्याम् २।४।४३।
 कुध-भूषार्थात् १।२।१००।
 कुशः तुनः तृच् ५।४।४८।
 क्रोध-अश्रद्धयोः १।३।१११।
 क्रोश-योजनादेः शतात् अभिगमार्थे च
 ४।१।८६।
 क्रीड्यादीनाम् २।३।८४।
 कृयादिभ्यः १।१।१०१।

क्लिन्नचक्षुषि चिल्ल-पिल्ल-चुल्लाः
 ४।२।३४।
 क्व-कुत्र-इह-अत्र ४।३।११।
 क्वचिद् वा ५।१।१२४।
 क्वणः वीणायाश्च १।३।५६।
 क्वसोः एकाच्-आत्-घसः ५।४।१६५।
 क्व-अमा-इह-अत्र-तसः त्यप् ३।२।१३।
 क्विनः ६।३।६०।
 क्विप्-क्विच्-मनिन्-क्वनिप्-वनिपः
 १।२।५३।
 क्षः ६।३।८६।
 क्षणः डीरच् (उणादि) ३।२६।
 क्षत्रात् जातौ घः २।४।६६।
 क्षत्रियात् ३।३।६७।
 क्षिपः कित् (उणादि) १।७५।
 क्षिपकादीनाम् ६।१।७६।
 क्षिपि-नदिभ्यां चनुङ् (उणादि) १।३२।
 क्षिपि-लङ्घि-लिखि-धमिभ्य, ववुन् ।
 (उणादि) २।५।
 क्षीरात् ढञ् ३।१।१७।
 क्षुद्रजन्तूनाम् २।२।६०।
 क्षुद्राभ्यो वा २।४।६३।
 क्षुब्ध-स्वान्त-ध्वान्तम् मन्थ-मनस्-तमः
 ५।४।१४५।
 क्षुभ्नादीनाम् ६।४।१३५।
 क्षेः क्षीः ५।३।७२।
 क्षेः क्षी च ६।३।८१।
 क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः ४।२।६६।
 क्षेप-अतिग्रह-अव्यथनेषु अकर्तरि
 तृतीयायाः ४।३।३।
 क्षेम-प्रिय-मद्रात् अण् च १।२।२८।

वसस्य अचि ६।१।१००।

खः ४।२।१६।

खः पदान्ताच्च २।४।७३।

खड् १।२।३४।

खनः डर-इकौ च १।३।१०२।

ख-फ-छ-ठ-थ-च-ट-तव् प्रत्याहारसूत्र
(शिवसूत्र १०)

खयि खरः ६।२।११३।

खरि ६।४।२१।

खरि चर् झलः ६।४।१४८।

खरि लोपः ६।४।३०।

खर्जि-पिप्लादिभ्यः ऊर-ऊलचौ (उणादि)
३।४३।

खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्म-रथात्
४।१।७।

खलादिभ्यः इनिः ३।१।५७।

खारी-काकणीभ्य ईकन् ४।१।४२।

खार्या वा ४।४।८५।

खिति ससंख्यस्य मुम् च ५।२।७५।

खिति इच एकाचः अमः ५।२।४।

खुर-खरात् णस् वा ४।४।११२।

खेयम् १।१।११२।

गः १।२।४४।

गणिका-ब्राह्मण-माणव-वाडवाद् यन्
३।१।५०।

गति-बोध-आहार-शब्दार्थ-अनाप्यानां
प्रयोज्ये २।१।४४।

गत्यर्थात् कौटिल्ये एव १।१।४२।

गत्यर्थ-अनाप्यात् आधारे च १।२।७०।

गत्वरः १।२।११०।

गद-नद-पठ-स्वनः १।३।५५।

गद-मद-यमः अप्रादेः १।१।१०६।

गमः १।२।३२।

गमः (उणादि) ३।८५।

गम-जन-खन-घसां ले लोपः अपिति।

५।३।६६।

गमादीनां क्वौ ५।३।४६।

गमेः क्षान्तौ १।४।५६।

गमेः गन् (उणादि) २।२८।

गमेः डोः (उणादि) १।६२।

गमो द्वे च (उणादि) ३।७०।

गम्भीर-पञ्चजनात् ज्यः ३।३।२१।

गम्भीरादयः (उणादि) ३।२६।

गर्गादिभ्यः यब् २।४।२४।

गतान्तात् छः ३।२।५२।

गर्हायां कथमि लिङ् १।३।१०६।

गर्ह्यो ३।४।३६।

गल्भ-क्लीब-होडेभ्यः डित् १।१।२८।

गवाश्वादीनाम् २।२।५७।

गवि युक्ते ५।२।५१।

गवि-युधेः स्थिरः ६।४।८१।

गव्यूतिः अध्वमाने ५।१।७८।

गः थकन् १।१।१५८।

गहादिभ्यः ३।२।५८।

गाङ्ः ईत् स्ये च ६।२।२८।

गाङ् लिटि ५।४।६६।

गाथि-विदथि-केशि-गणि-पणिनाम्

५।३।१७६।

गान्धारि-शाल्वेयात् २।४।६७।

गिरि-नदी-पौर्णमासी-आग्रहायणी-ज्ञयः

४।४।६३।

गिरिनद्यादीनाम् ६।४।१११।

गिरो भन् (उणादि) २।६६।

गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च
४।१।१४१।

गुणान् ईयसुन्-इष्टनी च ४।३।४७।
गुणे वा २।१।७०।

गुधेः ऊमः (उणादि) २।६८।

गुपू-धूप-विछ-पण-पनः आयो वा १।१।४७।

गुपो निन्दायाम् १।१।१६।

गुरेः फक् (उणादि) २।८६।

गुरोर्हलः १।३।८५।

गुर्वकैकमनूत् वा ६।३।११८।

गृधि-वञ्चेः प्रलम्भने १।४।१२१।

गृष्ट्यादिभ्यः २।४।७७।

गृहांशे प्रघाणः १।३।६६।

गृ-गृभ्यां वः (उणादि) २।६०।

गृहे कः १।१।१५३।

गोत्रचरणात् श्लाघा-अधिक्षेप-अव-
गतेषु ४।१।१५०।

गोघ्रा ३।१।५८।

गोत्रात् अङ्कवत् ३।१।८।

गोत्रात् अङ्कवत् ३।१।५४।

गोत्रात् अदण्ड-माणव-अन्तेवासिषु
३।३।६५।

गोत्रात् बहुलं वुञ् ३।३।६६।

गोत्रान्तात् तद्वत् अजिह्वाकात्य-
हरितकात्यात् ३।२।२७।

गोत्रात् लुक् २।४।११८।

गोत्र-उक्ष-उष्ट्र-उरभ्र-राज-राजपुत्र-वत्स-
अज-वृद्धात् वुञ् ३।१।४५।

गोघ्रायाः २।४।६१।

गोमिन् पूज्ये ४।२।१४४।

गोः अच्चि यत् २।४।१५।

गोः अप्रधानस्यान्त्यस्य २।२।८५।

गोः अलुकि अचार्थे ४।४।७७।

गोः ओ वा ५।१।१२०।

गोः औः स्वार्थे ५।४।४३।

गोष्ठात् भूते ४।२।६।

गोसदादिभ्यः वुन् ४।२।१५६।

गौरादिभ्यः २।३।३७।

ग्रन्थान्ताधिक्ये ५।२।१०१।

ग्रसेः आच् च (उणादि) २।१०१।

ग्रहः १।१।१५२।

ग्रहणे वा ४।२।६६।

ग्रह-वृ-दृ-निश्चि-गम-वश-रणः १।३।४८।

ग्रहि-प्रछोः सनि ५।१।२२।

ग्रहि-व्यधोः ५।१।१५।

ग्रहोऽस्यालिटीत् ५।४।१००।

ग्राम-कौटात् तक्ष्णः ४।४।८०।

ग्राम-जन-गज-बन्धु-सहायात् तल् ३।१।५६।

ग्राम-जनपदांशात् अण् च ३।२।६६।

ग्रामात् य-खञौ ३।२।४।

ग्रीवातः अण् च ३।३।२०।

ग्रीष्म-वसन्तात् वा ३।३।१२।

ग्रीष्म-अवर-समात् वुञ् ३।३।१५।

ग्री यङि ६।३।४३।

ग्री वा मुट् च (उणादि) ३।७।५।

ग्ला-नुदिभ्यां डौः (उणादि) १।६३।

ग्ला-हा-ज्यः १।३।६५।

घः १।३।१००।

घञि भाव-करणयोः ५।३।३१।

घञ् कारके च १।३।७।

घ-ढ-घश् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ८)

घर्म-ग्रीष्म-अधमाः (उणादि) २।१०६।

घास-कर-विशिष्टे पुंवच्च ५।२।४७।

घा हः ६।४।१३।४।
 घुणेः डोरः (उणादि) ३।३।५।
 घुषेः अविशब्दने ५।४।१५।१।
 घृ-सि-दूभ्यः क्तः (उणादि) २।५।१।
 घ्र इत् ६।१।६६।
 घ्रा-त्रा-अर्ति-ही-नुद-उन्द-विदो वा
 ६।३।८७।
 घ्रा-धे-शा-च्छा-सो वा १।१।६३।

ङमो ह्रस्वात् द्वे ६।४।१७।
 ङसि-ङसोः ५।१।११६।
 ङसेश्चात् २।१।३०।
 ङित् १।१।११।
 ङित्तः १।४।४८।
 ङिति असख्युः ६।२।५०।
 ङित् अनाशिषि १।४।३४।
 ङि-स्योर्वा ५।३।१३२।
 ङेः स्मिन् २।१।७।
 ङे-ङस्योः य-आतौ २।१।५।
 ङेः आम् तत्र ६।२।५६।
 ङे-सुटः अम् २।१।२७।
 ङणोः कुक्-टुकौ शरि ६।४।१२।
 ङयः ईत् ४।४।१४।५।
 ङ्यादीनाम् २।२।८६।
 ङ्यापो दीर्घात् ५।१।६७।
 ङ्यापोः त्वनाम्नोः बहुलम् ५।२।७३।
 ङी-आप्-ति-ऊङः २।४।५०।
 ङ्याम् ५।३।१५०।
 ङी-ऊङः ६।२।४६।
 ङी-ऊङ-ऋतः अभ्रुवः ४।४।१४।१।
 चक्रि-ससि-जज्ञयः १।२।११।५।
 चक्षः ख्याञ् ५।४।८१।

चक्षेः उसिन् (उणादि) ३।६।४।
 चङि ५।१।२।४।
 चङि उपान्तस्य ६।१।६१।
 चङ-लिटोः ५।१।२।
 च-जोः कुः घित्-ण्यतोः ६।१।८३।
 चटकात् ऐरक् २।४।५८।
 चति-कटि-शृ-वृञः ट्वरच् (उणादि)
 ३।१।५।
 चतुरः ४।२।५७।
 चतुर्-अनडुहोः आम् ५।४।५०।
 चतुर-संगत-लवण-वड-बुध-कतर-सलसात्
 वा ४।१।१३८।
 चतुर्थी प्रकृत्या २।२।१७।
 चतुष्पाद्भ्यः ढञ् २।४।७६।
 चत्वारिंशदादौ वा ५।२।५४।
 चन्द्रात् माङो ङित् (उणादि) ३।६।८।
 चमि-तनि-वधिभ्यः ऊः (उणादि)
 १।४।३।
 चयः शरि द्वितीयः ६।४।१५८।
 चर् ६।२।११४।
 चरः १।१।११०।
 चरणात् वुञ् ३।३।६४।
 चरति ३।४।७।
 चर-फलोः ६।२।१३६।
 चराचर-चलाचल-पतापत-वदावद-घनाघन-
 पाटूपटा वा ५।१।१०।
 चरेः टः १।२।४।
 चर्मणि अञ् ४।१।१८।
 चलन-आहारार्थात् १।४।१३६।
 चातुर्मास्यं यज्ञे ३।३।२२।
 चातुर्मास्यात् यलोपश्च ४।१।१११।
 चायः कीः ५।१।२७।

चार्थ-रोग-गहितात् प्राणिस्थात् अस्वाङ्गात्
इति: ४।२।१२५।

चार्थसमास-मनोज्ञादिभ्यः ४।१।१४६

चार्थसमासे २।१।१२।

चार्थात् छः ३।१।६।

चार्थात् वैरे वुन् अदेवासुरादिभ्यः
३।३।८६।

चार्थान् अदेवासुरादीन् ३।३।५७।

चार्थे २।२।४८।

चार्थे चु-द-ष-हः समाहारे ४।४।८६।

चाल-शब्दाथत् अनाप्यात् युच्
१।२।६७।

चिणः १।१।८५।

चिण्-णमोः अप्रादेः वा ५।४।२३।

चिण्-णमोः दीर्घश्च ६।१।५७।

चिण्णल्ङित्सु ६।२।१०।

चिण् ते पदः १।१।७६।

चिति-राशि-वास-देहेषु चः कः १।३।३२।

चितेः कपि ५।२।१३६।

चिति उपमार्थे ६।३।१२८।

चित्रङः आश्चर्ये १।१।३८।

चि-स्फुरोः णौ ५।१।५६।

चु-टु-तु-ल-शर्व्यवाये ६।४।१३२।

चुरादिभ्यः णिच् १।१।४५।

चूडादिभ्यः अण् ४।१।१३०।

चूर्णात् इति: ३।४।२३।

चेर्वा ६।१।८६।

चोः कुः ६।३।५६।

चौ ५।२।१४६।

च्वि-यङ्-यक्-व्येषु ६।२।७८।

च्व्यर्थे भृशादिभ्यः स्-त्तलोपश्च १।१।३०।

छः २।४।६५।

छ-कारके अन्यस्य दुक् ५।२।११६।

छगलिनो द्विनुक् ३।३।७६।

छश्च आयुधात् ३।४।१२।

छत्रादिभ्यः णः ३।४।६३।

छदिर्-बलिभ्यां ढञ् ४।१।१६।

छदेः नुम् च (उणादि) ३।१०६।

छन्दसा निर्मिते ३।४।६५।

छन्दसो यत् ३।३।४३।

छन्दोग-औक्थिक-याज्ञिक-बह्वृचात् धर्म-

आम्नाय-संघेषु ३।३।६२।

छन्दोनाम्नि १।३।२६।

छवि रः सः ६।४।२८।

छविआदयः (उणादि) १।८३।

छादेर्घे ६।१।५८।

छाया २।२।७३।

छे ३।३।१११।

छे ५।१।७०।

छेदादिभ्यो नित्यम् ४।१।७५।

छो वा ६।२।६३।

जक्षादिभ्यः पञ्चभ्यः १।४।५।

जङ्गल-धेनु-बलजस्य वा ६।१।३५।

जटा-लोष्टम् (उणादि) २।३३।

जत्र्वादयः (उणादि) १।४०।

जनपदनाम्नः क्षत्रियात् राज्ञि च

२।४।६६।

जनपदवत् सर्वं तत्स्रूपात् बहुत्वे

३।३।६८।

जनपदात् ४।४।८८।

जनपदेभ्यः ३।२।३८।

ज-नशः ५।३।५५।

जन-सन-खनाम् आत् ५।३।३६।

जनि-मनि-दसि-भुजेः क्युस् (उणादि)	जायादयः (उणादि)	२।११०।
१।३४।	जायायाः निङ्	४।४।१२२।
जनि-वघोः ६।१।४३।	जि-ग्लश्च क्स्तुः	१।२।६४।
जनि-ईशि-ईडः स्-ध्वे ५।४।१७४।	जित्या-विपूय-विनीया हलि-मुञ्ज-कल्केषु	१।१।१२८।
जनेः अरः ठश्च (उणादि)	३।३१।	
जनः उसिः (उणादि)	३।६१।	जिह्वामूल-अङ्गुलेः छः
जनेः घः (उणादि)	२।३०।	३।३।३०।
जप-जभ-दह-दश-भञ्ज-पशाम् ६।२।१३५।	जीवात् ग्रहः णमुल् स चानु	१।३।१३६।
जपि-वमः ५।४।१४३।	जीविका-उपनिषदौ औपम्ये	२।२।४०।
ज-व-ना-ड-दश् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ६)	जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल-शुच-	
जभः अचि ५।४।१४।	लष-पत-पदः	१।२।६६।
जम्बवादयः (उणादि)	१।४७।	जुस्-पुकोः ६।२।३।
जराया जरस् वा ५।४।६७।	ज-विशः अन्तच् (उणादि)	२।४३।
जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ट-वृडः शाकन्	जृ-वृञः ऊयन् (उणादि)	२।५७।
१।२।१०३।	जृ-श्चि-स्तम्भु-म्रुचु-म्लुचु-ग्लुचः	१।१।७५।
जसः शीः २।१।८।	जृषः त्वः ५।४।११५।	
जसि ६।२।४६।	जृषः अतृन् १।२।७२।	
जस्-शसोः शिः २।१।१६।	जेः नुक् च (उणादि)	१।६५।
जागुः १।३।८३।	ज्ञपि-आप्-ऋधाम् ईत् ६।२।१०८।	
जागुः क्विन् (उणादि)	१।८२।	ज्ञा-कृ-प्री-इगुपान्तात् कः
जागुः अलिटि ६।२।६।	१।१।१४१।	ज्ञा-जनोः जाः ६।१।१०७।
जागुः ऊकः १।२।१११।	ज्ञान-यत्न-उपच्छन्दनेषु वदः	१।४।६३।
जागृ-उषो वा १।१।५४।	ज्यः ५।१।४६।	
जाण्ड-पाण्डाद् आरक् २।४।६०।	ज्यायान् ५।३।१६२।	
जातिः अष्फादौ च ५।२।३८।	ज्या-त्रश्च-प्रछ-भ्रस्जाम् ५।१।१७।	
जातीयर् ४।३।२६।	ज्योतिस्-आयुषश्च स्तोमः ६।४।७०।	
जाते प्रोष्ठ-भद्रात् पदस्य ६।१।२८।	ज्योतिरादयः (उणादि)	३।६०।
जातेः अनाच्छादात् वा २।३।५६।	ज्योत्स्ना-तमिस्र-ऊर्जस्विन्-ऊर्जस्वल-	
जातेः अस्त्रीविपयात् अयोपान्तात्	मलीमसाः ४।२।११७।	
२।३।७१।	ज्योत्स्नादिभ्यः ४।२।१०७।	
जातौ इतमच् बहुभ्यः ४।३।७६।	ज्वर-त्वर-अव-श्रिवु-मवां सोपान्तस्य	
जानु-नीवीभ्याम् ३।३।३७।	५।३।१६।	
	ज्वलादिभ्यो णो वा १।१।१४६।	

ज्ञ-भञ् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ७)

ज्ञयः ६।३।३६।

ज्ञयः हो ज्ञय् ६।१।१५६।

ज्ञलि तिङि अपिति ५।३।३७।

ज्ञलः जश् ६।३।६७।

ज्ञलः जलि ६।३।५५।

ज्ञषः एकाचः स-ध्वोः वशो भष्

६।३।६६।

ज्ञषः जश् ६।२।११५।

ज्ञसि अरन् १।४।३७।

ज्ञेः जुस् १।४।४०।

ज्ञः अन्तः १।४।३।

जमः किति वौ च ५।३।१७।

ज-म-ड-ण-न-म् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ६)

जमन्तात् डः (उणादि) २।३६।

जमि च च्छ्वोः शूठ् ५।३।१८।

जमोऽतः नुक् ६।२।१३४।

जितः १।४।१२६।

जित्-आर्षण्यात् अणिबोः २।४।१२३।

जिगिति ६।१।६।

जिगन्ति हनो हः ६।१।८५।

ज्यादीनां बहुषु लुक् ४।३।६४।

ज्यादीनां २।४।१०६।

टक् १।२।३६।

टकितौ आद्यन्तौ १।१।१३।

टा-डसोः इन-स्यौ २।१।४।

टि चापः ६।२।४३।

टित्-ठ-अण्-अञ्-ठक्-ठञ्-नञ-स्नञ्-कञ्-

क्वरप्-ख्युनः २।३।१७।

टित्तडाम् एत् १।४।१५।

टः अस्त्रियां ना ६।२।६३।

टा-ओसि अकः अनः ५।४।७४।

द्वितं: अथुच् १।३।६६।

ठञ्चान्यत्र ४।१।६६।

ठञ् ३।२।३०।

ठस्य इकः ५।४।३।

डः १।२।३५।

डः १।२।६५।

डः ६।३।४७।

डः सः धुट् ६।४।१३।

डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः अनेकतरात् तः
२।१।२५।

डश्चोपात् ४।३।६५।

डाचि पूर्वस्य ५।१।१०५।

डाच्-लोहितादिभ्यः क्यष् १।१।३१।

डित् अण् ३।३।८।

ड्वितः क्त्रः १।३।६८।

ढक् २।४।४६।

ढकि लोपः २।४।६८।

ढे ५।३।१४८।

ढे अगनायी ५।२।३३।

ढे अनादौ ढलोपः ६।४।१८।

ढूलोपे अणः ५।२।१३७।

णः पन्थश्च नित्यम् ४।१।८८।

णच्-इनुणः ४।४।२१।

णि-श्रन्थ-ग्रन्थ-विद-आस-घट्ट-वन्दः युच्
१।३।८६।

णि-श्रि-द्गु-स्तु-कमः कर्तरि चङ् १।१।६८।

णेः अनिटि ५।३।६७।

णेः अस्विदि-स्वदि-सहः ६।४।४६।

णैर्वा ६।४।१२४।

णेः वृत्तं ग्रन्थे ५।४।१५४।

णः नः ५।१।६२।

णः अरण्यात् ३।२।१७।

तद् नपुंसकम् २।२।१५।
 तपआप्यात् १।४।७५।
 तपः-सहस्राभ्याम् अण् ४।२।१०६।
 तपसः तपआप्यात् १।१।८१।
 तप्त-अनु-अवात् रहसः ४।४।६७।
 तमेः वुक् च (उणादि) ३।४।४।
 तमि-अमि-जीनाम् दीर्घश्च (उणादि) ३।६।
 तयोः य्-वौ अचि ६।३।१३३।
 तयोः वा १।४।६७।
 तर-तम-रूप-कल्प-चेलट्-ब्रुव-गोत्र-मत-हते
 ड्यः ह्रस्वः ५।२।४२।
 तरति ३।४।५।
 तर्हि एतर्हि सद्यः परेद्यवि ४।३।१६।
 तवक-ममकौ एकत्वे ३।२।६४।
 तव-ममौ डसि । ५।४।६२।
 तव्यादिषट्के अवश्यमः ५।२।६०।
 तव्य-अनीयर्-केलिमरः १।१।१०५।
 तसोः तसौ मत्वर्थे ६।३।६८।
 त-स्थ-स्थानां तां-तं-ताः डितश्च १।४।२८।
 तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ४।१।१२०।
 तस्मै भृतः अधीष्टः ४।१।६४।
 तस्मै हितम् ४।१।४।
 तस्य दक्षिणा यज्ञेभ्यः ४।१।११२।
 तस्य धर्म्यम् ३।४।४६।
 तस्य पूरणे डट् ४।२।५१।
 तस्य भावः त्व-तलौ ४।१।१३६।
 तस्य वापः ४।१।४८।
 तस्य व्याख्यानं च व्याख्येय-नाम्नः
 ३।३।३८।
 तस्य समूहः ३।१।४३।
 तस्य स्वं रथात् यत् ३।३।८५।
 तस्यापत्यम् २।४।१६।

तस्य एश् १।४।१०।
 ता तत्कालः १।१।३।
 तात-पलित-जर्त-सूरताः (उणादि) २।५।२।
 तादर्थ्ये २।१।७६।
 ताभ्यां डाप् २।३।१४।
 तारका ज्योतिषि ६।१।८०।
 तारेः अन् (उणादि) १।६।४।
 तालादिभ्यः अण् ३।३।१०६।
 ताससः रि च लोपः ६।२।१००।
 तासश्च क्लृपः ५।४।१२४।
 तिक-कितवादिभ्यः चार्थैकार्थ्ये २।४।११५।
 तिकादिभ्यः फिञ् २।४।८६।
 ति किति अदो जग्धः ५।४।८५।
 तिङ्श्च रूपप् ४।३।५३।
 तिङ्-असंख्यानाम् अचोऽन्त्यात् पूर्वोऽकच्
 ४।३।५६।
 तिङि हलि अपिति ५।३।५८।
 तिङि अवक्षेपे ५।२।६२।
 तिङ्शिति यक् अलिट्-आशीर्-लिङि
 १।१।८०।
 तिङ्शिति अपित्-आशीर्लिङि ६।२।८।
 ति चोद् अतः ६।२।१३७।
 तिजः क्षान्तौ सन् १।१।१७।
 तिजेः ईच् च (उणादि) २।७।८।
 ति-तु-व-यस्-ताः ४।२।१५०।
 तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिक-उखात् छण्
 ३।३।७०।
 तिपि ६।३।१०५।
 तिमि-रुधि-मदि-मन्दि-चन्दि-बन्धिभ्यः
 किरच् (उणादि) ३।५।
 तिरसः ६।४।४४।
 तिरसः तिरि अति । ५।२।११२।

त्व-अही सौ ५।४।६०।

थलीटि ५।३।११७।

थासः से १।४।१७।

थो न्यः ५।४।४०।

दः ६।३।१०७।

दक्षिणा-कडङ्गर-स्थालीबिलात् छश्च
४।१।८०।

दक्षिणा-पश्चात्-पुरसः त्यक् ३।२।७।

दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे ४।४।११५।

दक्षिण-उत्तरात् आच्च ४।३।३८।

दगु-कोशल-कर्मारि-छाग-वृषात् युट् च
२।४।८७।

दण्ड-दानयोः ४।४।४।

दण्डादिभ्यः ४।१।७६।

दधृग्-उष्णिक्-क्रुञ्चः १।२।४६।

दध्नः ठक् ३।१।१६।

दन्तुरः ४।२।११०।

दम्भः इच्च ६।२।१०६।

दम्भः स्सनि च ५।३।२६।

दम्भ-श्रन्थ-ग्रन्थाम् ५।३।१२२।

दयायाम् ४।३।६३।

दरिद्रः किति ५।३।११२।

दशैकादश-कुसीदात् ष्ठन् ३।४।३८।

दः ति ५।२।१४३।

दाणः सा चेत् चतुर्थ्यर्थे १।४।१०८।

दाण्डिनायन-हास्तिनायन-जैह्याशिनेय-
वासिनायनि-भ्रौणहत्य-धैवत्य-सारव-
ऐक्ष्वाक-हिरण्मयानि ५।३।१७८।

दादेर्घातोः घः ६।३।६३।

दा-धा-गाति-स्था-भू-पः अतडि लुक्
१।१।६२।

दा-भाभ्याम् नुः (उणादि) १।२।८।

दामन्यादिभ्यः छः ४।३।६२।

दाम्नः संख्यादेः २।३।१०।

दास्वान् साह्वान् मीढ्वान् चिकिल्वदम्
चक्नसम् ५।१।६।

दिवशब्दात् तीरस्य तारः ५।२।१२६।

दिवशब्दात् दिग्देशकालार्थात् सप्तमी-
पञ्चमी-प्रथमाभ्यः अस्तातिः ४।३।२८।

दिगादिभ्यः भवे यत् ३।३।१७।

दिगादेः अनाम्नि अमद्रात् ३।२।१६।

दिगादेः ठञ् च ३।२।६८।

दिति-अदिति-आदित्य-यमात् ण्यः २।४।२।

दिवः औत् ५।४।३७।

दिवस्-पृथिव्यां वा ५।२।२७।

दिवादिभ्यः श्यन् १।१।८७।

दिवेर् ऋन् (उणादि) १।४।८।

दिवो दासे ५।२।१७।

दिवो द्यावा ५।२।२६।

दिवः अन्ते च उत् ५।१।१३५।

दीङ् अक्किट्सनि ल्यपि ५।१।५२।

दीङ् लिटि युक् ५।३।७४।

दीप-जन-बुध-पूरि-तायि-प्यायो वा
१।१।७७।

दीयते नियुक्तम् ३।४।६७।

दीर्घस्य ५।१।७२।

दीर्घात् जसि च ५।१।११२।

दीर्घात् ६।४।१४७।

दीर्घात् वरुणस्य ६।१।३३।

दीर्घः अपिति इणः ६।२।१२२।

दीर्घः लघोः ६।२।१४१।

दुःखात् प्रातिकूल्ये ४।४।४८।

दुःग्वोः ऊ च ६।३।७८।

दुःन्यः अप्रादेः १।१।१५०।

दुरो ढक् वा २।४।७४।

द्वित्वहेतौ ६।१।८६।
 द्वित्वे ५।१।४०।
 द्वित्वे ६।३।११०।
 द्वित्वे अध्यादिभिः २।१।५१।
 द्वित्वे परसवर्णः ६।३।३४।
 द्वित्वे पूर्वस्य अत्र लोपः ६।२।१११।
 द्वित्वे पूर्वस्य असमे ५।३।८४।
 द्विदण्ड्यादीनि ४।४।११७।
 द्वि-बहुषु प्रकर्षे तरप्-तमपौ ४।३।४५।
 द्विरुक्तस्य नाचि अलिटि ६।२।७।
 द्विरुक्तात् अत् १।४।४।
 द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः ४।४।७०।
 द्वीपात् अनुसमुद्रात् ज्यः ३।२।६५।
 द्वेश्च संख्यायां प्राक् शतात् अनन्यार्थ-
 अशीत्योः ५।२।५२।
 द्व्यचः २।४।५१।
 द्व्यचः अणः २।४।८८।
 द्व्यचः असंख्यापरिमाण-अश्वादेः यत्
 ४।१।५२।
 द्व्यच्-ऋत्-ऋग्-ब्राह्मण-प्रथम-अध्वर-
 पुरश्चरण-नाम-आख्यातात् ठक्
 ३।३।४६।
 द्व्यच्-नौभ्यां ठन् ३।४।६।
 द्व्यच्-मगध-कलिङ्ग-शूरमसात् अण्
 २।४।१००।
 द्वि-अन्तः-प्रादेः अनात् अपं ईत्
 ५।२।११३।
 धन-गणं लब्धा ३।४।८३।
 धनस्य तृष्णायाम् ६।२।८८।
 धन-हिरण्ये कामः ४।२।७०।
 धनुर्नाम्नि ४।४।१२१।
 धर्म-शील-वर्षान्तात् ४।२।१२६।

धमत् अनिच् केवलात् ४।४।११३।
 धर्म-अधर्मं चरति ३।४।३६।
 धर्मेण प्राप्ये ३।४।६३।
 धस् त-थोश्च ६।३।७०।
 धाञो हिः ६।२।६४।
 धातूक्तौ अयदि वा १।३।११६।
 धातोः सी-लुङोश्च धः ङः ६।४।६६।
 धातोः वीः अनचि इकः दीर्घः
 ६।३।१०८।
 धातोः तत्रैव ५।१।७७।
 धा-दा-नी-पति-पा-शसिभ्यः ष्ट्रन् (उणादि)
 ३।३६।
 धान्ये नित् (उणादि) १।७।
 धान्येभ्यः क्षेत्रे खञ् ४।२।१।
 धाय्या-पाय्य-आनाय्य-सांनाय्य-निकाय्या
 नाम्नि १।१।१३६।
 धारि-पारि-वेदि-उदेजि-चेति-साति-साहि-
 विन्दः अप्रादेः १।१।१४४।
 धारेः उत्तमर्णे २।१।७४।
 धारेः धर् च १।२।३१।
 धा संख्यायाः ४।३।२०।
 धि सङि ६।३।५४।
 धुटि श्चुः ६।३।३३।
 धुरो ङक् च ३।४।७८।
 धूञ्-प्रीञोः नुक् ६।१।४८।
 धूमादिभ्यः ३।२।४१।
 धृष-शसः प्रागल्भ्ये ५।४।१४७।
 धृषेः धिष् च (उणादि) २।७।१।
 धेनुष्या-गार्हपत्यौ नाम्नि ३।४।८८।
 धेनोः अनञः ३।१।४६।
 धेनोः भव्यायाम् ५।२।८६।

धेन्वनडुह-ऋग्यजुष-अक्षिभ्रुव-दारगव-
ऊर्वाष्ठीव-पदष्ठीव-नक्तंदिव-रात्रिदिव-
अहृदिव-सरजस-पुरुषायुष-द्विचायुष-त्र्या-
युष-जातोक्ष-महोक्ष-वृद्धोक्ष-उपशुन-
गोष्ठश्वाः ४।४।६२।

धेन्वादयः (उणादि) १।३।१।
धे-श्वेः वा १।१।६६।
धे-सि-शद-सदो रुः १।२।१०५।
धमः पाण्यादिभ्यश्च १।२।१४।

नः ५।३।६।
नः ६।४।१४।
न कपि ६।२।७।१।
न किमः क्षेपे ४।४।५३।
न कुडः यडि ६।२।११७।
न क्रोडादिभ्यः २।३।६७।
न क्वादेः ३।१।६०।
नक्षत्रात् इतो वा ६।४।८६।
नक्षत्रात् नेतुः ४।४।१०२।
नक्षत्रैः इन्द्रयुक्तैः कालः ३।१।५।
न धुधि अशनस्य ६।२।८७।
नख-मुखात् नाम्नि २।३।६६।
नखादयः ५।२।६५।
न गति-हिंसा-शब्दार्थ-हसः १।४।५०।
नगरात् कुत्सा-प्रावीण्ययोः ३।२।४२।
नगरात् अहस्तिनि १।२।४१।
न गोपयनादिभ्यः अष्टभ्यः २।४।११६।
नगः अप्राणिनि वा ५।२।६६।
नक् वा ६।३।६१।
न च-वा-हा-हैवयोगे ६।३।२२।
न च्चिष्ठीवण्-श्वुवाम् अन्नूकुंसादीनाम्
५।२।७२।
नञ् २।२।२०।

नञः शुचि-ईश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल-निपुणानाम्
६।१।३६।

नञः नः ५।२।६१।
नञः अनन्यार्थे ४।१।१३७।
नञः अनन्यार्थे ४।४।५५।
नञ्-बहोः माणव-चरणयोः ४।४।५६।
नञ्-सु-दुर्भ्यः सक्थो वा ४।४।१०६।
नञ्-सु-वि-उप-त्रेः चतुरः अच् ४।४।१०३।
नटात् ङ्यः नृत्ये ३।३।६१।
न टोः अनवति-नगर्योः आदेः ६।४।१३७।
नडादिभ्यः २।४।३५।
न तडानैः ५।४।१२२।
न तस्मिन् ५।१।४१।
न त्यादि-बुकोपान्तम् ५।२।३४।
न दधिपयआदीनाम् २।२।६६।
नदी-देश-नगराणां भिन्नलिङ्गानाम्
२।२।५४।

नदीभिः २।२।१३।
नदी-मानुषीनाम्नः अनादैजाद्यचः २।४।४२।
नदीष्णः कुशले ६।४।७६।
नद्यादिभ्यः ढक् ३।२।६।
न द्विः ३।३।१२७।
न द्वित्वे ५।१।१०३।
न द्व्यचः प्राच्यात् ३।२।२३।
न ध्या-ख्या-पृ-मूर्च्छि-मदाम् ६।३।६५।
न नाम्नि ४।४।१४३।
न नि मुः ६।३।२६।
न नी-खादि-अदि-ह्वा-शब्दाय-कन्दः
२।१।४७।
नन्दि-ग्रहादिभ्यः ल्यु-णिनी १।१।१४०।
न न्दो हलि ५।१।४।
न पदाती ३।२।५१।

न पात्रादयः २।२।८०।
न पा-दम-आयम-आयस-परिमुह-अत्ति-
रुचि-नृति-घेट्-वद-वसः १।४।१४१।

नपुंसकात् २।१।१८।
नपुंसकात् वा ४।४।६२।
नपुंसके च अर्धर्च-आदयः २।२।८३।
नपुंसके वा ६।३।५०।

न प्लुतः अनितौ ५।१।१२३।
न भा-भू-पूञ्-कमि-गमि-प्यायी-वेपाम्
६।४।१२८।

नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-वषट्-शक्तार्थैः
२।१।७८।

नमसः ६।४।४२।
नमस्-तपस्-वरिवसः क्यच् १।१।३७।
नमि-मनि-जनाम् नाकि-ध-तश्च (उणादि)
१।१०।

न यत्-तदोः ६।१।७७।
न यदि १।२।७६।
न य-दीक्षः १।२।१०१।
न यवादिभ्यः ६।३।३८।
न राज-आचार्य-वृषन्-ब्राह्मणात्
४।१।५।

नरिका ६।१।७६।
नरे नाम्नि ५।२।१३०।
न ल-निर्घर्यि-पूरण-भाव-तृप्तार्थैः २।२।२३।
न लिङि ५।४।१०२।
न ल्यपि ५।३।८०।
नवयज्ञादिभ्यः ४।२।१२४।
नवात् ४।४।२८।
न व्यतिहारे ६।१।१७।
न शस-दद-वादि-अदेडाम् ५।३।१२५।
न शुभ-रुचः १।१।४४।

नशोः क्षः ६।४।१३०।
नशः अङि ५।३।१२४।
नशः झलि ५।४।१२।
नश् च अनन्त्यस्य झलि ६।४।६।
नश् छवि अप्रशान् ६।४।३।
न संबुद्धौ ५।४।४६।
न संबुद्धौ ६।३।४६।
न संयोगात् व-मः ५।३।१३३।
न सामान्यवचनम् एकार्थं
६।३।२५।

न सु-दुरः केवलात् ५।४।२२।
न सुपि यचि ६।३।१०६।
नस् नासिकायाः तस्-क्षुद्रे ५।२।६१।
न स्तोः ५।४।१२५।
न स्वप्रसारणे १।४।५५।
नह-आहः घः ६।३।६५।
नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु
क्वौ ५।२।१४०।
नाक्रोशे पुत्रस्य आदिनि तत्परे च
६।४।१४५।

नाग्लोपिशास्वृदिताम् ६।१।६२।
नाज्ज्ञेः शतुः ५।४।३२।
नाञ्चः पूजायाम् ५।३।५०।
नाडी-तन्त्रयोः स्वाङ्गे ४।४।१४७।
नातः ६।१।३७।
नातः अम् अपञ्चम्याः २।१।४१।
नात् इचि ५।१।१११।
नात् ऐचि अग्नेः अविष्णौ ५।२।२४।
नाद्यन्तयोः ६।४।६०।
नानु-पराभ्याम् कृञ्ः १।४।१३१।
नानोः तपः १।१।७६।
नान्यश्च नामाप्रधानात् २।१।१०।

नामैः ४।४।१०४।
 नाम-नोत्र-रूप-स्यान-वर्ण-वयस्-वचन-धर्म-
 जातीये वा ५।२।१०४।
 नाम-रूपात् घेयः ४।४।२५।
 नाम्नि ५।२।१६८।
 नाम्नि ६।३।३७।
 नाम्नि क्तिच् १।३।७७।
 नाम्नि ग्रह-आदिशः १।३।१५०।
 नाम्नि जन्याः ३।४।८१।
 नाम्नि नासाया नसः अस्थूलात्
 ४।४।१०६।
 नाम्नि परात् च चतुर्थ्याः ५।२।१०।
 नाम्नि षष्ठ्याः कन्या-उशीनरेषु २।२।६७।
 नाम्नि अष्टनः ५।२।४६।
 नाम्नि उदकस्य उदः ५।२।६५।
 नामि अतिसृ-चतस्रोः ५।३।४।
 नालि ६।२।३२।
 नावादिभ्यः ठन् ४।२।११८।
 नाशिपि अगो-वत्स-हले ५।२।१०२।
 नासन-वर्जनेषु ५।४।८३।
 नासानती टीट्च्-नाटच्-भ्रटच्ः ४।२।३२।
 नासिका-नाडी-मुष्टि-वटी-खरीभ्यः
 १।२।१३।
 नासिका-उदर-ओष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्ण-शृङ्गा-
 अङ्ग-गात्र-कण्ठात् २।३।६२।
 निकटादिषु वसति ३।४।७४।
 निजाम् लुकि एत् ६।२।१२७।
 नित्यवर्णिशाम् २।२।५५।
 नित्यं हस्ते-पाणी उद्गाहे २।२।३८।
 निद्रा-तन्द्रा-श्रद्धा-इया-हृदयात् बालुच्
 ४।२।१५७।

निन्दा-आशीः-प्रैष्येषु तिङ्काकाङ्क्षम्
 ६।३।१२६।
 निन्दे पाशप् ४।३।४२।
 नि-परेः च सेव-सिबु-सह-सुटाम्
 ६।४।५५।
 निपानम् आहावः १।३।६३।
 नि-प्रतेः स्तव्वः ६।४।६४।
 निविड-निविरीष-चिक्क-चिकिन-चिपिटाः
 ४।२।३३।
 निमान-निमेययोः मयट् ४।२।४६।
 निमित्ताद् व्याप्येन २।१।८६।
 निमित्ते संयोगोत्पाते ४।१।५१।
 नियः १।३।१५।
 नियः ६।२।६०।
 नियः डित् (उणादि) १।४६।
 निर्-अभेः पू-त्वः १।३।१६।
 निर्-अभि-अनोः च स्यन्दः अप्राणिनि
 वा ६।४।६१।
 निरा-अलंभ्याम् कुः इष्णुच् १।२।६०।
 निर्-डुर्-वहिर्-आविर्-चतुर्-प्रादुष्-पुर-
 साम् ६।४।३५।
 निर्विण्णः ६।४।१२३।
 निर्वृत्ते अक्षयूतादिभ्यः ३।४।१८।
 निवासस्य चरणे अण् च ३।२।६०।
 निवासे तन्नाम्नि ३।१।६४।
 निशा-प्रदोपात् ३।२।७४।
 निष्कादेः शत-सहस्रात् ४।२।१२३।
 निष्कुलात् निष्कोषणे ४।४।४६।
 निष्कुषः ५।४।१०६।
 निष्प्रवाणिः ४।४।१४८।
 नि-सम्-वि-उपेभ्यः ह्वः १।४।७६।
 निसः शतो डच् ४।४।६४।

निसः च श्रेयसः ४।४।६६।
 निसः तपि सकृत् ६।४।८८।
 निसः गते ३।२।१४।
 निहृन्वे ज्ञः १।४।६०।
 नीक् वञ्च-संसु-ध्वंसु-भ्रंगु-कस-पत-पद-
 स्कन्दाम् ६।२।१३३।
 नी-दलिभ्याम् मिः (उणादि) १।६।४।
 नील-पीतात् अन्-कनौ ३।१।४।
 नीलात् प्राणि-ओषधयोः २।३।३६।
 नीवाराः १।३।२२।
 नुक् च अनेकहलः ६।२।१२४।
 नुट् च (उणादि) ३।१।३३।
 नु-प्रच्छः १।४।५७।
 नुमि इच्-आदेर्हलः ६।४।१२६।
 नुम्-विसर्जनीय-शरव्यवाये ६।४।४७।
 नुर्वा ५।३।५।
 नृ-तत्स्थयोर्वृञ् ३।२।४६।
 नृति-खनि-रजः शिल्पिनि श्चुन् १।१।१५७।
 नृनाम्नि ठच्-घन्-इलचो वा ४।३।६४।
 नृनाम्नो वा ३।२।२६।
 नृहेतुभ्यो रूप्यः ३।३।५२।
 नन् पे रो वा ६।४।५।
 नेः १।३।५४।
 नेः सत्-पतः १।३।७६।
 नेः सय-सितयोः ३।४।५६।
 नेः स्नातः ६।४।७७।
 नेटि ६।१।५।
 नेन्द्रस्य परस्य ६।१।३२।
 नेः अञ्चेः (उणादि) १।१२।
 नेः ईच् च (उणादि) १।५६।
 नेः गद-नद-पत-पद-दा-धा-मा-वा-दिह-वह-
 शम-हन-या-सा-द्रा-प्सा-च्चि-वपिषु
 ६।४।११६।

नेर्ण च १।३।५०।
 नेविशः १।४।५१।
 नैकाचः ४।२।१२०।
 नैकाचः ५।३।१६५।
 नैतो द्वित्वे ६।३।१३२।
 नोऽणादौ ५।३।१३६।
 नोपान्तवतः २।३।१२।
 नो मट् ४।२।५५।
 नौ-तुला-विषैः तार्य-सम्मित-वध्येषु
 ३।४।६१।
 न्यग्रोधस्य केवलस्य ६।१।१६।
 न्यङ्क्वादयः ६।१।८४।
 न्यायो नये १।३।२८।
 नि-उदो ग्रहः १।३।२०।
 पक्षस्य तिः ४।२।२६।
 पक्षात् २।३।६६।
 पक्षि-मत्स्य-मृगान् हन्ति ३।४।३२।
 पङ्गुः श्वश्रूः २।३।७८।
 पचैः अतः इत् च (उणादि) ३।३३।
 पचः वः ६।३।६१।
 पञ्चत्-दशत् वर्गे वा ४।१।६३।
 पञ्चम्यां त्वरायाम् १।३।१४४।
 पञ्चम्यां परस्य १।१।८।
 पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः ५।२।२।
 पञ्च-विश्वात् जनान्तात् तदथात् ४।१।१०।
 पटि-असि-वसि-त्रपि-हनि-मनि-इन्दि-कन्दि-
 वन्धिभ्यः (उणादि) १।८।
 पणः परिमाणे १।३।५७।
 पण-पाद-मासात् यत् ४।१।४३।
 पणि-पतेः आङ् (उणादि) २।६।
 पति-चन्दिभ्याम् आलञ् (उणादि)
 ३।४।६।

पतिवन्ती भार्यायाम् २।३।२६।
 पतेः अङ्गच् (उणादि) २।२७।
 पत्यादिषु अहर्आदीनाम् ६।३।१०२।
 पत्युः समासे ६।२।५१।
 पत्युः अनश्चाद्यादेः २।४।३।
 पत्युर्न ऊढायाम् २।३।३०।
 पथः ष्ठन् ४।१।८७।
 पथकः ४।२।६१।
 पथि-मथिभ्याम् इनिः (उणादि) ३।८।४।
 पथि-मथि-ऋभुक्षाम् आत् ५।४।३८।
 पथो वा ४।४।५६।
 पथः असंख्यात् २।२।७५।
 पथि-अतिथि-वसति-स्वपतेः ढञ्
 ३।४।१०५।
 पथि-अर्थ-न्यायात् च अनेपते ३।४।६४।
 पथि-आराधनयोः १।४।६८।
 पदम् अस्मिन् दृश्यम् ३।४।८६।
 पदस्य वा ६।१।२०।
 पदादौ वा ६।४।१५२।
 पदान्त-प्रतिकण्ठ-अर्थ-ललामम् गृह्णाति
 ३।४।३५।
 पदान्तस्य वा ५।१।७३।
 पद-अस्वैरि-पक्ष्य-वाह्यासुग्रहः १।१।१२६।
 पति-मति-रभि-चमि-अति-वेति-युवः असच्
 (उणादि) ३।६।५।
 पन्थकः ३।३।३।
 पद्-निष्-मान्-हृद्-यूपन्-दोपन् दसादौ
 वा ५।४।७७।
 पयः-पुरसो घाजः (उणादि) ३।६।७।
 पयसो यत् ३।३।१२२।
 परदारदीन् गच्छति ३।४।४५।
 परमेष्ठी (उणादि) ३।८।८।
 परस्य अङ्गिणि आम् ६।३।१०।

पर-अवरात् तस् वा ४।३।३७।
 पर-अवर-अधम-उत्तमादेः ३।२।६७।
 परिक्रियश्चतुर्थी च २।१।६४।
 परिखायाः ढञ् ४।१।२२।
 परिघ-उद्ध-निघाः १।३।६७।
 परिपन्थं तिष्ठति च ३।४।३३।
 परिमाणात् पचः १।२।१७।
 परिमाणात् लुकि असंख्याकाल-विस्ता-
 आचित-कम्बल्यात् २।३।२४।
 परिमुखादिभ्यः ३।३।२३।
 परिवृतो रथः ३।१।१०।
 परि-वि-अवात् क्रियः १।४।५२।
 परिक्रजेः षश्च पदान्ते (उणादि) ३।७।१।
 परिषदो ण्यः ३।४।४२।
 परिषदो ण्यश्च ३।४।१०३।
 परुत्-परारि-चिरात् त्नः ३।२।७८।
 परेः ६।४।६३।
 परेः सू-चरो यः १।३।८२।
 परेर्घ-अङ्क-योगेषु ६।३।४५।
 परेर्घृते १।३।१७।
 परेर्भुवः अवज्ञाने १।३।४४।
 परेर्मुख-पार्श्वात् ३।४।२८।
 परेर्मृशश्च १।४।१३४।
 परेर्यज्ञे १।३।३७।
 परेर्वर्जने वाक्ये वा ६।३।२।
 परेर्वा ५।१।४८।
 परोक्षे लिट् १।२।८१।
 परा-उपात् १।४।८५।
 परोवर-परंपर-पुत्रपौत्रम् अनुभवति
 ४।२।१६।
 पर्जन्यः (उणादि) २।१।१७।
 पर्पादिभ्यः ष्ठन् ३।४।८।

परि-अनुभ्यां ग्रामात् ३।३।२५।	पात्रात् षठ् ४।१।४६।
परि-अप-आङ्-बहिरञ्चः पञ्चम्या वा २।२।७।	पात्रात् यश्च ४।१।७८।
परि-अपाभ्यां वर्जने २।१।८२।	पादः २।३।७।
पर्यायः क्रमे १।३।२६।	पादः पत् ५।३।१२७।
पर्वत-जीवन्तात् वा २।४।३६।	पादस्य पाद् अहस्त्यादिभ्यः ४।४।१२७।
पर्वतात् ३।२।५५।	पादस्य आजि-आति-ग-उप-हते पदः ५।२।५८।
पर्व-मरुद्भ्यां तप् ४।२।१४२।	पाद्यम् ४।४।३३।
पर्वादिभ्यः अण् अस्त्रियाम् ४।३।६३।	पानं देशे ६।४।१०६।
पश्चात् ४।३।३५।	पापतिः १।२।११४।
पश्चार्धम् ४।३।३६।	पारस्करादीनि नाम्नि ५।१।१४२।
पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-बालान्तात् २।३।७२।	पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति ४।१।८३।
पा-घ्रा-ध्मा-घेट्-दृशः शः १।१।१४३।	पारावार-अवारपारात् खः ३।२।६।
पा-घ्रा-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश-शद-सदाम् पित्त-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-पश्य-शीय-सीदाः ६।१।१०६।	पारावार-अवारपार-अत्यन्त-अनुकामम् गामी ४।२।१७।
पाठे अत्वतः ५।४।१६२।	पाराशर्य-शिलालिभ्यां णिनिः ३।३।७८।
पाठे विभाषितात् १।४।१२५।	पारे मध्ये षष्ठ्या वा २।२।११।
पाणिगृहीती ऊढा २।३।५८।	पार्श्व-पौरुषेये ३।१।५३।
पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि १।२।४२।	पार्श्वेन अन्विच्छति ४।२।८१।
पाणि-समवाभ्यां सृजः १।१।१३१।	पाष्ण्यादयः (उणादि) १।८०।
पाण्डु-उदक-कृष्णात् भूमेः ४।४।७२।	पालन्-वलञ्चौ शीङः (उणादि) ३।५१।
पाण्डोड्यण् २।४।१०२।	पाशादिभ्यः यः ३।१।५६।
पा-त्-तुदि-वच्चि-रिचि-सिचि-विशेः ठक् (उणादि) २।५८।	पिच्छादिभ्यः च इलच् ४।२।१०३।
पातेः ६।१।५१।	पितृ-मात्रादेः छण् २।४।६७।
पातेः डतिः (उणादि) १।८५।	पितृव्य-मातामह-पितामहाः ३।१।६०।
पात्र-आचित-आढकात् खो वा ४।१।६६।	पित्रादयः (उणादि) १।५०।
	पित्र्यं वा ३।३।५१।

पिनाकादयः (उणादि) २।१६।
 पिवः पीप्यः ६।१।६८।
 पीडायाम् १।३।१४७।
 पी-म्योः रुः (उणादि) १।३६।
 पीला-मण्डूकात् वा २।४।४८।
 पील्वादीनां पाके कुणप् ४।२।२४।
 पीवरादयः (उणादि) ३।१६।
 पुम्-जनुभ्याम् अनुज-अन्धयोः ५।२।८।
 पुन्नाम्नः योगात् अपालकान्तात्
 २।३।४४।
 पुंवत् स्वपदार्थ-जातीय-देशीयेषु
 ५।२।३६।
 पुंसि उटि उगितः ५।४।२४।
 पुंसः असुङ्ग ५।४।४२।
 पुच्छात् २।३।६३।
 पुणेः क्यन् (उणादि) २।११८।
 पुण्याहवाचनादिभ्यः लुक् ४।१।१३४।
 पुत्रात् छश्च ४।१।५४।
 पुत्रान्तात् वा २।४।६२।
 पुत्रे ५।२।२२।
 पुत्रे वा ५।२।१३।
 पुनः ५।१।६।
 पुमः खयि अमि ६।४।२।
 पुरः कुषन् (उणादि) ३।५८।
 पुर्-अप्-धुरश्च अनक्षस्य अच् ४।४।५७।
 पुराणर्षेः ब्राह्मणम् ३।३।७६।
 पुरुषात् ढञ् ४।१।१४।
 पुरुषात् कृते ढञ् ३।३।८२।
 पुरुषात् वधे च ३।३।१२०।
 पुरुषात् वा २।३।२६।
 पुरुषे वा ५।२।१२४।

पुरस्-अग्रतस्-अग्रेभ्यः सर्तेः १।२।५।
 पुरस्-अस्तम् असंख्यम् २।२।३०।
 पु-शकि-तकि-चति-यति-शसि-सहि-यजः
 १।१।१०८।
 पुषः कित् (उणादि) ३।२।५।
 पुष्करादिभ्यः देशे ४।२।१३२।
 पू-क्लिशः त्वश्च ५।४।१११।
 पूगात् व्यः ४।३।८८।
 पूडो ह्रस्वश्च (उणादि) ३।४।१।
 पूजायां सु-अतेः प्राग् अन्यायात्
 ४।४।५४।
 पूजिते ६।३।१२७।
 पूजा-उत्सङ्ग-उपनयन-ज्ञान-भृति-व्यय-
 विगणनेषु नियः १।४।८२।
 पूजो नाशे ६।३।७७।
 पूतक्रतु-वृषाकपि-अग्नि-कुसित-कुसीदानाम्
 ऐ च २।३।४५।
 पूरण-अर्धात् ठन् ४।१।६०।
 पूर्णात् वा ४।४।१३७।
 पूर्वत्र असिद्धम् ६।३।२७।
 पूर्वपदात् नाम्नि ६।४।१०२।
 पूर्व-अग्रे-प्रथमेषु १।३।१३३।
 पूर्वात् ४।२।६२।
 पूर्वात् कर्तुः १।२।६।
 पूर्वादिभ्यो नवभ्यः स्मात्-स्मिनी च
 २।१।१५।
 पूर्व-अधरयोः पुर्-अधौ च ४।३।३१।
 पूर्व-अन्य-अन्यतर-इतर-अपर-अधर-
 उत्तरात् एद्युः ४।३।१७।
 पूर्वाह्नि-अपराह्णात् वा ३।२।७७।
 पूर्वाह्नि-अपराह्नि-आर्द्रमूल-प्रदोष-अव-
 स्करात् कन् नाम्नि ३।३।२।

पृथग्-नानाभ्याम् २।१।८६।
 पृथिवीमध्यस्थ मध्यमश्च ३।२।५६।
 पृथिवी-सर्वभूमेः अञ्-अणौ ४।१।५५।
 पृथिव्या ञः २।४।६।
 पृथ्वादिभ्यः इमनिच् ४।१।१३६।
 पृषि-रञ्जेः कित् (उणादि) २।४६।
 पृषि-वृषि-महेः शतृः (उणादि) ३।७७।
 पृषोदरादीनि ५।२।१२७।
 पृष्ठ्य-अहीनौ ऋतौ ३।१।५४।
 पृ-पा-तलेः पः (उणादि) २।८२।
 पेषे पिषी ५।२।६८।
 पैङ्गाक्षिपुत्रादिभ्यः छः ३।१।२४।
 पैलादिभ्यः २।४।१२१।
 पौत्रादेः स्त्रियाः कुत्सिते ण च
 २।४।७६
 पौत्रादेः अस्त्रियां गुर्वायत्ते २।४।१८।
 पौरोडाश-पुरोडाशात् ष्ठन् ३।३।४२।
 प्यायः पीः ५।१।३४।
 प्रकारे गुणस्य ६।३।७।
 प्रकारे थाल् ४।३।१६।
 प्रकृतेः ५।३।१।
 प्रकृते मयट् ४।४।६।
 प्रकृष्टः ४।१।१२६।
 प्रचेतसो राजनि वा ६।३।१०१।
 प्रच्छि-वचोः तौ च (उणादि) ३।६६।
 प्रजन-रुचि-अपत्रप-वृतु-वृधु-सह-चर-भ्राजः
 १।२।६२।
 प्रजने वियः ५।१।५७।
 प्रजने सर्तेः १।३।६१।
 प्रजाया असिच् ४।४।१०७।
 प्रज्ञादिभ्यो वा ४।४।२२।

प्रज्ञा-श्रद्धा-अर्चा-वृत्तिभ्यो णः ४।२।१०५।
 प्रणाय्यः असम्मते १।१।१३५।
 प्रतिजनादिभ्यः खञ् ३।४।१०१।
 प्रतिना पञ्चम्याः ४।३।५।
 प्रतिना प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः २।१।८३।
 प्रतिना मात्रार्थे २।२।५।
 प्रतिपथम् एति ठश्च ३।४।४०।
 प्रति-परिभ्यां भागे च २।१।५५।
 प्रतिर्वास्य ४।१।२८।
 प्रतिश्रुतौ ६।३।१२६।
 प्रतेः ५।१।३०।
 प्रतेः सूत्रे ६।४।७८।
 प्रतेः उरसः आधारात् ४।४।६८।
 प्रति-अति-अभीनां क्षिपः १।४।१३२।
 प्रति-अनुभ्यां गृणो व्याप्ये २।१।७७।
 प्रति-अनु-अवात् साम-लोम्नः ४।४।६०।
 प्रत्युक्तौ हिः ६।३।१२०।
 प्रथने वेः अशब्दे १।३।२५।
 प्रथम-चरम-तय-अय-अल्प-अर्ध-नेम-कति-
 पयात् २।१।१४।
 प्रथमयोः अचि ५।१।१०६।
 प्रथि-चरेः अमच् (उणादि) २।६६।
 प्र-दश-ऋण-वसन-कम्बल-वत्सरात् ऋणे
 ५।१।६१।
 प्र-निर्-अन्तर्-शर-इक्षु-प्लक्ष-आम्र-कार्ण्य-
 पीयूक्षा-खदिरात् ६।४।१०४।
 प्रभूतादीन् आह ३।४।४७।
 प्रभौ परिवृढः ५।४।१४६।
 प्रमाणे १।३।१४३।
 प्रमाण्याः ४।४।१००।
 प्रयोक्तुः भियः षुक् ६।१।५२।

प्रयोजकव्यापारे १।१।४६।
 प्रयोजकात् भी-स्मेः णेः १।४।१२०।
 प्रयोजनम् ४।१।१२७।
 प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्ये ६।१।६६।
 प्रशस्यस्य श्रः ४।३।४६।
 प्रश्न-आख्यानयोः इञ् च १।३।६२।
 प्रष्ठः अग्रगामी ६।४।७६।
 प्र-संभ्याम् हर्षे १।३।५६।
 प्रसूता-प्रजाता-गर्भिण्यः ५।२।३०।
 प्रस्त्यः मः ६।३।८८।
 प्रस्त्रः अन्यत्र १।३।२४।
 प्रस्थ-वह-पुरान्त-योपान्त-धन्वार्थात् वुञ्
 ३।२।३६।
 प्रहरणम् ३।४।५६।
 प्रहरणात् अस्यां क्रीडायां णः ३।१।३५।
 प्राक् क्रीतात् छः ४।१।१।
 प्राक् हितात् यत् ३।४।७६।
 प्राक् जितात् अण् २।४।१।
 प्राग्जितीये अचि २।४।११७।
 प्राक् ढञः कः ४।३।५५।
 प्राक् यतः ठक् ३।४।१।
 प्राग् युवोः अवुग्युग् असिद्धं समानाश्रये
 ५।३।२१।
 प्राग् वतेः अग्नि-कलिभ्यां ढक् २।४।१२।
 प्राग् वतेः ठञ् ४।१।२३।
 प्राचां ग्रामाणाम् ६।१।२५।
 प्राचां नगरस्य ६।१।३४।
 प्राच्यात् छे ३।२।३२।
 प्राच्यात् इञः अतील्वलिभ्यः
 २।४।१२२।
 प्राणिजाति-वयोऽर्थ-उद्गात्रादिभ्यः अञ्
 ४।१।१४५।

प्राणि-तूर्याङ्गानाम् २।२।५८।
 प्राणिनि ४।१।१०४।
 प्राणिभ्यः अञ् ३।३।१०५।
 प्राण्यङ्गात् आतः लच् वा
 ४।२।६६।
 प्रात् पुराणे नश्च ४।४।३०।
 प्रात् सु-द्रु-स्तुवः १।३।१८।
 प्रादौ एकस्मिन् ६।१।५६।
 प्रादिभ्यः ऊहः ह्रस्वः ६।२।७५।
 प्रादिभ्यः ४।४।११०।
 प्रादिभ्यः खल्-घञोः ५।४।२१।
 प्रादिभ्यः स्तम्भु-सिबु-सहाम् चङि
 ६।४।६६।
 प्रादिभ्यः अदः १।३।४६।
 प्रादिभ्यः दा-घः किः १।३।७१।
 प्रादिभ्यः अध्वनः ४।४।७१।
 प्रादिभ्यः ख्वः १।३।११।
 प्रादिभ्यः असु-ऊहो वा १।४।७२।
 प्रादीनां घञि बहुलम् ५।२।१४१।
 प्रादीनां सु-सू-सो-स्तुभ-स्था-सेनि-सेध-
 सिच्-सञ्ज-स्वञ्जाम्
 ६।४।५०।
 प्रादीनाम् अयतौ ६।३।४२।
 प्रादीनाम् ऋति घातौ ५।१।६३।
 प्रादुः-प्रादिभ्यः यचि अस्तेः ६।४।७४।
 प्राद् ऊढ-ऊढि-एष-एष्येषु ५।१।८६।
 प्रादेः अचः तः ६।२।६७।
 प्रादेः अजाद्यन्तात् युजेः अयज्ञपात्रेषु
 १।४।११७।
 प्रादि-अन्तरः अदुरः णः ६।४।११४।
 प्राद् वहः १।४।१३३।

प्राद् वाहनस्य ढे ६।१।३८।
 प्राध्वं बन्धे २।२।३६।
 प्राप्त-आपन्नौ द्वितीयया अत्वं च
 २।२।१६।

प्रायः अन्नम् अस्मिन् ४।२।८७।
 प्राल्लिप्सायाम् १।३।३८।
 प्राल्ले-प्रगे-सायम्-चिरम्-असंख्यात् ट्युः
 ३।२।७६।

प्रिय-वशात् वदः १।२।२३।
 प्रिय-सुखात् आनुकूल्ये ४।४।४७।
 प्रिय-स्थिर-स्फिर-उरु-गुरु-बहुल-तृप्र-दीर्घ-
 ह्रस्व-वृद्ध-वृन्दारकाणां प्र-स्थ-स्फ-
 वर-गर-बंह-त्रप-द्राघ-ह्रस्-वर्ष-
 वृन्दाः ५।३।१६३।

प्रु-दु-सु-बुध-युध-इङ्ग-नश-जनः
 १।४।१४०।

प्रु-सृ-त्वो वुन् १।१।१५८।
 प्रे स्त्यः त-तवतोः ५।१।२८।
 प्रैष-अनुज्ञा-प्राप्तकालेषु १।३।१२३।
 प्रोक्तात् लुक् ३।१।४१।
 प्र-उपात् आरम्भे १।४।८८।
 प्लुतः तुकि ६।३।३२।
 प्लुतात् ति च ६।४।३८।
 प्वादीनां ह्रस्वः ६।१।१०८।

फक्-फिञोः वा २।४।११६।
 फणादीनां सप्तानाम् ५।३।१२१।
 फल-वर्ह-मालात् च इनच् ४।२।१४१।
 फलवति १।४।१२४।
 फलानाम् २।२।६१।
 फलेग्रहिः आत्मंभरिः कुक्षिभरिः
 १।२।१०।

फल्गुन्याः टः ३।३।१०।
 फाण्टाहृतेः ण-फिञौ २।४।८२।
 फाल्गुनी-श्रवणा-कार्तिकी-चैत्रीभ्यः वा
 ३।१।२०।

फिन् बहुलम् २।४।६३।
 फुल्ल-क्षीब-कृश-उल्लाघाः ६।३।६४।
 फेनात् ४।२।१०२।
 फेः छ च २।४।८१।

बध एः ई च १।१।२०।
 बन्धौ अन्यार्थे ५।१।१२।
 बभ्रोः कौशिके २।४।२६।
 बल-वातं चूलः ४।२।१६०।
 बहिषः टीकक् च २।४।१०।
 बहुत्वविषयेभ्यः ३।२।३६।
 बहुत्वे वा ६।३।२६।

बहु-पूग-गण-संघात् तिथट् ४।२।६०।
 बहुलम् १।१।१०३।
 बहुवचनस्य वस्-नसौ ६।३।१७।
 बहुषु झलि एत् ६।२।४१।
 बहूर्जि बहूर्जिञ्जि ५।४।२८।
 बहोः एः भू च ५।३।१६०।
 बहोः धा च अविप्रकर्षे ४।४।६।
 बल्लि-उदि-पदि-कापिशीभ्यः षफक्
 ३।२।८।

बह्वचः प्राच्यात् इञः २।४।११३।
 बह्वचः अन्तोदात्तात् ठञ् ३।३।३६।
 बह्वचपूर्वपदात् ठच् ३।४।६५।
 बहु-अल्पार्थात् कारकात् मङ्गले शस्
 वा ४।४।१।
 वाढ-अन्तिकयोः साध-नेदौ ४।३।५१।
 बाष्पादयः (उणादि) २।८।५।

वाहीकग्रामात् ३।२।३४।
 वाहीकादिभ्यः अण् ३।२।२०।
 वाहीकेषु अब्राह्मण-राजन्यात् शस्त्रजी-
 विसंघात् ज्यट् ४।३।६०।
 बाहुल्ये २।२।७४।
 बाह्वन्त-कद्रु-कमण्डलुभ्यः नाम्नि
 २।३।७७।
 बाह्वादिभ्यः गोत्रादिभ्यः २।४।२०।
 विदादिभ्यः अञ् २।४।२२।
 विभराम् १।१।५६।
 विल्वकीयादीनाम् ईयः ५।३।१५७।
 वोधात् २।४।२८।
 व्रधि-वसि-धा-पृभ्यो नः (उणादि)
 २।७।३।
 ब्रह्मणः त्वः ४।१।१५२।
 ब्रह्मणो जातौ ५।३।१७३।
 ब्रह्म-वर्चसात् ४।१।५३।
 ब्रह्म-हस्ति-राज-पल्यात् वर्चसः ४।४।६३।
 ब्राह्मणात् शंसी ५।२।३।
 ब्राह्मणात् नाम्नि ४।२।७६।
 ब्रुवः ईट् ६।२।३४।
 ब्रुवः पञ्चानाम् आदितः आह च
 १।४।१३।
 ब्रुवः वच् ५।४।८०।
 भक्तात् णः ३।४।१०२।
 भक्तात् अण् वा ३।४।६६।
 भक्षेः अहिंसायाम् २।१।४६।
 भुजः णिवः १।२।५२।
 भञ्जि-भास-मिदः घुर्च् १।२।१०७।
 भञ्जेः चिणि ५।३।५६।
 भद्रादयः (उणादि) ३।१।४।

भद्र-उष्णयोः करणे ५।२।८२।
 भर्गत् त्रिगर्ते २।४।३२।
 भर्त्सने द्विरुक्तं पर्यायेण ६।३।१२३।
 भवतो दश्च ३।२।२६।
 भवत्-दीर्घायुर्-आयुष्मत्-देवानांप्रियैस्ते
 अन्याभ्यश्च ४।३।१२।
 भविष्यति लृट् १।३।२।
 भसि-जनि-वृतेः मनिन् (उणादि)
 ३।८।१।
 भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् ३।४।१५।
 भस्त्रा-एषा-अजा-ज्ञा-द्वा-स्वानाम्
 ६।१।७२।
 भागात् यत् च ४।१।६१।
 भागात् यत् च ४।४।२६।
 भागे अष्टमात् ज्ञः वा ४।२।६२।
 भाज-गोण-नाग-स्थल-कुण्ड-काल-कुश-
 कामुक-कवरात् पक्व-आवपन-स्थूल-
 कृत्रिम-अमत्र-कृष्ण-आयसी-रिरंसु-
 केशवेशेषु २।३।३८।
 भावघञः ज्ञः ३।१।३६।
 भावात् इमप् ३।४।१६।
 भाव-आप्ययोः १।१।७८।
 भाव-आप्ययोः १।१।१०४।
 भाव-आप्ययोः १।४।४७।
 भाव-आप्ययोः क्तः १।२।६७।
 भाव-आरम्भयोः वा ५।४।१४२।
 भावे वा २।४।१४।
 भावे हनः त च १।१।११६।
 भिक्षादिभ्यः अण् ३।१।४४।
 भित्तं शकले ६।३।६७।
 भिदादि-षितः अङ् १।३।८६।

भियः क्तुः १।२।१२१।

भियः प्रयोजकात् ५।१।५८।

भियः षुग् वा (उणादि) २।१०४।

भियः वा ५।३।१०८।

भिरोः स्थानम् ६।४।६७।

भी-शीभ्याम् आनकः (उणादि)
२।११।

भी-ही-हूनां द्वे च १।१।५५।

भुजः अपालने १।४।११६।

भुवः १।१।११८।

भुवः १।२।६३।

भुवः (उणादि) ३।८७।

भुवः अत् ६।२।१२६।

भुवः वा १।१।१५१।

भुवः वुग् लुङ्-लिटोः ५।३।६२।

भू-जि-वसि-वहि-साधि-भासि-गडि-मण्डि-
हेमिभ्यः (उणादि) २।४५।

भूतपूर्वे चरट् ४।३।४३।

भूते १।२।६२।

भूषण-आदर-अनादरेषु अलम्-सत्-असतः
२।२।२७।

भू-सुवः अद्वेः तिडि ६।२।२६।

भू-सुङ्-अदिभ्यः क्तिन् (उणादि)
१।७०।

भृञ्जादिभ्यः अतच् (उणादि)
२।४८।

भृञ्जः असंज्ञायाम् १।१।१२३।

भृति-माषात् ठच् ४।४।११८।

भृति-वस्त्र-अंशाः ४।१।६६।

भृ-मृ-तृ-चरि-तनि-मस्जि-शीभ्यः उः
(उणादि) १।५।

भृ-वृ-तृ-जि-सहि-तपि-दमः नाम्नि

१।२।३०।

भोग-अन्त-आत्मनः खः ४।१।६।

भोज्यम् अन्ते ६।१।६७।

भो-भगो-अघोभ्यः अशि लोपः ६।४।२४।

भौरिकि-ऐषुकार्यादिभ्यः विधल्-
भक्तलौ ३।१।६३।

भ्यसः अभ्यम् २।१।२६।

भ्रमि-वठि-देवि-वासेः अरन् (उणादि)

३।२०।

भ्रमेः डूः (उणादि) १।४२।

भ्रस्जि-स्पशोः सलोपः च (उणादि)

१।१८।

भ्रस्जः भर्ज् वा ५।३।६२।

भ्राज-भास-भाष-दीप-जीव-माल-पीडां वा
६।१।६३।

भ्रातुः व्यत् २।४।६४।

भ्राश-भ्लाश-भ्रमु-क्रमु-कलमु-त्रसि-त्रुटि-

लषः वा १।१।८८।

भ्राष्ट्र-अग्न्योः इन्धे ५।२।८०।

भ्रौवेयः २।४।५५।

मः सेटः न अविमि-अमि-क्रम-आचम-
विश्रमः ६।१।४२।

मकुर-दर्दुर-विधुराः (उणादि) ३।२।

मङ्गेः अलच् (उणादि) ३।५२।

मङ्डुक-झर्झरात् अण् वा ३।४।५८।

मत-जनयोः करण-जल्पयोः ३।४।६८।

मतौ बह्वचः अनजिरादीनाम् ५।२।१३३।

मत्स्यस्य यः ५।३।१५१।

मदेः स्यन् (उणादि) २।११२।

मदः अप्रादेः १।३।५८।

मदि-अङ्गि-वाशि-मथि-वतिभ्यः उरच्
(उणादि) ३।१।

मदि-अशि-वसेः सरन् (उणादि)
३।१८।

मद्र-भद्रात् वपने ४।४।५१।

मधुक-मरीचयोः अण् ४।१।६१।

मघोः ब्राह्मणे २।४।२५।

मध्यस्य दिने ५।२।८३।

मध्य-आदिभ्यां मः ३।२।८२।

मध्यात् मण्-मीयौ च ३।३।३३।

मनः १।२।६०।

मनः २।३।१३।

मनसः नाम्नि ५।२।६।

मनि-पचि-मचां नाम्नि ५।३।१२३।

मनेः उत् च (उणादि) १।५।४।

मनोः औ वा २।३।४३।

मनोः जाती यत् सुक् च २।४।६४।

मन्थ-ओदन-सक्तु-विन्दु-वज्र-भार-हार-
वीवध-गाहेषु ५।२।७०।

मन्द-अल्पाच्च मेघायाः ४।४।१०८।

मन्-मात् नाम्नि ४।२।१३३।

मन्याप्ये कुत्सायाम् अनावादी वा
२।१।८०।

मयः उजोऽचि वः ६।४।१६।

मयट् ३।३।५३।

मयट् अभक्ष-आच्छादने ३।३।१०६।

मसेर् ऊरन् (उणादि) ३।३०।

मस्जः अन्त्यात् पूर्वः ५।४।१३।

महतश्च ठञ् ४।१।१२।

महाकुलाद् अञ्-खञौ २।४।७५।

महानाम्नादीनाम् ४।१।१०७।

महाराज-प्रोष्ठपदात् ठञ् ३।१।३२।

महेन्द्राद् वा ३।१।२७।

मांसस्य पचि घञ्-ल्युटोलोपः ५।२।८७।

माङ्गि लुङ् १।३।४।

मा-छा-ससि-सूभ्यः यः (उणादि)

२।१०६।

माणव-चरकात् खञ् ४।१।१५।

मात-मातृक-मातृषु वा ५।१।१३।

मातर-पितरौ चार्थे ५।२।२०।

मातुः उत् संख्या-सं-भद्रादेः २।४।४५।

मातुः मातच् पुत्रे श्लाघ्ये ६।२।४७।

मातुल-उपाध्यायात् वा २।३।५०।

मातृ-पितृभ्यां स्वसा ६।४।७१।

माथान्त-पदवी-अनुपद-आक्रन्दं धावति
३।४।३४।

मात् उपान्तात् च मतोर्वः ६।३।३५।

मात् वर्मणः अपत्ये ५।३।१७१।

माने कंश्च ४।२।६४।

माने मात्रट् ४।२।३८।

माने वयः ३।३।१२५।

मान्तस्य युव-आवौ द्विवचने ५।४।५८।

माला-इल्वल-पल्वल-चपाल-शिथिल-
शुकल-तण्डुलाः (उणादि) ३।५।३।

माशब्दात् इत्यादिभ्यः ३।४।४८।

मासात् वयसि यत्-खञौ ४।१।६६।

मा-स्या-सा-गा-पिव-हाग्-दा-घां हलि
५।३।७७।

मित-नखात् १।२।१८।

मितां ह्रस्वः ६।१।५६।

मिथ्यायोगे कृञः अभ्यासे १।४।१२३।

मित् अचः अन्त्यात् परः १।१।१४।

मिदेः एत् ६।१।१०६।

मिपः अम् १।४।३१।	मो वा ५।३।३६।
मिमतात् २।४।८३।	
मि-मी-मा-रभ-लभ-शक-पत-पद-दा-धाम् अचः सि सनि इस् ६।२।१०६।	य-काभ्याम् आपः अत्यक्-त्यपो वा ६।१।७१।
मि-म्योः अखल्-अचि ५।१।५३।	यकि ५।३।६४।
मुदि-ग्रः गक्-गौ (उणादि) २।२६।	यङश्चाप् २।३।८०।
मुद्रात् अण् ३।४।२५।	यङि ५।१।२५।
मुहेर् मूर् च (उणादि) २।२४।	यङि ६।२।८२।
मूर्तो घनः १।३।६५।	यङः बहुलम् १।१।८६।
मूलम् अस्य अदृढम् ३।४।८७।	यङः वा ६।२।३५।
मूलेन आनाम्ये ३।४।८६।	यञ्च-यत्रयोः गह्रियाम् च १।३।११४।
मृ-कणिभ्याम् ईचिः (उणादि) १।६८।	यत्-छौ चलोपश्च ४।२।५८।
मृगपूर्वोत्तरात् च सक्थनः ४।४।८३।	यचि अणादौ ५।२।३२।
मृगव्या-अटाटये १।३।८१।	यचि अशि-सुटि ५।३।१२६।
मृ-गृ-वा-हसि-इण्-अमि-दमि-लू-पू-धूविभ्यः तन् (उणादि) २।५०।	यजः १।२।६३।
मृङः उतिः (उणादि) ३।७४।	यज-जप-दह-दशः यङः १।२।११२।
मृङः त्युक् (उणादि) १।३६।	यजेः शश्च (उणादि) ३।१०३।
मृङः लुङ्-लिङोश्च १।४।११६।	यजः बहुलम् ६।१।६८।
मृजेः आत् ६।१।१।	यज्ञात् घः ४।१।७७।
मृङ-मृद-गुध-कुष-क्लिश-वद-वस-लुच-ग्रहां क्त्वि ६।२।१६।	यज्ञेभ्यः ३।३।४०।
मृदः तिकन् ४।४।२३।	यज्ञे संस्तावः १।३।२३।
मृषः अक्षान्ती ६।२।१७।	यञ् २।४।६।
मेघ-ऋति-भयात् कृजः खः १।२।२७।	यञ्-अजोः बहुषु अस्त्रियाम् २।४।१०७।
मेङः इद् वा ५।३।८१।	यञ्-इजः २।४।३७।
मेङः १।३।१३०।	यञः अषावटात् २।३।१८।
मेधा-रथात् इरः ४।२।११४।	यणः इकः ५।२।१४७।
मेः आनिः १।४।२३।	यण् अचि ६।२।१०५।
मेः णलि वा ६।१।४४।	यण् इकः ५।१।११४।
मः नः म्-वोश्च ६।३।७३।	यणो मयः ६।४।१४३।
	यङ्संयोगात् आतः ६।३।७५।
	यत् १।१।१०७।
	यतो निर्धारणम् २।१।६२।

यतः अपतेर्वा ५।४।१४०।
 यत्क्रिया क्रियाचिह्नम् २।१।६०।
 यत्-तद्-एकात् द्वाभ्यां निर्धारणे उत्तरच्
 ४।३।७५।

यत्-तद्-एतदः वतुप् ४।२।४३।
 यति अवर्णे ५।२।६२।
 यथा-कथाच्चात् णः ४।१।११६।
 यथा न तुल्ये २।२।३।
 यथामुख-सम्मुखं दृश्यते अस्मिन्
 ४।२।१०।

यथास्वे यथायथम् ६।३।१११।
 यद्-यदि-यदा-जातुषु लिङ्ग १।३।११३।
 यमः सं-वि-उपाच्च १।३।५३।
 यमः सूचने ५।३।४७।
 यम-रम-नम-आतां सक् च ५।४।१७०।
 य-र-ण-गात् मः ५।४।१३४।
 य-र-लात् भः ५।४।१३३।
 यरः ञमि अम् वा ६।४।१४०।
 यवनात् लिप्याम् २।३।५४।
 यव-यवक-षष्टिकात् यत् ४।२।३।
 यवात् दोषे २।३।५३।
 यसः १।१।८६।
 यस्कादिभ्यः २।४।११०।
 यस्य ५।३।१४६।
 यस्य हलः ५।३।६५।
 याङ् आपः ६।२।५६।
 यानात् ३।३।८७।
 यानादेः अञ् ३।३।८६।
 यालोपो दरिद्रः (उणादि) १।४६।
 यावद् इयत्त्वे २।२।४।
 यावादिभ्यः कन् ४।४।१२।

यासुद् अतङ् कित् १।४।३३।
 यि किङ्कति अयङ् ६।२।७४।
 यि परे अक्-आवौ ५।१।७६।
 यि लोपः ५।३।१११।
 य्-इवर्णयोः दीधी-वेव्योः ६।२।१०४।
 यु-कु-सूनां किञ्च (उणादि) २।८४।
 युजि-रुजि-तिजेः कुश्च (उणादि)
 २।१०५।
 युजेः असमासे ५।४।२६।
 युट् च (उणादि) ३।११४।
 युधि-हि-इन्धि-जनि-श्या-धूम्यः मक्
 (उणादि) २।१०३।
 युव-अल्पयोः कन् वा ४।३।५२।
 युवोः अन-अकौ असः ५।४।१।
 युष्मद्-अस्मदोः कञ् युष्माक-
 अस्माकौ च ३।२।६२।
 युष्मद्-अस्मदोः पण्ठी-चतुर्थी-द्वितीयान्त-
 योः वाम्-नौ वा ६।३।१६।
 युष्मद्-अस्मदोः अनादेशे ५।४।५४।
 युष्मद्-अस्मद्भ्यां इसः अञ् २।१।२६।
 युष्मदि मध्यमत्रयम् १।४।१४६।
 युस् ४।२।१५१।
 यूकाआदयः (उणादि) २।२।
 यूथआदयः (उणादि) २।५६।
 यूनः तिः २।३।८१।
 ई-ऊभ्याम् चाट् ६।२।५३।
 यूय-वयौ जसि ५।४।५६।
 ये वा ५।३।४१।
 योगात् यच्च ४।१।१२१।
 योऽचि ५।४।५६।
 योऽचि वा अनुञि ६।४।२६।

योजनं गच्छति ४।१।८५।
 योद्धृप्रयोजनात् संग्रामे ३।१।३४।
 योपांस्तात् गुरुपोत्तमात् असुप्रख्याद्
 वुञ् ४।१।१४८।
 यो यङ् १।२।१२३।
 योः आगूच् (उणादि) १।४।१।
 यो वलि लोपः ५।१।६३।
 रः ऋतः पृथु-मृदु-कृश-भृश-वृढ-परिवृ-
 ढानाम् ५।३।१६४।
 रक्त-अनित्ययोः ४।४।१४।
 रक्षति ३।४।३०।
 रङ्कोः प्राणिनि वा ३।२।६।
 रञ्जः ५।३।२६।
 रञ्जेः क्युन् (उणादि) २।६६।
 र-दात् त-तवतोः दश्च ६।३।७४।
 रघः ५।४।१५।
 रधादिभ्यः ५।४।१०८।
 रभः अशप्-लिटोः ५।४।१७।
 रमि-कुषि-काशिभ्यः क्यन् (उणादि)
 २।५४।
 रमः वि-आङोश्च १।४।१३५।
 रलः हलादेः इदुतोः सनि च
 ६।२।२१।
 रवि-कवि-दरि-शरि-वलि-वल्लि-ध्वनि-
 अवि-हरि-ग्रन्थिभ्यः इः (उणादि)
 १।५१।
 रश्मौ १।३।४०।
 र-षात् नः णः एकपदे ६।४।१०१।
 रसि-रुचि-रु-वृञः युच् (उणादि) २।६७।
 राजघः १।२।४३।
 राजन्यादिभ्यः वुञ् ३।१।६२।

राजन्वान् सौराज्ये ६।३।४०।
 राजसूय-रुच्य-कृष्टपच्य-अव्यथ्याः
 १।१।१२६।
 राज्ञो यत् २।४।७०।
 रातेः इफः (उणादि) २।८८।
 रातेः डैः (उणादि) १।६१।
 रात्र-अह्न-वाकाः पुंसि २।२।८१।
 रात्रेर्घातौ वा ५।२।८५।
 रात्रि-अहः-संवत्सरात् ४।१।१०२।
 रात् सः ६।३।५३।
 राधः हिंसायाम् ५।३।११६।
 राघः हिंसायाम् ६।२।१०७।
 रायः हलि ५।४।५३।
 रात् लोपः ५।३।२०।
 रा-शदिभ्याम् त्रिप् (उणादि) १।६६।
 राष्ट्र्वात् घः ३।२।२।
 रास्नादयः (उणादि) २।७६।
 रिङ् श-यग्-आशीर्लिङि ६।२।८०।
 रीग् ऋत्वतः ६।२।१३८।
 रिङ् ऋतः ये च ६।२।७६।
 री-वृ षोः नित् (उणादि) १।२६।
 रुग्-रिकौ च लुकि ६।२।१३६।
 रुचि-भुजेः किष्यन् (उणादि) २।१११।
 रुचिमति २।१।७४।
 रुद-विद-मुष-ग्रहाम् ६।२।२२।
 रुद्भ्यः पञ्चभ्यः अट् च ६।२।३७।
 रुद्भ्यः तिङः ५।४।१७३।
 रुधादीनाम् इनम् १।१।६३।
 रुष-हृष-अम-त्वर-संधुष-आस्वनः
 ५।४।१५६।
 रुहि-नन्दि-जीवेः षित् (उणादि) २।४४।

रहि-हृ-श्याभ्यः इतच् (उणादि)
२।४७।

लस् तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-वस्-
मस्-ता-ताम्-झ-थस्-आथाम्-ध्वम्-इट्-
वहि-महिङ् १।४।१।

रूपात् आहत-प्रशस्ययोः यप्
४।२।१३५।

लाक्षा-रोचनात् ठक् ३।१।२।
लालाटिक-कौक्कुटिकौ ३।४।४४।

रूप्यान्तात् अः ३।२।१८।
रेवत्यादिभ्यः ठक् २।४।७८।

लास-यतोः ५।२।५७।

रैवतिकादिभ्यः छः ३।३।६६।

लिङ्ः सीयुट् १।४।३२।

रोः काम्ये ६।४।३३।

लिङि तङि गमः ५।३।४४।

रोः सुपि ६।४।२३।

लिङि इणः ६।२।७६।

रोग-आतपयोः वा ३।२।७३।

लिङि च ऊर्ध्वमौहूर्तिके १।३।१२४।

रोगात् प्रतीकारे ४।३।२।

लिङि अतिपत्तौ लृङ् १।३।१०७।

रोपान्त-इतः प्राच्यात् ३।२।३७।

लिङि एत् ५।३।७८।

रोमन्थं वर्तयति हनुचाले १।१।३३।

लिङ्-सिचोः तङि ५।४।१०५।

रो रि ६।४।१६।

लिङ्-सिचोः तङि ६।२।२५।

लक्षण-वीप्सा-इत्थंभूतेषु अभिना
२।१।५४।

लिटः इरच् १।४।६।

लिटः क्वसुः १।२।७४।

लक्षणे २।१।६६।

लिटि ५।१।४२।

लक्षणेन अभि-प्रती २।२।८।

लिटि इन्धि-श्रन्थि-ग्रन्थाम् ५।३।२५।

लक्षेः मुट् च (उणादि) १।८।६।

लिटि अनादेशादेः एकहल्मध्ये अतः
५।३।११६।

लघोः इकः अकवेः ४।१।१४७।

लिटि अश्वेः द्विरुक्ते ५।१।२१।

लघोः उपान्तस्य ६।२।४।

लिट्-आशीलिङ्-अतिङ्शिति ५।३।६१।

लङ्ः द्विपश्च वा १।४।४३।

लिट्-आशीलिङ्-अतिङ्शिति ५।४।७८।

लङ्गि-कम्प्योः उपताप-शरीरविकारयोः
५।३।३४।

लिट्-यङोः ५।१।३६।

लभः ५।४।१८।

लिपः नेश्च १।१।१४५।

ललाटात् तपः १।२।२२।

लियः पूजा-अभिभवयोश्च १।४।१२२।

ललाटात् भूपणे कन् ३।३।३४।

लियः स्नेहविलापने वा ६।१।४६।

लवणात् ठञ् ३।४।५४।

लियः वा ५।१।५४।

लवणात् लुक् ३।४।२४।

लुकि अरि रः ६।३।१००।

लप-पत-पद-स्था-भू-शृ-वृष-हन-कम-गमः
उकञ् १।२।१०२।

लुक् स्त्रियाम् २।४।५६।

लुग् अणादिलुकि अगोण्यादीनाम्
२।२।८७।

लुग् वा दुह-दिह-लिह-गुहाम् तडि ल्यपि च ५।१।४५।
दन्त्ये ६।१।१०।१ ल्यपि लघोः ५।३।७०।

लुङ् १।२।७६।

लुङि ५।४।६०।

लुङि ते चिण् १।४।१०।५।

लुङि वा ५।३।११।४।

लुङि सिच् १।१।६०।

लुङि अचः १।४।१०।१।

लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु अङ् अमाङ्गयोगे

५।३।८२।

लुङ्-सन्-अच्-घञ्-अप्सु घस्लृः ५।४।८७।

लुटः आद्यानां डा-रौ-रसः १।४।१८।

लुटि क्लृपः १।४।१४।५।

लुप-सद-चर-गृ-जप-जभ-दह-दशः गह्यात्

१।१।४३।

लुभः आकुले ५।४।११।४।

लेखे ५।२।५६।

लोक-सर्वलोकात् ४।१।५८।

लोकस्य पूणे ५।२।७८।

लोकान्तात् ३।३।२८।

लोट् १।३।१२२।

लोटः एः उः १।४।२०।

लोटः क्लोट् १।१।५८।

लोपः अचि क्ङिति चातः ५।३।७५।

लोपः अतः ५।३।६३।

लोमादि-पामादिभ्यः श-नौ ४।२।१०।४।

लोम्नः अपत्येषु २।४।५।

लो लुक् ६।१।५०।

लोहितादिभ्यः शकलान्तेभ्यः २।३।२०।

लोहितात् मणौ ४।४।१३।

ल्यपि ५।४।८६।

वंशादिभ्यः हरति वहति आवहति

भारत् ४।१।७२।

वचि-स्वपि-यजादीनां लिटि अपिति

५।१।१४।

वचः अशब्दाख्यायाम् ६।१।६५।

वञ्चि-लुञ्चि-थ-फो वा ५।३।५४।

वञ्चर्गती ६।१।६२।

वटकात् इतिः ४।२।८६।

वतण्डात् २।४।२६।

वतोः ४।१।३४।

वतोः इथट् ४।२।६१।

वतौ च इदम्-किमोः ईश्-की

५।२।१०७।

वत्स-शाल-नक्षत्रेभ्यः बहुलम् ३।३।७।

वत्स-अंशात् स्नेह-बलिनोः ४।२।१०।१।

वत्स-उक्ष-अश्व-ऋषभाणां तनुत्वे

४।३।७४।

वदः सुपः क्यप् च १।१।११७।

वद-व्रज-ल्-रः ६।१।८।

वदेर्वा (उणादि) ३।३।२।

वधः घातः १।३।६४।

वनं पुरगा-मिश्रका-सिध्रका-शारिका-

अग्ने-कोटरात् ६।४।१०।३।

वन-गिर्योः कोटर-अञ्जनादीनाम्

५।२।१३।३।

वपि-वजि-वृधि-इन्दिभ्यः रन् (उणादि)

३।१।३।

वयसा च तुल्ये ३।४।६०।

वयसि दन्तस्य दत् ४।४।१३०।
 वयसि पूरणात् ४।२।१२७।
 वयसि अचरमे २।३।२२।
 वयो यः ५।१।४३।
 वर्गन्तात् ३।३।३१।
 वर्णका तान्तवे ६।१।८१।
 वर्ण-दृढादिभ्यः प्यञ् च ४।१।१४०।
 वर्णात् ब्रह्मचारिणि ४।२।१३१।
 वर्णा वुक् ३।२।१२।
 वर्तका शकुनौ ६।१।७४।
 वर्तमाने लट् १।२।८२।
 वर्षस्याभाविनि ६।१।२७।
 वर्षा-दृन्-पुनर्-कारात् भुवः ५।३।६०।
 वर्षा-प्रावृड्भ्यां ठक्-एण्यौ ३।२।८१।
 वर्षात् लुक् च ४।१।१०३।
 वलादेः इट् ५।४।६६।
 वलि-पटेः आकः (उणादि) २।१५।
 वलि-फलेः गुक् च (उणादि) १।११।
 वले ५।२।१३५।
 वशं गतः ३।४।८५।
 वशः तिङ्शित्ति अपिति ५।१।१८।
 वशि ५।४।१२८।
 वशि-वणिभ्याम् इजिक् (उणादि) ३।७३।
 वशेः कनसिः (उणादि) ३।६५।
 वशेः कित् (उणादि) ३।२८।
 वशेः सुट् च (उणादि) ३।१०५।
 वस-ध्रुवः इट् ५।४।११२।
 वसु-सु-ध्वंसां सः ६।३।१०४।
 वसेणित् वा (उणादि) १।२३।
 वसोर्व उत् ५।३।१२८।
 वस्तेर्ढञ् ४।३।७६।

वस्न-क्रय-विक्रयात् ठन् ३।४।११।
 वस्-मसोर्लोपः १।४।२६।
 वसि-अग्निभ्यां णित् (उणादि) ३।१०२।
 वह-लादिभ्यः इन्न-उत्रौ (उणादि) ३।४२।
 वह-अभ्रात् लिहः १।२।१६।
 वहि-पसेर्दीर्घश्च (उणादि) १।६।
 वहि-वसिभ्यां चतिः (उणादि) १।८७।
 वहे ५।२।१४४।
 वहेः अनियन्तृके २।१।४८।
 वहेः तुः इट् च ३।३।१००।
 वह्यं करणम् १।१।११३।
 वा आकाङ्क्षायाम् १।२।८०।
 वाकिनादीनां कुक् च २।४।६१।
 वा क्यषः १।४।१४२।
 वाक्याञ्चां प्लुतः अन्त्यः ६।३।११५।
 वाक्यादेः आमन्त्रितस्य असूया-संमत्योः
 ६।३।४।
 वा गोमये ३।२।४४।
 वाग्-दिक्-पर्यङ्गयः युक्ति-दण्ड-हरेषु
 ५।२।१४।
 वाचंयमो व्रते १।२।२४।
 वाचः संदेशे ४।४।१८।
 वा चित्ते ५।३।६५।
 वाचः ग्मिनिः ४।२।१४५।
 वा जृ-भ्रम-त्रसाम् ५।३।१२०।
 वात-पित्त-श्लेष्म-संनिपातात् शमन-कोपने
 ४।१।५०।
 वातमज-शर्धजह-इरंमद-परंतप-द्विषंतप-
 भगंदर-पुरंदराः १।२।२०।
 वात-अतीसार-पिशाचानां कुक् च
 ४।२।१२६।

वातात् ऊलः ३।१।५५।
 वा तिल-माष-उमा-भङ्ग-अणुभ्यः
 ४।२।४।
 वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-छन्न-
 जप्ताः ५।४।१५५।
 वा ब्रुह-मुह-स्नुह-स्निहाम् ६।३।६४।
 वा नाम्नि २।३।४०।
 वा निक्ष-निस-निन्दाम् ६।४।१२७।
 वा आप् २।२।७८।
 वा भाव-करणयोः ६।४।११०।
 वा भाव-आक्रोश-दैन्येषु ६।३।८२।
 वा अभि-अवात् ५।१।३१।
 वामदेव्यम् ३।१।६।
 वा अम्-शसोः ५।३।८६।
 वायु-ऋतु-पितृ-उषसो यत् ३।१।२६।
 वारसंख्यायाः कृत्वसुच् ४।४।५।
 वा लिटि ५।४।८२।
 वा लिप्सायाम् १।४।६६।
 वा लुङ्-लिङोः ५।४।६७।
 वा वणिजाम् १।३।३६।
 वा विरामे ६।४।१४६।
 वा वृक्ष-तृण-धान्य-मृग-शकुनिविशो-
 षाणाम् २।२।६२।
 वा वेष्टि-चेष्टयोः ६।२।१४३।
 वा शरि ६।४।२६।
 वा श्चैः ५।१।३७।
 वाष्प-ऊष्म-फेनम् उद्वमति १।१।३४।
 वा संयोगादेः अस्थः ५।३।७६।
 वास-वाहने ५।२।६७।
 वासुदेव-अर्जुनात् कन् ३।३।६५।
 वा सुपि लृटि च ५।१।६४।

वास्तव्यः १।१।१०६।
 वा अस्ताति ४।३।३४।
 वाऽस्य व्-मोः ५।३।१०१।
 वाहनं वाह्यात् ६।४।१०८।
 वा हन-गम-विद-विश-दृशः ५।४।१६६।
 वा हविर्-यूपादिभ्यः ४।१।३।
 विशतिकात् खः ४।१।४१।
 विशति-त्रिशद्भ्याम् ४।१।३६।
 विशतेडिति टेः ५।३।१३७।
 विशत्यादिभ्यः तमट् वा ४।२।५२।
 विकर्ण-कुपीतकात् काश्यपे २।४।५४।
 विकारे ३।३।१०३।
 वि-कु-शमि-परिभ्यः ६।४।८३।
 विकृतेः प्रकृतौ ४।१।१६।
 विचारे ६।३।१२५।
 विछ-रक्षो नङ् १।३।७०।
 विजः इटि ६।२।१४।
 विटपादयः (उणादि) २।८७।
 वित्तः प्रतीत-भोगयोः ६।३।६६।
 विदः १।४।४४।
 विदाम् १।१।५७।
 विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच् १।२।१०८।
 विदेः श्चसुः १।२।८३।
 विदेः अलुकः ५।४।१३२।
 विदो लटो वा १।४।१२।
 विद्या-योनि-संबन्धात् वुञ् ३।३।४६।
 विधि-विशेषणान्तस्य १।१।६।
 विधि-संप्रश्न-प्रार्थनेषु १।३।१२१।
 विधि-इणः असिः (उणादि) ३।६६।
 विध्यति अकरणेन ३।४।८२।
 विधु-अरुस्-तिलात् तुदः १।२।१६।

विनयादिभ्यः ठक् ४।४।१७।

विना तृतीया च २।१।८५।

विना नाना ४।२।२८।

विनिमये १।४।४६।

विन्दुः इच्छुः १।२।११८।

विन्-मतोः लुक् ४।३।४८।

वि-पराभ्यां जेः १।४।५३।

वि-परेः ६।४।६०।

विपिन-इरिण-तुहिन-महिनानि

(उणादि) २।६६।

विप्रतिषेधे १।१।१६।

विमतौ १।४।६५।

विमुक्तादिभ्यः अण् ४।२।१५५।

विरामे विसर्जनीयः ६।४।२०।

विरिध्व-फाण्ट-वाढ-म्लिष्टानि स्वर-

अनायास-भृश-अस्पष्टेषु ५।४।१४६।

विरोधिनाम् अद्रव्याणाम् २।२।६५।

विवध-वीवधात् वा ३।४।१६।

विवाहे ३।३।६०।

विशाखा-आषाढात् मन्थ-दण्डयोः

४।१।१३१।

विशि-पति-पदि-स्कन्दां वीप्सा-

आभीक्ष्ण्ययोः १।३।१४८।

विशेषणम् एकार्थेन २।२।१८।

विश्वस्य वसु-राटोः दीर्घः ५।२।१२६।

विषये देशे ३।१।६१।

विष्वग्-देवयोश्च डद्रिग् अञ्चि वौ

५।२।१०६।

विहायसो विहश्च १।२।३३।

वी-पतिभ्यां तनन् (उणादि) २।६४।

वीप्सा-आभीक्ष्ण्ययोः द्वे ६।३।१।

वुञ्-छण्-क-ठच्-इल-स-इनि-र-ढञ्-ण्य-य-

फक्-फिञ्-इञ्-ञ्य-कक्-ठक्-छ-

कीय-ड्-मत्तुप्-ड्वल्चः ३।१।६८।

वृकात् णेण्यट् ४।३।६१।

वृक्ष-औषधीभ्यः अंशे च ३।३।१०४।

वृडः एन्यः (उणादि) २।११४।

वृजिन-अजिनम् (उणादि) २।६३।

वृजि-मद्रात् कन् ३।२।४६।

वृजः आच्छादे १।३।४३।

वृञश्च (उणादि) ३।३६।

वृ-त्-वदि-हनि-मानि-कमि-अशि-कशेः सः

(उणादि) ३।६३।

वृत्ति-उत्साह-तायनेषु क्रमः १।४।८४।

वृ-दृभ्यां विन् (उणादि) १।८१।

वृद्धस्य च ज्यः ४।३।५०।

वृद्धेः वृधुषः ३।४।३७।

वृद्धयः इट् ५।४।१२३।

वृद्धयः स्य-सनोः १।४।१४४।

वृन्दात् आरकन् ४।२।१३६।

वृ-भृ-वमि-कुभ्यः शक् (उणादि) ३।५५।

वृषादिभ्यः चित् (उणादि) ३।४६।

वृष-अश्वयोर्मैथुने सुक् ६।२।६०।

वृषि-तक्षि-राजि-धन्वि-प्रतिदिव-युवः

कनिन् (उणादि) ३।७६।

वृ-ऋतो वा ५।४।१०१।

वेः क्षु-श्रुवः १।३।१३।

वेः स्रः ४।४।१११।

वेः पादाभ्याम् १।४।८७।

वेः शब्दाप्यात् १।४।८०।

वेः शालच्-शङ्कटचौ ४।२।२६।

वेः स्कन्दः अत-तवतोः ६।४।६२।

वे: स्कभ्नः षः ६।४।६५।
 वे: स्त्रः नाम्नि ६।४।८०।
 वेजः डिः (उणादि) १।५।८।
 वेजः लिटि वय् वा ५।४।८।
 वेटः ६।४।१००।
 वेणिः (उणादि) १।७।८।
 वेणुकादिभ्यः छण् ३।२।६१।
 वेतनादिभ्यो जीवति ३।४।१०।
 वेत्तेर्वा १।४।८।
 वे: अनचः ५।१।६४।
 वे: अपिति वा ५।१।४४।
 वेश्च स्वनो भोजने ६।४।५४।
 वैकाचः ५।२।४३।
 वैडूर्यम् ३।३।५५।
 वैशस्त्र-वैभाजित्रे ३।४।५१।
 *वोद्वाहे ५।३।४८।
 वोर्णोः ६।१।६।
 वोर्णोः ६।२।१५।
 वोर्णोः ६।२।३१।
 वो विधूनने जुक् ६।१।४७।
 वोशनसः ५।४।४७।
 वोशीनरेषु ३।२।३५।
 वौषधि-वृक्षात् द्वि-व्यचः अनिरिकादेः
 ६।४।१०५।
 व्-प्रोर्वा ६।४।१२०।
 व्-मोः टाप् १।४।२७।
 व्यः ५।१।४७।
 व्यक्तं सहोक्तौ १।४।६६।
 व्यचः अञ्जिति अनसि ५।१।१६।
 व्यञ्जनानाम् २।२।६३।

व्यतिहारे णच् १।३।७६।
 व्यतिहारे सर्वादीनां सुः बहुलम् ६।३।६।
 व्यथः लिटि ६।२।१२१।
 व्यध-जपोऽप्रादेः १।३।५१।
 वि-आडः श्वसः ५।४।१४४।
 व्याप्यात् काम्यच् १।१।२३।
 व्याप्याद् अण् १।२।१।
 व्याप्याद् आक्रोशे कृञः खमुञ्
 १।३।१३४।
 व्याप्याद् आधारे १।३।७२।
 व्यासादीनाम् अकङ् च २।४।२१।
 वि-उदः काकुत् काकुदस्य ४।४।१३६।
 वि-उदः तपः १।४।७४।
 वि-उपात् शीङः १।३।३०।
 व्युष्टादिभ्यः अण् ४।१।११५।
 व्ये-स्यमोः ५।१।२६।
 व्योमादयः (उणादि) ३।८।२।
 व्-योः ईषत्स्पृष्टौ च ६।४।२७।
 व्रज-व्यजौ १।३।१०१।
 व्रते १।२।५६।
 व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-शां
 षः ६।३।६६।
 व्रश्चित्वा ५।४।११६।
 व्रश्चि-मूषेः च किकन् (उणादि) २।८।
 व्रातात् खञ् ३।४।१३।
 व्रातात् अस्त्रियाम् ४।३।८६।
 व्रीहि-शालेः ढक् ४।२।२।
 व्रीहेः पुरोडाशे ३।३।११२।
 व्रीह्यादि-अतः इनिश्च ४।२।११६।
 शकन्धवादयः ५।१।६८।

* सूत्रपाठे तत्र तत्र एतादृशानि सूत्राणि सन्धिं खण्डयित्वा निर्दिष्टानि, यथा — 'वा उद्वाहे' ।

शकल-कर्ममाद् वा ३।१।३।	शप्-श्यनः ५।४।३।५।
शकलादिभ्यः गोत्रात् ३।२।२।१।	शब्द-दर्दरं करोति ३।४।३।१।
शकादिभ्यः ५।४।१।३।५।	शब्दादीन् करोति १।१।३।६।
शकादिभ्यः अटन् (उणादि) २।३।२।	शब्दान्तर्गतौ वा १।४।१।३।०।
शकि-भूभ्यां उन्ति-अन्तिचौ (उणादि) १।७।१।	शमादिभ्यः अथः (उणादि) २।५।३।
शकि-शमेः नित् (उणादि) ३।४।७।	शमाम् अष्टानां श्ये दीर्घः ६।१।१।०।२।
शकेः उनः (उणादि) २।८।१।	शमेः खः (उणादि) २।२।३।
शकेः उनिः (उणादि) १।७।६।	शमेः ढः (उणादि) २।४।१।
शकेः उन्तः (उणादि) २।४।२।	शमेः ठः (उणादि) २।३।५।
शक्ति-यष्ट्योः टीकक् ३।४।६।०।	शम्याः ष्लञ् ३।३।१।१।६।
शक्ति-वयः-शीलेषु १।२।८।७।	शरः खयः ६।४।१।४।४।
शक्तौ हस्ति-कपाटात् १।२।४।०।	शरदः श्राद्धे ३।२।७।२।
शक्ये क्षि-ज्योः अय् ५।१।७।६।	शरदादिभ्यः असंख्यार्थे ४।४।६।०।
शङ्कु-आदयः (उणादि) १।२।१।	शरद्-दरद्-दृषदः (उणादि) ३।७।८।
शन्-शत्-शतेः डिनिः वा ४।२।४।२।	शरद्वत्-शुनक-दर्भात् भार्गव-वात्स्य- आग्रायणेषु २।४।३।८।
शण्डिकादिभ्यः ज्यः ३।३।६।०।	शरादिभ्यः ३।३।१।१।४।
शत-रुद्रात् घः च ३।१।२।५।	शरादीनाम् ५।२।१।३।४।
शत-षष्टेः पथः षठ् ३।१।३।६।	शरः अचि रात् ६।४।१।४।६।
शतात् केवलात् ठन्-यतौ अतस्मिन् ४।१।३।१।	शर्करादिभ्यः अण् ४।३।८।४।
शतादिमास-अर्धमास-संवत्सरात् ४।२।५।३।	शरूपरे ६।४।२।२।
शताद् वा ४।१।४।४।	शलः इगुपान्तात् अदृशः अनिटः क्सः १।१।६।५।
शति-शद्-दशान्तात् अधिका अस्मिन् शतसहस्रे डः ४।२।५।०।	शलालुनः वा ३।४।५।६।
शतृ १।२।८।४।	शल्लि-मण्डेः ऊकञ् (उणादि) २।२।१।
शदेः शिति १।४।१।१।५।	शवि-कमः कलन् (उणादि) ३।४।५।
शदेः अगतौ तः ६।१।५।४।	शवि-कमिभ्यां दन् (उणादि) २।६।०।
शपः शपथे १।४।६।३।	शशि-रपयोः अतः इत् च (उणादि) १।१।४।
शपि दंश-सञ्जेः च ५।३।२।८।	शः छः अमि ६।४।१।५।७।
	श-ष-सर् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र १२)

शसः नः २।१।२८।
 शाकलात् वा ३।३।६६।
 शाखादिभ्यः यः ४।३।८१।
 शा-छा-सा-ह्वा-व्या-वे-पां युक् ६।१।४६।
 शाणात् ४।१।४५।
 शात् ६।४।१३६।
 शानच् १।२।८६।
 शान्-दान्-मानः १।१।२१।
 शालातुरीयः ३।३।५६।
 शाल्वाङ्ग-प्रत्यग्रथ-कलकूट-अश्मकात् इञ्
 २।४।१०३।
 शाल्वात् गो-यवान्वोः ३।२।५०।
 शासः क्ङिति शिस् ५।३।५७।
 शासि-युधि-दृशि-धृषि-मृषः १।३।१०६।
 शा हौ ५।३।५६।
 शिक्यं धिष्ण्यम् (उणादि) २।१।१६।
 शिखा (उणादि) २।२।५।
 शिखादिभ्यः वा ४।२।१३४।
 शिङ्घेः आणकः (उणादि) २।१।२।
 शि तुक् ६।४।१५।
 शिति अपिति ५।३।२४।
 शिति आयादयः १।१।५०।
 शिदनेकाल् सर्वस्ये १।१।१२।
 शिन्डितोः ५।१।१६।
 शिरः करन् (उणादि) ३।२।४।
 शिरसः शीर्षन् वा ५।२।६३।
 शिरीषादयः (उणादि) ३।६।०।
 शिलाया ढः च ४।३।८०।
 शिल्पम् ३।४।५७।
 शिवादयः (उणादि) २।६।२।
 शिवादिभ्यः अण् २।४।४१।

शिशुक्रन्दादीन् अधिकृत्य कृते ग्रन्थे छः
 ३।३।५६।
 शि-सुटि ५।३।७।
 शि-सुटि एः ५।४।३६।
 शीङ्गः एत् अलिटि ६।२।७३।
 शीङ्गः फुट् च् (उणादि) ३।१०।८।
 शीङ्गः धुक् (उणादि) १।३।७।
 शीङ्गः रत् १।४।७।
 शीतात् च कारिणि ४।२।७।८।
 शीत-उष्ण-तृप्रं न सहते ४।२।१५।८।
 शीर्ष-कुमारात् णिनिः १।२।३।८।
 शीर्ष-च्छेदात् यत् च ४।१।७।६।
 शीर्षः अचि ५।२।६४।
 शीलम् ३।४।६२।
 शील-साधु-धर्मेषु तृन् १।२।८।६।
 शीले तूष्णीकः ४।३।५६।
 शी वा २।१।१३।
 शुक्रात् घन् ३।१।२३।
 शुङ्ग-च्छगल-विकर्णात् भारद्वाज-वात्स्य-
 आत्रेयेषु २।४।४७।
 शुट् च (उणादि) ३।१।१२।
 शुण्डिकादिभ्यः अण् ३।३।४।८।
 शुनः शेफ-पुच्छ-लाङ्गुलेषु नाम्नि
 ५।२।१६।
 शुन्-अशुचौ पुरः (उणादि) १।३।८।
 शुनी-स्तनात् घेटः १।२।१२।
 शुभ्रादिभ्यः २।४।५३।
 शुषः कः ६।३।६०।
 शूर्पात् अञ् ४।१।२६।
 शूलात् पाके ४।४।४६।
 शूल-उखात् यत् ३।१।१५।

शृतं क्षीर-हृषिषोः ५।१।३३।

शृङ्खलं वन्धनं करभे ४।२।८४।

शृङ्ग-अङ्ग-भृङ्गाः (उणादि) २।२६।

शृङ्गात् ४।२।१४०।

शृङ्गि-भृङ्गि-मृजि-कञ्जेः चित् (उणादि)
३।२२।

शृ-वन्देः आरुः १।२।१२०।

शृ-वसि-वपि-राजि-वृ-हनि-नभेः इञ्
(उणादि) १।५६।

शृ वायु-वर्ण-निवृतेषु १।३।१०।

शो मुचादीनाम् ५।४।११।

शो स्यन् १।४।१०४।

शोपात् वा ४।४।१४२।

शोषे ३।२।१।

शोषे लृट् १।३।११६।

शोषे लोपः अदः ५।४।५७।

शोणादिभ्यः २।३।४१।

शोभते ४।१।११८।

शौ अयमः ५।४।२७।

शौनकादिभ्यः ३।३।७२।

शौ वा ५।४।३३।

शन-सोः लोपः ५।३।१०४।

शनाः १।१।१००।

शना-द्विस्वतयोः आतः ५।३।१०५।

शनात् नः ५।३।२२।

श्या-आद्-इण-व्यध-श्वस-तनः १।१।१४७।

श्या-स्त्या-हृञ्-अविभ्यः इञ्
(उणादि) २।६२।

श्येत-एत-हरित-रोहितात् तो नः

२।३।३४।

श्येन-तिलयोः पाते जे ५।२।८४।

श्यः अस्पर्शे ६।३।८३।

श्रविष्ठा-आषाढात् छण् ३।३।६।

श्राद्धम् अनेन अद्य भुक्तं ठन् च
४।२।६१।

श्रि-भुवः अप्रादेः १।३।१४।

श्रि-सु-द्रु-प्रु-ज्वाम् क्तिप् दीर्घश्च (उणादि)
३।६८।

श्रु-कृ-धवां शृ-कृ-धि च १।१।६६।

श्रुवः अनाङ्-प्रतेः १।४।११४।

श्रु-श्रि-यु-वहो नित् (उणादि) १।७६।

श्रु-सद्-वसः लिट् वा १।२।७३।

श्रि-उग्-ऊर्णोः कितः ५।४।१३६।

श्लिषः १।१।६६।

श्लिष-शीङ्-स्था-आस-वस-जन-रुह-जूभ्यः

१।२।६६।

श्लिषेः इतः अत् च (उणादि) २।७७।

श्वगणात् वा ३।४।६।

श्व-युवन्-मघोनाम् अनणादौ ५।३।१२६।

श्वसुरः (उणादि) ३।४।

श्वसुरात् २।४।७१।

श्वसः तुट् च ३।२।७५।

श्वसः वसीयसः ४।४।६५।

श्वदयः (उणादि) ३।८०।

श्वदेरिति ६।१।१६।

श्विति-वृत्ति-नीवी-छिदि-मुदि-दहि-तृपि-

शुभिभ्यः च (उणादि) ३।८।

श्वि-ईदितः त-तवतोः ५।४।१३६।

षः पदे ६।४।१२६।

षट्-कति-कतिपयात् थट् ४।२।५६।

ष-ठनि क्तादेशः ६।३।३१।

षपूर्व-हन्-घृतराज्ञाम् अणि ५।३।१३१।

षषः ४।३।६६।
 षषः ण्यः च वा ४।१।६८।
 षष्ठ्यादेः असंख्यादेः ४।२।५४।
 षष्ठात् ४।२।६३।
 षष्ठी २।२।२२।
 षष्ठी च अनादरे २।१।६१।
 षष्ठी संबन्धे २।१।६५।
 षष्ठी हेतुना २।१।७१।
 षष्ठ्या आक्रोशे ५।२।१२।
 षष्ठ्या अन्त्यस्य १।१।१०।
 षष्ठ्या रूप्ये च ४।३।४४।
 षष्ठ्या व्याश्रये तस् ४।३।१।
 षितः डीष् २।३।३६।
 षोडन् ४।४।१३१।
 षोढा वा ४।३।२१।
 ष्ठिवु-क्लम-आचमां शिति ६।१।१०३।
 ष्ठिवु-सिवो दीर्घश्च १।३।६८।
 षणः संख्यायाः लुक् २।१।२१।
 षफो वा २।३।१६।
 ष्यङः प्रधानस्य पुत्र-पत्योः स्वयोः इग्
 यणः ५।१।११।
 संख्या-अक्ष-शलाकाः परिणा द्यूते
 अन्यथावृत्तौ २।२।६।
 संख्यातात् १।३।८।
 संख्यादिः समाहारे २।२।७६।
 संख्यादेः २।३।२३।
 संख्यादेः ष्ठश्च ४।१।७०।
 संख्यादेः संख्येयात् अनपत्ये अजादेः
 लुग् अद्विः २।४।११।
 संख्यादेः संख्येयाल्लुक् ४।२।४१।
 संख्यादेर्गुणात् ४।४।४३।

संख्यादेर्यप् ४।१।६७।
 संख्यादेर्वा ४।१।१०१।
 संख्यादेर्वुन् ४।४।३।
 संख्यादेश्चालुकः ४।१।२४।
 संख्या-अध्यर्धादेः संख्येयाल्लुग् अद्विः
 ४।१।३८।
 संख्यायाः अतिशतः कन् ४।१।३२।
 संख्यायाः अनतः २।१।३३।
 संख्यायाः अबहोः अन्यार्थे ४।४।६५।
 संख्यायाः संवत्सर-परिमाणस्य असंज्ञा-
 शाण-कुलिजस्य ६।१।२६।
 संख्यायाः नदी-गोदावर्योश्च ४।४।७३।
 संख्या-अर्धात् नावः एकार्थात् ४।४।८४।
 संख्या वंश्येन २।२।१२।
 संख्या-वि-सायादेः अह्नस्य अहन् डौ वा
 ५।२।१२८।
 संख्या-एकार्थात् वीप्सायाम् ४।४।२।
 संघ-अङ्क-घोष-लक्षणेषु अन्व्याञ्जः
 ३।३।६८।
 संघे अनुत्तराधरे १।३।३३।
 संज्ञा-पूरणयोः ५।२।३५।
 संज्ञायां वातपात् अञ् ३।३।८३।
 संज्ञायाम् २।३।६०।
 संज्ञः व्याप्ये वा २।१।६७।
 संध्यादि-ऋतु-नक्षत्रात् अण् ३।२।७६।
 संनिष्कृष्टपाठानाम् २।२।५२।
 सम्-नि-वेः अर्दः ५।४।१५२।
 संपदादिभ्यः क्विप् १।३।६३।
 सम्-परेः कृञः सुट् ५।१।१३६।
 सम्-प्रतेः अस्मृतौ १।४।६२।
 संप्रदाने चतुर्थी २।१।७३।

सम्-प्रात् जानुनः ज्ञः ४।४।११६।

सम्-प्र-उत्-नेः च कटच् ४।२।३०।

संबोधने २।१।६४।

संबोधने सौ ६।२।४४।

संभवति अवहरति च ४।१।६८।

संभावनो अलमर्थे तदर्थप्रयोगे

१।३।११८।

संभ्रमे यावद्वोधम् ६।३।१४।

संयोगस्य पदस्य ६।३।५२।

संयोगात् इनः असमूहे ५।३।१७५।

संयोगादेः लिटि ६।२।६५।

संवत्सर-आग्रहायण्याः ठञ् च ३।३।१६।

सम्-वि-प्र-अवात् १।४।६५।

संशयम् आपन्नः ४।१।८४।

संसृष्टे ३।४।२२।

संस्कृतं भक्ष्यम् ३।१।१४।

संस्कृते ३।४।३।

सकृत् ४।४।८।

सक्थि-अक्षणः स्वाङ्गात् षच् ४।४।६६।

सखि-दूत-वणिग्भ्यः यः ४।१।१४२।

सखी अशिखी २।३।७०।

सखी-अहर्-राजां टच् ४।४।७६।

सखीआदयः (उणादि) १।६०।

सख्युः पत्युः ५।१।११८।

सख्युः असौ ऐत् ५।४।४४।

सञ्ज्-असिभ्यां क्थिन् (उणादि)

१।६१।

सतीर्थ्यः ३।४।७५।

सत्त्वाश्लेषे १।१।६७।

सत्याद् अशपथे ४।४।५०।

सत्य-अर्थ-वेदानाम् आपुक् ६।१।५५।

सदा-अधुना-इदानीम् तदानीम्

४।३।१४।

सदि-स्वञ्जेलिटि ६।४।६८।

सदः अप्रतेः ६।४।५१।

सनः १।४।१११।

सनः क्तिचि लोपश्च ५।३।४३।

सन्-आशंसः उः १।२।११७।

सनि ५।३।४०।

सनि ५।४।६४।

सनि इवन्त-ऋध-भ्रस्ज-दम्भु-श्रि-स्वृ-यु-

ऊर्णु-भर-ज्ञपि-सनि-तनि-पति-दरिद्रः

५।४।११६।

सनो ग्रह-गुहश्च ५।४।१३७।

सन्-यङोः आद्यम् एकाच् द्विः ५।१।१।

सनि अतः ६।२।१२६।

सन्-लिटोः जेः ६।१।८८।

सन्वत् लघुनि गौ चङि अनग्-लोपे

६।२।१४०।

सप्तन-निष्पत्तात् अतिव्यथने ४।४।४५।

सपूर्वस्य वा २।३।३१।

सपूर्वात् ३।२।७०।

सपूर्वात् ४।२।६३।

सपूर्वात् प्रथमान्तात् वा ६।३।२१।

सप्तम्यां च उपात् पीड-रुध-कर्षः

१।३।१४१।

सप्तम्यां पूर्वस्य १।१।७।

सप्तमी आधारे २।१।८८।

सप्तमी आधिक्ये २।१।६०।

सप्तम्या बहुलम् ५।२।११।

सप्तम्याम् ४।२।१२१।

सप्तम्याः त्रल् ४।३।१०।

समः १।१।६०।

समः क्षणुवः १।४।११८।

समः प्रतिज्ञायाम् १।४।६६।
 समः समिः ५।२।११०।
 समः सुटि सः ६।४।१।
 समज-मन-विद-सु-शी-भृञ्-इणः भावे
 क्यप् १।३।७८।
 समयात् यापनायाम् ४।४।४४।
 समया-निकषा-हा-धिक्-अन्तरा-
 अन्तरेणयुक्तात् २।१।५०।
 सम्-अव-अन्धात् तमसः ४।४।६४।
 समः तते ५।२।८८।
 समस्तान्त-समीपयोः अयुवादीनाम्
 ६।४।११२।
 समः तृतीयायुक्तात् १।४।१०७।
 समांसमीन-अद्यश्चीन-आगवीनाः ४।२।२१।
 समाजार्थान् समवैति ३।४।४१।
 समानस्य पक्षादिषु ५।२।१०३।
 समानात् ३।३।२६।
 समानादिभ्यः २।३।३३।
 समान-अन्य-त्यदादेः उपमानात् व्याप्ये
 दृशः क्स-कञौ च १।२।५१।
 समानोदरे श्यितः ३।४।१०६।
 समापो नाम्नि ५।२।११५।
 समायाः खः ४।१।१००।
 समासान्तः ४।४।५२।
 समासे अङ्गलेः सङ्गः ६।४।६६।
 समासे अनुत्तरस्य ६।४।३६।
 समाहारे ५।३।१४३।
 समाहारे नपुंसकम् २।२।४६।
 समिधः आधाने षेण्यण् ३।३।१०२।
 सम्-उत्-आङ्भ्यः यमेः अग्रन्थे
 १।४।१२८।

सम्-उद्भयाम् अजः पशुषु १।३।६०।
 समः अकूजने १।४।५६।
 समः गम्-ऋच्छि-पृच्छि-स्वृ-श्रु-वेत्ति-
 अर्ति-दृशः १।४।७१।
 समो मुष्टौ १।३।३६।
 समो यु-द्भु-दुवः १।३।१२।
 समो वा १।१।१२४।
 सम्राट् ६।४।१०।
 सर्तेः अपः सुक् च (उणादि) २।८६।
 सर्तेः अयुः (उणादि) १।३३।
 सर्वचर्मणा कृतः ४।२।८।
 सर्वाः सर्वादिभ्यो हेत्वर्थैः २।१।७२।
 सर्वात् णो वा ४।१।१३।
 सर्वात् ४।१।११।
 सर्वात् सहः १।२।२५।
 सर्वादयो वृत्तिमात्रे ५।२।४१।
 सर्वादिपथि-अङ्ग-कर्म-पत्र-पात्रं व्याप्नोति
 ४।२।११।
 सर्वादि-बहुभ्यः अद्वयादिभ्यः ४।३।७।
 सर्वादिभ्यः स्मै-स्मातौ २।१।६।
 सर्वादीनाम् ४।३।६०।
 सर्वाङ्गिन् अत्ति ४।२।१५।
 सर्व-अभि-परि-उभयात् तसा २।१।५२।
 सर्व-एक-अन्य-किम्-यत्-तदः काले दा
 ४।३।१३।
 सर्व-उत्तर-दक्षिणादेः खः ३।४।७६।
 ससंख्यस्य अनादौ सः ६।४।३२।
 ससंख्यात् अमः क्यच् वा १।१।२४।
 स-सजुषो रुः ६।३।६८।
 स-स्नौ स्तुतौ ४।४।२४।
 सस्येन परिजातः ४।२।७३।

सह-नञ्-विद्यमानादेः २।३।६८।
 सहस्य सध्रिः ५।२।१११।
 सहस्य सः अन्यार्थे ५।२।१६७।
 सहस्र-वसन-विंशतिक-शतमानात् अण्
 ४।१।३०।

सहार्थे २।१।५७।
 सहार्थेन २।१।६५।
 सहि-चलि-वहः कि-किनौ १।२।११३।
 सहि-वहोः ओत् ५।२।१३८।
 साक्षात् आदीनि २।२।३६।
 साक्षात् द्रष्टा ४।२।१०।
 सात् ६।४।१६।
 साधोः १।२।५७।
 साप्तपदीनं सख्ये ४।२।७।
 सारेर् अथिन् (उणादि) १।६२।
 साज्य्य पौर्णमासी ३।१।१८।
 सिकता-शर्कराभ्याम् ४।२।१०८।
 सिचः १।४।४१।
 सिचि ५।३।४५।
 सिचि दा-धा-स्थाम् इत् च ६।२।२७।
 सिचेः कन् नुम्-हौ च (उणादि)
 ३।६७।
 सिचो यङि ६।४।१६२।
 सिचि अतङि ५।४।१०३।
 सिच्लोपः एकादेशे ६।३।३०।
 सि-तनि-गमि-मसि-सचि-अवि-धाञ्-
 ऋशिभ्यः तुन् (उणादि) १।२२।
 सिधि-बुधि-स्विदि-मनि-पुष-श्लिषः श्यना
 ५।४।१३१।
 सिधो गती ६।४।१६३।
 सिध्मादिभ्यः ४।२।१००।

सिन्धु-अपकरात् वा ३।३।४।
 सिन्ध्वादिभ्यः अण् ३।३।६१।
 सिपि र्वा ६।३।१०६।
 सि-मि-चीनां ईत् च (उणादि) ३।१२।
 सि ष-ढोः कः ६।३।७२।
 सि सः लिङ्गतिङि ६।२।१६।
 सितया समिते ३।४।१६२।
 सीवु-सुरात् पिबः १।२।४५।
 सु-अमोः नपुंसकात् २।१।२३।
 सुखादिभ्यः ४।२।१२८।
 सुखादीनि वेदयते १।१।३५।
 सुचो वा ६।४।३६।
 सुट् त-थोः १।४।३६।
 सुपः १।२।३।
 सुपः ४।३।६१।
 सुपः प्रकृतेर्नो लोपः ६।३।४८।
 सुपा अनाङ्ग-मयेन ६।४।१३३।
 सुपि ६।२।४०।
 सुपि नलोपः ६।३।२८।
 सुपि वलि तद्वत् ६।३।५१।
 सुपि ह्रस्वः २।२।८४।
 सुपो यथेष्टम् ५।१।८।
 सुपः असंख्यात् लुक् २।१।३८।
 सुपि अचः ६।४।१२२।
 सुप्रात-सुश्र-सुदिव-शारिकुक्ष-चतुरश्राः
 ४।४।१०५।
 सुप् सुपा एकार्थम् २।२।१।
 सुभग-आढ्य-स्थूल-पलित-नग्न-अन्ध-
 प्रियात् अच्चेः भुवः खिण्णुच्-खुकर्जौ
 १।२।४६।
 सु-वि-निर्-दुर्भ्यः सम-सूति-सुपाम्
 ६।४।७५।

सुषामादयः ६।४।८६।	सेहिङ् १।४।२१।
सु-संख्यादेः ४।४।१२६।	सोः ५।१।६६।
सु-सर्व-अर्थात् जनपदस्य ६।१।२३।	सोः स्य-सनोः ६।४।६७।
सु-सू-घञ्-गृधेः क्रन् (उणादि) ३।११।	सोढः ६।४।६५।
सु-स्नातादीन् पृच्छति ३।४।४६।	सोम-वरुणयोः ईत् ५।२।२५।
सु-हरित-तृण-सोमात् जम्भात् ४।४।११४।	सोमात् टचण् ३।१।२८।
सुहृद्-दुर्हृदौ मित्र-अमित्रयोः ४।४।१३८।	सो लोपः अनन्त्यस्य १।४।३६।
सूक्त-साम्नोः छः ४।२।१५३।	सोऽस्य ग्रामणीः ४।२।८३।
सूचन-अवक्षेपण-सेवा-साहस-यत्न-कथा- उपयोगेषु कृञः १।४।७८।	सोऽस्य प्राप्तः समयात् ४।१।१२३।
सूचेः स्मन् (उणादि) २।१०२।	सोऽस्य अभिजनः गिरिभ्यः शस्त्र- जीविषु ३।३।५८।
सूतका-पुत्रका-वृन्दारकाः ६।१।७५।	सौ अनडुहः ५।४।३६।
सु-उत्-पूति-सुरभेः गन्धस्य इत् ४।४।१२३।	सौ असंबुद्धौ ५।३।१०।
सूत्रात् संख्याकात् ३।१।४२।	सौ वा इतौ ५।१।१२६।
सूर-मर्त-क्षेम-यविष्ठात् ४।४।२७।	सौवीरेषु वा २।४।८०।
सूर्य-अगस्त्ययोः छे च ५।३।१५३।	स्कृञः ६।२।६६।
सूर्या देवी २।३।४७।	स्कोः संयोगाद्योः अन्ते च ६।३।५८।
सू-विषिभ्यां कित् (उणादि) १।३०।	स्तनि-हृषि-पुषि-गडि-मडिभ्यो णे इत्नुच् (उणादि) १।२६।
सू-घस्-अदः क्मरच् १।२।१०६।	स्तम्ब-शकृद्भ्यां व्रीहि-वत्सयोः इन् १।२।८।
सृजः श्राद्धे १।४।१०३।	स्तम्भु-स्तुम्भु-स्कम्भु-स्कुम्भु-स्कुम्भ्यः १।१।६६।
सृजि-दृशः ५।४।१६३।	स्तम्भेः ६।४।५२।
सृजि-दृशोः झलि अम् ६।२।५।	स्तुतौ भ्रातुः ४।४।१४६।
सृजेः असुम् च (उणादि) १।१६।	स्तु-सुञः अतडि ५।४।१६६।
सृ-भृ-वृ-स्तु-द्-सु-श्रुवो लिटः ५।४।१५८।	स्तु-स्वञ्ज-सिवादीनाम् वा अड्व्यवाये ६।४।५६।
सेटि ५।३।५३।	स्तेयम् ४।१।१४३।
सेनाङ्गानां बहुत्वे २।२।५६	स्तोः श्रु-ण्टुभ्यां तौ ६।४।१३६।
सेनान्त-कारु-लक्ष्मणात् इन् च २।४।८५।	स्तोः षणि ६।४।४८।
सेनाया वा ३।४।४३।	स्तोक-अल्प-कृच्छ्र-कतिपयात् असत्त्वार्यात् करणे २।१।८७।
सेना-सुरा-शाला-निशा वा २।२।७२।	
सेयुवो वा २।१।३६।	
सेयुवो वा ६।२।५४।	
सेग्रसि ६।३।७६।	

स्तोत्रे ड् ४११६४।
 स्तोः ऊ च (उणादि) २।८३।
 स्त्रियां कुरु-कुन्ति-अवन्तिभ्यः २।४।१०५।
 स्त्रियां क्तिन् १।३।७४।
 स्त्रियां पुंवत् उक्तपुंस्कम् अनूङ् एकार्ये
 स्त्रियाम् अप्रधानपूरणी-प्रियादौ
 ५।२।२६।

स्त्रियां लुक् २।४।३०।
 स्त्रियां वा ६।२।५२।
 स्त्रियाः ५।३।८५।
 स्त्रियाः ६।२।५५।
 स्त्रियाम् २।३।१।
 स्त्रियाम् ५।४।४६।
 स्त्रीणाम् २।१।३७।
 स्त्रीनास्मि ४।४।१३२।
 स्त्री-पुंसाभ्यां नञ्-स्त्वञौ २।४।१३।
 स्त्रीबहुषु फक् २।४।३४।
 स्त्री-यूभ्याम् २।१।३५।
 स्थः ६।१।६७।
 स्थः प्रतिज्ञा-निर्णय-प्रकाशनेषु १।४।६४।
 स्थण्डिले शेते व्रती ३।१।१३।
 स्थलादिना ४।१।६०।
 स्थादीनां द्विरुक्तेन तस्य च ६।४।५८।
 स्थानान्त-गोशाल-खरशालात् लुक्
 ३।३।६।
 स्था-भास-पिस-कसो वरच् १।२।१२२।
 स्था-स्ना-पा-व्यधि-हृनि-युधः कः
 १।३।४६।
 स्थास्तुः १।२।६५।
 स्थिरादयः (उणादि) ३।६।
 स्थूल-दूर-युव-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणादेः य्-वोः
 एङ् च ५।३।१५६।

स्थूलादिभ्यः कन् ४।३।२७।
 स्नु-नमः स्वयम् १।४।१०२।
 स्पर्धायाम् आङ् १।४।७७।
 स्पर्श-द्रवमूर्त्योः इयः ५।१।२६।
 स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृप-सृपां वा ६।२।६।
 स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपो वा १।१।६१।
 स्पृशः अनुदकात् क्विन् १।२।४८।
 स्पृहि-गृहि-पति-शीडः आलुच् १।२।१०४।
 स्पृहेः आग्यः (उणादि) २।१।१३।
 स्फायः स्फीः ५।१।३२।
 स्फायो वः ६।१।५३।
 स्फुरि-स्फुलोर्धञि ५।१।५१।
 स्फुरि-स्फुलोनिर्-नि-विभ्यः ६।४।६४।
 स्मपरे लङ् च १।३।५।
 स्-महतोर्नुमि ५।३।८।
 स्मि-अजस-हिंस-दीप-नम-कम-कम्पो रः
 १।२।११६।
 स्मृत्युक्तौ लृट् १।२।७८।
 स्मृ-दृशः १।४।११२।
 स्मृ-दृ-त्वर-प्रथ-म्रद-स्तृ-स्पशाम् अत्
 ६।२।१४२।
 स्मे लोट् १।३।१२५।
 स्मेः च ५।१।५६।
 स्मै च तीयात् २।१।१६।
 स्मैवतः स्याङ् अत् च ६।२।५७।
 स्य-तासौ लृ-लुटोः १।१।५६।
 स्यदो जवे ५।३।३२।
 स्यन्दो यणः इग् घश्च (उणादि) १।१७।
 स्यमो यः ईत् च (उणादि) २।१०।
 स्य-सिचि कृत-वृत्-च्छृद-तृद-नृतः
 ५।४।१२०।
 स्तु-रिङ्भ्यां तुट् च (उणादि) ३।१०६।

सुवः चिक् (उणादि) ३।७२।

हनः ६।४।११६।

सु-श्रु-द्रु-प्रु-प्लु-च्यूनाम् वा ६।२।१३३।

हनः कुत्सायाम् १।२।६४।

स्वञ्जः ५।३।२७।

हनस्तोऽचिण्-णलोः ६।१।४०।

स्वन-हसो वा १।३।५२।

हनः घ्नी हिंसायाम् ६।२।८३।

स्वपः ५।१।२३।

हनः जः ५।३।६०।

स्वप्नक् तृष्णक् १।२।११६।

हनो जघ च (उणादि) २।७२।

स्वर्गादिभ्यः यत् ४।१।१३३।

हनो वध लिङि ५।४।८६।

स्वसुः २।४।६६।

ह-य-व-र-लण् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र ५)

स्वसृ-पत्योर्वा ५।२।१६।

हरति उत्सङ्गादिभ्यः ३।४।१४।

स्वागतादीनाम् ६।१।१८।

हरितादिभ्यः अजः २।४।३६।

स्वाङ्गात् तस्-ना-धार्थं भुवा च २।२।४३।

हल् प्रत्याहारसूत्र (शिवसूत्र १३)

स्वाङ्गात् अकृत-मित-जात-प्रतिपन्नात्

हलः ५।३।२।

अन्यार्थे २।३।५७।

हल-सीरात् ठक् ३।३।८८।

स्वाङ्गात् अप्रधानात् २।३।६१।

हलः त्ति-सिपः ५।१।६५।

स्वाङ्गात् ईद् अमानिनि ५।२।३७।

हलस्य कर्षे ३।४।६६।

स्वाङ्गेषु शक्तः ४।२।७१।

हलादेः इजुपान्तात् ६।४।१२५।

स्वात् ईर-ईरिणोः ५।१।८८।

हलादेः उपान्तस्य अश्वस-क्षण-ह्-म्-य्-

स्वादिभ्यः श्वः १।१।६५।

एदितः अतः ६।१।७।

स्वादीनाम् ६।४।५७।

हलि पिति उतः औत् ६।२।३०।

स्वाद्वर्थात् अदीर्घात् १।३।१३५।

हलि मः ६।४।८।

स्वामिन् ईशे ४।२।१४३।

हलः अचः ६।१।४।

स्वाम्ये अधिना २।१।६१।

हलः झरां झरि सस्थाने लोपो वा

स्वार्थे २।३।१६।

६।४।१५५।

स्वार्थे ५।४।१३८।

हलः अनादेः ६।२।११२।

स्वृ-सूङ्-ऊदितः ५।४।१०७।

हलः अनिदितः किङ्कति उपान्तस्य ५।३।२३।

स्-वो वा-ऽमौ १।४।२५।

हलः यजादेः ५।३।१५२।

सु-औ-जस्-अम्-औट्-शस्-टा-भ्यां-भिस्-डे-

हलः हौ शानच् १।१।१०२।

भ्यां-भ्यस्-डसि-भ्यां-भ्यस्-डस्-ओस्-

हलि अश् ५।४।७५।

आम्-डि-ओस्-सुप् २।१।१।

हवः १।३।६२।

ह एति ६।२।१०१।

हशि च अतो रोः ५।१।११६।

हनः १।२।३७।

हस्त-दन्तात् जातौ ४।२।१३०।

हनः ५।३।४६।

हस्तप्राप्ये चेः अस्तेये १।३।३१।

हस्ति-पुरुषात् अण् च ४।२।४०।
हस्तेन १।३।१३७।
हस्ति-अचित्तात् ३।१।४८।
हाकः ५।३।१०६।
हाकः त्वि ६।२।६५।
हायनात् वयसि २।३।११।
हायनान्तयुवादिभ्यः अण् ४।१।१४६।
हिंसायां प्रतेश्च ५।१।१३६।
हिंसार्थात् एकाप्यात् १।३।१४०।
हितनाम्नो वा ५।३।१७२।
हित-सुखाभ्यां चतुर्थी च २।१।६७।
हिता भक्षाः ३।४।६६।
हिनु-मीना-आनि ६।४।११५।
हिमं सहते चेलुः ४।२।१५६।
हिम-हति-काषि-ष्ठन्-यति पद् ५।२।५६।
हिमादिभ्यः ४।२।१३६।
हिम-अरण्यात् महत्त्वे २।३।५२।
हीने २।१।५८।
हीयमान-पापयुक्तात् ४।३।४।
हु-ञ्जलः अनिटः हेः धिः ५।३।६८।
हु-स्नुवोः अलिटि ५।३।६१।
हूनां द्वे च १।१।८४।
ह्-क्रोः एणुः (उणादि) १।२७।
ह्-क्रोर्वा २।१।४५।
ह्जो गतिशीले १।४।६१।
ह्जो दुक् च (उणादि) २।१०८।
ह्जो दृति-नाथात् पशौ १।२।६।
हृदयस्य प्रिये ३।४।६७।

हृदयस्य अणि हृत् ५।२।५५।
हृद्-भग-सिन्धोः पूर्वस्य च ६।१।२६।
हृ-सृ-तडि-रहि-युषिभ्यः इतिः (उणादि)
३।७६।
हृ-सः अवात् १।१।१४६।
हेतु-फलयोः १।३।१२०।
हेतौ २।१।६८।
हे म-न-य-व-लपरे ते वा ६।४।११।
हेमन्तात् वा तलोपश्च ३।२।८०।
हेमार्थात् परिमाणे ३।३।१०७।
हेः अचडि ६।१।८७।
हैयंगवीनं संज्ञायाम् ३।३।१२१।
हो ङः ६।३।६२।
हो द्वे च (उणादि) २।६।
हः व्रीहि-कालयोः १।१।१५६।
हः हिर् च (उणादि) २।११६।
हौ वा ५।३।११०।
ह्रस्वः ६।२।११६।
ह्रस्वस्य अतिडि पिति तुक् ५।१।६६।
ह्रस्वात् ६।३।५६।
ह्रस्वात् सुपः ति ६।४।८७।
ह्रस्वापो नुट् २।१।३२।
ह्रस्वे ४।३।७०।
ह्री-इषि-कृशिभ्यः कुक्-सुग्-आनुक्
(उणादि) १।३५।
ह्लादो ह्र्लद् ६।३।६२।
ह्रवः ५।१।३६।
ह्र्वा-लिप्-सिचः १।१।७१।

चान्द्र-उणादिसाधितशब्दानाम् अकारादिक्रमेण संकलनम् ।

शब्दः पादः सूत्रम्

अंहस् ३।१००।

अकट २।३२।

अक्ष ३।६३।

अक्षर ३।१८।

अक्षि १।६७।

अग्नि १।७७।

अग्र ३।१४।

अङ्कुश ३।५६।

अङ्ग २।२६।

अङ्गार ३।२१।

अङ्गिरस् ३।६६।

अङ्गुर ३।१।

अङ्गुरि १।६३।

अङ्गुलि १।६३।

अङ्गुष ३।५७।

अजिन २।६३।

अजिर ३।६।

अञ्जलि १।७३।

अणु १।६,७।

अण्ड २।३६।

अतस ३।६५।

अतिथि १।६३।

अद्भुत २।४६।

अद्रि १।७०।

अधम २।१०६।

अनेहस् ३।६६।

अन्त २।५०।

अन्त्र ३।४०।

शब्दः पादः सूत्रम्

अन्दु १।४७।

अपण्डु १।२१।

अप्तु १।२५।

अप्सरस् ३।६६।

अब्द २।६१।

अमति १।८६।

अमत्र ३।३८।

अम्बरीष ३।६०।

अम्भस् ३।११०।

अयस् ३।६६।

अरणि १।७४।

अरण्य २।११५।

अरति १।७२।

अरुस् ३।६२।

अरुष ३।५७।

अर्क २।३।

अर्चिस् ३।८६।

अर्जुन २।८०।

अर्ण २।७६।

अर्णस् ३।११३।

अर्थ २।५६।

अर्पिष ३।५४।

अर्भक २।२।

अर्म २।१००।

अर्य ३।११४।

अर्शस् ३।११२।

अलाबू १।४७।

अलीक २।१८।

अवट २।३२।	इन्दु १।८।
अवनि १।७४।	इन्द्र ३।१३।
अवभृथ २।५५।	इभ २।६७।
अवि १।५१।	इरा ३।१४।
अविन २।६२।	इरिण २।६६।
अविष ३।६१।	इत्वला ३।५३।
अविषी ३।६१।	इषिर ३।६।
अवी १।६०।	इषीका २।१८।
अव्यथिष ३।६२।	इषु १।१३।
अशनि १।७४।	इष्टका २।१४।
अश्रि १।६०।	उक्थ २।५८।
अश्र २।६१।	उक्षन् ३।८०।
असु १।८।	उग्र ३।१४।
असुर ३।३।	उत्पल ३।४६।
अस्थि १।६१।	उदक २।२।
अहि १।५५।	उद्गीथ २।५६।
आखु १।२०।	उद्र ३।१०।
आगन्तु १।२२।	उरस् ३।१११।
आगस् ३।१०२।	उरु १।१६।
आगामिन् ३।८६।	उलप २।८७।
आजि १।५७।	उलूक २।२२।
आडू १।४७।	उल्का २।४।
आति १।५७।	उल्व २।६२।
आपणिक २।६।	उल्मुक २।४।
आपतिक २।६।	उशनस् ३।६५।
आम्र ३।६।	उशीर ३।२८।
आयुस् ३।६३।	उषप २।८७।
आवसथ २।५३।	उषस् ३।१०१।
आशु १।१।	उषिज् ३।७३।
इक्षु १।३५।	उष्ट्र ३।३७।
इध्म २।१०३।	उष्ण २।७५।
इन २।७५।	उस्त्र ३।१०।

उत्तरा ३।१०।
ऊन २।७५।
ऊरु १।१६।
ऊर्णा २।३८।
ऊर्मि १।६५।
ऋक्ष ३।६४।
ऋजीक २।१६।
ऋजीष ३।६०।
ऋज्र ३।१४।
ऋतु १।२५।
ऋषभ २।६४।
एक २।१।
एत २।५०।
एधतु १।२५।
एनस् ३।१०७।
ओजस् ३।१०४।
ओतु १।२२।
ओदन २।६८।
ओष्ठ २।५६।
कंस ३।६३।
कक्ष ३।६३।
कचप २।८७।
कचूक २।२२।
कच्छ २।३१।
कच्छू १।४४।
कक्षार ३।२२।
कट्वर ३।१५।
कठोर ३।३४।
कडत्र ३।३८।
कडार ३।२१।
कडित्र ३।४२।
कणीका २।१६।

कणीचि १।६८।
कण्ठ २।३६।
कण्व २।६१।
कनक २।२०।
कन्तु १।२४।
कन्द २।६०।
कन्दु १।८।
कन्या २।११०।
कपि १।५५।
कफेलू १।४७।
कमट २।३२।
कमठ २।३६।
कमल ३।४५।
कम्बू १।४७।
करक २।२०।
करण्ड २।३७।
करभ २।६३।
करीर ३।२७।
करीष ३।५६।
करुणा २।८०।
करेणु १।२७।
कर्क २।३।
कर्कन्धू १।४७।
कर्ण २।७४।
कर्पास ३।६६।
कर्पूर ३।४३।
कर्षू १।४७।
कलत्र ३।३८।
कलभ २।६३।
कला ३।४६।
कल्क २।३।

कवि १५१।

कषेरु १४७।

काक २११।

काणूक २१२२।

कारि १६०।

कारु १११।

कार्षक २।७।

काष्ठ २।५४।

कासू १४७।

किंशारु १।३।

किकि १।८३।

किङ्किणीका २।१६।

किरण २।७०।

किरीट २।३४।

किल्बिष ३।६२।

कीनाश ३।५६।

कुक्षि १।६६।

कुतप २।८७।

कुटीर ३।२६।

कुट्मल ३।४८।

कुणप २।८७।

कुणाल ३।५०।

कुण्ड २।४०।

कुन्द २।६१।

कुप्र ३।१४।

कुमार ३।२३।

कुमारयु १।२१।

कुम्भीर ३।२६।

कुरव ३।१७।

कुरीर ३।२६।

कुरु १।१५।

कुलटा २।३२।

कुश ३।५५।

कुष्ठ २।५४।

कूप २।८४।

कुकवाकु १।४।

कृच्छ्र ३।१०।

कृत्तिका २।१३।

कृत्स्न २।७६।

कृपीट २।३४।

कृवि १।८३।

कृशानु १।३५।

कृषक २।७।

कृषि १।५२।

कृषिक २।८।

कृष्ण २।७५।

कृसरा ३।१६।

केतु १।२५।

केवल ३।४६।

कोष्ठ २।५६।

क्रतु १।२५।

क्रयिक २।१७।

क्रिमि १।५३।

क्रोष्टु १।२२।

क्षत्तृ १।५०।

क्षिपक २।५।

क्षिपणि १।७५।

क्षिपणु १।३२।

क्षिपि १।५२।

क्षिप्र ३।७।

क्षीर ३।२६।

क्षुद्र ३।७।

क्षुर ३।१४।

क्षेम २।१००।

क्षोम २।१००।
 खजाक २।१६।
 खट्वा २।६१।
 खण्ड २।३६।
 खदिर ३।६।
 खरु १।४०।
 खर्जू १।४७।
 खर्जूर ३।४३।
 खलत २।४८।
 खण्ण २।८५।
 खिद्र ३।१०।
 खुर ३।१४।
 खुराक २।१६।
 गङ्गा २।२८।
 गडयन्त २।४५।
 गण्ड २।३६।
 गदयित्तु १।२६।
 गन्तु १।२२।
 गभीर ३।२६।
 गमथ २।५३।
 गमिन् ३।८५।
 गम्भीर ३।२६।
 गस्त ३।७५।
 गर्ग २।२६।
 गर्त २।५०।
 गर्दभ २।६३।
 गर्भ २।६६।
 गरमुत् ३।७५।
 गर्व २।६०।
 गल ३।४६।
 गह्वर ३।१६।
 गातु १।२५।

गाथा २।५६।
 गुरु १।१५।
 गुल्फ २।८६।
 गुवाक २।१६।
 गूथ २।५६।
 गृधु १।१३।
 गृध्र ३।११।
 गो १।६२।
 गोधूम २।६८।
 गोपीठ २।५६।
 गोमायु १।१।
 गौर ३।१४।
 गौरी ३।१४।
 ग्रन्थि १।५१।
 ग्रहणि १।७४।
 ग्राम २।१०१।
 ग्रीवा २।६२।
 ग्रीष्म २।१०६।
 ग्लौ १।६३।
 घर्म २।१०६।
 घाति १।५६।
 घासि १।५७।
 घृणि १।८०।
 घृत २।५१।
 घोर ३।३५।
 चकोर ३।३४।
 चक्षुस् ३।६४।
 चण्ड २।३६।
 चतुर ३।१।
 चत्वर ३।१५।
 चण्डर ३।५।
 चन्द्र ३।७।

चन्द्रमस् ३।६८।
 चपल ३।४६।
 चमस ३।६५।
 चमू १।४३।
 चरम २।६६।
 चरु १।५।
 चषाल ३।५३।
 चाटु १।२।
 चाण्डाल ३।४६।
 चारु १।२।
 चित्र ३।४०।
 चीर ३।१२।
 चीवर ३।१६।
 चुक्र ३।१०।
 चुन्न ३।१४।
 चूर्णि १।८०।
 छत्वर ३।१६।
 छदिष् ३।८६।
 छन्दस् ३।१०६।
 छदिस् ३।८६।
 छवि १।८३।
 छाया २।१०६।
 छित्तर ३।१६।
 छिदिर ३।६।
 छिद्र ३।८।
 जगत् ३।७०।
 जघन २।७२।
 जङ्घा २।३०।
 जटा २।३३।
 जटायु १।२१।
 जठर ३।३१।
 जतु १।१०।

जत्रु १।४०।
 जनक २।२०।
 जनि १।५७।
 जनुस् ३।६१।
 जन्तु १।२४।
 जन्म २।१०३।
 जन्मन् ३।८१।
 जन्यु १।३४।
 जम्बू १।४७।
 जयत २।४८।
 जयन्त २।४५।
 जरन्त २।४३।
 जरायु १।३।
 -जरुथ २।५७।
 जर्जरीका २।१६।
 जर्त २।५२।
 जलूका २।२२।
 जहक २।६।
 जहन्तु १।३१।
 जागृवि १।८२।
 जानु १।२।
 जामातृ १।५०।
 जाया २।११०।
 जायु १।१।
 जिन १।६५।
 जिह्वा २।६२।
 जीर ३।६।
 जीर्ण २।७६।
 जीवथ २।५३।
 जीवन्ती २।४४।
 जीवातु १।२५।
 जीवि १।८३।

जुण्ड २।४०।	ताविष ३।६२।
जू ३।६८।	ताविषी ३।६२।
जूणि १।८०।	तिग्म २।१०५।
ज्योतिस् ३।६०।	तित्थ २।५६।
	तिन्तिडीका २।१६।
तक्र ३।७।	तिमिर ३।५।
तक्षन् ३।७६।	तिरिट २।३४।
तडाक २।१६।	तीक्षण २।७८।
तडित् ३।७६।	तीर्थ २।५८।
तण्डुल ३।५३।	तीवर ३।१६।
तनय २।१०७।	तुण्ड २।४०।
तनु १।५।	तुत्थ २।५८।
तनू १।४३।	तुन्द २।६१।
तन्तु १।२२।	तुहिन २।६६।
तन्द्री १।८८।	तूणि १।८०।
तपस् ३।१००।	तृण २।७६।
तरणी १।७४।	तृप्र ३।८।
तरी १।६०।	तृष्णा २।७५।
तरीष ३।५६।	तेजस् ३।१००।
तरु १।५।	त्रपु १।८।
तरुण २।८०।	त्रपुस् ३।६२।
तर्कु १।२१।	त्वष्टृ १।५०।
तर्ण २।७४।	त्सरु १।२१।
तर्दू १।४५।	
तर्ष ३।६३।	दक्षिणा २।६५।
तलुन २।८०।	दण्ड २।३६।
तल्प २।८२।	दन्त २।५०।
तसर ३।१६।	दभ्र ३।१०।
तात २।५२।	दरद् ३।७८।
ताम्बूल ३।४४।	दरि १।५१।
ताम्र ३।६।	दर्दरीक २।१६।
तारा १।६४।	ददुर ३।२।
तालु १।२।	द्रु १।४६।

दर्भ २।६५।	घन्वन् ३।७६।
दर्वि १।८१।	घमक २।५।
दर्गट २।४८।	घमनि १।७४।
दलय २।८७।	घरणि १।७४।
दल्मि १।६४।	घरिमन् ३।८३।
दस्यु १।३४।	घर्म २।१००।
दह् ३।८।	घाक २।३।
दाक २।३।	घातु १।२२।
दात्र ३।३६।	घात्री ३।३६।
दानु १।२८।	घाना २।७३।
दारु १।२।	घिषणा २।७१।
दारुण २।८०।	घिष्य २।११६।
दाश ३।५६।	धीन २।७५।
दिविषू १।४७।	धीर ३।११।
दिवि १।८३।	धीवर ३।१६।
दीदिवि १।८३।	धूक २।२।
दुष्टु १।२१।	धूम २।१०३।
दुहितृ १।५०।	धूर्त २।५०।
दूत २।५१।	धूसर ३।१६।
दूर ३।१०।	धृषु १।१३।
दृति १।८४।	धेनु १।३१।
दृन्भू १।४७।	ध्वनि १।५१।
दृषद् ३।७८।	नक्षत्र ३।३८।
देवट २।३२।	नदनु १।३२।
देवयु १।२१।	ननान्दृ १।५०।
देवर ३।२०।	नन्दन्ती २।४४।
देवृ १।४८।	नप्तृ १।५०।
द्रविण २।६५।	नमत २।४८।
द्रू ३।६८।	नमाक २।१६।
द्रोण २।७४।	नरक २।२०।
घनु १।२१।	नशाक २।१६।
घनुस् ३।६२।	नाकु १।१०।

नाभि १।५६।
 नामन् ३।८२।
 निधान २।७०।
 निपथि ३।६०।
 निभृथ २।५६।
 निम्ब २।६२।
 निऋथ २।५६।
 निशीथ २।५६।
 नीर ३।८।
 नीवर ३।१६।
 नीवि १।५६।
 नृ १।४६।
 नृतु १।४७।
 नेत्र ३।३६।
 नेम २।१००।
 नेमि १।६४।
 नेष्टृ १।५०।
 नौ १।६३।
 न्यङ्क् १।१२।
 पञ्चत २।४८।
 पटायु १।२१।
 पटीर ३।२६।
 पटु १।८।
 पतंग २।२७।
 पतत्रीका २।१६।
 पताका २।१५।
 पति १।८५।
 पत्तन २।६४।
 पत्र ३।३६।
 पथिन् ३।८४।
 पद्म २।१००।
 पनस ३।६५।

पपी १।६०।
 पयस् ३।१००।
 पयोधस् ३।६७।
 परमेष्ठिन् ३।८८।
 परशु १।३८।
 परिक्राज् ३।७१।
 परीर ३।२६।
 परुस् ३।६२।
 पर्जन्य २।११७।
 पर्ण २।७३।
 पर्प २।८२।
 पर्परीका २।१६।
 पर्वत २।४८।
 पशु १।३८।
 पलित २।५२।
 पल्वल ३।५३।
 पवित्र ३।४२।
 पशु १।१८।
 पशुपति १।८५।
 पांसु १।६।
 पाक २।१।
 पाणि १।५७।
 पाताल ३।४६।
 पात्र ३।३६।
 पाद् १।४७।
 पाप २।८२।
 पायु १।१।
 पाष्णि १।८०।
 पिचूक २।२२।
 पिञ्जूल ३।४३।
 पिठर ३।३३।
 पितृ १।५०।

पिनाक २।१६।
 पियाल ३।५०।
 पीतु १।२५।
 पीठ २।५८।
 पीयूष ३।५७।
 पीवर ३।१६।
 पुण्य २।११८।
 पुत्र ३।४१।
 पुनर्भू १।४७।
 पुरीष ३।६०।
 पुरु १।१३।
 पुरुष ३।५८।
 पुरोधस् ३।६७।
 पुष्कर ३।२५।
 पूर्ण २।७५।
 पूरण २।७०।
 पूषन् ३।८०।
 पृथु १।१३।
 पृथुक २।२।
 पृषत् ३।७७।
 पृषत २।४६।
 पृष्ठ २।५६।
 पृष्वि १।८३।
 पेरु १।३६।
 पोत २।५०।
 पोतृ १।५०।
 पोत्र ३।४२।
 पोषयित्तु १।२६।
 प्रतिदीवन् ३।७६।
 प्रथम २।६६।
 प्रशास्तृ १।५०।
 प्रहि १।६०।

प्राछ् ३।६६।
 प्राणथ २।५३।
 प्रू ३।६८।
 प्रोथ २।५६।
 प्लीहन् ३।८०।
 फल्गु १।११।
 वदर ३।३२।
 वदरी ३।३२।
 वधिर ३।५।
 वन्धु १।८।
 वन्ध्या २।११०।
 वलि १।५१।
 बहु १।२०।
 वाष्प २।८५।
 वाहु १।६।
 विम्ब २।६२।
 बुध्न २।७५।
 ब्रध्न २।७३।
 भद्र ३।१४।
 भन्दाक २।१६।
 भयानक २।११।
 भरक २।२०।
 भरत २।४८।
 भरथ २।५३।
 भरिस्मन् ३।८३।
 भरु १।५।
 भवन्त २।४५।
 भवन्ति १।७१।
 भस्मन् ३।८१।
 भानु १।२५।
 भानु १।२८।

भास २।१००।
 भालूक २।२२।
 भाविन् ३।८७।
 भासन्त २।४५।
 भित्तिका २।१३।
 भिदिर ३।६।
 भिदु १।१३।
 भीक २।२।
 भीम २।१०४।
 भीष्म २।१०४।
 भुजिष्य २।१११।
 भुज्यु १।३४।
 भुविस् ३।६०।
 भूक २।४।
 भूनि १।८०।
 भूमि १।६५।
 भूरि १।७०।
 भूर्णि १।८०।
 भृगु १।१८।
 भृङ्ग २।२६।
 भृङ्गार ३।२२।
 भृमि १।६०।
 भृश ३।५५।
 भेक २।१।
 भेर ३।१४।
 भेरी ३।१४।
 भ्रमर ३।२०।
 भ्रातृ १।५०।
 भ्रू १।४२।
 मकुर ३।२।
 मघवन् ३।८०।
 मङ्गल ३।५२।

मज्जन् ३।८०।
 मञ्जूषा ३।५७।
 मणीका २।१६।
 मण्डन २।७०।
 मण्डप २।८७।
 मण्डयन्त २।४५।
 मण्डूक २।२१।
 मत्सर ३।१८।
 मत्स्य २।११२।
 मथिन् ३।८४।
 मथुरा ३।१।
 मदयित्नु १।२६।
 मदार ३।२१।
 मदिरा ३।५।
 मद्गु १।५।
 मद्र ३।७।
 मधु १।१०।
 मधूक २।२२।
 मनस ३।६५।
 मनाक २।१६।
 मनु १।८।
 मन्तु १।२४।
 मन्द २।६१।
 मन्दार ३।२१।
 मन्दिर ३।५।
 मन्दुरा ३।१।
 मन्द्र ३।७।
 मन्यु १।३४।
 मयु १।२१।
 मरीचि १।६८।
 मरु १।५।
 मरुत् ३।७४।

मरुक २।२२।
 मर्क २।१।
 मर्कट २।३२।
 मर्जू १।४७।
 मर्त २।५०।
 मलूक २।२२।
 मसूर ३।३०।
 मस्तु १।२२।
 महत् ३।७७।
 महिन २।६६।
 मांस ३।६३।
 मातरिख्वन् ३।८०।
 मातृ १।५०।
 माया २।१०६।
 मायु १।१।
 मार्जार ३।२२।
 माला ३।५३।
 मितद्रु १।२१।
 मित्र ३।४०।
 मित्रयु १।२१।
 मीर ३।१२।
 मीवर ३।१६।
 मुचीर ३।६।
 मुण्ड २।४०।
 मुद्ग २।२६।
 मुद्रा ३।८।
 मुनि १।५४।
 मुष्क २।४।
 मुहिर ३।६।
 मूत्र ३।३७।
 मूर्ख २।२४।
 मूर्धन् ३।८०।

मूषिक २।८।
 मृगयु १।२१।
 मृडीक २।१६।
 मृत्यु १।३६।
 मृदु १।१३।
 मृद्वीका २।१६।
 मेरु १।३६।
 यक्ष्म २।१००।
 यजुस् ३।६२।
 यमत २।४८।
 यमुना २।८०।
 ययी १।६०।
 यवस ३।६५।
 यवागू १।४१।
 यशस् ३।१०३।
 यातु १।२५।
 याम २।१००।
 युग्म २।१०५।
 युध्म २।१०३।
 युवन् ३।७६।
 यूका २।२।
 यूथ २।५६।
 यूष २।८४।
 योनि १।७६।
 योषित् ३।७६।
 रजत २।४६।
 रजन २।६६।
 रजनी २।६६।
 रजस् ३।१०१।
 रज्जु १।१६।
 रण्डा २।३६।
 रतू १।४७।

रत्न २।७५।
 रथ २।५४।
 रन्ध्र ३।१०।
 रभस ३।६५।
 रवण २।६७।
 रवथ २।५३।
 रवि १।५१।
 रश्मि १।६५।
 रसना २।६७।
 राका २।३।
 राजन् ३।७६।
 राजि १।५६।
 रात्रि १।६६।
 राशि १।५७।
 रासभ २।६४।
 रास्ना २।७६।
 रिक्थ २।५८।
 रिपु १।१४।
 रम्म २।१०५।
 रुचि १।५२।
 रुचिर ३।६।
 रुचिष्य २।१११।
 रुद्र ३।७।
 रुधिर ३।५।
 रुह १।४०।
 रूप २।८५।
 रेणु १।२६।
 रेतस् ३।१०६।
 रेफ २।८८।
 रे १।६१।
 रोचना २।६७।
 रोमन् ३।८२।
 रोहन्त २।४४।

रोहन्ती २।४४।
 रोहित् ३।७६।
 रोहित २।४७।
 रोहिष ३।६२।
 लक्ष्मी १।८६।
 लङ्घक २।५।
 लट्वा २।६१।
 लत्तिका २।१३।
 लाङ्गल ३।४३।
 लिखक २।५।
 लोत २।५०।
 लोत्र ३।४२।
 लोमन् ३।८२।
 लोष्ट २।३३।
 लोहित् ३।७६।
 लोहित २।४७।
 लोहिष ३।६२।
 वंश ३।५५।
 वक्र ३।७।
 वक्षस् ३।१०५।
 वग्न १।३१।
 वज्र ३।१३।
 वटल ३।४६।
 वटर ३।२०, ३२।
 वणिज् ३।७३।
 वण्ड २।३६।
 वत्स ३।६३।
 वत्सर ३।१८।
 वदथ २।५३।
 वधू १।४३।
 वन्द्र ३।१०।
 वपुस् ३।६२।
 वप्र ३।१३।
 वयस् ३।१००।

वरक	२।२०।	वहन्त	२।४५।
वरणा	२।६७।	वहित्र	३।४२।
वरण्ड	२।३७।	वह्नि	१।७६।
वरत्रा	३।३६।	वाच्	३।६६।
वरुण	२।८०।	वात	२।५०।
वरुथ	२।५७।	वातप्रमी	१।६०।
वरेण्य	२।११४।	वापि	१।५६।
वर्ण	२।७४।	वायु	१।१।
वर्णु	१।२६।	वारि	१।५६।
वर्तनि	१।७४।	वाह्लीक	२।१६।
वर्त्मन्	३।८१।	वाशुरा	३।१।
वर्ध	३।१३।	वाश्र	३।१०।
वर्वर	३।१५।	वासर	३।२०।
वर्वरी	३।१५।	वासस्	३।१०२।
वर्वरीका	२।१६।	वासि	१।५६।
वर्वि	१।८१।	वास्तु	१।२३।
वर्ष	३।६३।	वि	१।५८।
वलाका	२।१५।	विकुल	३।१०।
वलीका	२।१६।	विटप	२।८७।
वलूक	२।२२।	विदाक	२।१६।
वल्क	२।४।	विधु	१।१३।
वल्गु	१।११।	विधुर	३।२।
वल्लभ	२।६४।	विपिन	२।६६।
वल्लि	१।५१।	विप्र	३।१४।
वल्लूर	३।४३।	विशप	२।८७।
वसति	१।८७।	विशिप	२।८७।
वसन्त	२।४५।	विश्व	२।६१।
वसु	१।८।	विष्टप	२।८७।
वस्ति	१।८४।	विष्ठा	२।५८।
वस्तु	१।२३।	विष्णु	१।३०।
वस्न	२।७३।	वीका	२।२।
वहति	१।८७।	वीणा	२।७६।
वहतु	१।२५।	वीर	३।८।

वृक	२।४।	शण्ठ	२।४१।
वृक्ष	३।६४।	शतद्रु	१।२१।
वृजन	२।७०।	शत्त्रि	१।६६।
वृजिन	२।६३।	शत्रु	१।४०।
वृत्र	३।८।	शपथ	२।५३।
वृध्र	३।१४।	शवल	३।४५।
वृन्द	२।६१।	शब्द	२।६०।
वृश	३।५५।	शमथ	२।५३।
वृश्चिक	२।८।	शमल	३।४७।
वृषत्	३।७७।	शम्ब	२।६२।
वृषन्	३।७६।	शयानक	२।११।
वृषभ	२।६४।	शयु	१।५।
वृषल	३।४६।	शरद्	३।७८।
वृष्णि	१।८०।	शरभ	२।६३।
वेणि	१।७८।	शरि	१।५१।
वेणु	१।३१।	शरीर	३।२७।
वेतना	२।६४।	शरु	१।२१।
वेतस	३।६५।	शर्करा	३।२४।
वेदथ	२।५३।	शर्व	२।६०।
वेधस्	३।६६।	शर्वर	३।१५।
वेमन्	३।८२।	शर्वरी	३।१५।
वेशन्त	२।४३।	शर्शरीक	२।१६।
व्यथिष	३।६२।	शलभ	२।६३।
व्योमन्	३।८२।	शलाका	२।१६।
शकट	२।३२।	शलक	२।१।
शकल	३।४७।	शष्प	२।८५।
शकुन	२।८१।	शस्त्र	३।३६।
शकुनि	१।७६।	शारि	१।५६।
शकुन्त	२।४२।	शालूक	२।२१।
शकुन्ति	१।७१।	शिवय	२।११६।
शक्र	३।७।	शिखा	२।२५।
शङ्कु	१।२१।	शिशु	१।४०।
शङ्ख	२।२३।	शिङ्घ्राणक	२।१२।
शण्ठ	२।३५।		

शिथिल ३।५३।
 शिरस् ३।१०१।
 शिरीष ३।६०।
 शिल्प २।८५।
 शिव २।६२।
 शिशिर ३।६।
 शिशु १।१४।
 शीघ्र १।३७।
 शीर ३।१०।
 शुक २।४।
 शुक्र ३।१४।
 शुक्ल ३।५३।
 शुचि १।५२।
 शुभ्र ३।८।
 शुल्ब २।६२।
 शूर्प २।८५।
 शृङ्ग २।२६।
 शृङ्गार ३।२२।
 शृङ्घ १।४७।
 शेपाल ३।५१।
 शेफस् ३।१०८।
 शैवल ३।५१।
 शोचिस् ३।६०।
 शौटीर ३।२७।
 श्मश्रु १।४०।
 श्यान्द २।६१।
 श्याम २।१०३।
 श्यामाक २।१६।
 श्येत २।४७।
 श्येन २।६२।
 श्रथिर ३।६।
 श्री ३।६८।
 श्रेणि १।७६।

श्रोणि १।७६।
 श्रोत्र ३।४२।
 श्लक्ष्ण २।७७।
 श्वन् ३।८०।
 श्वगुर ३।४।
 श्वित्र ३।८।
 सन्ध्या २।११०।
 संयद्वर ३।१६।
 संवत्सर ३।१८।
 सक्तु १।२२।
 सक्थि १।६१।
 सखि १।६०।
 समिध २।५६।
 सरक २।२०।
 सरणि १।७४।
 सरयु १।३३।
 सरित् ३।७६।
 सर्जू १।४७।
 सपिस् ३।८६।
 सर्व २।६२।
 सर्षप २।८६।
 सव्य २।१०६।
 सस्य २।१०६।
 साघन्त २।४५।
 साधु १।१।
 सानु १।२।
 सामन् ३।८२।
 सारथि १।६२।
 सास्ना २।७६।
 सिंह ३।६७।
 सिक्थ २।५८।
 सित २।५१।
 सिध्र ३।१०।

सिन्धु ११७।	स्यमीक २।२।
सीमिक २।१०।	सुच् ३।७२।
सीर ३।१२।	सु ३।६८।
सुमेरु १।३६।	स्रोतस् ३।१०६।
सुरा ३।११।	स्वप्न २।७४।
सुण्डु १।२१।	स्वसृ १।५०।
सूक्ष्म २।१०२।	स्वादु १।१।
सूत्र ३।३७।	हंस ३।६३।
सूनु १।३०।	हनु १।८।
सूप २।८४।	हनूष ३।५७।
सूर ३।११।	हरि १।५१।
सूरत २।३२।	हरिण २।६२।
सूरि १।७०।	हरित् ३।७६।
सृक् २।४।	हरित २।४७।
सृणि १।८०।	हरिद्रु १।२१।
सृणीका २।१६।	हरिमन् ३।८३।
सेतु १।२२।	हरेणु १।२७।
सेना २।७४।	हर्यत २।४८।
सोम २।१००।	हर्षयित्नु १।२६।
स्तनयित्नु १।२६।	हविस् ३।८६।
स्तम्ब २।६२।	हस्त २।५०।
स्तरी १।६०।	हस्र ३।१०।
स्तूप २।८३।	हिम २।१०३।
स्तोम २।१००।	हिरण्य २।११६।
स्त्येन २।६२।	हृदय २।१०८।
स्थवि १।८३।	हेतु १।२४।
स्थविर ३।६।	हेमन्त २।४५।
स्थाणु १।३१।	होतृ १।५०।
स्थिर ३।६।	होम २।१००।
स्थूणा २।७६।	ह्रीक २।२।
स्तुषा ३।६४।	ह्रीकु १।३५।
स्पृहयाय्य २।११३।	ह्रीक २।२।
स्फिर ३।६।	ह्रीकु १।३५।

इति उणादिसाधितशब्दानाम् अकारादिक्रमेण संकलनं समाप्तम् ॥

चान्द्रव्याकरणस्थितधातुपाठागतधातूनाम् अकारादिक्रमेण संकलनम् ।

धातुः गणः संख्याङ्कः

अंह	११४६४।
अक	११५३४।
अक्ष	११२१०।
अग	११५३४।
अङ्क	११३४०।
अङ्ग	११३८।
अङ्घ	११३४७।
अज	११८१।
अञ्च	११४९,५९०।
अञ्ज	७।१७।
अट	१११०४।
अट्ट	११३६५।
	१०।१४।
अड	१११३१।
अड्ड	१११२५।
अण	१११४७।
अण्ठ	११३७१।
अत	११३।
अद	२।१।
अन	२।३०।
अन्त	१।२०।
अन्द	१।२०।
अभ्र	१११९०।
अम	१११५५,५५२।
अम्ब	११४०२।
अय	११४२४।
अर्च	११५२।
अर्ज	११६५।

धातुः गणः संख्याङ्कः

अर्थ	१०।१००।
अर्द	१।१८।
अर्व	१११४३।
अर्व	१।२०१।
अर्ह	१।२५८।
अव	१।२०८।
अश	५।२४।
	९।४०।
अश्व	१०।१०५।
अस्	१।६०८।
	२।२५।
	४।४९।
आञ्छ	१।५६।
आप	५।१४।
आस	२।४१।
आह्वर	१०।१०५।
इ	१।१०४।
	२।११,१२,५२।
इह्व	१।३८।
इङ्ग	१।३८।
इट	१।१०४।
इन्द	१।२१।
इन्ध	७।२१।
इन्व	१।२०२।
इल	६।६४।
इष	४।१५।
	६।५८।
	९।४२।

ई	४१६३।	ऊह	११४७०।
ईक्ष	११४४८।	ऊहृ	११२८४।
ईक्ष्व	११३८।		३७।
ईज	११३६२।	ऊक्ष	५१२२।
ईड्	२।३६।	ऊच	६।२५।
ईर	२।३८।	ऊछ	६।२१।
ईक्ष्य	१११५६।	ऊज	११३६२।
ईर्ष्य	१११५६।	ऊञ्ज	११३६३।
ईश	२।४०।	ऊण	८।४।
ईष	११२२६, ४४६।	ऊध	४।८०।
ईह	११४६२।		५।२१।
उ	११४७७।	ऊफ	६।२६, ३०।
उक्ष	११२१२।	ऊम्फ	६।३०।
उख	१।३८।	ऊष्	६।१६।
उच	४।६२।	ऊ	६।२३।
उछ	१।६३।	एज	१।७३, ३६४।
	६।२०।	एठ	१।१०३, ३७५।
उञ्ज	६।२७।	एध	१।३०६।
उञ्छ	१।६२।	एष	१।४५४।
	६।१६।	ओख	१।३६।
उन्द	७।१६।	ओण	१।१४८।
उव्ज	६।२६।	ओलण्ड	१०।६।
उभ	६।३४।	कंस	२।४४।
उम्भ	६।३४।	कक	१।३४३।
उर्द	१।३२१।	कक्ख	१।३५।
उर्व	१।१६५।	कख	१।५३०।
उष	१।२३२।	कङ्क	१।३४६।
ऊन	१०।७०।	कच	१।३५६।
ऊय	१।४२६।	कञ्च	१।३५७।
ऊर्ज	१०।११।	कट	१।८५, १०४।
ऊर्णु	२।६०।	कठ	१।११६।
ऊष	१।२२८।	कड	१।१३३।

कडु	११३४।	६।६५।	
कण	११४७,५३५।	कुक	११३४४।
कण्ठ	११३७३।	कुच	११४५,५८३।
	१०।७४।		६।७२।
कण्ड	११३८६।	कुज	११५०।
	१०।३२।	कुञ्च	११४७।
कथ	११३३२।	कुट	६।७०।
कथ	१०।७८।	कुट्ट	१०।१२।
कन	१११५२।	कुड	६।८४।
कन्द	११२७,५२०।	कुण	६।४६।
कव	११४०४।	कुण्ट	१११०६।
कम	११४२३,५५२।	कुण्ठ	१११२१।
कम्प	११४०१।	कुण्ड	११३७८।
कर्द	१११६।	कुथ	४।८।
कर्व	११२००।	कुन्थ	१।६।
कल	१११५३,४३६।		६।३२।
	१०।८५।	कुन्द्र	१०।६।
कल्ल	११४३७।	कुप	४।७१।
कष	११२३०,६१२।	कुम्ब	१११४४।
कस	११५८७।	कुर	६।५०।
काङ्क्ष	११२२०।	कुर्द	११३२२।
काश	११४५६।	कुल	११५७१।
	४।१०५।	कुष	६।३६।
कास	११४५७।	कुस	४।५७।
कि	३।६।	कुह	१०।६८।
किट	१११०४।	कूज	१।७६।
कित	११३०५।	कूट	१०।२२।
	३।६।	कूल	१११६८।
किल	६।६०।	कृ	५।७।
कील	१११६७।		८।७।
कु	११४७७।	कृड	६।८३।
	२।१०।	कृण्व	११२०६।

कृत	६।१३।
	७।१०।
कृप	१।५१२।
कृश	४।६५।
कृष	१।३०२।
	६।६।
कृ	६।१०५।
	६।११।
कृत	१०।६२।
केप	१।३६८।
केव	१।३६६।
केल	१।१७८।
केव	१।४३६।
कै	१।२६६।
कनस	१।५४६।
	४।५।
कनूय	१।४२८।
	६।७।
कमर	१।१८६।
कथ	१।५३६।
कन्द	१।२७,५२०।
कप	१।५१६।
कम	१।१५७।
क्री	६।१।
क्रीड	१।१२६।
कृञ्च	१।४६।
कृध	४।३०।
कृश	१।५८२।
कृथ	१।५३६।
कृन्द	१।२७,५२०।
कृम	४।४७।
किलद	४।७७।

किलन्द	१।२८,३१७।
किलश	४।१०४।
	६।३६।
कलीव	१।४०५।
कलेश	१।४४५।
कवण	१।१४७।
कवथ	१।५७३।
कञ्ज	१।५१८।
	१०।५७।
क्षण	८।३।
क्षम	१।४२२।
	४।४६।
क्षम्प	१०।५६।
क्षर	१।५७७।
क्षल	१०।४३।
क्षि	१।७५।
	५।१२।
	६।१०३।
	६।२७।
क्षिप	४।११।
	६।५।
शिव	१।१६१।
	४।४।
क्षीज	१।७६।
क्षीव	१।४०६।
क्षु	२।१०।
क्षुद	७।६।
क्षुध	४।३१।
क्षुभ	१।५०३।
	४।७५।
	६।३७।
क्षुर	६।५३।

क्षै ११२६६।	ख्या २।२१।
क्षणु २।८।	गज १।७०,८०।
क्ष्माय १।४२६।	गञ्ज १।८०।
क्ष्मील १।१६३।	गड १।५२४।
क्षिवद १।२६१,४६८।	गण १०।८०।
४।७६।	गण्ड १।१३५।
खज १।७१।	गद १।१३।
खञ्ज १।७२।	१०।८३।
खट १।६५।	गम १।२६५।
खट्ट १०।१६।	गर्ज १।६६।
खड १०।३१।	गर्द १।१५।
खण्ड १।३६०।	गर्व १।१४३।
१०।३१।	गर्व १।२००।
खद १।११।	१०।१०१।
खन १।६०२।	गर्ह १।४६५।
खर्ज १।६८।	गल १।१८२।
खर्द १।१६।	गल्भ १।४१४।
खर्व १।१४३।	गल्ह १।४६५।
खर्व १।२००।	गवेष १०।६०।
खल १।१८१।	गा १।४७६।
खव ६।४७।	३।१४।
खाद १।१०।	गाघ १।३०८।
खिट १।६०।	गालोड १०।१०५।
खिद ४।१०८।	गाह ७।४७१।
६।१४।	गु १।४७५।
७।२२।	गुज ६।७३।
खुज १।५०।	गुञ्ज १।७६।
खुर ६।५१।	गुड ६।७४।
खुर्द १।३२२।	गुण्ठ १।१२१।
खोल १।१७८।	गुघ ४।१०।
खै १।२६८।	६।६२।
खोर १।१८६।	६।३५।

गुप १।१३६, ४८८।
 ४।७२।
 गुफ ६।३३।
 गुम्फ ६।३३।
 गुर ६।६४।
 गुर्द १।३२२।
 गुर्व १।१६७।
 गुह १।६१७।
 गूर ४।१००।
 गृ १।२८५।
 गृज १।८०।
 गृञ्ज १।८०।
 गृध ४।८१।
 गृह १।४७२।
 १०।६६।
 गृ ६।१०६।
 ६।२१।
 गेप १।३६८।
 गेव १।४३६।
 गै १।२६६।
 गोष्ट १।३६८।
 ग्रय १।३३१।
 ग्रन्थ ६।३०।
 ग्रस १।४६१।
 ग्रह ६।१४।
 ग्रुच १।५०।
 ग्लस १।४६१।
 ग्ला १।५५१।
 ग्लुच १।५०।
 ग्लुञ्च १।५१।
 ग्लेष १।३६६, ३६८।
 ग्लेव १।४३६।

ग्लेष १।४५२।
 ग्लै १।२६०।
 घग्घ १।४२।
 घट १।५१३।
 घट्ट १।३६६।
 १०।१५।
 घस १।२४४।
 घिण्ण १।४१७।
 घु १।४७७।
 घुट १।५००।
 ६।८६।
 घुण १।४१८।
 ६।४८।
 घुण्ण १।४१७।
 घुर ६।५४।
 घुष १।२०६, ४७३।
 १०।६६।
 घूर ४।१००।
 घूर्ण १।४१८।
 ६।४८।
 घृ १।२८५।
 ३।६।
 घृण ८।६।
 घृण्ण १।४१७।
 घृष १।२३८।
 घ्रा १।२७५।
 डु १।४७७।
 चक १।३४५, ५२८।
 चकास २।३४।
 चक्क १०।४२।
 चक्ष २।३७।
 चञ्च १।४६।

चण्ड	१।३८५।	चुन्द	१।६००।
चत	१।५६३।	चुप	१।१४१।
चद	१।५६३।	चुम्ब	१।१४५।
चन्द	१।२५।	चुर	१०।१।
चप	१।१३६।	चुल	१०।४६।
चम	१।१५६, ५५२।	चुल्ल	१।१७७।
चय	१।४२४।	चूर	४।१०१।
चर	१।१६०।	चूप	१।२२२।
चर्च	१।२४१।	चृत	६।३७।
	६।२३।	चेल	१।१७८।
	१०।६७।	चेष्ट	१।३६७।
चर्व	१।१४३।	च्यु	१।४७८।
चर्व	१।१६६।	च्युत	१।४।
चल	१।५४४, ५६२।	छद	१।५४५।
	६।६३।		१०।७२।
चप	१।६११।	छन्द	१०।२८।
चह	१।२५२।	छम	१।१५६।
चाय	१।६०४।	छम्ब	१०।५५।
चि	५।५।	छिद	७।३।
चित्	१।१००।	छुप	६।११४।
चित	१।२।	छुर	६।५१।
चिन्त	१०।२।	छृद	७।८।
चिरि	५।२२।	छो	४।१६।
चिल	६।६२।	छ्यु	१।४७८।
चिल्ल	१।१७६।	जक्ष	२।३१।
चीभ	१।४०८।	जज	१।७८।
चीव	१।६०३।	जझ	१।७८।
चुक्क	१०।४२।	जट	१।६२।
चुट	६।७६।	जन	१।५४६।
	१०।५२।		३।१३।
चुडु	१।१२४।		४।६५।
चुण्ट	१।१०८।	जप	१।१३८।
चुद	१०।३६।		

जम	११५६।	ज्यु	११४७८।
जम्भ	११४११।	ज्जि	११२८६।
जत्सं	११२४१।	ज्वर	११५२३।
	६१२३।	ज्वल	११५३७, ५३८, ५५०, ५६१।
जल	११५६३।	झट	११६२।
जल्प	१११३८।	झम	१११५६।
जष	११२३०।	झर्झ	११२४१।
जस	४१५१।		६१२३।
जागृ	२।३२।	झष	११२३०, ६१३।
जि	१११६२, २८६।	झृ	४११७।
जिरि	५।२२।	झ्यु	११४७८।
जिष	११२३३।	टल	११५६४।
जीव	१११६३।	टिक	११३४६।
जङ्ग	११३६।	टीक	११३४६।
जुड	६।८१।	ट्वल	११५६४।
	१०।५६।	डिप	४।६६।
जुत	११३२८।		६।७५।
जुन	६।३६।	डी	११४८७।
जुष	६।६८।		४।८५।
जूर	४।६६।	ढीक	११३४६।
जूष	११२३०।	तक	११३१।
जूम्भ	११४११।	तक्ष	११२११।
जू	११५४६।	तङ्क	११३२।
	४।१७।	तङ्ग	११३८।
	६।१६।	तञ्च	११४६।
जेष	११४५४।		७।१८।
जेह	११४६८।	तूट	११६४।
जै	११२६६।	तड	१०।३०।
ज्ञा	११५४३।	तण्ड	११३८७।
	६।२८।	तन	८।१।
	१०।४०।	तन्त्र	१०।६५।
ज्या	६।२२।		

तप	१।२६७। ४।१०२।	तुर्व	१।१६५।
तम	४।४३।	तुल	१०।४५।
तय	१।४२४।	तुष	१।२४०। ४।२६।
तर्ज	१।६७।	तुह	१।२५७।
तर्द	१।१७।	तूर	४।६८।
तल	१०।४४।	तूल	१।१७०।
तस	४।५२।	तूष	१।२२३।
ताय	१।४३१।	तृक्ष	१।२१५।
तिक	५।१८।	तृण	८।५।
तिज	१।४८६। १०।२१।	तृद	७।६।
तिप	१।३६५।	तृप	४।३६। ५।२३।
तिम	४।१३।		६।३१।
तिल	६।६१।	तृम्प	६।३१।
तीव	१।१६४।	तृष	४।६६।
तुज	१।७६।	तृह	६।५७। ७।१५।
तुञ्ज	१।७६। १०।२०।	तृंह	६।५७।
तुट	६।८०।	तृ	१।२६०।
तुड	१।१२७। ६।८७।	तेज	१।६६।
तुण	६।४३।	तेप	१।३६५।
तुण्ड	१।३८२।	तेव	१।४३८।
तुद	६।१।	त्यज	१।२६८।
तुप	१।१४२।	त्रङ्क	१।३४६।
तुफ	१।१४२।	त्रङ्ग	१।३८।
तुभ	१।५०४। ४।७६। ६।३८।	त्रन्द	१।२६।
तुम्प	१।१४२।	त्रप	१।४००।
तुम्फ	१।१४२।	त्रस	४।७।
तुर	३।१०।	त्रुट	६।७६।
		त्रुप	१।१४२।
		त्रुफ	१।१४२।

श्रुम्प	११४२।	दिव	४।१।
श्रुम्फ	११४२।	दिश	६।३।
श्रै	१।४८४।	दिह	२।५८।
श्रोक	१।३४६।	दी	४।८४।
श्रुक्ष	१।२११,२१८।	दीक्ष	१।४४७।
श्रुङ्ग	१।३८।	दीधी	२।५३।
श्रुच	६।२४।	दीप	४।६६।
श्रुञ्च	१।४६।	दु	१।२८७।
श्रुवर	१।५२१।		५।१०।
श्रुविष	१।६२६।	दुर्व	१।१६५।
श्रुत्सर	१।१८८।	दुल	१०।४६।
श्रुड	६।८७।	दुष	४।२७।
श्रुर्व	१।१६५।	दुह	१।२५७।
श्रुश	१।३०१।		२।५७।
श्रुक्ष	१।४४६,५१८।	दू	४।८३।
श्रुञ्च	१।४०।	दू	१।५४०।
श्रुद	१।३१६।		६।१०७।
श्रुघ	१।३१०।	दूह	१।२५५।
श्रुदम	४।४२।	दूप	४।३७।
श्रुदम्भ	५।२०।		६।३२।
श्रुदय	१।४२५।	दूभ	६।३६।
श्रुदरिद्रा	२।३३।	दूम्प	६।३२।
श्रुदल	१।१८४।	दूश	१।३००।
श्रुदस	४।५२।	दूह	१।२५५।
श्रुदह	१।३०३।	द	६।१८।
श्रुदा	१।२७६।	दे	१।४८१।
	२।२०।	देव	१।४३८।
	३।१८।	दै	१।२७३।
श्रुदान	१।६२३।	दो	४।२१।
श्रुदाश	१।६०६।	द्यु	२।५।
श्रुदास	१।६१५।	द्युत	१।४६६।
श्रुदिन्व	१।२०४।	द्यै	१।२६२।

द्रम ११५५।	६।१०८।
द्रा २।१७।	धृञ्ज १।६४।
द्राख १।३६।	धृष ५।१६।
द्राघ १।३५०।	१०।७७।
द्राङ्क्ष १।२२१।	धे १।२५६।
द्राड १।३६३।	धोर १।१८७।
द्राह १।४६६।	ध्मा १।२७६।
द्रु १।२८७।	ध्यै १।२६५।
द्रुण ६।४७।	ध्रञ्ज १।६४।
द्रुह ४।३८।	ध्रण १।१४७।
द्रेक १।३३६।	ध्रस ६।४१।
द्रै १।२६३।	ध्राख १।३६।
द्विष २।५६।	ध्राङ्क्ष १।२२१।
द्वृ १।२८२।	ध्राड १।३६३।
धक्क १०।४१।	ध्रुव ६।६३।
धन ३।१२।	ध्रेक १।३३६।
धन्व १।२०५।	ध्रै १।२६४।
धा ३।१६।	ध्वंस १।५०६।
धाव १।५८६।	ध्वञ्ज १।६४।
धि ६।१०२।	ध्वन १।१४७, ५५६।
धिक्ष १।४४१।	१०।६४।
धिन्व १।२०४।	ध्वाङ्क्ष १।२२१।
धिष ३।११।	ध्वृ १।२८६।
धी ४।८६।	नक्क १०।४१।
धुक्ष १।४४१।	नक्ष १।२१५।
धुर्व १।१६५।	नख १।३८।
धू ५।६।	नट १।६६, ५२७।
६।६१।	१०।२३।
६।१३।	नद १।१५।
धूप १।१३७।	नन्द १।२४।
धूर ४।१००।	नभ १।५०४।
धृ १।४७६, ६२१।	४।७६।
	६।३८।

नम	११२६४, ५५०।	पच	११६२५।
नय	११४२४।	पञ्च	११३६०।
नर्द	१११५।		१०१६०।
नल	११५६७।	पट	१११०४।
नश	४१३५।	पठ	११११३।
नस	११४५८।	पण	११४२०।
नह	४११२०।	पण्ड	११३८८।
नाथ	११३२६।	पत	११५७२।
नाघ	११३२६।	पथ	११५७२।
नास	११४५७।	पद	४११०७।
निस	२१४५।	पन	११४१६।
निक्ष	११२१४।	पन्थ	१०१२६।
निज	३११५।	पर्द	११३२६।
निञ्ज	२१४६।	पर्व	१११४३।
निद	११५६६।	पर्व	१११६८।
निन्द	११२३।	पल	१११८३, ५६८।
निन्व	११२०३।	पस	४१६०।
निल	६१६६।	पा	११२७४।
निवास	१०१६२।		२११८।
निष	११२४६।	पाल	१०१५०।
नी	११६२२।	पि	६११०१।
नील	१११६५।	पिच्छ	१०१२७।
नीव	१११६४।	पिञ्ज	१०१२०।
नु	२।७।	पिट	११६२।
नुद	६।२।	पिठ	११११६।
नू	६।६०।	पिण्ड	११३७७।
नृत्	४।६।	पिन्व	११२०३।
न	११५४१।	पिश	६।१५।
	६।२०।	पिष	७।१२।
नेद	११५६६।	पिस	११२४३।
नेष	११४५४।	पी	४।६२।
पंस	१०१५४।	पीड	१०११०।

पील	१११६४।	६।१६।
पीव	१११६४।	पेण १११५१।
पुट	६।७१।	पेव ११३६६।
पुट्ट	१०।१३।	पेल १११७६।
पुण	६।४४।	पेव ११४३६।
पुथ	४।६।	पेस ११२४३।
पुन्य	१।६।	पै ११२७१।
पुर	६।५५।	प्याय ११४३०।
पुल	१।५७०।	प्युष ४।५४।
	१०।४८।	प्यै ११४८३।
पुष	११२३४।	प्रच्छ ६।१०६।
	४।२४।	प्रथ १।५१५।
	६।४४।	प्रा २।२२।
पुष्प	४।१२।	प्री ४।६४।
पू	११४८५।	६।२।
	६।८।	प्रु ११४७८।
पूज	१०।५८।	प्रुष् ११२३५।
पूय	११४२७।	६।४५।
पूर	४।६७।	प्रोथ १।५६४।
पूर्व	१११६८।	प्लीह ११४६७।
पूल	१११७१।	प्लु ११४७८।
पूष	११२२४।	प्लुष ११२३५।
पृ	५।१३।	४।५५।
	६।६६।	६।४५।
पृच	२।४६।	प्सा २।१।
	७।२०।	फक्क १।३०।
पृड	६।४०।	फण १।५५६।
	६।३४।	फल १११६२, १७३।
पृण	६।४१।	फुल्ल १।१७५।
पृथ	१।५१५।	फेल १।१७६।
पृष	११२३६।	बंह ११४६३।
पृ	३।४।	वद १।१२।

वध -- भ्लाश]

वध ११४६१।
 वन्ध ६१२६।
 वर्ध १११४३।
 वर्ह ११४६६।
 वल ११५६६।
 वल्ह ११४६६।
 वाड ११३६२।
 वाध ११३०६।
 वाह ११४६८।
 विट १११०२।
 विन्द ११२२।
 विल ६१६५।
 विस ४१५६।
 वुक्क ११३४।
 वुध ११५८४, ५६६।
 ४१११०।
 वुस ४१५८।
 वुस्त १०१३५।
 वू २१६२।
 भक्ष ११६१४।
 भज ११६२६।
 भङ्ग ७११३।
 भट ११६३, ५२६।
 भण १११४७।
 भण्ड ११३८०।
 १०१३४।
 भन्द ११३१४।
 भर्ध ११२०१।
 भळ ११४३५।
 भल्ल ११४३५।
 भव ११२३१।
 भस ३१८।

भा २११४।
 भाज १०१६३।
 भाम ११४२१।
 भाष ११४५०।
 भास ११४५६।
 भिक्ष ११४४४।
 भिद ७१२।
 भी ३१२।
 ६१२६।
 भुज ६१११३।
 ७११४।
 भुण्ड ११३८३।
 भू १११।
 भूष ११२२७।
 भृ ११६२०।
 ३११६।
 भृज ११३६३।
 भृवा ४१६३।
 भृ ६११७।
 भृष ११६०७।
 भ्यस ११४५६।
 भ्रंश ११५०५।
 ४१६३।
 भ्रज्ज ६१४।
 भ्रण १११४७।
 भ्रम ११५७६।
 ४१४५।
 भ्राज ११३६४, ५५८।
 भ्राश ११५५८।
 भ्रुड ६१८७।
 भ्रेज ११३६४।
 भ्लाश ११५५८।

मंह	११४६३।	मह	११२५८।
मख	११३८।		१०।८६।
मङ्क	११३४२।	मा	२।२३।
मङ्ग	११३८।		३।२०।
मङ्घ	११३४८।	माङ्क्ष	११२२०।
मच	११३५६।	मान	११४६०।
मज्ज	६।१११।		१०।६८।
मञ्च	११४६, ३५८।	मार्ग	१०।७३।
मठ	११११५।	माह	११६१६।
मण	१११४७।	मि	५।४।
मण्ठ	११३७३।	मिछ	६।२२।
मण्ड	१११०५, ३७६।	मिद	११४६८, ५६७।
मथ	११५७४।		४।७८।
मद	११५४७।		१०।८।
	४।४८।	मिन्व	११२०३।
मन	४।११३।	मिल	६।७।
	८।६।	मिश	११२४७।
मन्त्र	१०।६४।	मिश्र	१०।१०२।
मन्थ	१।७।	मिष	११२३३।
	६।३१।		६।५६।
मन्द	११३१५।	मिह	११३०४।
मन्त्र	१११६०।	मी	४।८७।
मय	११४२४।		६।४।
मर्व	१११६८।	मीम	१११५५।
मल	११४३४।	मील	१११६३।
मल्ल	११४३४।	मीव	१११६४।
मव	११२०७।	मुच	६।८।
मव्य	१११५८।	मुज	१।८०।
मश	११२४७।	मुञ्च	११३५६।
मष	११२३०।	मुञ्ज	१।८०।
मस	४।६०।	मुट	६।७८।
मस्क	११३४६।		१०।५३।

मुण	६।४५।
मुण्ट	१।१०७।
मुण्ठ	१।३७४।
मुण्ड	१।१०६, ३८१।
मुद	१।३१८।
मुर	६।५२।
मुर्छ	१।५६।
मुर्व	१।१६६।
मुष	४।५६।
	६।४६।
मुह	४।३६।
मू	१।४८६।
मूल	१।१७२।
मूष	१।२२५।
मृ	६।६७।
मृग	१०।६७।
मृज	२।२६।
	१०।७५।
मृड	६।४०।
	६।३४।
मृण	६।४२।
मृद	१।५१६।
	६।३३।
मृध	१।५६८।
मृश	६।११६।
मृष	१।२३७।
	४।११८।
	१०।७६।
मृ	६।१५।
मे	१।४८०।
मेट	१।८४।
मेद	१।५६७।

मेघ	१।५६५।
मेव	१।३६६।
मेव	१।४३६।
म्ना	१।२७८।
म्रक्ष	१।२१७।
म्रद	१।५१६।
म्रुच	१।४६।
म्रुञ्च	१।४६।
म्लुच	१।४६।
म्लुञ्च	१।४६।
म्लेछ	१।५३।
म्लेट	१।८४।
म्लेव	१।४३६।
म्लै	१।२६१।
यज	१।६३०।
यत	१।३२७।
यन्त्र	१०।३।
यभ	१।२६३।
यम	१।२६६, ५५४।
यस	४।५०।
या	२।१३।
याच	१।५६१।
यु	२।६।
	६।५।
युङ्ग	१।३६।
युछ	१।६१।
युज	४।११४।
	७।७।
युत	१।३२८।
युध	१।५८५।
	४।१११।
यूप	४।७३।

यूष	११२३०।	राघ	४।२२।
येष	१।४५३।		५।१७।
यौट	१।८३।	रास	१।४५७।
रंह	१।२५४।	रि	६।१०१।
रक्ष	१।२१३।	रिङ्ग	१।३८।
रख	१।३८।	रिच	७।४।
रग	१।५३१।	रिन्व	१।२०५।
रह्व	१।३८।	रिश	६।११५।
रङ्ग	१।३८।	रिष	१।२३०।
रङ्घ	१।३४६।	री	४।८८।
रच	१०।८४।		६।२३।
रञ्ज	१।५४६, ६२७।	रु	१।४७८।
	४।१२१।		२।१०।
रट	१।८६।	रुच	१।४६६।
रण	१।१४७, ५३५।	रुज	६।११२।
रद	१।१४।	रुट	१।५०१।
रघ	४।३४।	रुठ	१।११८।
रन्व	१।२०५।	रुण्ट	१।१११।
रप	१।१३८।	रुण्ठ	१।१२३।
रफ	१।१४३।	रुद	२।२८।
रभ	१।४६२।	रुघ	४।११२।
रम	१।५७६।		७।१।
रम्फ	१।१४३।	रुप	४।७३।
रम्ब	१।४०३।	रुश	६।११५।
रय	१।४२४।	रुष	१।२३०।
रस	१।२४०।		४।६८।
रह	१।२५३।	रुह	१।५८६।
	१०।८२।	रेक	१।३३७।
रा	२।१६।	रेज	१।३६४।
राख	१।३६।	रेट	१।५६२।
राघ	१।३४६।	रेव	१।३६६।
राज	१।५५७।	रेभ	१।४०६।

रेव	११४४०।	लिङ्ग	११३८।
रेष	११४५५।	लिप	६१११।
रै	११२६६।	लिश	४१११७।
रौड	११२२६।		६१११६।
लक्ष	१०१५।	लिह	२।५६।
लख	११३८।	ली	४।८६।
लग	११५३२।		६।२४।
लङ्ग	११३८।	लुज	४।११६।
लङ्क	११३८।	लुञ्च	११४८।
लङ्घ	११४१,३४६।	लुट	११६६,५०१।
लछ	११५४।		४।६१।
लज	११७७।		६।८२।
	६।१००।	लुठ	११११८।
लज्ज	६।१००।	लुड	६।८५।
लञ्ज	११७७।	लुण्ट	१११११।
लट	११८७।		१०। १८
लड	१११३२,५४६।	लुण्ठ	१११२२,१२३।
	१०।७।	लुन्थ	१।६।
लप	१११३८।	लुप	४।७३।
	१०।६३।		६।६।
लभ	११४६३।	लुभ	४।७४।
लम्ब	११४०३।		६।२८।
लल	१०।६६।	लू	६।६।
लष	११६१०।	लूष	१०।५१।
लस	११२४२।	लोक	११३३४।
ला	२।१६।		१०।५।
लाख	११३६।	लोच	११३५३।
लाघ	११३४६।	लोण्ट	११३६८।
लाज	११७७।	लौड	१११३०।
लाञ्छ	११५४।	वक्ष	११२१६।
लाञ्ज	११७७।	वख	११३८।
लिख	६।६६।	वङ्क	११३४१।

वङ्ग	१।३८।	वह	१।६३२।
वङ्घ	१।३४७।	वा	२।१२।
वच	२।२७।	वाङ्क्ष	१।२२०।
वज	१।८१।	वाञ्छ	१।५५।
वञ्च	१।४६।	वावृत	४।१०३।
वट	१।८६, ५२६।	वाश	४।१०६।
वठ	१।११४।	वास	१०।६१।
वण	१।१४७।	विच	७।५।
वण्ट	१।११०।	विछ	६।११६।
वण्ठ	१।३७२।	विज	३।१६।
वण्ड	१।३७६।		६।६६।
	१०।३३।	विट	१।१०१।
वद	१।६३७।	विथ	१।३२६।
वन	१।१५३, ५५१।	विद	२।२४।
	८।८।		४।१०६।
वन्द	१।३१३।		६।१०।
	१०।३७।		७।२३।
वप	१।६३१।		१०।३८।
वभ्र	१।१६०।	विध	६।३८।
वम	१।५५१, ५७५।	विश	६।११८।
वय	१।४२४।	विष	१।२३३।
वर	१०।७६।		३।१७।
वर्च	१।३५२।		६।४३।
वल	१।४३३।	वी	२।१२।
वल्क	१०।२४।	वुङ्ग	१।३६।
वला	१।३८।	वृ	५।८।
वल्भ	१।४१३।		६।४८।
वज्ञ	१।२४८।	वृह	१।२५५।
	२।३।	वृक	१।३४४।
वप	१।२३०।	वृक्ष	१।४४२।
वस	१।६३६।	वृज	२।४८।
	२।४३।		
	४।५३।		

वृज	७।१६।
	१०।४७।
वृत	१।५०८।
वृध	१।५०६।
वृश	४।६४।
वृष	१।२३६।
वृह	१।२५५।
	१।२५६।
	६।५६।
वृ	६।१२।
वे	१।६३३।
वेण	१।६०१।
वेथ	१।३२६।
वेप	१।३६७।
वेल	१।१७८।
वेवी	२।५४।
वेष्ट	१।३६६।
वेह	१।४६८।
वै	१।२७१।
व्यच	६।१८।
व्यथ	१।५१४।
व्यध	४।२३।
व्यप	१०।२२
व्यय	१।६०५।
व्ये	१।६३४।
व्रज	१।८१।
व्रण	१।१४७।
व्रश्च	६।१७।
व्री	४।६०।
	६।२५।
व्रीड	४।१४।
व्रुड	६।८७।

व्लङ्ग	१।३८।
व्ली	६।२३।
शंस	१।२५१।
	१।४६०।
शक	४।११८।
	५।१५।
शङ्क	१।३३६।
शञ्च	१।३५५।
शट	१।८८।
शठ	१।१२०।
	१०।८१।
शण्ड	१।३८६।
शद	१।५८१।
	६।१२१।
शप	१।६२८।
	४।१२२।
शम	१।५५३।
	४।४२।
शर्व	१।६४३।
शर्व	१।२०१।
शल	१।१८५।
	१।४३२।
	१।५७२।
शलभ	१।४१२।
शश	१।२४६।
शस	१।२५०।
शाख	१।३७।
शान	१।६२४।
शास	२।३५।
	२।४२।
शि	५।३।
शिक्ष	१।४४३।
शिङ्ग	१।४३।
शिञ्ज	२।४७।

शिट	१।९१।
शिल	६।६८।
शिल्ल	१।१७७।
शिष	१।२३०। ७।११।
शो	२।५१।
शीक	१।३३३।
शीभ	१।४०७।
शील	१।१६६। १०।८८।
शु	१।२८७।
शुक	१।३३।
शुच	१।४४। ४।११६।
शुच्य	१।१६१।
शुण्ठ	१।१२१।
शुघ	४।३२।
शुन	६।३६।
शुन्ध	१।२६।
शुभ	१।५०२।
शुम्भ	१।१४६। ६।३५।
शुप	४।२५।
शूर	४।१००।
शूल	१।१६६।
शृघ	१।५१०। १।५६८।
शृ	६।१५।
शेल	१।१७८।
शेव	१।४३६।
शो	४।१८।
शोण्	१।१४६।
शीट	१।८२।

इच्युत	१।५।
इनच	१।५३६।
इयै	१।४८२।
इक	१।३३८।
इङ्क	१।३८।
इण	१०।२६।
इन्थ	१।३३०। ६।३०।
इम्	४।४४।
इम्भ	१।४१५।
इत्रा	१।५४२। २।१६। १०।३६।
इत्रि	१।६१८।
इत्रिव	४।३।
इत्रिष	१।२३५।
इत्री	६।३।
इत्रु	५।१६।
इत्रै	१।२७०।
इत्रोण	१।१५०।
इलक	१।३३८।
इलङ्क	१।३८।
इलाख	१।३७।
इलाघ	१।३५१।
इलाड	१।३६४।
इलिष	१।२३५। ४।२८।
इलोक	१।३३५।
इवङ्क	१।३४६।
इवञ्च	१।३५५।
इवठ	१०।१६। १०।८१।
इवल्क	१०।२४।

श्वल्ल	१।१८५।	सिट	१।६१।
श्वस	२।३०।	सिध	१।८।
श्वि	१।६३८।		१।६।
श्वित	१।४६७।		४।३३।
श्विन्द	१।३१२।	सिल	६।६८।
श्वेत	१०।१०५।	सिव	४।२।
षिठव	१।१६१।		४।३।
	४।४।	सु	१।२८८।
ष्वस्क	१।३४६।		५।१।
संग्राम	१०।७१।	सुर	६।४६।
सग	१।५३३।	सुह	४।१६।
सघ	५।१८।	सू	२।५०।
सच	१।१४०।		४।८२।
	१।३५४।		६।१०४।
सज्ज	१।५१।	सूच	१०।६१।
सञ्ज	१।२६६।	सूद	१।३२३।
सट	१।६८।	सूर्क्ष	१।२१६।
सट्ट	१०।१७।	सूर्क्ष्म	१।१५६।
सद	१।५८०।	सूष	१।२२६।
	६।१२०।	सृ	१।२८३।
सन	१।१५४।		३।७।
	८।२।	सृज	४।११५।
सम	१।५६०।		६।११०।
सर्ज	१।६५।	सृप	१।२६५।
सर्व	१।१४३।	सृभ	१।१४२।
सस	२।२।	सृम्भ	१।१४२।
सह	१।५७८।	सेक	१।३३८।
साध	४।२२।	सेल	१।१७८।
	५।१७।	सेव	१।४३६।
साम	१०।८६।	सै	१।२६६।
सि	५।२।	सो	४।२०।
	६।५।	स्कन्द	१।२६२।
सिच	६।१२।	स्कम्भ	१।४१०।

स्कु	१६६।	स्निह	४।४१।
स्कृन्द	१।३११।	स्तु	२।६।
स्खद	१।५१७।	स्तुह	४।१०।
	१।५५५।	स्पन्द	१।३१६।
स्खल	१।१८०।	स्पर्घ	१।३०७।
स्तक	१।५२६।	स्पर्श	१।४५१।
स्तघ	१।५३३।	स्पर्श	१।६०६।
स्तन	१।१५३।	स्पृ	५।१३।
	१०।८३।	स्पृश	६।११७।
स्तम	१।५६०।	स्पृह	१०।८७।
स्तम्भ	१।४१०।	स्फट	१।११२।
स्तिक	५।१८।	स्फाय	१।४३०।
स्तिघ	५।२५।	स्फिट	१०।२५।
स्तिम	४।१३।	स्फुट	१।११२।
स्तीम	४।१३।		१।३७०।
स्तु	२।६१।		६।७७।
स्तुच	१।३६१।	स्फुड	६।८७।
स्तुभ	१।४१६।	स्फुण्ड	१।३८४।
स्तूप	४।७०।		१०।४।
स्तृ	५।६।	स्फुर	६।८८।
स्तृक्ष	१।२१५।	स्फुर्छ	१।६०।
स्तृह	६।५७।	स्फुल	६।८६।
स्तृ	६।१०।	स्फूर्ज	१।७४।
स्तेन	१०।६५।	स्मि	१।४७४।
स्तेप	१।३६५।	स्मील	१।१६३।
स्ती	१।२७२।	स्मृ	१।२६५।
स्त्यं	१।२६७।		१।५३६।
स्त्यल	१।५६५।	स्त्यन्द	१।५११।
स्था	१।२७७।	स्त्यम	१।५५६।
स्थूल	१०।६६।	स्तम्भ	१।५०७।
स्ना	१।५५१।	स्तंस	१।५०५।
	२।१५।	स्तु	१।२८७।

लोक	१।३३८।	लुङ्	१।५८।
लौ	१।२७०।	लुल	१।५७२।
स्वञ्ज	१।४६४।	लुड	१।१२८।
स्वद	१।३२०।	लु	१।६१६।
स्वन	१।५५६।	लुष	१।२३६।
स्वप	२।२६।	लुष	४।६७।
स्वर्द	१।३२०।	लुठ	१।१०३।
स्वाद	१।३२०।	लुठ	१।३७५।
स्विद	१।४६८।	लुड	१।५२५।
	४।२६।	लुष	१।४५७।
स्वृ	१।२८१।	लुड	१।३६१।
हट	१।६७।	लुड	१।१२८।
हठ	१।११७।	लु	२।५५।
हड	१।४६५।	लुल	१।५३८।
हन	२।४।	लुल	१।५५०।
हम्य	१।१५५।	लुग	१।५३३।
हय	१।१६०।	लुष	१।२४०।
हर्य	१।१६०।	लुद	१।३२४।
हल	१।५६६।	लु	३।३।
हस	१।२४५।	लुछ	१।५७।
हा	२।५।	लुष	१।४५४।
	३।२१।	लुग	१।५३३।
हि	५।११।	लुष	१।२४०।
हिस	७।१५।	लुद	१।३२५।
हिकक	१।५८८।	लुल	१।५३८।
हिण्ड	१।३७६।	लुल	१।५५०।
हिन्व	१।२०४।	लु	१।२८०।
हिल	६।६७।	लु	१।६३५।
हु	३।१।		
हुड	६।७६।		
हुण्ड	१।३७७।		

इति^१ धातुपाठस्य अकारादिकः अनुक्रमः समाप्तः

टिप्पण-१. अत्र चान्द्रव्याकरणो १०५ पृष्ठतः १२६ पृष्ठपर्यन्तमाचार्यचन्द्रगोमिरचितो-
धातुपाठः समायातः । तत्र दश गणा दर्शिताः, तथा प्रत्येकधातुभिः सह आदा
वङ्का निर्दिष्टाः । अत्र तेषां धातूनामकारादिकोऽनुक्रमः प्रकाशितः । तत्र सर्वत्रा-

शुद्धिसूची

पृष्ठाङ्क	अशुद्धम्	शुद्धम्
१७। सूत्र १२।	वश्येन	वंश्येन
२८। सूत्र ६१।	खञ्	कञ्
३१। सूत्र १२३।	वा०	वा
३१। प्रथमे टिप्पणो	तद्वृत्तौ	तद्वृत्तौ
३१। द्वितीये टिप्पणो	निदर्शे	निर्देशे
३७। सूत्र १०२	रात्री-	रात्रि-
४७। सूत्र ११२	नस्	णस्
७१। सूत्र ६८	ससजुषः रः	स-सजुषः रुः
१०१। सूत्र ६३	वृ-त-	वृ-तृ-
१०४। सूत्र ६३	कित्	णित्
१०४। सूत्र ६६	कसिः	असिः
१२६। सूत्र १०३	इष्ठवच्च	इष्ठवच्च

*शुद्धणदोषाद् दृष्टिदोषान्मतिमान्द्याच्च ग्रन्था अपि काश्चनाशुद्धयोऽत्र संजातास्ताः सर्वाः क्षमन्तां विचक्षणाः संशोधयन्तु च करुणां कृत्वेति संपादकप्रार्थनम् ।

॥ इति समाप्तं सर्वाङ्गं चान्द्रव्याकरणसंशोधन-संपादनम् ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित-ग्रन्थ

(क) संस्कृत-प्राकृत

१. प्रमाणमञ्जरी (ग्रन्थाङ्क ४), ताकिक चूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत; अद्वयारण्य, बलभद्र, वामनभट्ट कृत टीकात्रयोपेत; सम्पादक—मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर (७+१०६), १९५३ ई०। मू. ६.००
२. यन्त्रराज-रचना (ग्रन्थाङ्क ५); महाराजा सवाई जयसिंह कारित; संपादक—स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद् (८+२८), १९५३ ई०। मू. १.७५
३. महर्षिकुलवंभवम्, भाग १ (ग्रन्थाङ्क ६) स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, म.म. पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित एवं हिन्दी व्याख्या सहित (५६+२९१), १९५६ ई०। मू. १०.७५
४. महर्षिकुलवंभवम् (मूलमात्र) (ग्रन्थाङ्क ५९), स्व० पं० मधुसूदन ओझा-प्रणीत, संपादक—पं० प्रद्युम्न ओझा (१६+१३३+१०), १९६१ ई०। मू. ४.००
५. तर्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत (ग्रं० ९) टीकाकार—क्षमाकल्याणगण; संपादक—डा० जितेंद्र जेटली, (१७+७४), १९५६ ई०। मू. ३.००
६. कारकसंबन्धोद्योत, (ग्रं० १८) पं० रभसनन्दीकृत; कातन्त्रव्याकरणपरक रचना; संपादक—डा० हरिप्रसाद शास्त्री (२२+३४), १९५६ ई०। मू. १.७५
७. वृत्तिदीपिका (ग्रं० ७) मोनिकृष्णभट्टकृत; संपादक—स्व० पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य (६+४४+१२), १९५६ ई०। मू. २.००
८. कृष्णगीति (ग्रं० १६) कवि सोमनाथ विरचित, राधाकृष्ण सम्बन्धी प्रेमकाव्य; संपादिका—डॉ० कु० प्रियवाला शाह (२७+३२), १९५६। मू. १.७५
९. शब्दरत्नप्रदीप (ग्रं० १९), अज्ञातकर्तृक, बह्वर्थक-शब्दकोश; संपादक डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री (१२+४४), १९५६ ई०। मू. २.००
१०. नृत्तसंग्रह (ग्रं० १७), अज्ञातकर्तृक; संपादिका—डॉ० कु० प्रियवाला शाह (६+४५) १९५६ ई०। मू. १.७५
११. शृङ्गारहारावली (ग्रं० १५), श्री हर्षकवि विरचित संस्कृत-गीतकाव्य; संपादिका—

१२. राजविनोद महाकाव्य (ग्र० ८), महाकवि उदयराज प्रणीत, अहमदाबाद के सुलतान महमूद वेगड़ा का चरित्र-वर्णन; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (२८+४४) १९५६ ई० । मू. २.२५
१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य (ग्र० २०), भट्ट लक्ष्मीधर विरचित; उषापरिणय संबंधी अद्यावधि अज्ञात काव्य; संपादक - के. का. शास्त्री (७+११२), १९५६ ई० । मू. ३.५०
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग) (ग्र० २५), महाराणा कुम्भकर्णकृत, संगीतराजरत्न-कोषान्तर्गत; संपादक - प्रो० रसिकलाल छो० परीख एवं डॉ० कु० प्रियवाला शाह (७+१४४), १९५७ ई० । मू. ३.७५
१५. उक्तिरत्नाकर (ग्र० १२), साधुसुन्दर गणिविरचित, संस्कृत एवं देशी शब्दकोष; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य (१०+११८), १९५७ । मू. ४.७५
१६. दुर्गापूष्पाञ्जलि, (ग्र० २२), म. म. पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी प्रणीत; संपादक पं० श्री गङ्गाधर द्विवेदी (३९+१४७), १९५६ ई० । मू. ४.२५
१७. कर्णकुतूहल एवं कृष्णलीलामृत, (ग्र० २६), महाकवि भोलानाथ, जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह समाश्रित विरचित; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (२५+३०), १९५७ ई० । मू. १.५०
१८. ईश्वरविलास-महाकाव्यम्. (ग्र० २९), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, जयपुर निर्माता सवाई जयसिंह द्वारा अनुष्ठित अश्वमेध यज्ञ का प्रत्यक्ष वर्णन एवं जयपुर राज्येतिहास सम्बन्धी अनेक संस्मरण संवलित महाकाव्य; संपादक - स्व० कवि-शिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (७६+२९३), १९५८ ई० । मू. ११.५०
१९. रसदीपिका, (ग्र० ४१), कवि विद्याराम प्रणीत, संस्कृत रसालङ्कारपरक सरल एवं लघु कृति; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (१२+८०) १९५९ ई० । मू. २.००
२०. पद्यमुक्तावली, (ग्र० ३०), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, अनेक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक पद्य संग्रह; संपादक - स्व० कविशिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (२०+१४६), १९५९ । मू. ४.००
२१. काव्यप्रकाश, भाग १, (ग्र० ४६), मूल ग्रन्थकार मम्मटाचार्य के समकालीन भट्ट सोमेश्वर कृत 'काव्यादर्श संकेत' सहित, जैसलमेर के जैन ग्रन्थमंडारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक - श्री रसिकलाल छो० परीख (४+३५२), १९५९ ई० । मू. १२.००
२२. काव्यप्रकाश भाग २, (ग्र० ४७), संपादक - श्री रसिकलाल छो० परीख (२२+११०+९४), १९५९ ई० । मू. ८.२५
२३. वस्तुरत्नकोश, (ग्र० ४५), अज्ञातकर्तृक, संस्कृत का सामान्यज्ञान-कोश; संपादक - डॉ० कु० प्रियवाला शाह (९+६४); १९५९ । मू. ४.००
२४. दशकण्ठवयम्, (ग्र० २३), म. म. पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी कृत, रामचरित्रात्सक संस्कृत-चम्पू; संपादक - श्री गङ्गाधर द्विवेदी (४+१५६), १९६० ई० । मू. ४.००

२५. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, (ग्र० ५४), पृथ्वीधराचार्य विरचित, कवि पद्मनाभ प्रणीत भाष्यान्वित, पूजा-पञ्चाङ्गादि संवलित; संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा (१+१६९), १९६० ई० । मू. ३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थ संग्रह, (६०) दिल्ली-सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मुद्राधीक्षक ठक्कुर फेरू विरचित, मध्यकालीन भारत की आर्थिक दशा एवं रत्नपरीक्षादि वस्तुजात-संग्रहादिक विषयों पर विस्तृत विवेचनात्मक ग्रन्थ; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य । मू. ६.२५
२७. स्वयम्भूछन्द, (ग्र० ३७) कवि स्वयम्भू कृत, दसवीं शताब्दी में रचित प्राकृत एवं अप-भ्रंश छन्दःशास्त्र पर अलम्य कृति; सम्पा० प्रो. एच०डी० वेलणकर (२५+२४४) १९६२ ई० । मू. ७.७५
२८. वृत्तजातिसमुच्चय, (ग्र० ६१), कवि विरहाङ्क कृत, ७वीं शताब्दी में प्रणीत संस्कृत एवं प्राकृत छन्दःशास्त्र पर अलम्य कृति; संपादक प्रो० एच. डी. वेलणकर (३२+१४४), १९६२ ई० । मू. ५.२५
२९. कविदर्पण, (ग्र० ६२), अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी में रचित प्राकृत-संस्कृत छन्दःशास्त्र पर अनुपम कृति; संपादक - प्रो० एच. डी. वेलणकर (५२+३५६), १९६२ ई० । मू. ६.००
३०. वृत्तमुक्तावली, (ग्र० ६९), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट प्रणीत, वैदिक एवं संस्कृत छन्दःशास्त्र पर दुर्लभ कृति; संपादक - स्व० पं० श्री मथुरानाथ भट्ट (१७+७६) १९६३ ई० । मू. ३.७५
३१. कर्णामृतप्रपा, (ग्र० २) सोमेश्वर भट्ट कृत (१३वीं शताब्दी) मध्यकालीन संस्कृत-काव्य-संग्रह, जैसलमेर के जैन-भंडारों से प्राप्त अलम्य प्रति के आधार पर; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य; (१०+५६), १९६३ ई० । मू. २.२५
३२. पदार्थरत्नमञ्जूषा, (ग्र. ३८), श्रीकृष्णामिश्र प्रणीत दर्शनशास्त्र की वैशेषिक शाखा पर आधारित, जैसलमेर के जैन-भंडारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य; प्रस्तावना - श्री दलमुख मालवणिया । (७+४५) १९६३, ई० । मू. ३.७५
३३. त्रिपुराभारती-लघु-स्तव, (ग्र० १), लघ्वाचार्य प्रणीत वागीश्वरी-स्तोत्र, सोमतिलक सूरि (१३४० ई०) कृत टीका सहित; संपादक-पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१०+५६) ई० १९५२ ई० । मू. ३.२५
३४. प्राकृतानन्द, (ग्र० १०), रघुनाथ कवि कृत प्राकृत भाषा व्याकरण संबंधी महत्त्वपूर्ण रचना; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१७+५२+५३+७६) १९६२ ई० । मू. ४.२५
३५. इन्द्रप्रस्थ-प्रबन्ध, (ग्र. ७०), अज्ञात कर्तृक, दिल्ली के प्रारम्भिक शासकों के विषय में ऐतिहासिक काव्य; संपादक - डा० दशरथ शर्मा (८+४६) १९६३ ई० । मू. २.२५

(ख) राजस्थानी - हिन्दी

१. कान्हड़दे प्रबन्ध, (ग्र० ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित, सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा जालोर दुर्ग के प्रसिद्ध घेरे आदि का वर्णन; संपादक - प्रो० के. वी. व्यास (३३+२७५) १९५३ ई०। मू. १२.२५
२. क्यामखां रासा, (ग्र० १३), कवि जानकृत, फतेहपुर के नवाब अलफ़ख़ान तथा राज-पूताने के क्यामखानी मुस्लिम राजपूतों के उद्गम और इतिहास का रोचक वर्णन; संपादक - डा० दशरथ शर्मा और अग्रचन्द भँवरलाल नाहटा (५०+१२८) १९५३ ई०। मू. ४.७५
३. लावा रासा, (ग्र० १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत, नरुका (कछवाहा) राजपूतों और पिडारी पठानों के बीच हुए पांच युद्धों का समकालीन ओजस्वी वर्णन, संपादक-श्री महतावचन्द खारेड़, (१९+८६) १९५३ ई०। मू. ३.७५
४. वांकीदास री ख्यात, (२१) वांकीदास कृत, राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक विवरणों का प्रमुख ग्रन्थ; संपादक - श्री नरोत्तमदास स्वामी (९+२१८) १९५६ ई०। मू. ५.५०
५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, (ग्र० २७) राजस्थानी भाषा में रचित प्रतिनिधि गद्य कथा-संग्रह; संपादक - श्री नरोत्तमदास स्वामी (१४+५२) १९५७ ई०। मू. २.२५
६. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग २, (ग्र० ५२) तीन ऐतिहासिक वातापि-वगडावत, प्रतापसिंह महोकर्मसिंह और वीरमदे सोनगिरा; संपादक - डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, (२४+१०८) १९६० ई०। मू. २.७५
७. कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र० ३४), मुगल बादशाह शाहजहाँ के समकालीन कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; संपादक - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (७+५५+५) १९५८ ई०। मू० २.००
८. जुगलविलास, (ग्र० ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत; संपादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (५+५०) १९१० ई०। मू. १.७५
९. भगतमाल, (४३) चारण ब्रह्मदास दाडूपथी कृत; संपादक - श्री उदयरज उज्ज्वल (८+६४) १९५९ ई०। मू. १.७५
१०. राजस्थान पुरातत्त्व मंदिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग १, (ग्र० ४२) ई० स० १९५६ तक संग्रहित ४००० ग्रन्थों का वर्गीकृत सूचीपत्र; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वोचार्य, (२+३०२+२०) १९५९ ई०। मू. ७.५०
११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र० ५१) ७८५५ तक के ग्रंथों का सूची-पत्र; (२+३९१) १९६० ई०। संपादक - श्री गोपाल-नारायण बहुरा। मू. १२.००

१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची, भाग १ (ग्रं ४४) मार्च १९५८ तक के ग्रन्थों का विवरण; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (१९६० ई०) ।
मू. ४.५०
१३. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची, भाग २ (ग्रं ५८) १९५८-५९ के संग्रहीत ग्रंथों का विवरण; संपादक - डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (२+६१) १९६१ ई० ।
मू. २.७५
१४. स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह सूची, (ग्रं ५५), संपादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी (८+१६३+३८), १९६१ ई० ।
मू. ६.२५
१५. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग १. (ग्रं ४८), मुंहता नैणसी कृत साधारणतः राजस्थान देशीय एवं मुख्यतः मारवाड़ राज्य का प्रथम प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ; संपादक - आ० श्री बदरीप्रसाद साकरिया (११+३६५), १९६० ई० । मू. ८.५०
१६. मुं० नै० री ख्यात भाग २, (ग्रं ४९), सं० आ० बदरीप्रसाद साकरिया (११+३४३) १९६२ ई० ।
मू. ९.५०
१७. मुं० नै० री ख्यात भाग ३, (ग्रं ७२)(२+२६४) १९६४ ई० ,, मू. ८.००
१८. सूरजप्रकाश भाग १, (ग्रं ५६), चारण करणीदान कविया कृत, सामान्य रूप से मारवाड़ का ऐतिहासिक विवरण व विशेषतः जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी व सरबुलन्दखान के बीच हुए अहमदाबाद के युद्ध का समकालीन वर्णन; संपादक - श्री सीताराम लालस (२०+३१०+३७), १९६१ ई० ।
मू. ८.००
१९. सूरजप्रकाश भाग २, (ग्रं ५७), संपादक - श्री सीताराम लालस (९+३६३+६१) १९६२ ई० ।
मू. ९.५०
२०. ,, भाग ३, (ग्रं ५८), ,, (९७+२७५+८४) १९६३ ई० ।
मू. ९.७५
२१. नेहतरंग, (ग्रं ६३), बूंदी नरेश राव बुर्घसिंह हाड़ा कृत, काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ संपादक - श्री रामप्रसाद दाधीच (३२+१२०), १९६१ ई० ।
मू. ४.००
२२. मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य की देन, (ग्रं ६६), लेखक डा० मोतीलाल गुप्त, पूर्वी राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज विषयक शोध-प्रबन्ध; (९+२९६), १९६० ई० ।
मू. ७.००
२३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज, (ग्रं ३१), श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी द्वारा प्रोफेसर एस. आर. भाण्डारकर लिखित हस्तलिखित संस्कृत-ग्रन्थों की खोज में मध्यप्रदेश व राजस्थान में १९०५-६ ई० में की गई खोज-रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद (२+७७+१९), १९६३ ई० ।
मू. ३.००
२४. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्रं ६८), लेखक पं० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक-शान्तिलाल म. जैन, राजस्थान के गण्यमान्य साहित्यकार एवं विचारक आचार्य हरिभद्र का जीवन-चरित्र और दर्शन, (८+१२२), १९६३ ई० ।
मू. ३.००

२५. वीरवाण, (ग्र० ३३), ढाढी वादर कृत, जोधपुर के वीर-शिरोमणि वीरमजी राठौड़ संबंधी रचना; संपादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत (१६+६२+११२), १९६० ई० । मू. ४.५०
२६. वसन्त-विलास फागु, (ग्र० ३६), अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी का एक प्राचीन राजस्थानी भाषा निबद्ध शृंगारिक काव्य; संपादक - एम. सी. मोदी, (१४+११६), १९६० ई० । मू. ५.५०
२७. वृषमणीहरण, (ग्र० ७४), महाकवि सांयाजी [भूला कृत; राजस्थानी भक्तिकाव्य; संपादक - डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (५२+११३) १९६४ ई० । मू. ३.५०
२८. बुद्धि-विलास, (ग्र० ७३), बखतराम साह कृत, जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंहजी का समकालीन ऐतिहासिक वर्णन; संपादक - श्री पद्मधर पाठक (२४+१७९), १९६४ ई० । मू. ३.७५
२९. रघुवरजसप्रकास, (ग्र० ५०), चारण कवि किसनाजी झाड़ा कृत, राजस्थानी भाषा का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ; संपादक - श्री सीतारामजी लाळस (२०+३७६) १९६० ई० । मू. ८.२५
३०. सन्त कवि रज्जव : सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र. ७६) : लेखक - डा० ब्रजलाल वर्मा (८४ ३१५+३१६+३१४), १९६५ ई० । मू. ७.२५
३१. प्रतापरासो-जाचिक जीवण कृत, (ग्र. ७५): अलवर राज्य के संस्थापक रावराजा प्रतापसिंहजी के शौर्य का ऐतिहासिक वर्णन, भाषा-शास्त्रीय विशिष्ट अध्ययन सहित, सम्पादक - डा० मोतीलाल गुप्त (१६६+११८), १९६५ ई० । मू. ६.७५
३२. भक्तमाल, (ग्र. ७८) राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका; दादूपन्थीय भक्त नामावली और विवरण, सम्पादक-श्री अग्ररचन्द नाहुटा (३८+२८+२८६) १९६५ ई० । मू. ६.७५

(ग) अंग्रेजी

१. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र० ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर-संग्रह का स्वरित रोमन-लिपि में ४००० ग्रन्थों का सूचीपत्र, अंत में विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण; संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१६+८६+३७३+१५९), १९६३ ई० । मू. ३७.५०
२. " भाग २ अ (ग्र० ७७), संपादक - पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (१६+७०+३२९+९९), १९६४ ई० । मू. ३४.५०

सूचना- पुस्तक विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।

